ॐ

अरुण संहिता - लाल किताब

2021 संस्करण (संशोधित)

हरे कृष्ण ट्रस्ट

एच.के. टी. प्रकाशन, HKT Book Shop

Sree Chaitanya Gaudiya Math (Math Mandir) Sector 20- B

Chandigarh 160020 भारत

Chant Hare Krishana and Celebrate Life

www. thecognitivesciences.com

e-mail: yogacollege@gmail.com

अरुण संहिता - *लाल किताब*
ज्योतिष

International Standard Book Nunber
ISBN 81-86828-09-5

2021 संस्करण (संशोधित)

1989, 1992,1999, 2005, 2007,2011,2015 संस्करण

वृहद् साईज़ एवं लिपि

19th Edition 2021

© *कापी* राईट

एच.के.टी. प्रकाशन चण्डीगढ़

इस ग्रन्थ को कापी राईट एक्ट के अन्तर्गत रजिस्टर्ड करवाया गया है। इसके पुराने संस्करणों एवं इसको इसी रुप में एवं इसके ले आऊट एवं लाईन झाईंग तथा भाषा को प्रकाशित करने वाले के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जायेगी ।

एस. के. टी. प्रकाशन
चण्डीगढ़
☎ + **91 - 9417007075**

Font used in this book Chankaya/Natraj and allied legally purchased by the h.k.t. publications.

Price Rs 1200.00
Rs Twelve hundred only.

बीमारी की दवाई भी इलाज़ है,
मगर मौत का कोई इलाज़ नहीं,
दुनियावी हिसाब-किताब है,
कोई दावा खुदाई नहीं ।

इल्म सामुद्रिक की ज्ञान की नीव पर आधारित

ज्योतिष की

सहायता से हाथ रेखा के द्वारा दुरुस्त की हुई जन्म कुण्डली से
ज़िन्दगी के हालात देखने के लिए

अरुण संहिता

लाल किताब

आवाज़ सुनता हर किसी ना ही भुला कोई हो।

सबसे पहले याद उसी की फिर सभी दुनिया की हो॥

Arun Samhita Lal Kitab
CD
can also download from
www.thecognitivesciences.com

अरुण संहिता - लाल किताब

अष्टादश संस्करण

यह हर्ष का विषय है कि अरुण संहिता लाल किताब का पिछले चार दशकों में अष्टादश संस्करण वर्ष 2018 में प्रकाशित किया जा रहा है। पिछले तीन दशकों से अरुण संहिता लाल किताब का software भी निकाला गया। ज्योतिष ग्रन्थों में प्रभु कृपा से यह H.K.T. प्रकाशन की उपलब्धि है कि इस ग्रन्थ का बृहद् लिपि रूप में संस्करण निकाला गया। इस ग्रन्थ में काफी संशोधन करने के उपरान्त H.K.T. मण्डल ने इस ग्रन्थ को प्रकाशित करने में एक C.D. उपलब्ध करवाई । अब इस C.D. में एक जो इस पुस्तक के साथ संलग्न है, एक code दिया गया है इस के माध्यम से व्यक्ति इस web site www. thecognitivesciences.com पर अपनी जन्म वर्ष संबंधी जानकारी देने पर कुछ विशेष प्रश्न पूछ सकता है। इसका उत्तर H.K.T प्रकाशक मण्डल के वरिष्ठ संरक्षक अपने अनुभव एवं इस ग्रुप का सहयोग करने के साथ प्रयत्नशील है, को सप्ताह के अन्दर मेल द्वारा जानकारी दी जायेगी। आवश्यकता अनुसार शंका समाधन का भी प्रवधान है, केवल e-mail के माध्यम द्वारा। विषय केवल साधना संबंधित जैसे आध्यात्मिक विकास एवं जीवन की योग साधना में विकास के लिये उपयोगी तत्व। इसे प्रभु अनुग्रह ही कहें या प्रकृति की लीला कि इस संस्करण के साध इस प्रकार की व्यवस्था की जा रही है। इस तरह जन साधरण को इस विद्या का अवश्य उपयोग प्राप्त हो सकेगा। H.K.T के वरिष्ठ मण्डल संरक्षक जो पिछली लगभग 5 दशकों का अनुभव है उनका जन साधारण उपयोग कर सकता है।

त्रिदण्डी स्वामी भक्ति विचार विष्णु महाराज
स्वामी कृष्ण सत्यार्थी, प्रो0 आर सी वर्मा
अनादी कृष्ण दास, डॉ0 अरुण,
कृष्णा चैतन्य : एच.के.टी. प्रकाशन

प्राक्कथन

सूर्य देव ज्योतिष के आदि आचार्यों में हैं। इन्ही के सारथी अरुण हैं, जिन्होंने इस पुस्तक के मूलसूत्रों की रचना की ऐसी किम्वदन्ती है। अरुण से यह ज्ञान लंकापति रावण ने ग्रहण किया।। रावण से यह अरब देश के एक आद नामक स्थान पर पहुँचा। जहाँ इस ग्रन्थ का अरबी एवं फारसी भाषा में अनुवाद हुआ। अभी भी कुछ लोग यह मानते है कि यह पुस्तक फारसी में आज भी उपलब्ध है। परन्तु कालवश यह ग्रन्थ लुप्त प्रायः हो चुका था।

अन्ततः इस पुस्तक का आविर्भाव इस आधुनिक युग के एक ऋषि द्वारा हुआ। क्योंकि यह पुस्तक उर्दू भाषा में लिखी गई है, इस कारण इस लुप्त-ज्ञान के प्रसार के लिए इसे राष्ट्रभाषा हिन्दी में अनुवादित किया गया है।

इस ज्ञान गंगा को जनहित तक पहुँचाने का कार्य इसलिए भी किया गया क्योंकि कुछ ज्योतिष प्रेमी इस ग्रन्थ के अप्राप्य होने के कारण इसका सदुपयोग नहीं कर पा रहे हैं।

हमारी चेष्टा है कि इस ग्रन्थ को अन्य महान् ग्रन्थ की तरह सभी इच्छुक सज्जनों को उपलब्ध करवाया जाये ताकि इस के रहस्य को समझा जा सके तथा अपने जीवन के भविष्य को सफल एवं उज्जवल बनाया जाये। हमें आशा है कि यदि इस पुस्तक का बार-बार अध्ययन किया जाये तो इसका रहस्य स्वयं ही ज्ञात हो जायेगा जैसे कि इस ग्रन्थ के शुरू में इस बात पर बल दिया गया है "इसको उपन्यास की भांति बार-बार पढ़ने से यह पुस्तक अपना रहस्य स्वयं खोल देगी"। इस प्रकार जन साधारण से अनुरोध है कि यदि इस विषय में आंशिक भी रुचि हो तो इसकी प्रति सुरक्षित रख लें क्योंकि निकट भविष्य में हमारी योजना है कि इस ग्रन्थ पर गोष्ठियाँ भी बुलाई जायेंगी ताकि इसका लाभ जन साधारण को हो सके।

वह महान् पुरुष जिन्होंने इस यज्ञ में अपने भाग की आहुति डाली वे धन्यवाद के पात्र हैं।

लोक कल्याण हेतु समर्पित इस ग्रन्थ में फलित ज्योतिष व सामुद्रिक शास्त्र एवं हस्त रेखा का अपूर्व समन्वय किया गया है। यह ज्ञान का सागर अमूल्य रत्नों को अपने में समाए हुए है।

दो शब्द

अनादि काल से मनुष्य इसी चेष्टा में रहा है कि जीवन को कैसे आनन्दमय बनाया जाये और भविष्य को कैसे जाना जाये, इस प्रकार देखा जाता है कि जो वस्तु मनुष्य को ज्ञात नहीं है, उसको जानने की इच्छा हमेशा से इसमें रही है। विभिन्न समय में विभिन्न पद्धतियों का भी प्रयोग किया गया, इस को कार्यान्वित करने के लिए। जैसे कि ज्योतिष प्रणाली, हस्तरेखा विज्ञान, टैरो कार्ड, डाईस प्रक्रिया, आई चींग एवं प्रभा मण्डल (aura) से समझने की विधि या विभिन्न योगियों द्वारा सुक्ष्म शक्तियों का प्रयोग किया जाना इसका प्रमाण है। महाभारत में इसका उदाहरण भी उपलब्ध है, संजय को दिव्य चक्षु प्रदान किये जाने का, जिससे वह घट रही घटनाओं को देख सका।

ज्योतिष विज्ञान में भाग्य और पुरुषार्थ का समन्वय करते हुये जीवन के विषय को दर्शाया गया है। जैसे कि अरुण संहिता में लिखा है :- *बन्द मुट्ठी का खजाना, बाकी जब रहना नहीं। तदबीर अपनी खुद ही उठती, राज बन आता नहीं।*

अरुण संहिता में यह पक्ष महत्वपूर्ण है कि ज्योतिष प्रणाली से हम भविष्य की घटनाओं को जान सकते हैं। इसके इलावा विपरीत परिस्थितियाँ होने से इसमें उपायों का विधान भी है, जिससे हम प्रतिकूल परिस्तिथि को अनुकूल बना सकें।

यह ज्योतिष की एक स्वतंत्र प्रणाली है जो मानव जीवन के विभिन्न पहलूओं पर जैसे कि विवाह, सन्तान, व्यवसाय, आय, स्वास्थ्य और आयु आदि- आदि पर विस्तृत विचार करती है।

इसे ईश्वर की अनुकम्पा ही कहेंगे कि इस संहिता के प्रथम संस्करण की समित प्रतियों का हाथो हाथ स्वागत हुआ, अब हमें अरुण संहिता - लाल किताब ज्योतिष का दूसरा संस्करण निकालते हुये अति हर्ष हो रहा है। पाठकों के अनेकों पत्रों को पढ़ने से मालूम होता है कि अनेकों लोगों ने इस अरुण संहिता-लाल किताब के द्वारा अपने भविष्य को अनुकूल परिस्थितियो में लाने की चेष्टा की और वे सफल भी हुये। ज्योतिष पर जो कार्य हुये उनके विषय में हमें सूचनायें मिली है जिससे इस बात का सुखद् अनुभव होता है कि इस ग्रंथ का सदुपयोग हुआ है और आशा है कि भविष्य में भी होता रहेगा।

इस ज्ञान का लाचार व्यक्तियों पर तथा चिन्ताजनक परिस्थितियों में आम जनता का शोषण हेतू दुरुपयोग करने से दुरुपयोग करने वाले के मानसिक पटल तथा उसके कर्म विधान पर ही प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है एवं उसका व्यक्तित्व अस्त-व्यस्त हो सकता है।

हमारी यही चेष्टा है कि इसमें वर्णित उपाय तभी बताये जायें जब ज्योतिष के विषय में जानकारी पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाये।

इस ग्रन्थ के विषय में एक और बात स्पष्ट करना चाहेंगे कि इस को प्रकाशित करने में विभिन्न शक्तियों का उपयोग कई योगी- जनों एवं विशेषज्ञों की सहायता से किया गया। इसके पीछे ध्येय केवल यही है कि जन साधारण को इसका लाभ प्राप्त हो सके। इसके अतिरिक्त शीघ्र ही अरुण संहिता - लाल किताब हस्त रेखा विज्ञान का पूर्ण सस्करण ईश्वर अनुकम्पा से जन साधारण तक पहुँच जायेगा।

ॐ नमो नारायणय
अनादि कृष्ण दास
हरे कृष्ण ट्रस्ट चण्डीगढ़
द्वितीय संस्करणसीमित प्रतिलियॉं
हरे कृष्ण ट्रस्ट चण्डीगढ़

नवम् संस्करण

इसे प्रभु की कृपा अनुकम्पा ही कहें कि इस ग्रन्थ की प्रतिलिपियां सीमित समय में पाठकों के पास पहुँच गई हैं। जिसके फलस्वरूप इसका नवम् संशोधित संस्करण निकाला जा रहा है। सम्पादक मण्डल ने इस ग्रन्थ की भाषा को सरल बनाने का यथा सम्भव प्रयास किया है। जिससे पाठकों को ग्रन्थ के समझने में सुविधा होगी।

यहाँ पर हम यह भी कहना चाहेंगें कि इस श्रृंखला में और भी ग्रंथ निकाले गए हैं यथा - सामुद्रिक ज्ञान, हस्त रेखा एवं अरुण संहिता लाल किताब (चथुर्त भाग) यह सब इसी ग्रन्थ से सम्बंधित हैं। इसके अतिरिक्त प्रो०आर० सी० वर्मा ने लाल किताब एवं भारतीय ज्योतिष पर तुलनात्मक अध्ययन भी किया है। जो पुस्तक रूप में उपायों सहित प्रकाशित किया गया है। इसके साथ डा. अरुण द्वारा लिखित ज्योतिष एवं तन्त्र, मन्त्र द्वारा उपाए पुस्तक भी हाल ही में निकाली गई है।

इस ग्रन्थ के विषय में यदि कोई भी शंका का समाधान करना चाहे वह सम्पादक मण्डल से पत्र व्यवहार कर सकता है।

डा. अरुण , अनादी कृष्ण दास

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
अरुण संहिता लाल किताब	iv
दो शब्द	v
नवम संस्करण	vi
व्याकरण	
प्रथम ध्यान रखे खास तौर पर	1
पुरानी ज्योतिष और लाल किताब में अन्तर	1
लाल किताब के फरमान	2
फरमान नः 1	
1. कुदरत से किस्मत किस तरह पाई	2
2. उसकी कुदरत का हुक्मनामा कहाँ पाया गया	2
3. ऊँचे फलक का प्रकाश किधर है	3
4. आलिम को इल्म में शक क्या है	4
5. तकदीर पहले या तदबीर	4
6. किस्मत की ही गांठों से वह मण्डल बनेगा	5
हाथ में कुण्डली के खाने एवं ग्रह	6
कुण्डली के ग्रहों का पक्का घर	6
ग्रहों की मित्रता एवं शत्रुता	7
शरीर व ग्रह का संबंध	8
ग्रहों की अवधि	8
ग्रहों का समय	8
मध्यम ग्रह	8
ग्रह की आयु का प्रभाव	9
रियायती 40 दिन	9
ग्रहफल और राशिफल	10
35 साला चक्कर	10
जन्म दिन का ग्रह और जन्म समय का ग्रह	11
ग्रहों की किस्में –	
अंधे ग्रह, रतांध ग्रह, धर्मी ग्रह, साथी ग्रह आदि-आदि	12
उच्च ग्रह, नीच या पक्के घर का ग्रह	13
कायम ग्रह, बालिग ग्रह, नाबालिग ग्रह	13
7. बुत से रुह ने अपना घर क्यों पूछ लिया	14
ग्रह राशि का आपसी संबंध ग्रह उच्च नीच घरों में इसी प्रकार होते हैं	14
हथेली की किस्मे	15

8. 12 पक्के घर 16
कुण्डली का पक्का लग्न का घर- **खाना नं 1** 17
धर्म स्थान, उम्र बुढ़ापा - **खाना नं 2** 18
धर्म स्थान का दरवाज़ा 18
इस दुनिया से कूच का समय - **खाना नं 3** 20
माता की गोद - **पेट का जमाना खाना नं 4** 20
औलाद - भविष्य **खाना नं 5** *पाताल की दुनिया* **खाना नं 6** 21
***गृहस्थी चक्की अकाश*- खाना नं 7,** 22
मौत अदल **खाना नं 8** 23
किस्मत का आरम्भ - **खाना नं 9,** 24
किस्मत की बुनियाद का मैदान - **खाना नं 10** 24
गुरु स्थान - **न्याय स्थल - खाना नं 11** 25
इन्साफ - **मगर न्याय करने की जगह नहीं - खाना नं 12** 28
सोए हुए पक्के घर या पक्के घरों में बैठे सोए हुए ग्रह 29
सोया ग्रह खुद कब जागेगा 30
ग्रह दृष्टि/आम हालत 30
ग्रहों की आपसी दृष्टि का राशियों से संबंध, कुण्डली के खानों का संबंध 31
100 प्रतिशत और अपने से सातवें को देखने का अन्तर 31
विशेष-विशेष चीज़ों के लिए दृष्टि, सेहत, बीमारी, शादी, औलाद, मकान आदि। 33
योग की दृष्टि, भाव दृष्टि0 टकराव, आपसी मदद, बुनियाद 34
ग्रहों का आपसी सहायता, आम हालत, टकराव, नींव, धोखा 34
ग्रहों की आपसी दृष्टि के वक्त उनके आपसी प्रभाव की मिकदार 35
खानों की दृष्टि - योग दृष्टि आपसी सहायता, धोखा अचानक 36
कुण्डली में पहले या बाद के घरों के ग्रह 36
उलझन के ग्रह 37
ऋण पितृ के ग्रह 37
ऋणों की किस्में 38
किस प्रभाव से ऋण पितृ दृष्टिगोचर होगी और उनका उपाय 39
वृहस्पति, मंगल, बुध, शनि 39
सूर्य, चन्द्र, शुक्र , मंगल 40
बुध, शनि, 41
राहू, केतु 42
लाल किताब की चन्द्र कुण्डली 44
किस ग्रह की चल के वक्त महादशा होगी 45
धोखे के ग्रह 46

किस्मत का ग्रह 48
9. **सहायता के लिए उपाय** **48**
यदि आम उपाय काम न दें तो घंटों में प्रभाव देने वाले उपाय **49**
विवाह के समय के उपाय, जन्म दिन के हिसाब से उपाय **49**
ग्रह - उपाय जो सहायता देगा **51**
स्त्री पुरुष की कुण्डली का फर्क 52
10. **ग्रह का प्रभाव** **53**
मसनुई ग्रहों का असर विशेष बातों का होगा ***55***
नेक ग्रह का मंदा प्रभाव ***55***
ग्रहचाल में चीजों पर रंग का प्रभाव 56
सांझे घरों का प्रभाव देखने का ढंग 57
मुश्तरका घरों का आपसी संबंध 57
विशेष असर 60
हर ग्रह के अच्छे - मंदे जाने की निशानी 61
11. **ब्राह्मण्ड में ग्रहचाली बच्चे की बदलती हुई अवस्था** **62**
12. **कुण्डली की बनावट और दुरुस्ती** **64**
हस्त रेखा से जन्म कुण्डली बनाने का ढंग **65**
हाथ पर जन्म कुण्डली के खाने **65**
वृहस्पति का खाना, सूर्य का खाना **66**
चन्द्र, शुक्र, का खाना **67**
मंगल,मंगल-बद, बुध का खाना **68**
हथेली पर शनि का निशान 69
बंद मुट्ठी व कुण्डली का आपसी संबंध 70
फलादेश देखने का ढंग 70
कुण्डली के खाके की रेखाएँ 71
ग्रह कुण्डली की मकान कुण्डली की दुरुस्ती 72
मकान के ग्रह और खाना किन दिशाओं में 72
मकान कुण्डली के पक्के घर 73
13. **वर्षफल** **74**
आम वर्षफल 74
14. **कुण्डली के प्रकार** **78**
कुण्डली पुरुष की प्रबल होगी या स्त्री की 78
15. **फलादेश देखने का ढंग** **79**
वर्षफल चार्ट 80

वृहस्पति

वृहस्पति - विधाता जगत् गुरु ब्रह्मा जी 83

विभिन्न भावों में वृहस्पति की दोहरी चालें 84

वृहस्पति 12 घर आम हालत 85

वृहस्पति का ग्रहों से सम्बंध 85

वृहस्पति खाना नं 1 *फकीरी पूर्ण* 88

वृहस्पति खाना नं 2 *जगत् का धर्म गुरु और विद्या का स्वामी* 91

वृहस्पति खाना नं 3 *ज्योतिष व आशीष का स्वामी* 94

वृहस्पति खाना नं 4 *चन्द्र की राजधानी* 95

वृहस्पति खाना नं 5 *ब्रह्मज्ञानी परन्तु आग का बांस, गुस्से वाला* 96

वृहस्पति खाना नं 6 *साधु स्वभाव* 98

वृहस्पति खाना नं 7 *पिछले जन्म का साधु, राजा जनक की तरह सन्यासी* 99

वृहस्पति खाना नं 8 *मुसीबत के समय परमात्मा की सहायता का मालिक* 101

वृहस्पति खाना नं 9 *योगी एवं धन का त्यागी, सनहरी खानदान* 103

वृहस्पति खाना नं 10 *पहाड़ी इलाके का गृहस्थी* 104

वृहस्पति खाना नं 11 *खजूर के पेड़ की भांति अकेला* 106

वृहस्पति खाना नं 12 ***उत्तम ज्ञानी वैरागी*** 107

सूर्य

110

सब का पालन करने वाला तपस्वी राजा, विष्णु भगवान् जी 110

सूर्य आम हालत12 घर 111

मन्दे प्रभाव का उपाय 115

सूर्य खाना नं 1 *सतयुगी राजा, हकीम* 115

सूर्य खाना नं 2 *अपने भुजा बल का स्वामी* 117

सूर्य खाना नं 3 *धन का राजा, स्वयं कमा कर खाले वाला* 118

सूर्य खाना नं 4 *दूसरों के लिए जोड़ जोड़ कर मरे* 119

सूर्य खाना नं 5 *परिवार तरक्की का मालिक* 120

सूर्य खाना नं 6 *धन से बेफिक्र, भाग्य पर सन्तुष्ट* 122

सूर्य खाना नं 7 *कम कबीला, डरता डरता मर रहे* 123

सूर्य खाना नं 8 *तपस्वी राजा, सांच को आंच* 126

सूर्य खाना नं 9 ***लम्बी उम्र, सूर्य ग्रहण के बाद का सूर्य*** 127

सूर्य खाना नं 10 *धन का मालिक मगर वहमी* 128

सूर्य खाना नं 11 *पूर्ण धर्मी मगर अपनी ही ऐश पसंद* 129

सूर्य खाना नं 12 *सुख की नींद, मगर पराई आग से जल मरने वाला* 130

चंद्र 131

जगल की धरती माता, दयालु शिव जी भोले नाथ 131

चन्द्र आम हालत 12 घर 133

चन्द्र खाना नं 1 — माता के जीवत होने तक खालिस दूध 136

चन्द्र खाना नं 2 — स्वयं पैदा की हुई माया की देवी 138

चन्द्र खाना नं 3 — उम्र का मालिक फरिश्ता जिससे मौत भी डरे 140

चन्द्र खाना नं 4 — खर्चने पर और बढ़ने वाली आय की नदी 142

चन्द्र खाना नं 5 — बच्चो के दूध की माता तथा आत्मिक नदी 144

चन्द्र खाना नं 6 — धोखे की माता तथा खारा कड़वा पानी 145

चन्द्र खाना नं 7 — बच्चो की माता खुद लक्ष्मी अवतार 147

चन्द्र खाना नं 8 — मुर्दा माता, जला दूध 148

चन्द्र खाना नं 9 — दुखियों का रक्षक समुद्र 150

चन्द्र खाना नं 10 — जहरीला पानी 152

चन्द्र खाना नं 11 — होते हुए भी न के बराबर 154

चन्द्र खाना नं 12 — तुफान से बस्तियाँ उजाड़ने वाला दरिया 155

शुक्र लक्ष्मी जी 159

शुक्र आम हालत 160

शुक्र खाना नं 1 — काग तथा मच्छ रेखा की रंग-बिरंगी माया 162

शुक्र खाना नं 2 — कुटिया उसकी गऊ घाट 164

शुक्र खाना नं 3 — **औरत की इज्जत करता - फिर बुरा क्यों** 166

शुक्र खाना नं 4 — अपना इश्क औरतों का 167

शुक्र खाना नं 5 — बच्चों से भरा परिवार 169

शुक्र खाना नं 6 — दौलत के महल वरना नीच दौलत - कुलक्ष्मी 170

शुक्र खाना नं 7 — जैसा यह वैसी वह साथी का प्रभाव, अकेला नेक 173

शुक्र खाना नं 8 — जली मिट्टी की हालत स्त्री 175

शुक्र खाना नं 9 — मिट्टी काली आंधी - मंगल बद 176

शुक्र खाना नं 10 — शनि उज़म तो धर्म मूर्ति (पुरुष या स्त्री) 178

शुक्र खाना नं 11 — सुन्दर स्त्री-पुरुष माया के संबंध में घूमता लट्टू 179

शुक्र खाना नं 12 — भव सागर से पार करने वाली गाय 180

मंगल शास्त्रधारी 182

मंगल आम हालत 12 घर 183

मंगल के अपने भाई बन्धु 184

मंगल खाना नं 1 — इंसाफ की तलवार 185

मंगल खाना नं 2	*धर्म मूर्ति भईयों की पालना करता हुआ*	187
मंगल खाना नं 3	*लोगों के लिए फलों का जंगल*	188
मंगल खाना नं 4	*जलती आग*	189
मंगल खाना नं 5	*जद्दी घर से बाहर लगातार रहना लावल्दी ही देना*	192
मंगल खाना नं 6	*संन्यासी, साधू*	193
मंगल खाना नं 7	*मीठा हलवा, विष्णु पालना*	195
मंगल खाना नं 8	*मौत का फंदा बलि की जगह*	196
मंगल खाना नं 9	*यदि बद तो नास्तिक बदनाम*	197
मंगल खाना नं 10	*चींटी के घर भगवान् राजा*	198
मंगल खाना नं 11	*गुरु चरणों के चरणामृत का आदि*	199
मंगल खाना नं 12	*सुख का राजा*	200
बुध	**शक्तिमान वनस्पतियों का राजा**	202
बुध आम हालत 12 घर		203
बुध खाना नं 1	*राजा या हाकिम, खुदगर्ज शरारती बदनाम*	208
बुध खाना नं 2	*योगी, राजा, मतलब परस्त, ब्रह्मज्ञानी*	209
बुध खाना नं 3	*थूकने वाला, कोढ़ी मंदा*	211
बुध खाना नं 4	*राजयोग*	213
बुध खाना नं 5	***मुंह से निकला ब्रह्म वाक्य उत्तम होगा***	214
बुध खाना नं 6	*गुमनाम योगी और दिल का राजा*	215
बुध खाना नं 7	*संसार के लिये पारस*	217
बुध खाना नं 8	*छुपा तबाही का फंदा*	218
बुध खाना नं 9	*कोढ़ी तथा राज एक साथ*	220
बुध खाना नं 10	*प्रसन्नता से निर्वाह करने वाला*	222
बुध खाना नं 11	*धनी जन्म से*	223
बुध खाना नं 12	***नेक लम्बी आयु अच्छा जीवन बिताने वाला***	224
शनि	**- इच्छाधारी**	227
शनि आम हालत 12 घर		228
शनि खाना नं 1	*बचपन, जवानी, बुढ़ापा उज़्म*	232
शनि खाना नं 2	*गुरु शरण*	234
शनि खाना नं 3	*अगर हुआ तो दो गुणा मन्दा*	236
शनि खाना नं 4	*पानी का साँप*	237
शनि खाना नं 5	*बच्चे खाने वाला साँप*	238

शनि खाना नं 6	*लेख की स्याही एक गुणा मंदा*	240
शनि खाना नं 7	*कलम विधाता रिजक*	242
शनि खाना नं 8	***हैडक्वाटर***	244
शनि खाना नं 9	*कलम विधाता मकान मर्दा*	245
शनि खाना नं 10	*लेख का कोरा खाली कागज़*	247
शनि खाना नं 11	*लिखे विधाता - स्वयं विधाता*	248
शनि खाना नं 12	*कलम विधाता आराम*	250

राहु रहनुमाएं गरीबां मुसाफरां 252

राहु आम हालत 12 घर		253
राहु खाना नं 1	*सीढ़ी पर चढ़ने वाला हाथी*	255
राहु खाना नं 2	*बरसाती बादल*	256
राहु खाना नं 3	*आयु तथा धन का स्वामी*	258
राहु खाना नं 4	*धर्मी मगर धन के आम ग़म*	259
राहु खाना नं 5	*शरारती, संतान गर्क*	260
राहु खाना नं 6	*फाँसी काटने वाला सहायक हाथी*	261
राहु खाना नं 7	*लक्ष्मी का धुआँ निकालने वाला*	262
राहु खाना नं 8	*मौत का मालिक, कढ़वे धुएं का संदेश*	264
राहु खाना नं 9	***डाक्टर, मगर बेईमान***	265
राहु खाना नं 10	*साँप की मणि*	266
राहु खाना नं 11	*पिता को गोली मारे, या मुंह न देखे*	267
राहु खाना नं 12	*शेख चिल्ली*	269

केतु -सन्देश 271

संसार की आँधी में, संसार में लड़के पोते, आगे आने वाले कुटुम्ब

केतु आम हालत 12 घर		272
केतु खाना नं 1	*हर समय बच्चे बनाने वाला*	274
केतु खाना नं 2	***हुक्मरान***	275
केतु खाना नं 3	***दुन-दुन करते रहने वाला कुत्ता***	276
केतु खाना नं 4	***बघो का डराने वाला कुत्ता***	277
केतु खाना नं 5	*अपनी रोटी के टुकड़े के लिए गुरु का निगरान*	278
केतु खाना नं 6	*दो रंगी दुनिया*	279

केतु खाना नं 7	शेर का मुकाबला करने वाला कुबा	281
केतु खाना नं 8	मौत के यम को पहले देख लेने वाला कुबा	282
केतु खाना नं 9	**बाप का हुक्म मानने वाला बेटा**	284
केतु खाना नं 10	चुपचाप अपने रास्ते पर चलने वाला मौकाबाज़	285
केतु खाना नं 11	गीदड़ स्वभाव कुबा	286
केतु खाना नं 12	ऐशों आराम जद्दी विरासत	287
	दो ग्रह आपसी के फलादेश	289
	वृहस्पति दो ग्रह योग	289
वृहस्पति-सूर्य	*शाही धन*	290
वृहस्पति-चन्द्र	*दिया हुआ धन, कानूनी महकमा, बड़ का वृक्ष*	292
वृहस्पति-शुक्र	*बूर के लड्डू, दिखावे का धन*	296
वृहस्पति-मंगल	*श्रेष्ठ गृहस्थी, धन*	299
वृहस्पति-बुध	*पिता की हालत पर प्रभाव*	301
वृहस्पति-शनि	*संन्यासी फकीर की गाथा जिसका भेद न खुल सके*	303
वृहस्पति-राहु	*फकीरों की कुटीया में हाथी, बुजुर्गों को दमे की बीमारी*	307
वृहस्पति-केतु	**पीला नीम्बू, गुरु गद्दी**	310
	सूर्य दो ग्रह योग	312
सूर्य-चन्द्र	*बड़ के वृक्ष का खालीस दूध, घोड़ा, तांगा*	312
सूर्य-शुक्र	सन्तान जन्म देरी करता	313
सूर्य-मंगल	*जागीरदारी का धन*	315
सूर्य-बुध्र	*नौकरी संबंधी कलम*	316
सूर्य-शनि	झगड़ा कोई न करता	320
सूर्य-राहु	किस्मत की चमक	323
सूर्य-केतु	*कानों का कच्चापन बर्बादी दे*	325
	चन्द्र दो ग्रह योग	327
चन्द्र-शुक्र	*गले में चान्दी सहायक*	327
चन्द्र-मंगल	*श्रेष्ठ धन*	329
चन्द्र-बुध	*मां-बेटी, दरिया के पानी में रेत*	331
चन्द्र-शनि	*चन्द्र और शनि*	332
चन्द्र-राहु	आधी आयु	335
चन्द्र-केतु	*चन्द्र ग्रहण*	336

शुक्र दो ग्रह योग 337

शुक्र-मंगल *मिट्टी का तंदुर, मीठा अनार, गेरू, स्त्री धन* 337

शुक्र-बुध *आधी सरकारी नौकरी, बनावटी सूर्य, तराजू* 338

शुक्र-शनि *फर्जी अय्याश, काली मिर्च* 341

शुक्र-राहु *मिट्टी भरी काली अंधेरी* 343

शुक्र-केतु काम देव की नाली 344

मंगल दो ग्रह योग 345

मंगल-बुध *मौत बहाना, बुध अब शेर के दांत होंगे* 345

मंगल-शनि **डाक्टर, डाकू, फोजी इत्यादी** 347

मंगल-राहु *चुपचाप, नेक हाथी जो केतु का असर दे शाही सवारी* 351

मंगल-केतु *शेर की नसल का कुज़ा* 351

बुध दो ग्रह योग 353

बुध-शनि *जयदाद मनकूला, आम का वृक्ष* 353

बुध-राहु *तलीर पक्षी जो बड़ (चन्द्र, वृहस्पति) के वृक्ष पर आम* 354

बुध-केतु *बकरी एक जानवर है जिससे हाथी भी डर कर भागता है* 356

शनि दो ग्रह योग 357

शनि-राहु *मौत और बिजली का यम, साँप की मणि* 357

शनि-केतु *शनि के साथ केतु नेकी का फरिश्ता होगा* 359

राहु - केतु 360

तीन ग्रहों का साँझा फल 363

तीन ग्रहों का साँझा फल 363

चार ग्रहों का फलादेश 372

पाँच ग्रहों का फलादेश 373

सभी ग्रह इक्ट्ठे 374

विषय को पढ़ने के लिए कुछ सहायक उदाहरण 374

विषय को पढ़ने के लिए कुछ सहायक उपाय 374

राजयोग टेवे 390

दिमाग के 42 खाने 396

खानावार चीज़ें 399

खानावार चीज़ें 399

ग्रहों की संबंधित वस्तुएँ 402

आपसी ग्रहों से संबंधित चीजें 405

हर ग्रह से संबंधित मकान 410

	हर ग्रह से संबंधित इंसान	411
	विभिन्न ग्रहों की रेखाएं	424
17	**योग बन्धन**	426
	किस्मत	426
	किस्मत का प्रभाव	427
	शादी	428
	शादी की रेखा	431
	खबरदारी	435
	आय	438
	माया के नाम	439
	साहुकार माली लेन देन	443
	संतान	444
	माता पिता और संतान का आपसी संबंध	447
	महकमें (विभाग)	451
	कलम की स्याही	451
	सफ़र का हुक्मनामा	452
	मकान	453
	जन्म कुण्डली में शनि बैठा हो	454
	मकान के कोने	454
	मकान आने जाने का सबसे बड़ा दरवाजा	456
	स्वास्थ्य और बीमारी	458
	हस्त रेखा	458
	ग्रह बीमारी का सब्बंध	460
	इंसानी आयु	461
	आयु कीतने साल होगी	462
	ग्रहों की आयु	464
	चन्द्र के स्थान से मौत का दिन	467
	मृत्यु का आखिरी वर्ष व दिन	468
	आयु के साल	468
	मौत बहाना	469
	नकारा कूच (मौत का वक्त)	471
18	**आशीर्वाद**	472

इति शुभम्

****

वृहस्पति

वृहस्पति

विधाता जगत् गुरु, ब्रह्मा जी

दो रंगी दुनिया के, रंग दोनों देखों
मगर आँख दुःख जाय, अपनी आँख न देखों

1. दो रंगी दुनिया एक मूंछ काली तो दूसरी सफेद।
2. दर्द आँख मकानों मशीनों की ाराबियाँ शत्रु की मंदी घटनाएं धोखा दर्द की बीमारियाँ आदि।

मनुष्य की मुट्ठी के अंदर खाली खलाव या आकाश में फैले रहने, हर दो जहान में जा सकने और सारे ब्रह्माण्ड तथा मनुष्य के अंदर-बाहर चक्कर लगाने वाली हवा को ग्रह मंडल मे वृहस्पति के नाम से याद किया गया है। जो बद हालत में प्राकृतिक के साथ कही हुई, भाग्य का भेद और खुल जाने पर अपने जन्म से पहले भेजे हुए खजाने का गुप्त, बंद और खुली हर दो हालत की बीच की हर प्राणी के जन्म लेने तथा मर जाने का बहाना होगी।

वृ० यह ग्रह दोनों ही जहानों का स्वामी माना गया है, वृ० सब ग्रहों का गुरु है। अत: एक ही घर में बैठे वृ० का प्रभाव चाहे राजा या फकीर, सोना या पीतल, सोने की बनी लंका तक दान कर देने वाला प्राणी या सारे जमाने का चोर, साधु जिसका धर्म ईमान न हो, हर दो हालत में से चाहे किसी भी ढंग का हो, मगर उसका बुरा असर शुरु होने की निशानी सदा शनि के भेद प्र ाव के द्वारा होगी और शुभ प्रभाव स्वयं वृ० के ग्रह की चीज़ें या (जद्दी जगह) से उत्पन्न होगी ।

विभिन्न भावों में वृहस्पति की दोहरी चालें

घर	शुभ हालत	अशुभ हालत
1	**प्रसिद्ध राजा**	फकीर कमाल का मगर निर्धन
2	सबको बांटने वाला जगत् गुरु	अपने घर को बरबाद करे या कुलनाशक
3	शेरों का प्रसिद्ध शिकारी	बुजदिल, मनहूस, भेदभाव
4	राजा इन्द्र और विक्रमादित्य के साया का स्वामी ।	अपनी बेड़ी डुबाने वाला नाविक
5	औलाद के जन्म दिन से प्रसन्न	बच्चा पेट से ही मुर्दा पैदा हो
6	हर वस्तु अपने-आप मिले	निर्धनता से दम घुटता है ।
7	धर्म कार्य का मुखिया व धनी	इसका दत्तक पुत्र भी दु:खी ही हो
8	सोने की लंका भी दान कर दे	धन खज़ाने की राख का स्वामी
9.	घरेलू चमकता सोना पैतृक नस्ल	धन खज़ाने की र ा का स्वामी
10.	जिस कदर टेढ़ा चले,मिट्टी सोना हो,	निर्धन, दु:खी
11.	सांप भी सजदा करे,	कफन भी पराया हो
12.	दरिया की तरह घर में धन आवे	धन का प्रयोग न कर सके चाहे राजधानी का स्वामी हो।

वृहस्पति में मिलावट

1. नर ग्रह (सू०, मं०) के साथ या दृष्टि आदि से मिलने पर तांबा सोना हो जायेगा।
2. स्त्री ग्रह (शुं० , चं०) के साथ या दृष्टि से मिट्टी, से भरा पानी भी उत्तम दूध बन जायेगा।
3. वृं0 के बिना सब ग्रहों में मिलने जुलने की या दृष्टि की शक्ति पैदा न होगी।
4. पापी ग्रह (शं०, के तथा रा०) के मंदे होने पर वृं० सोने की जगह पीतल होगा, हवा की जगह जहरीली गैस होगी।
5. वृं० और राहु दोनों खाना नं० 12 (आसमान) में इकट्ठे ही माने गये है। वृं० दोनों जहान् गैबी तथा दृष्टिगोचर का मालिक है, जिसमें आने जाने के लिए नीले रंग में राहु का आसमानी दरवाजा है। अत: जैसा ये दरवाज़ा होगा वैसा ही हवा के आने जाने का हाल होगा। अगर राहु टेढ़ा चलने वाला हाथी, सांस को रोकने वाला कड़वा धुँआ या जमीन को पताल से ूचाल बन कर हिलाता रहे तो वृ० भला नहीं हो सकता।

उच्च राहु या पहले बैठा, *आया तरफ गुरु पहली हो।*
गुरु मालिक हो दोनों जहां का, *शक्ति छुपी तथा रुहानी हो॥*
दीगर हालत में गुरु गृहस्थी, *मालक जहां इक होता हो।*
मामा दौलत का बंदा गुलामी, *ताकत रुहानी छोड़ता हो॥*

6. यदि राहु उत्तम दरवाजा हो तो वृ० बुरा प्रभाव न देगा।
7. अकेला वृ० (हर तरह से) चाहे वह दृष्टि आदि से कितना ही मंदा हो जातक पर कभी बुरा प्रभाव न देगा।
8. बरबाद हो चुका वृ० आम प्रभाव के लिए खाली बु० गिना जायेगा जिसका फैसला बु० के अपने स्वभाव पर होगा।
9. शत्रु ग्रहों (बु० , शु० , रा० , श० ,) पापी ग्रह यानि जब श० को राहु या केतु किसी तरह भी साथ या दृष्टि से आ मिलते होने के समय मंदा हो जाने की हालत में वृ० सदा बु० का प्रभाव ही देगा और वृ० उपाय योग्य होगा जिसके लिए साथी शत्रु ग्रह का उपाय सहायता देगा ।
10. ग्रह मंडल के सब ग्रहो को छेड़छाड़ करने, राहु केतु को चलाने वाला वृ० है, यानि रा०, के० के शरारत करने से पहिले वृ० स्वयं अपनी चीजों या काम या रिश्तेदार बाबत वृ० के जरिया खबर दे देगा, इसलिए कहा है :

असल जलता दो जहांन[1] का, *ग्रहण[2] शत्रु[3] साथी जो।*
चोर बनता 6 या 11, *मंगल टेवे ज़हशी[4] जो॥*

1. दोनों ही (सामने तथो छुपे हुए) जहान् या वृ० के नेक और बुरे हर दो तरह के असरों की शक्ति।
2. सूर्य ग्रहण (रा०, सू० एक साथ), चं० ग्रहण (चं० के० एक साथ) के शत्रु ग्रह बु०, शु०, रा० या श० पापी ग्रह।
3. खाना नं: 2-9-11-5 में बु०, रा० एक साथ या जुदा-जुदा हों तो वृ० का असर मंदा ही होगा ।
4. मंदा मंगल बद या मंगलीक जिस के लिए मं: खाना नं: 4 में देखें।

किस घर में वृ० बैठा हो	किस ग्रह को सहायता देगा
1 से 5 तक या 12 में	शं० और सू० दोनों
6 से 11	केवल श० को

वृहस्पति 12 घरों में आम हालत

विद्या आयु घर पहले सोना[1] *गुरु जगत घर दूसरा हो[2]*
शेर गरजता तीसरे माना, *भला बैठा बुध जब तक हो।*
चौथ विक्रमी[3] तख्त बत्तीसी[4] *पाँच पूर्ण ब्रह्म होता हो।*
छटे मिले हर चीज जो मुफती, *दुखिया बेटे घर सांतवें हो।*
भाग्य उदय[5] आयु हो लम्बी, *योगी नोवें स्वयं बनाता हो।*
10 वें कमी, धन, चाहे अक्ल हो कितनी, *धर्म कर्म घर 11 हो।*
राहु के पाप हालत पर रात की निद्रा, *गृहस्थ सुखी घर 12 जो*
काम छोड़े जब राम भरोसा, *शत्रु वैरी सिर कटता हो।*

(1) जब वृं० जागता और कायम हो ।
(2) जब तक नं० 8 खाली हो, वृ० का रुहानी असर उत्तम होगा ।
(3) राजा विक्रमादित्य (संवत वाला)
(4) 32 परियों के कंधों पर उड़ता रहने वाला त त ।

<u>वृ० का खाना होगा :-</u>

वृ. खाना 2	**धर्म स्थान**	वह जगह जहां धर्म का कारोवार एवं पूजा उपदेश हो।
11.	**वृ० के धर्म दरबार लगाने और वृ० की अपने जज की भांति बैठने की जगह**	धर्म अदालत अलंकारी आवाज़ का दरबार
12.	**वृ० की समाधि लगाने की जगह**	परलोक की हवा, गुप्त धार्मिक विचार, प्रज्ञा

5.	संतान के खून में धर्म और सोने का हिस्सा पैदा करने वाला गृहस्थी, परिवार का स्वामी ।
9.	सोने की तरह पूथ्वी (पूर्वजों की हालत) जैसा सोने का देवता, दोनों जहानों (लोकों) के धर्म की नाली, घर से ही धर्म का स्वामी ।
1-4,7-10	जातक के अपने लिए उत्तम, प्रकृति साथ लाई हुई भाग्य का भेद, अपने शरीर के लिए उत्तम, हकीकी और दुनियावी प्रेम की ताकत, आंतरिक शक्तियाँ, दुनियावी शक्ति की बरकत हो।
1 से 5 तथा 12	उत्तम आराम देने वाला, उत्तम सहायक, सोना जैसा वृ० होगा ।
6 से 11	मंदी हालत, वृ० लोहे जैसा, निर्धन, दु:खी करने वाला हो ।
3, 5, 9,11	बाहरी चाल, व्यवहार अपने जन्म से पहले भेजे खजाने का भेद ही, अगले जहान में ले जाने की नेकी, चीज को पा सकने की शक्ति हो। चमक जो मार्ग दर्शक होगी ।
2, 8, 12	धन के लिए मध्यम हालत में रखेगा, मगर रुहानी हालत में उत्तम, जागती किस्मत का स्वामी हो, हर दो जहान, जन्म से मृत्यु तक हर जगह मध्य हालत देगा ।
6	संसार की उलझन में जकड़ा साधारण साधु की तरह भाग्य के चक्र में घूमते गृहस्थी की तरह सांस लेता हो ।

वृहस्पति का ग्रहों से स बन्ध

1. **राहु**	जन्म या वर्ष कुंडली मे जब राहु कुंडली में उत्तम, उच्च या वृ० से पहने घरों में हो, यानि 1 से 6, 8 (3-6 विशेषकर) में हो और वृ० के मित्र ग्रह सू० , चं० , मं० उत्तम प्रभाव के हों	तो मनुष्य को स्वयं अपने भाग्य और दूसरों की सहायता की हि मत में बढ़ावा देगा और आराम अपने आप मिलेंगे। वृ० बाह्य और गुप्त शक्ति, आत्मिक और संसारी प्रेम, शारीरिक और रुहानी शक्ति देगा ।

2. **चन्द्र नेक हो**	गैसीय और तरल से बनी हुई चीजों का उत्तम प्रभाव होगा, उत्तम भूतकाल के हालात छिपे रहेगें ।
3. **सूर्य नेक हो: -**	स्वयं अपने आप का और संतान का उत्तम प्रभाव होगा, भविष्य उत्तम, राजा प्रजा की सहायता उत्तम मिलेगी ।
4. **मंगल नेक हो**	मित्र व भाई बन्धु उत्तम सहायक हो, वर्तमान उत्तम ।
5. **मं० बद (सू०, श०एक साथ) या वृ० खाना नं० 6 से 11 में हो**	तो साधु बन कर चोर के काम करे । सोने का नुकसान हो। वृ० जातक के रास्ते मे रुकावट, शनि की घटनाएं मंदी की निशानी होगी।
6. **सू० , चं० , मं० के अतिरिक्त किसी भी ग्रह के साथ हो**	वृ० केवल एक जहान (लोक)का स्वामी रहेगा ।
7 **सू० , रा० साथ या (चं०, के०) साथ हो**	ना केवल वृ० का अपना प्रभाव मंदा और निराश होगा बल्कि दृष्टि के ढंग पर जिस घर या ग्रह स बन्ध हो, वहां भी मंदी हालत हो, निराश हो, दम घोंटू आँधी हो, बर्फानी हवा हो, मंदा भाग्य हो।
8. **मं०, श० या मं० ,चं० वृ० को देखते हों** (आयु रेखा के साथ **एक और रेखा होगीं**)	तो छुपी सहायता मिलेगी और वृ: आयु देता होगा।)
9. **शनि से स बंध** **श: नं: 1 और वृ: नं: 6,7 या वृ: नं:1 और 3,6,9, में शनि हो**	धन रेखा जो विवाह से और बढ़ेगी जब तक दोनों में से यानि (वृ० तथा शनि) में से कोई एक या दोनों नीच ना हो यानि शनि ाना नं० 1 और वृ० नं० 10 में वर्षफल में ना आ जाए।

उपाय:- **मंदे फल के समय शनि की चीजें धर्म स्थान में दे।** ***जब शनि वृ० को देखे किसी और ग्रह के साथ, मगर वृ० और शनि दोनों जुदा-जुदा हों तो इस प्रकार असर होगा:***

शनि का घर	तो वृ० किस घर में बैठ कर मंदा प्रभाव देगा (हालाँकि दोनों बराबर के ग्रह हैं ।)
1	7
2	8,12
3	5,9,11
4	2,8,10,11
10	2, 3, 4, 5
5,6,7,8,9,11, 12 में अकेला शनि	अकेला बैठा वृ: कभी मंदा प्रभाव न देगा चाहे वह कैसा भी और कहीं भी बैठा हो।
1,6	वृ: का प्रभाव प्राय: मंदा ही होगा।

वृ० अगर हवा माने तो शनि को पहाड़ गिने। मानसून पवनें जब कभी भी पहाड़ से टकरायेगीं तो लाभप्रद वर्षा होगी, लेकिन अगर किसी दूसरी वजह से उलट चल पड़े तो न सिर्फ शनि के मकान बिकवा देगी बल्कि शनि के पहाड़ों को बारीक मिट्टी या स्त्री जाति या दूसरी मुर्दा माया बुध वायदा फरामोशी या राहु की गुप्त शरारतों की आदत होगी।

खाना नं: 6 में शनि का अपना प्रभाव सदा शक्की होगा, मगर श० नं० 6 के समय वृ० अवश्य ही मंदा होगा। ऐसे समय चलते पानी में नारियल या बादाम बहाना उत्तम रहेगा।

यदि शनि पहले घरों में, वृ० बाद के घरों में, तो बारिश की हवा खाली चली जाएगी।

लेकिन वृ० पहले घरों में, श० बाद के घरों में-तो कीमती वर्षा होगी।

वृ० देखता हो श० को :-

दृष्टि	वृ: का घर	शनि का घर:	असर
दृष्टि 5० प्रतिशत	5 3	9 9 या 11	जादूगरी का स्वामी बना देगा
दृष्टि 25 प्रतिशत	2 8	6 12	योगा यास का स्वामी

श० देखता हो वृ० को तो :-

उम्र शनि में पिता पर भारी, *मकान शनि जब बनता हो।*
चश्मा चन्द्र धन हर दम जारी, *जमीन चन्द्र ज़र रखता हो।।*

शनि 2 या 5 में और वृ० हो 9 या 12 में और शनि की आयु के 9, 18, 36 वर्ष वृ० (पिता, दादा, गुरु) की आयु तक के लिए मंदा, जिसका सबूत उसके मकान में लोहे का ताला (मकान बंद रहना) मंद भाग्य का अलार्म होगा। प्राकृतिक और शारीरिक कमजोरी और धर्म की हालत मंदी होगी।

10. केतु से स बंध :- जब वृ० और केतु दोनों जुदा-जुदा हो और

अ:- केतु पहले घरों में, वृ० बाद के घरों में तो वृ० मंदा होगा।

ब:- वृ० पहले घरों में, के० बाद के घरों में दोनों की बजाये चन्द्रफल रद्दी हो।

11. बुध से स बंध :-

वृ० के साथ या वृ० की दृष्टि में बुध हो तो वृ० का ही नाश हो जायेगा, परन्तु खाना नं० 2 और 4 में बुध अकेला या वृ० के साथ सदा अच्छा प्रभाव देगा, दुश्मनी न करेगा, विशेषकर माली हालत मंदी न होगी। यदि बुध कुंडली में बाद के घरों में (7 से 12) यदि वृ० पहले घरों में (1 से 6) तो वृ० का 34 साल आयु तक उत्तम फल और बुध का 35वाँ वर्ष मँदा असर शुरु कर देगा। यदि बुध कुंडली के पहिले घरों में और वृ० बाद के धरों में हो तो बुध 34 साल तक अच्छा और व० 34 साल तक मंदा रहेगा। अर्थात् कि बुध और वृ० आपस में देख रहे हों तो वृ० का असर मंदा ही रहेगा बल्कि वृ० को बुध अपने चक्र में बांध लेगा। ऐसी हालत में वृ० का बिगड़ा प्रभाव निम्न हालत पैदा होने पर ठीक होगा:-

वृ० अपनी चाल के हिसाब से (यानि वर्षफल में) शनि के घरों (10 ,11) या सू० के घर (5) में आ जाये या जब श०,

सू० में से कोई वर्षफल में वृ: के घरों (2,5,9,12) में आ जाये या जब शनि खाना नं० 5 में आये और सूर्य खाना नं: 2,5,9,12 में हो जाये।

ऊपर कही हुई हालत में यदि स०, चं०, श० में से कोई भी शुभ हो तो वृ० का प्रभाव नेक होगा वरना बिना मतलब और तबाह करने वाली कहानियों में रात गुजारता होगा।

वृहस्पति खाना नं: 1

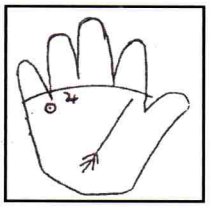

इल्म राज तेरा खजाने की चाबी,
एक ही समय[1] पैदा हुआ दो भाई,
विद्या ऊंची हो कोई डिग्री लम्बी,
शाप देते ऋण पितृ[2] टेवे,
केतु चन्द्र बुध अच्छे[3] होते,
सूर्य शे सात आठ ग्यारह[4] मंदे,
फक्कीरी पूर्ण या पावेगा नवाबी।
एक राजा, दूसरा फकीर बना है।
आयु धन विधाता हो।
बी.ए. पढ़ा न कुल कोई हो।
पीरी राजा संन्यासी हो।
गुरु हुआ तब मिट्टी हो।

हस्त रेखा

वृ रेखा — भाग्य रेखा की जड़ पर जब चार शाखी रेखा हो।

सूर्य के वुर्ज — पर बुध की ओर एक चक्र हो वृ का अपना निशान या दोनों हाथों को इक्ट्ठा गिन कर उंगलियों पर एक शंख या एक चक्रर या एक सीधी रेखा वृ के पर्वत पर हो।

1. चाहे एक ही माता से या एक समय दो माताओं से एक राजा के यहां, दूसरा निर्धन के घर जन्म ले परन्तु वह भाई कहे जायेगें।
2. ऋण पितृ खाना नं० 2, 5, 9, 12 में बु०, शु०, रा० या श० पापी ग्रह हो कर, हो तो ऋण पितृ होगी।
3. के० खाना नं० 5 में उत्तम, 16 से 75 साला आयु सुखी, औलाद से; चं० खाना नं० 5 में हो तो आखिरी आयु सुखी। बु० खाना 5 में हो तो राजा।
4. सू०, श०, स्वयं मंदे या जिस जगह इनका प्रभाव मंदा गिना गया है। ाना नं० 7, 8 दूसरों के स बंध में 8,11 अपने भाग्य के स बंध में ।

शुभ हालत

अपना भाग्य अपने दिमाग से, राजदरबारी लोगों की मित्रता से बढ़ेगा ।वृ० की वस्तुएं, रिश्तेदार या काम में भाग्य की सहायता मिलेगी और उच्च नीच खाना नं० 11 में छुपा धार्मिक भेद और दूसरे जहान का आम व सांसारिक स बन्ध नं० 8 में बैठे ग्रहों की हालत पर होगा ।

क्याफा:- पेशानी से फैसला होगा। घर नं० 11 देखें ।

लग्न, मनुष्य और माथा के मिलाप की जगह, वक्त की हकूमत के स्वामी का त त माना है ।वृ० खाना नं० 1 में हों, चाहे विद्या पास हो या न हो धनवान अवश्य कर देगा । जातक की धर्म, दयालुता से हरदम तरक्की हो, भाग्य 51 साला आयु तक साथ देगा ।चं० की वस्तुएँ के काम से या चं० संबंधी रिश्तेदार सहायता पर होंगे। के० की वस्तुएँ काम या के० स बन्धी रिश्तेदारों का फल उत्तम होगा। स्त्री या शु० की वस्तुएं या रिश्तेदारी उत्तम उपने लिए नेक, राजदरबारी और अदालती मुकदमें या लड़ाई झगड़ों, सू० की वस्तुएं या संबंधी से परिणाम ।स्वास्थ्य अच्छा और शरीर तंदरुस्त होगा ।

मकान जायदाद, शनि की वस्तुओं का या स बंधी, काम आखों की दृष्टि कभी खराब न होगी। शेर की तरह गुस्सा होते हुए भी वह साफ दिल, शान्त वृत्ति का मनुष्य होगा, जिसमें चालाकी को फौरन समझने और रोकने की शक्ति होगी। शत्रुओं के होते हुए भी डरेगा नहीं, विजय सदा साथ देगी। औलाद की उम्रों में क्रम में 8 वर्ष से अधिक अंतर नहीं होगा। आयु का हर आठवां वर्ष उन्नति का न होगा, यदि होगा तो उसका वचन और आर्शीवाद सदा पूरा होगा। परन्तु दूसरों के लिए शाप या बुरा सोचने से उसका अपना आप खराब होगा।

1. जातक की राज्य, विद्या बी.ए., एम.ए. या कोई ऊंची डिग्री होगी। धनवान होने की बात शनि कहेगा।

-जब खाना नं० 7 में कोई न कोई ग्रह अवश्य हो (चाहे मित्र

चाहे शत्रु) और खाना नं० 1 में वृ० के शत्रु न हो।
(क्याफा :- उंगलियों की पोरी में दो सदफ हों ।

2. जातक कई प्रकार की विद्याएं जानता है और राजा की भांति उत्तम हाकिम होगा। (उंगलियों की पोरी में एक चक्कर हो) -जब ऊपर की हालत के साथ जब बु: भी उत्तम हो।
3. वृ० की आयु (4,8,16) साल की आयु से माता पिता को और उनसे सुख होगा और स्वयं उसकी अपनी आयु 75 वर्ष तक का सु िया भाग्य या होगा । भाग्य बुलंदी पर हो (उंगलियों की पोरी पर एक शंख हो) -जब केतु उत्तम हो ।
4. आयु के साथ-साथ सुख भी बढ़ता जाये नेक, उत्तम राजा, या उत्तम हाकिम होते हुए, आखिर आयु संन्यासी की भांति हो । लोगों का भला करें या करना पड़े जिसका फल उत्तम हो । -जब चन्द्रमा उत्तम हो ।
5. पुरखों से जायदाद धन या विरासत में सोना मिले । -जब खाना नं० 1,2,5,9,11,12 में वृ० के शत्रु न हों और साथ ही खाना नं० 7 उत्तम हो।
6. अपनी कमाई से पीले रंग के सामान की अधिकता और बरकत होगी । स्त्री पूजन, खूबसूरत मिट्टी या स्त्री का पालना या गाय सेवा फालतू धन की नींव होंगे । शु० का हकीकी व गैर हकीकी प्रेम (पार्थिव व पारलौकिक प्रेम)। -जब खाना नं० 11 उत्तम हो ।
7. विवाह से या शुक्र के काम या संबंधी कायम करने से बढ़ेगा। -यदि खाना नं० 7 खाली हो ।
8. 28 वर्ष की आयु से पहले या 24वें या 27वें साल स्वयं अपनी शादी या अपने किसी खून के रिश्तेदार की शादी या अपनी कमाई से मकान बनाने या नर औलाद के हो जाने से पिता की आयु पर भारी असर होगा। मिट्टी में मंगल की वस्तुएं दबाने से लाभ होगा । -यदि खाना नं० 7 खाली हो ।
9. राजदरबार से कमाया धन (चाहे एक ताँबे का पैसा ही हो) सोने की तरह काम देगा (बरकत हो)। -जब खाना नं० 1,2,4 मे सूर्य, चन्द्र, मंगल हो।
10. *गुरु पहले हो में सातवें, ठाठ लम्बी जागीरों का ।*
शनि वृ० पूरी करता, खून शाही या वजीरों का ।।

यही शर्त कुलपुरोहितों पर भी लागू हो सकती है। जातक जागीरों का मालिक होगा। कुल पुरोहित, बाप, दादा ल बी जागीरों वाले होंगे । -जब मं० खाना नं० 7 में हो ।

11. मामा की आयु छोटी चाहे हो जाये (जो कि ज़रूरी नहीं) परंतु उसकी अपनी आयु ल बी होगी, जो कम से कम 75 साल हो चाहे इससे अधिक हो। -जब खाना नं० 2,3,4,8 सभी उत्तम हों ।
12. ऐसे व्यक्ति की और उसके कुल की आयु उसकी इच्छानुसार ल बी होगी। (क्याफा: भाग्य रेखा की जड़ पर चार शाखी रेखा हो)। -जब सूर्य खाना नं० 9 में होगा ।

मंदी हालत
(फकीर कमाल का मगर निर्धन)

पीली गैस[1] और संसार की गंदी हवा[2], पितृ ऋण[3], शत्रु ग्रहों[4] की जहर और भाग्य की कड़ी आग[5] का चक्र[6] यदि वृ० के सोने को पिघला भी दे यानि यदि वृ० का असर मंदा ही हो जाये तो वह भी अपने पहले दौरे (आयु का 35 साला चक्र) में नहीं तो दूसरे चक्र में तो अवश्य (49 साल आयु से शुरु होता है) अपनी सारी पिछली कमी पूरी कर देता है। शर्त यह है कि ऐसा मनुष्य भीख के लिए दूसरे के आगे अपना हाथ न फैलाए और स्वयं अपने भाग्य पर सबर करता हो ।

1. वृ० की चीज़ें ।
2. वृ० की चीज़ें ।
3. 2,5,9,12 में पापी ग्रह बु० , शु० , श० , रा० ।
4. 2,5,9,12 में पापी ग्रह बु० , शु ० , श० , रा० ।
5. मंदा सूर्य ।

6. मंदा सूर्य ।

ऐसी ग्रह चाल के समय वह मनुष्य

1. अनपढ़ परन्तु कमाल का फकीर होगा । -जब बु० मंदा, या वृ० के घरों 2,5,9,12 मे जहर हो यानि आपसी शत्रु या वृ० के शत्रु ग्रह हों ।
2. उसने आप बल्कि उसके कुल में किसी ने बी. ए. पास न किया हो और न ही कोई डिग्री ली हो । -जब टेवे में ऋण पितृ 2,5,9,12 में वृ० के शत्रु ग्रह हों ।
3. 8 से 12 तक की आयु मे दूसरों की शरारतों या राहु की चीजों के काम या संबंध से सोना पीतल हो जाये। हर तरफ मुसीबत ही लेंगे । -जब 2,5,9,12 या वृ० के साथ राहु बैठा हो ।
4. 13 से 15 साल की आयु में मामूली मिट्टी की स्त्री या शुक्र की चीज़ों का काम या संबंधी सोने को मिट्टी बना कर उड़ा दें। भाग्य के मैदान में मिट्टी भरी आँधी काली रात होगी । -जब वृ० के साथ या 2,5,9,12 में शुक्र बैठा हो ।
5. 16 से 19 या 21 वर्ष मे बुध की चीज़ों का काम या संबंधी धन हानि का बहाना हो। किस्मत जलती रेत की तरह धन की हालत में हर तरफ विरान करती रहेंगी । -जब वृ० के साथ या 2,5,9,12 में बुध बैठा हो ।
6. 36 साल की आयु के बाद (42 साल की आयु से) शनि की चीजों का काम या संबंधी से हर ओर बुराई बुरे कामों के .जोर से स्वास्थ्य खराब (पेशाब और पाखाना की नाली तक दु:खने लगे)। भाग्य साथ न दे, दिल हिला देने वाली घटनाऐं हों (जो दु:ख दें)। भाग्य की जहरीली हवा दम की दम में खून करती जावे या डरावनी घटनाएँ हों । -जब वृ०के साथ या 2,5,9,12 में शनि पापी ग्रह होकर बैठाहो।
7. अपने बनाए ऊँचे महल पाप के ठिकाने हो जाये और खुद के लिए दु:ख का कारण बन जाए तथा अपनी संतान और स्वास्थ्य के लिए भी । -जब शनि नं० 5 में हो ।
8. अपना स्वास्थ्य बिगड़ जाये । -जब शनि 9 में हो ।
9. स्वयं की संतान दु:खी और जातक के लिए दु:ख का कारण हो जाए । -जब शनि मंदा या मंदे घरों में हो या तो शनि के साथ उसके शत्रु ग्रह सू०, चं०, मं० हो या शनि हो ही अपने मंदे घरों में।
10. पिता से जुदा हो कर अपना काम करने लगे और अपने काम से घर का भार उठाए हुए हो (खाना नं० 9, 10 का शनि कभी भी 18 से 21 तक खाना नं० 7 में नहीं आता बल्कि उत्तम फल देगा) । -जब 18 से 27 साला आयु में वर्ष फल में जन्म कुंडली का मंदा श० खाना नं० 7 में आ जाए।
(अच्छा शनि ऐसा प्रभाव न देगा) ।
11. मुकद्दमें बाजी, दीवानी या दूसरी नाजायज उलझनों में धन की हानि होगी, चाहे उसका फैसला उसके हक में ही होता जाये। अपने भाग्य और सांसारिक कामों की हि मत में संबंध वृ० सोना देने की बजाए उसकी मिट्टी उड़ाता जाएगा ।
-जब सू० खाना नं० 11 में सोया हुआ हो, मंदा सूर्य या सूर्य बुध एक साथ मंदे घरों में हों ।
12. जातक निंदक हर ओर से निंदा, दूसरों को श्राप देने वाला होगा, जिसकी स्वयं अपने भाग्य की मंदी हवा उसके गृहस्थी प्रभाव को मंदा करती जाएगी। ऐसी हालत में छोटी आयु में शादी (22 वर्ष की आयु से पहले) उत्तम होगी वरना 24वां वर्ष मंदा हो जाएगा। उस समय मंगल की चीज़ें काम संबंधी का संबंध लाभ करेगा ।
-जब वृ० सोया हुआ हो या खाना नं० 8, 11 मे उसके शत्रु बु०, शु०, रा० या श० पापी ग्रह हो ।
13 पिता की मृत्यु दमा या दिल के फेल होने से हो । राहु की उम्र में हो या उसकी आंखों में दु:ख आ जाए दिमाग बिगड़ जाये या टांगों की बिमारी कांपनी सूखने लग जाए । -जब राहू नं० 8 में हो ।

वृहस्पति खाना नं० 2
(जगत का धर्म गुरु और विद्या का स्वामी)

जर्द माया गो, दान से तेरा बढ़ता,
राजा जनक की साधु अवस्था
मंदा ग्रह जब हो कोई बैठा,
चार मंदा, 5, 10, 12,
काम सोना खुद मिट्टी देगा,
शुक्र रद्दी या हो शनि दसवें में,
कोई बैठे आठ दस ता 12,
मगर सेवा उत्तम मुसाफिर जो करता
दानी गुरु जर माया हो ।
जेर हुकुम गुरु साया हो ।
रद्दी-रद्दी चाहे केतु हो ।
मिट्टी देती ज़र सोना हो ।
रात दुःखी मंद औरत हो ।
दुखिया बच्चों जर दौलत हो ।

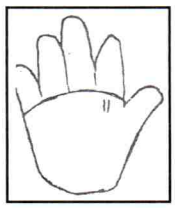

1. 27 साला राजदरबार का उत्तम फल ।
2. जब तक नं: 8 खाली रुहानी असर अच्छा, मान होगा।
3. लक्ष्मी हवा की तरह आये, पानी की तरह जाये, 16 से 32 साला उम्र में।
4. वृहस्पति का उपाय मंदे ग्रह को उत्तम करेगा। मंदे ग्रह का उपाय वृ० का होगा।
5. वरना गुरु मंदी हवा देगा।
6. स ी टेवे में चाहे कहीं भी।

यह वृ: की वास्तविक जगह जहाँ चं: उच्च करता है, जो वृ: का मित्र है। इस राशि को नीच करने वाला कोई ग्रह नहीं है। इसी कारण वृहस्पति को सब का गुरु मानते हैं। यही घर कुण्डली में वृहस्पति का दौलत का व मान का मिला है। बैल पर साधु की सवारी शिवजी बैल पर सवार मानेगें । इस घर को सब घरों ने मान से देखा है और इस घर में सिर्फ वे गुरु को ही बिठायेगें।

हस्त रेखा - वृहस्पति रेखा

2 सदफ या वृ० के पर्वत पर दो सीधी खड़ी रेखाएं या वृ० का निशान हाथ मे घर नं० 2 की जगह हो तो जातक मर्द चाहे औरत हो जगत गुरु होता है। हर हालत में राजा की तरह मानसरोवर की भांति होगा ।

गुरु को सब ग्रहों का प्रणाम

हथेली में वृ० के पर्वत खाना नं० 2 गुरु के सामने (वृ० नं० 2) और दूसरा कोई ग्रह ाना 2 या 6 में बैठा हुए, तमाम ही ग्रह चाहे वृ० के साथ साथी या दृष्टि में हो या न हो (सब ही) प्रणाम करने को बैठे हैं ।

ग्रह	खाना या पर्वत	प्रभाव की तरह
श०	10	सांप कान बंद किए मगर टिकटिकी लगाये चुपचाप बैठा है
सू०	1	गुरु की प्रतीक्षा में है, बंदर बना बैठा है मगर फूक नहीं मार सकता यानि वृ० की हवा को सांस माना है जिसे वह बाहर नहीं निकाल सकता बल्कि वृ० की हवा को ढूंढता है ।
रा०	12	राहू का हाथी, केतु खाना नं० 6 के साथ मिल कर अपने कान ल बे करके खाना नं० 2 की जड़ में गुरु के उपदेश की खातिर चुपचाप बंधा हुआ है ।
के *	6	गुरु का आसन जो नं० 2 की जड़ से मिला रहता है, कि न मालूम कब गुरु को आराम करना है । केतु को गाय और कुत्ता दरवेश भी माना है जो गुरु के ही साये मे रहते हैं ।
चं०	4	दिल रेखा, दिल का दरिया सदा वृ० नं० 2 को चलाता है ।
शु० , बु०	7	विवाह रेखा व खुद सिर रेखा बनकर नं० 2 की जड़ में ।
मं०	3	इसकी जड़ ही नं० 2 से इकट्ठी है ।

* जब केतु कुत्ते ने खाना नं० 6 लेकर वृ० नं० 2 के पांव और उसके सामने रहना पसंद किया तो बुध की सिर रेखा कुत्ते की दुम की तरह केतु के साथ नं० 6 में पक्की हो बैठी, बुध केतु दोनों ही शुक्र के भाग हैं और एक खाना नं० 2 में शुक्र की ही चीज

या गाय स्थान है जिस पर बैठा गुरु सब को देख रहा है । बैल पर शिवजी सवार देवताओं का दृश्य देखते हैं ।

नेक हालत

सब को तारने वाला जगत गुरु, मन्दिर का पुजारी परहेजगार होगा ।

दौलत चाहे खैरायत से बढ़े मगर मुसाफिर की सेवा से वह और भी उत्तम होगा । अपना भाग्य गृहस्थी, कारोबार (सिवाय बच्चों के पैदा होने से) और ससुराल खानदान के संबंध से बढ़ेगा । खाना नं० 2,8 में बैठे हुए शत्रु ग्रहों का अपना असर चाहे कितना भी मंदा हो मगर उनकी जहर वृ० पर प्रभाव न करेगी। वृ० का प्रभाव सारे ग्रहों पर होगा (सिवाय सूर्य के) जिसका अच्छा या बुरा प्रभाव टेवे में बैठे घर के अनुसार (अच्छा या बुरा) जैसा होगा रहेगा । ऐसा व्यक्ति स्त्रियों का अवश्य गुरु होगा, हो सकता है कि पुरुषों का भी गुरु हो जाए। ऐसा पुरुष पिता के धन को बढ़ाता है। स्वयं भी गृहस्थी होते हुए भी ज्ञानी, गुरु, मसीहा होगा । माया व दौलत हवा की तरह आती और उसे पानी की तरह बहाता होगा । उत्तम दिमागी हालत, मान रेखा हर जगह मान होगा, जो दिन प्रति दिन बढ़ेगा। सोने का काम (सर्राफी, जौहरी, सुनार) करने से हानि होगी। मिट्टी के काम, सड़कों पर मिट्टी डलवाना, कच्चे मकान बनवाना, खेती बाड़ी, स्त्रियों के प्रयोग की चीजों का काम लाभदायक रहेगा। राजदरबार मे 27 वर्ष का उत्तम समय उन्नति का होगा। चाहे सूर्य मंदा हो और चाहे उसका जन्म निर्धन और निर्दयी कसाई के घर का हो, 16 से 32 वर्ष की आयु तक (लक्ष्मी पर ब्रह्मा का साथ) धन जमा करेगा, चाहे कबीला बढ़ा हो या न हो, (खुद विधाता का हाथ होगा) मगर बादशाही ठाठ या भारी कबीले की शर्त ना होगी। इस का बाप जायदाद बना देगा वरना वह स्वयं बना लेगा। चाहे संबंधित (खाना नं० 4) माता, (5) औलाद, (10) पिता पूर्वजों की हालत, (11) अपनी आमदनी, (नं० 2) पूजा पाठ, रात का आराम, सब ही रद्दी हों । दिमागी खाना नं० 2 यानि शुक्र से संबंधित सब तरह के स्वाद देख कर भी, वह गुरु धर्मात्मा बन जाएगा। मगर हर हालत मे दिल का साफ होगा । दृढ़ निश्चयी और शासन की ताकत होगी, ऊंच विचार होंगे ।

क्याफा

क्याफा		ग्रह चाल	प्रभाव
वृ० की भाग्य रेखा कायम, तर्जनी सीधी हो ।	–	वृ० नं०2 में कायम व उत्तम और हर तरह से अकेला खास कर जब 9 मंदा न हो और न ही वहां वृ० के शत्रु बु०, शु०, रा० हों ।	राजदरबार का 27 साला संबंध, सब की सहायता देगा। उम्र 75 साल। मान, धन-दौलत ससुराल से मिले, अपने आप आए। लाटरी और दबा धन मिले धन की श्रेष्ठ रेखा गृहस्थ रेखा का उत्तम फलपिता उसे तार दे वरना खुद बढ़े ।

क्याफा	ग्रह हो	खाने में	प्रभाव
तर्जनी का सिरा चौकोर	मं०	8	सच्चाई पसंद होगा ।
तर्जनी बहुत ल बी	मं०	9	हकूमत राज्य की शक्ति होगा ।
तर्जनी का सिरा गोल	बु०	8	साहिब तदबर होगा ।
मध्यमा तर्जनी की तरफ झुकी होगी	श०	8	संसार को छोड़ देने वाला होगा, मुर्दा विचार और उदास रहे ।
तर्जनी का सिरा चौड़ा	रा०	8	शक्तिशाली होगा ।
तर्जनी बहुत ल बी	रा०	9	सोच विचार की शकित का स्वामी हो।
तर्जनी का सिरा नौकदार	के०	8	ईमानदार और तीक्ष्ण बुद्धि का होगा ।
तर्जनी लंबी हो	के०	9	राज्य की शक्ति बड़ो की जैसी बात करने वाला, अपना जीवन खुद चुनने वाला ।
अनामिका, तर्जनी से बड़ी	सू०	10	प्रसिद्धि जीवन होगा ।
अनामिका तर्जनी बराबर	सू०	12	प्रसिद्ध जीवन होगा।
—	के०	6	अपनी मृत्यु को पहले ही जान लेगा ।
—	सू० , बु०, श०	8	पक्का विचार साहस भरा होगा ।
तर्जनी मध्यमा समान	श०	12	नैपोलियन जैसा साहसी ।

1 दबा माल या लाटरी या बिना औलाद वाले का धन मिले । –जब 2,6,8 शुभ हों या खाना नं० 8,10 से मंदी हवा नं० 2 में ना जाये ओर नं० 12 भी मंदा न हो ।

2. वृ: सब कठिनाईयो को स्वयं दूर करें (सभी उंगलियों तर्जनी की ओर झूकी हों) बच्चों से सुखी धन होगा, वृ: की मदद स्वतन्त्र प्रकृति, उन्नति प्रेमी, दृढ़ निश्चय तथा आशावादी होगा। – जब खाना नं: 8–9–10–12 में कोई न कोई यह अवश्य हो चाहे वह ग्रह वृ० का शत्रु या मित्र हो।

3. विद्वान होगा, जिसकी नींव और फैसला शनि पर होगा। विद्या की कमी या अधिकता उसकी भाग्य की चमक को कम न करेगी। – जब शनि साथ या साथी हो (उंगलियों की पोरी पर दो सदफ हो ।

4. नैपोलियन की तरह जमाने का एक वीर, काम का आदमी हो, सुखी हो।
–जब शनि नं: 12 में हो (जब तर्जनी मध्यमा समान हो)

5. अपनी धुन का पक्का परन्तु परिवार बहुत होगा। – जब नं: 8 खाली हो और साथ में सू: ,चं:, श:, रा:, या बु: में से कोई भी खाना नं: 6 में हो।

6. मान रेखा राजा की तरह हो, दाता होगा। – जब राहु नेक हो मगर गुम न हो। (वृ: के पर्वत पर एक सीधी रेखा।

7. नेक काम और भलाई करने वाला होगा।हर जगह मान होगा, चाहे जागीरें उसके पास हों या न हो।संसार का सुख सागर उत्तम हो। –जब राहु नेक और कायम हो (वृ: के बुर्ज पर दो सीधे खत होगें)

मंदी हालत

1. अपने ही कुल को मारने वाला, गरक करने वाला यानि दही (शुक्र) और गोबर, (शुक्र) की मिलावट में पैदा बिच्छु की भांति हो। (नं: 8–2 के मंदे प्रभाव की पहली निशानी केतु कह देगा)।
– जब खाना नं: 8–2 किसी तरह भी मंदा हो रहा हो, जिस प्रकार खाना नं: 8 में चं:, मं:, दो ग्रह इक्टठे हो (चाहे वह वृ: के मित्र हो परन्तु एक साथ दोनों के कारण नं: 8 मंदा ही होगा) इसी तरह नं: 2 में भी ग्रह अपना अपना प्रभाव करते हैं, मगर जब नं: 2 में मंगल बंद हो तो नं: 2 मंदा ही होगा।

2. स्वास्थ्य बिगड़े, ससुराल में धन की हानि होगी। – जब शनि वर्षफल में नं: 2 में आयेगा।
गुरु जहान दो मंदिर कच्चा, या बैठक खुद साथी हो
(राहु केतु पाप) मारक धर (8) से गुरु भी डरता, आठ दृष्टि , खाली जो।

3. वृ: का फल राहु के संबंध में मंदा ही होगा। – जब ाना नं: 8 खाली हो।

4. जिस जगह भी ऐसा व्यक्ति जाए या मेहमान बने वहाँ हानि हो, मनहूस परन्तु उसकी अपनी हानि न हो। (मंदे प्रभाव की खबर पहिले ही केतु या संसारी कुत्ते से जाहिर हो जाएगी परन्तु टेवे वाले पर वृ: के प्रभाव पर बुरा असर न होगा)।
– जब नं: 8–2 में कोई मंदा ग्रह हो चाहे वह ग्रह स्वयं नं: 8 में हो चाहे वह वृ: के प्रभाव को दृष्टि से खराब करे।

5. रात दुखी, स्वास्थ्य और स्त्री की मंदी हालत, बीमार हो। – जब शुक्र मंदा और श: नं: 10 में हो।

6. धन हानि बड़े, बीमार, स्वयं राजा की कैद में जाये। – जब बुध नं: 8 शनि नं: 10 में हो।

7. ईष्यालु होगा। उंगलियां बहुत छोटी हो। – जब बुध नं: 9 में हो।

8. मंदी हवा, सब तरह से मान हानि, लानत मुसीबत हो। – जब नं: 8–10 में बुध, शु: रा: श: पापी ग्रह हो।

उपाय

नं: 10 में जिस ग्रह का मंदा प्रभाव हो	किस ग्रह का उपाय करें
बुध, राहु	शनि
शुक्र	चन्द्र
शनि(पापी)	वृ: का अपना उपाय

नं: 8 वृ: के शत्रु ग्रहों (बु:, शु:, रा:, श:, पापी) के लिये उन हर एक के खाना नं: 8 में दिया हुआ उपाय सहायता देगा। स्वयं मंदे वृ० या मंदे ग्रह के समय बाकी सब हालतों में वृ० का अपना उपाय सहायता देगा।

वृहस्पति खाना नं: 3
गरजना शेर व खानदानी गुरु, ज्योतिष व आशीष का स्वामी

वहु आंख शिवजी गो मुर्दोको लेंखे, *मगर आंख तू एक से क्यों है देखे*
शेर स्वभाव[1] संसार का लिखारी, *दुर्गापूजा[2] धन दौलत राज का हो*
असर भले जब तक दो उत्तम[3] *नष्ट खुशामद (चं 12) होता हो।*
4 शनि, बुध टेवे मंदा, *मारे मित्र कुल दुखिया हो।*
दूजे मंगल या 9 वें शनि बैठा, *तारे[4] सभी खुद सुखिया हो।*

(1) जब तक बुध उत्तम, एक ओर का स्वभाव
(2) कन्या की सेवा से उसका आर्शीवाद ले या दुर्गा पाठ करना आदि बुध की जहर को दूर करता हो।
(3) त्रिलोकी का सुख या जलता मंगल।
(4) यदि दोनों शर्ते न हो तो पहले निर्धन फिर धनी।

<u>हस्त रेखा तीन सदफ, 7 चक्र या 7 सीधी रेखा या गृहस्थ रेखा वृ: के पर्वत पर हो</u>

नेक हालत

फरिश्ता अजल भीगो तुमसे डरेगा, *मगर जुल्म तेरा न हरगिज फलेगा।।*

धनवान तथा शेरों का शिकारी जैसा होगा। दिमागी खाना नं: 7 मंगल, इंसाफ पसंद, दुर्गा जी (बुध) शेर (वृ:) की सवारी का साथ होगा। विद्वान होगा, राजदरबार से धन देर तक मिलता रहेगा (नौकरी करेगा) जब तक कि दुर्गा पाठ या कन्याओं की सेवा से आशीष ले वरना वृ: नं: 3, बु: खाना 3, 9 का मंदा फल देगा हर ओर से सुखी होगा आँखे ठीक होंगी भाई, ससुराल नेक औलाद की आयु ल बी और सुखी होगी।

1. त्रिलोकी के दरवाजे पर तलवार का धनी, मृत्यु को रोकने वाला खुद ही बैठा हो उम्र ल बी। विद्वान हो। उत्तम सेहत धनी अवश्य समृद्ध हो। अपना भाग्य भाई बहिन से हो। जाति प्रेम वाला हो। – जब वृ: कायम हो।
2. अपने बहन भाई की सहायता करे। 26 साल की आयु से 46 साल की आयु तक सब और उन्नति हो। सुखी, कम से कम 20 साल धनी हो। – जब मं: नेक हो, खाना नं: 2 में सू:, चं:, मं: (मित्र ग्रह हों) और वृ: वर्षफल में फिर नं: 3 में आवें (गृहस्थ रेखा हथेली में खाना नं: 3 में समाप्त हो)।
3. इज्जत मान होगा, गुजारा बहुत अच्छा ही चलेगा, कमाई शुरु करने से करते रहने तक सब फल उत्तम होगें, घर में इक्टठे रहने से लाभ, औलाद पैदा होने से लाभ हो। – जब वृ: कायम हो, खाना नं: 11 में कोई भी ग्रह हो। या खाना नं: 5 में कोई भी मित्र ग्रह हो या खाना नं: 9 में कोई भी ग्रह हो।
4. आयु धन बढ़ेगा। – जब शनि नं: 9 में हो (हाथ में उर्ध रेखा कायम)
5. चालाक, मनुष्य को उसकी आवाज से पहचान लें। – जब शनि नं: 2 में हो (पर्वत नं: 2 पर खड़ी रेखा)
6. सब को तारने वाला। स्वयं भी सुखी। – जब मं: नं: 2 में या शनि नं: 9 में हो। (गृहस्थ रेखा नं: 2 में समाप्त, उर्ध रेखा होगी)
7. धनी होगी। – जब श: नेक हो (उंगलियों की पोयिों में 3 सदफ हो)।
8. स्वयं साहसी होगा। – जब बुध नं: 7 में हो (पोरियों पर 7 चक्र हों)।

मंदी हालत

<u>जातक कायर, मनहूस, मंद भाग्य होगा।</u>

1. एक स्वभाव का स्वामी, यदि मित्र हो जाए तो सब कुछ देवे खुद किया शिकार तक दे डाले – यदि शत्रु हो जाये तो दूसरे का बिस्तर तक जला दे आराम नष्ट कर दे। – जब वृ: सोया हुआ हो या शत्रु ग्रहों से घिरा हो।
2. अपनी प्रशंसा सुन कर प्रसन्न होने के स्वभाव से नष्ट हो। – जब चन्द्र नं: 12 में हो।

3. कायर, सब ओर से दुखी, मंद ाग्य, औरतों के साथ बैठकर गप्पें हाँकने वाला (बुध नं: 3 और 9 का दिया हुआ मंदा फल होगा) सेहत खराब, बुरी जिन्दगी, हमेशा रोग, रक्तदोष, संतान दुखी, केतु के मंदे फल। – जब मं: बद हो।
4. सबको लूट कर स्वयं अमीर बनने का हामी और बने ाी, जातक मित्रघाती, नास्तिक हो। उसके सभी संबंधी दुखी, खासकर के औलाद और मामा तो अवश्य दुखी (31) साल रोगी। चाहे वह लड़ाई में बहादुर हो मगर फिर भी मंद भाग्य वाला होगा। शरीर से दुर्गन्ध आये, शरारती झगडालू हो मगर कायर। – जब श: नं: 4 और बुध भी मंदा हो।

वृहस्पति खाना नं: 4
चन्द्र की राजधानी का मुल्की गुरु, सरु और बाग-बगीचे

पड़ा माया बन्द पानी दुनिया जो सड़ता,
सिंहासन विक्रमी 32 परियां,
जमीन मुरब्बे दूध की नदियां,
मंद शनि बुध इज्जत मंदी,
केतु बुरे शाह लेगा फकीरी,
शुक्र, चन्द्र और मंगल मोती',
नाश बड़ों का कुल सब होता,
फले बीज दुनिया जो बन्द मुट्ठी करता।
ब्रह्म पूर्ण कोई अपना हो।
शेर सीधा पानी तैरता हो।
10 वें बैरी जर डोलता हो।
राहु भले सब उन्नत हो।
दूध भरे त्रिलोकी' जो।
इश्क गंदे जब स्वयं करता हो।

1. चाहे कहीं भी कैसे हो। 2. खाना नं: 3 के ग्रह।

हस्त रेखा:-

4 सीप, 4 शंख या 4 सीधी रेखाएं या 2 चक्र, चन्द्रमा पर्वत पर शंख, सिर्फ एक चन्द्र रेखा वृ: के पर्वत पर खत्म हो।

नेक हालत

एक ही सीप में, *पैदा हुए दो मोती।*
एक ताज (बुध) शाह के सिर पर, *दूजा खरल (बुध) में पिसता हो।*

राजा इन्द्र विक्रमादित्य की तरह प्रसिद्ध होगा। अपने भाग्य का प्रभाव रुहानी शक्ति, माता खानदान से होगा। शु०चं०, शनि, मं० सभी ही उत्तम फल देगें। खाना नं: 3 का ग्रह कभी बुरा प्रभाव न देगा। देश भक्ति, बाग और बगीचे और छुपी शक्ति का स्वामी होगा अपने इलाके में लाखों में एक प्रसिद्ध होगा। खेती, दूध की नदी, पशु उसके आराम के लिए होंगे। बाप, दादा या स्वयं पूरी शक्ति का स्वामी होगा, धर्म का पक्का, सब की मदद करने वाला, दूरदृष्टि, आयु ल बी, मान, हर मजहब को मानने वाला, झगड़ो से दूर, अपने घर, में संतुष्ट, लालच का नाम तक न हो। राजा इन्द्र की भान्ति हो, लोक परलोक का स्वामी, रहम दिल संसार में किसी भी विपत्ति में सहायक होगा। चौड़ा माथा, प्रसन्न चित्त हो। उत्तम चरित्र, व्यवहार में उत्तम पत्नी, सुखी संतान, शांत प्रकृति उसका मकान उत्तम। बिना प्रयास लक्ष्मी आवे। दिमागी खाना नं: 2 (चन्द्र) हमदर्दी, दयालु, जमाने का शेर, हुकूमत, दिमाग तेज, तेज बुद्धि, स्मरण शक्ति उत्तम हो। सोने के बर्तन में दूध की तरह नेक फल खानदानी खून का सबूत होगा। मुसीबत के समय सीधा तैरने वाला शेर होगा।

1. माता-पिता की तरह सब को सुख देने वाला, साहसी, राजदरबार में सदा लाभ। 24 साल तक विद्या मिलेगी। साहसी, छुपा धन, जुड़ा-जुड़ाया धन, ऐसी जायदाद जिसका मालिक न हो प्राप्त करे छुपी शक्ति और प्रभु की सहायता का फल उत्तम हो। पिता की तरह बहादुर बेटा, (मां पर धी पिता पर थोड़ा) 32 परियों वाला त त हो। उसका मामूली तांबे का पैसा, सोने का लाभ दे। मकान आलीशान, व धन का दरिया हो। -जबकि खाना नं: 2,5,9,11,12, में बु:, शु:, श:, राहु पापी ग्रह होकर) न हो, चन्द्र के पर्वत में रेखा वृ: के पर्वत नं: 2 में जाकर समाप्त हो।
2. पिता खून के मुकद्दमें का फैसला कर सकता हो या बड़ा हाकिम हो या उसके जन्म के बाद हो जाये, परन्तु उसके स्वयं के भाग्य की शर्त नहीं। – जब सूर्य या मंगल (नर ग्रह) उत्तम हो।
3. हर तरह की सवारी का सुख मिलेगा। – जब चन्द्र नं: 1 और श: नं: 10 में हो।
4. भाग्य का फैसला शनि राहु की नेक, बद हालत पर होगा, टेवे में जैसा हो। यदि नेक तो चाहे अपने बाप से कम ही हो परन्तु फिर ाी लाखों में एक होगा। बड़ों के काम काज उत्तम फल देंगे। यदि स्वयं राजा नहीं तो उसका भाई या संबंधी अवश्य होगा। प्राय: स्वास्थ्य पर कमाई का चौथाई हिस्सा अवश्य खर्चेगा। मोटर गाडियाँ हर समय उपस्थित होंगी। धनी, ध्वजाधारी छत्र वाला होगा। -जब चं: नं:2 में हो।(चन्द्र के पर्वत पर एक शं ा या चक्र हो।)

5. वृ: सोया होगा। यदि ऐसा मनुष्य यिकसी को अपना नंगा शरीर न दिखाए या दूसरों की दृष्टि अपने नंगे शरीर पर न पड़ने दे तो निर्धन न हो। वृ: नं: 4 का उत्तम फल होगा। – जब खाना नं: 10 खाली हो।
6. टेवे में बैठा मंदा चन्द्र भी उत्तम फल ही देगा। स्वास्थ्य पर फिजूल खर्च की शर्त न होगी। – जब चन्द्र सिवाय नं: 2 के कहीं भी हो।
7. माता के होते विद्या कभी रुके कभी चले पर पूर्ण होगी। यदि माता न रहे तो विद्या रुके बिना पूर्ण हो। – जब चन्द्र कायम हो या चन्द्र कायम रखा जाये।
8. विद्या पर किया खर्चा, चाहे अपनी औलाद की या किसी विद्या के साथी की हो, सूद सहित वापिस मिलेगा। यदि चरित्र ठीक तो आयु ल बी होगी। – जब केतु उत्तम हो। (उंगलियों की पोरी या पर्वत पर 4 शंख हो)।
9. विद्या का धनी, बह्म ज्ञानी परन्तु धन, भाग्य की शर्त नहीं, हुनरमंद हो। सीप में मोती की तरह वंश में नाम पावे। राजदरबार से धन ही धन का लाभ पावे। – जब बुध उत्तम या उत्तम सूर्य नं: 10 में हो, (उंगिलयों की पोरी में दो चक्र)।
10. नेक प्रसिद्धि, सब को तारने वाला, घर शानदार सब प्रकार के आराम वाला हो। – जब शनि खाना नं: 2,9,10 में हो (उंगलियों की पोरी पर 4 सीप नेक उर्ध रेखा कायम)।
11. चन्द्र की जानदार वस्तुओं माता, घोड़ी का फल उत्तम हो। – जब राहु उत्तम हो (पर्वत नं: 2 पर 4 खड़ी रेखा हो)।

मंदी हालत

उलटी खोटी हवा से खास 34 साल आयु के बाद जब खुदसर होता हुआ मंदे इश्क में हवाई घोड़े चलायेगा तो न सिर्फ खुद बल्कि अपने कुल के नाश का बहाना होगा। बड़ों की आज्ञा मानने से वह तर जायेगा। अपनी अकल की बेलगाम कार्यवाही से बरबादी होगी। अपनी ही बेड़ी डूबो देने वाला मल्लाह, हर तरह से दुखी। राजधानी की बेड़ी में सुराख कर देगा जो नं: 4 के समुद्र, माता के घर या पेट में आते ही गर्क हो जाएगी। – जब बुध नं: 10 में हो, ऐसा बुध जब कभी वर्ष फल में खाना नं: 4 में आवे, बरबादी का बहाना कर देगा। (11, 23, 34, 48, 55, 71, 75, 85, 97, 119 साल आयु में)।

2. बुरे काम में सदा खुश। शराब, मीट, स्त्रीबाजी मंदी प्रसिद्धि पसंद करने वाला। उसकी आँखो में खराबी होगी और केतु भला न होगा। दृष्टि खराब। – जब शनि मंदा हो या मंदा कर लिया जावे क्योंकि आमतौर पर वृ: नं: 4 के समय शनि कभी मंदा न होगा पर कर लिया जायेगा। यदि वह सांपो को मरवाये, मकानों को गिरवाये, शराब पीना, या स्त्रियों से यौन संबंध बनाये।
3. सोना, धन खतरे में होंगे। – जब शु:, बु:, रा:, शं:, खाना नं: 1० में हो।
4. चन्द्र की जानदार या बेजान चीजों का फल बरबाद पानी तक जलता होगा। – जब राहु मंदा हो।
5 राजा होता भी फकीर हो जायेगा या दु:ख के समय डर कर जंगल में भाग जायेगा। – जब केतु मंदा हो।

वृहस्पति खाना नं: 5

(मनुष्यता का स्वामी, इज्जत मान वाला, ब्रह्मज्ञानी परन्तु आग का बांस, गुस्से वाला)

धर्म नाम पर मांग,
इसासा ही है बेच,
औलाद कद्र से बुढ़ापा उत्तम,
हाल बड़ों का बेशक कैसा,
इसके गुरु के दिन लड़का जन्मे,
लेख सोया भी आ तब जागे,
केतु मंदा औलाद हो मंदी,
च:, सू:, बु: उत्तम पापी[4],
दुनिया जो खाता।
अपना वह जाता॥
सौदा ईमानी बढ़ता हो।
नसल आयंदा[1] फलता हो।
या कि जन्म शनि १ हो[2]
जोड़ी शेरों की बनती हो।
मंदे गुरु ऋण पितृ[3] हो।
लावल्द होता न वह कभी हो।

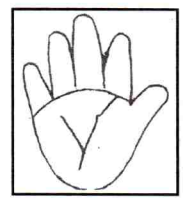

1. यदि खूद पसंद में मानक तो संतान पत्थर में मोती होगी।
2. शनि नं: 9 वर्षफल या जन्मकुंडली में अति उत्तम फल।
3. खाना नं० 2,5,9,11,12 बु:, शु: राहु या पापी।

4. राजा इन्द्र की तरह लोक परलोक का स्वामी, विक्रमादित्य की तरह बुलन्द विशेषकर जब राहु उत्तम हो। हज़ारों का ऑफिसर व सबको आराम देने वाला, नहीं तो भिक्षा के लिए उड़ता साधु।
5. जद्दी जायदाद व मालो दौलत।

हस्त रेखा

पांच सीप, 5 चक्र या 5 रेखा तमाम उंगलियों में। सेहत रेखा नीचे जाकर भाग्य रेखा के आर भ में मिल जाती हो।

वृ: नं: 5 के समय बु: की जैसी हालत होगी वृ: के प्रभाव में वैसे ही अच्छे या मंदे चक्कर चल रहे होंगे। नाक ही हर नेक व बद हालत जैसी हो वैसी असर डालेगी ।

क्याफा (नाक)

नाक अगर लंबी, नीचे को झुकी	–	बुद्धिमान, धन-मान प्राप्त
तोते की चोंच की भांति,पश्ती में एक	–	परहेजगार
छोटी नाक	–	धर्मात्मा
ल बी व चौड़ी	–	मेहनती मगर छुपाकर काम करने वाला
ल बी व पतली नाक	–	बहादुर
बहुत ल बी नाक	–	एय्याश, लज्जाहीन व गरीब
गोल बड़ी मोटी नाक	–	नेक व्यवहार करने वाला
छोटी व चपटी नाक	–	नेक व शाहाना स्वभाव
मुंह की तरफ झुकी नाक	–	संभोग पसन्द
मोटी, छोटी, बैठी हुई नाक	–	कम अक्ल, काम काज में परेशानी
बारीक नाक	–	नेक तबीयत मगर अकल कम
मध्यम आकार मगर अंदर को झुकी	–	कम अकल व गरीब
बीच में चौड़ी सिरे से तंग या बीच		
में बैठी हुई।	–	बदनसीब, मनहूस
बीच में ऊंची और सिरे से तंग	–	धनवान
बहुत छोटी	–	बुरी अकल, धोखेबाज

_नेक हालत

बढ़े जितनी संतान, भाग्य हो बढ़ता। अकल जोर संसार, न कुछ काम करता।

अपने भाग्य का उत्तम प्रभाव अपनी सब संतान से होगा। ईमानदारी के काम, व्यापार, सांसारिक धंधा बढ़ता रहेगा। जवानी में संतान की आवश्यकता को मानते हुए उनकी कदर करने से बुढ़ापा उत्तम होगा। वीरवार को लड़के के जन्म से पिता पुत्र भाग्य के मैदान में दो शेरों की भान्ति हो जायेंगे। ऐसे पुत्र से पहले भाग्य सोया हुआ माना जाएगा। खाना नं० 2,9,11,12 में यदि वृ: के मित्र सूर्य, चन्द्र या मंगल बैठे हों तो उनकी सहायता मिलती रहेगी। चाहे ऐसा व्यक्ति गुस्से से हरदम जलने वाला हो मगर पूर्ण ब्रह्म होगा। दिमागी खाना नं: 2 (सूर्य) दूसरों का मान करने वाला अपने कर्तव्य का पूरा पाबन्द होगा। अन्दर बाहर दोनों ओर से उत्तम जातक होगा।

1. बिना औलाद के कभी न होगा। प्रसन्न चित्त, भाग्यवान होगा। – जब सूर्य चन्द्र और पापी उत्तम हो।
2. सरदार या हाकिम, फौज का बड़ा अफसर होगा। जिसके साये में कई प्राणी आराम करते होंगे और उसकी संतान के लिए प्रार्थनाएं करते होंगे। – जब राहु उत्तम (बुर्ज नं: 2 पर 5 बड़े खत)।
3. धन और संतान मंदे न होगें आगे कुल बढ़ता रहेगा। यदि वह घोड़े की लीद में मानिक तो औलाद पत्थर में मोती (परंतु यदि पुरखे निर्धन हो, यह शर्त न होगी)। परन्तु वीरवार को संतान उत्पन्न होने से उनकी समुद्री बेड़ी बड़े-बड़े जहाजों का काम देगी परन्तु आगे संतान होने पर सब प्रकार के दुख नरक धो देगा।

– जब मित्र ग्रह सू:, चं:, मं: खाना 9 में हो। (सेहत रेखा पर वृ: के खड़े खत या भाग्य रेखा कलाई से निकल कर सेहत रे ा पर जा निकले तो सूर्य नं: 9 होगा, चन्द्र के बुर्ज 4

में जा पहुंचे तो चन्द्र खाना नं० 9 में हो।

4. बाप से लेकर पोते तब सब सुखी हो और वृ: नं: 9 का उत्तम फल होगा।
   – जब खाना नं० 2,5,9,11,12 में बु:, शु:, श:, राहु न हो (पापी)।
5. शनिवार को पैदा हुए लड़के के जन्म दिन से उत्तम शनि या शनि नं: 9 वृ: नं: 7 की मच्छ रेखा का 60 साला उत्तम प्रभाव होगा परन्तु अब वृ: से संबंधित रिश्तेवाले या कामकाज से कोई लाभ न होगा।
   – जब शनि नं: 9 में हो या वर्षफल में आ जाये।
6. इज्जत मान बढ़ेगा, वृ: और भी उत्तम हो जायेगा। – जब शनि उत्तम हो।(उगंलियों की पोरी में 5 सीप हों)।

मंदी हालत

1. धर्म के नाम पर मांग कर खाना या दान लेता हो निसंतान होना और बिना कफन मरने की पहिली निशानी होगी। बच्चे मुर्दा पैदा हांगे। – जब केतु नं: 11 में हो।
2. संतान मंदी होगी। – जब केतु मंदा हो।
3. औलाद चाहे मंदी न हो परन्तु वह स्वयं अपना बेड़ा गरक करने वाला नाविक होगा और 25 (शुक्र), 34 (बुध), 42 (राहु), 48 (केतु)36 से 39 साला आयु (शनि) के बाद हालत अच्छी होगी मंदी हालत में जब खाना नं: 5, 9 में केतु न हो तो मामा पर मंदा तूफान चलता होगा अर्थात् जब कभी भी नं: 5 का वृ: वर्षफल में बरबाद हो तो उसका बुरा प्रभाव सदा मामा या मामा की संतान पर होगा और स्वयं जातक पर कोई प्रभाव न होगा। ऐसे समय केतु का उपाय लाभदायक है।
   – जब खाना 2,5,9,11,12 में शत्रु ग्रह – बु:, शु:, श:, रा:, हो (बुर्ज नं: 2 पर 5 खड़े खत)।
4. वृ: चुप रहेगा मगर गुम न होगा। – जब राहु नं: 9 में हो।
5. भिक्षा के लिए दौड़ता साधु, मंदी हवा के झोंके, सब और तंगी ही तंगी होगी। –जब रा: मंदा हो।

वृहस्पति खाना नं: 6
मु त ोर मगर साधु स्वभाव

मुफ्त रोटी[1] गो तुझको हर दम मिलेगी,
मानसरोवर बाप का उत्तम,
हालत शनि पर फैसला होगा,
5, 12, 9 उत्तम दूजा,
खैरायत बड़ों के नाम पर बढता,
अकेले गुरु बुध केतु फलता,
उलट मुकद्दर चक्कर[2] चलता,
मगर माया तो ढूंढनी पडेगी।
शर्त कोई न अपनी हो।
राजा गुरु या निर्धनी हो।
गुरु होता स्वयं चन्द्र हों।
राजसभा चाहे मंदिर हो।
भला चलन जब तक हो।
खाक भरा सब मस्तक हो।

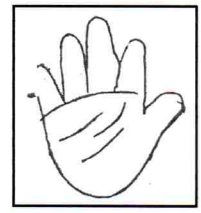

अब वृ० हमेशा राशि फल का होगा।

1 खाना नं० 2, 5, 9, 11, 12 में बु० , शु० , रा० , श० , ना हो।

2 वृ० अब चन्द्र नं० 2 का फल देगा जिसमें बु० केतु का उत्तम प्रभाव होगा शर्त यह है कि दृष्टि खाली हो नं० 2 से, माता बुध, खानदान की उन्नति होगी ।

3 बुध मंदा, बुरे दिन हो, केतु मंदा, फकीरी का नशा ।

हस्त रेखा

भाग्य रेखा की जड़ में केतु का चिन्ह या ाना नं० 6 में वृ० से शाखहाथ की ल बाई से समाप्त हो। उंगलियों की पोरी में छ: चक्र हों ।

नेक हालत

हर चीज बिना मांगे मिले ।अपना भाग्य दोहते, भान्जे या मामा के घर के प्रभाव से उत्पन्न होगा। बड़ों के नाम का खैरायत करना अपने भाग्य की नींव होगी, जिससे अव्वल खबीश (खुद पसंद) बाद दरवेश की हद बंदी सहायक होगी ।उसका पिता

जब तक रहेगा, दाता होगा तो पूरे मान का मालिक होगा मगर टर्राने वाला मेंढक ना होगा । फिर भी होगा तो धन की वर्षा का स्वामी या सोने की खानों में रहने वाला होगा । मृत्यु समय पर उस समय सब ओर से सुखी होगा । लेकिन टेवे वाले के साथ ऐसा होने की शर्त न होगी, यदि ऐसा न हो तो पिता छोटी आयु में चल दे जो कि आवश्यक नहीं कि जल्दी ही हो । मु तखोर यह आदमी ऐशी पट्ठा होगा । साधारण जीवन का स्वामी दिमागी खाना 18 (केतु) जिस दिन से संतान हो और व्यापार आदि का साथ होने पर फोकी उ मीद का मालिक होगा। अपना भाग्य राजा या फकीर की हालत का फैंसला(धन की हालत) शनि की नेक या बद हालत पर होगा। मामा तरफ के सब प्रसन्न होंगे (परन्तु मामा या उसके घर के) जातक के लिए 40 वर्ष की आयु तक बिना अर्थ के होंगे या शत्रु होंगे।

1. चन्द्र नं० 6 का फल और बुध केतु(मान रेखा) के उत्तम फल होंगे । (लड़के) केतु की चीजें रिश्तेदार या कार्य (गणेश जी के चूहे बहुत छोटी हैसियत)से स्वयं श्री गणेश जी (जिसको संसार पूजता है) और लड़कियां गरुड़ भगवान् (बड़ी उत्तम हस्ती) की तरह हों, मान के जीवन का स्वामी होगा । –जब 2, 5, 9, 12 में बु०, शु०, श०, रा० न हों मित्र ग्रह चाहे हों और खाना नं० 2 से दृष्टि भी खाली हो हर ओर से बरी और अकेला वृ० हो (बुर्ज नं०2 में शाखा बुर्ज नं०6 पर चली जावे)।
2. ऐसे व्यक्ति को रोटी के लिए मेहनत करने की आवश्यकता न होगी । यदि उसके पास हजारों मेहमान आ जायें तो रोटी दे सकता है परन्तु नकद माया के लिए मारा मारा फिरेगा । कमाने का अवसर आयेगा नहीं, ना ही काम करेगा ।
–जब खाना नं० 2,5,9,12 में पापी ग्रह बु०, शु०, श०, रा० न हों, खाना नं०2 से दृष्टि खाली हो या न हो (उंगलियों की पोरी पर खड़े खत कितने ही हों) ।
3 ऐशी पट्ठा (नेक अर्थों में) मतलब परस्त होगा । –जब बुध उत्तम हो (उंगलियों की पोरियों पर 6 चक्र हों) ।
4 चाल चलन नेक होने पर मामा और संबंधि प्रसन्न होंगे और टेवे वाला स्वयं प्रसन्न जीवन का स्वामी होगा। मगर उसके मामा उसके लिए 40 वर्ष तक बिना अर्थ के होंगे । –जब केतु उत्तम हो (भाग्य रेखा की जड़ पर केतु का चिन्ह) ।

मंदी हालत

1 34 वर्ष की आयु तक उल्टा चक्र चलता रहे, मंद भाग्यता देखने को मिले भाग्य की मार का मुकाबला करे।
–जब बुध मंदा हो ।
2 जब हाथ में प्याला लिए फकीरों की तरह रोजी के लिए सर्द आहों से मर रहा हो । मंदे समय केतु का उपाय लाभ देगा ।
–जब केतु मंदा हो ।

वृहस्पति खाना नं० 7

(पिछले जन्म का साधु जो जन्म से परन्तु जंगल में तप के लिये नहीं गया और गृहस्थ नं० 7 राजा जनक की तरह संन्यासी साधु (वृ०) जो माया (शु०) में होता हुआ लक्ष्मी(शु०)को सांस की हवा (वृ०) की तरह जानने वाला, चुपचाप शांत परिवार का गुरु होगा।)

पुरुष के टेवे की हालत में घर में कुत्ते से भी कम कीमत, निर्धन साधु परन्तु स्त्री के टेवे में संतान तथा धन किसी बात के लिए मंदा न होगा ।

धर्म माला थैली,
बड़ी शान शौकत,
संतान बेकदरी गौर न करता,
वक्त बुढ़ापा हो सुख किसका,
9वें शनि 7 हो मच्छ रेखा,
घर से बाहर क्यों दौड़े फिरता,
तख्त साथी या घर गुरु बैठा,
11 शनि, बुध 6,2,12,
न परिवार देगी ।
बिलाहर्ष देगी ।
मदद भाई न हुकूमत हो ।
ज्ञानी तरसता धन को हो ।
रिजक चन्द्र खुद देता हो ।
मरना लिखा हो घर में जो ।
मंदा शुक्र या शत्रु हो ।
दत्तक मरे औलाद नहीं हो ।

1. नर औलाद से दु:खी, प्राय दु:खी ।
2. सू० नं० 1 हो तो कई प्रकार के हाथ के काम जानने वाला तथा ज्योतिषी होगा मगर धन की अधिकता की शर्त न होगी ।

3. स्त्री स्वयं सुन्दर व सुख देने वाली देवी होगी मगर धन की कमी से मिट्टी में मिली होगी ।
4. नं० 2,5,9,12 में बुध शु० , श० , रा० विशेष कर शुक्र मंदा तो संतान बरबाद परन्तु जब 2,6,11,12 में बु०, श० तो स्वयं बरबाद ।

हस्त रेखा

3 चक्र, 3 शंख, 3 सीप, 3 खत, 6 खत, 4 चक्र या 5 शंख या शुक्र का वृ० हो यानि वृ० का बुर्ज बहुत बड़ा हो या नरम हाथ का वृ० होवे, संतान रेखा शादी रेखा को काटे । भाग्य रेखा की जड़ पर बुध का चक्र । शुक्र के पर्वत पर भाईयों की रेखा ल बी और टेढ़ी हो । सर रेखा आयु रेखा ल बी और टेढ़ी हो । सर रेखा आयु रेखा से अलग होकर वृ० के पर्वत को जाये ।

नेक हालत

धर्म कार्य में मुखिया व धनी । धर्म का झंड़ा हर समय हाथ में होगा अपना भाग्य, मॉसल शक्ति या स्त्री जाति से बटेगा। अपनी सारी शक्तियाँ धन की हालत चन्द्र की अच्छी या बुरी हालत पर निर्भर होंगी । प्यार असल नींव होगा। परदेश की जायदादों की तरफ क्यों भागे जब मरना घर में हो । यात्रा से जीवन सुखी और वह सफर मे कभी भी न मरे । यदि वहां मर भी जाये तो उसकी लाश अपने ही पैतृक मकान में आएगी । स्त्री के दहेज का सामान भाग्य बढ़ाऐगा । वह एक कामयाब मुसाफिर होगा और सहायक होगा। मगर स्वयं 34 साल की आयु तक आराम, धन संतान की ओर से आग लगी होगी, परेशान रहेगा । 34 साल या 45 साल की आयु में लड़का होगा, वह पिछले सब दु:खों को दूर कर देगा अंतिम समय वह कर्ज छोड़कर न मरेगा, न ही संतान हीन होगा ।

1. बुढ़े परिवार और धन के भंड़ार यदि शनि के स्वभाव का (चालाकी) का स्वामी हो ।
   -जब श० नं० 7-9 में हो ।
2. पूजा पाठी, तपस्वी पर धन की अच्छाई की शर्त नहीं । -जब केतु उत्तम हो (उंगलियों की पोरी में 5 शंख) ।
3. वृ० और बु० दोनों का फल उत्तम होगा । -जब बुध उत्तम हो (उंगलियों की पोरी पर 6 खड़े खत) ।
4. आराम से भरा जीवन विशेष कर जवानी का । -जब राहु उत्तम हो (उंगलियों की पोरी पर 6 खड़े खत) ।
5. ज्योतिष और संसार के भेद जानने वाला अनुभवी । आराम पसंद ज्यादा, धन की शर्त नहीं ।
   -जब सू० खाना नं०1 में हो (बुध के बुर्ज पर सूर्य की और वृ० का चिन्ह चक्र, शंख, सीप हो) ।
6. अपने पुरखों का ठाठ बाठ शाहना करे चाहे अपने लिए धन की शर्त नहीं, परन्तु धर्म कार्यों में प्रसिद्ध होगा और धर्म का दीवाना होगा । -जब खाना नं० 1, 2, 5, 9, 12 में वृ० के मित्र ग्रह (सू०, चं०, मं०) हों ।

मंदी हालत

लड़की के टेवे मे कभी मंदा न होगा मगर लड़के के टेवे में अपना लड़का तो क्या अपना दत्तक पुत्र भी न रहेगा । अच्छा यही है कि धर्म की खातिर संतान न बेचे, नहीं तो बुढ़ापे में पछतायेगा ।

रखा घर में मंदिर, न परिवार देगा ।
बचे लड़का जब, तो वह मिट्टी करेगा ।

1. विधवा बहन, बुआ, मंदे राग रंग का शौक पहिली मंदी निशानी है । निर्धनी और मंदे ही हाल मे होगा । चोर डाकू ठग भी हो सकता है । जरुरत के समय कुछ भी न मिले । अवारा साधु का साथ या शहर दर शहर धर्म प्रचार करते फिरना मंदा फल देगा । -जब मंगल बद हो । (मंदे बुध का संबंध हो) (उंगलियों की पोरीयों पर चार चक्र) ।
2. दूसरो को चाहे सोना तोल-तोल कर मु त दे अपने पेट के लिए मेहनत करनी ही होगी । लाखोंपति होता हुआ भी स्वयं मेंहनत करके ही रोटी मिलेगी । -जब खाना नं० 1 खाली हो (सोया वृ०) (उंगलियों के पोरियों पर लेटे खत निशान) ।
3. न ही भाई सहायक न ही राजदरबार में अच्छी जगह, (पद आदि) मिले।
   -जब वृ: स्वयं खाना 7 में मंदा हो रहा हो। (शुक्र के बुर्ज नं: 7

पर ल बी पर टेढ़ी लकीरें)।

4. जवानी में ज्ञान की तरफ भागता और संतान की परवाह नहीं करता था, बुढ़ापे में सुख और धन कहां ऐ आए। तरसना पड़ेगा।
   -जब मंगल बद हो (बुध का संबंध)
5. संतान बरबाद विशेषकर जब शुक्र मंदा हो। दत्तक पुत्र भी मरे। ससुराल , बाप या दादे को दमा हो। मिट्टी का माधो। चने की रोटी का तवे पर हाल हो। सोने की जगह हर और मिट्टी और वह भी उड़ने लगे।
   - जब खाना नं: 1,2,5,9,12,7 में बु:, शु:, रा:, श: पापी हो (वृ: रेखा शादी रेखा को काटे या बुध के पर्वत पर वृ: के सीधे खड़े खत।
6. पुत्र के लिए तरसता रहेगा जो 45 साल में होगा। परन्तु उससे वह खुद बरबाद हो जायेगा। दत्तक पुत्र भी दुखी हो।
   -जब श: या बु: खाना नं० 2, 6, 12 में हो।
7. जुबान का थथलापन, आयु, किस्मत या धर्म सभी मंदे। जन्म में भेद हो।
   - जब शनि या बुध खाना नं: 9-11 में हो और मंदे हों। (भाग्य रेखा की जड़ में गोल दायरा)

उपाय
मंदी हालत की निशानी घर में रत्तियाँ या लाल रंग व मंगल बद की चीजें होंगी। रत्तियाँ जो सोना तोलने के काम आए। यदि इनको पीले कपड़े या सोने के साथ रख दिया जाए तो सहायता भी हो जायेगी। मंदी हालत में चन्द्र का उपाय सहायक होगा।

वृहस्पति खाना नं: 8

(मुसीबत के समय परमात्मा की मदद का मालिक, हर बला से बचाने वाला घर का पुरखा, श्मशान का साधु जिस का सर राख से भर चुका होगा ।)

बड़ों का हो साथ, जब रात करता ।
धन, सोना, माया, आयु सब बढ़ता ।

उड़े खोपड़ी फिर भी[1] जिंदा,
आठ बाबा न बेशक बैठा,
बैठे शुक्र घर 2,6 साथी,
दान सोने की लंका अपनी,
बुध मंगल बद[2] पापी मंदा,
श० में 7,4 जा बैठा,
जिस्म पर सोना कायम रखे,
बु०, राहु, ऋण पितृ[3] टेवे,
साथ फकीरी न देगा ।
भेद छुपा बतला देगा[4] ।
संतान रहित वह न होगा ।
शिवजी रावण को कर देगा ।
कब्र वीराने कर देगा[4] ।
राख खजाना भर देगा ।
दुखिया कभी वह न होगा ।
आयु शक्की तब पालेगा ।

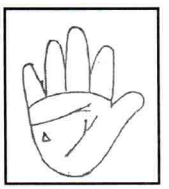

1. जब नं० 2-4 उत्तम हो ।
2. जब चं० उत्तम और खाना नं० 2, 5, 9, 12 उत्तम ।
3. खाना नं० 2, 5, 9, 12 में बु०, शु०, या राहु ।
4. वृ० या शु० की चीजें धर्म स्थान में देना मुबारक होगा ।
5. काला, काना, संतान रहित टेवे में मंगल बद लेते हैं ।

हस्त रेखा

2 शंख, 8 सीधे खत, गृहस्थ रेखा सीधी हो, 8 या 11 चक्र या 6 उंगलियां हों, भाग्य रेखा सूर्य रेखा से न मिले । वृ का पर्वत बिल्कुल न हो। हाथ पर त्रिकोण हो । भाग्य रेखा की जड़ पर त्रिकोण हो ।

नेक हालत

स्वयं धनवान हो या न हो मगर संसार के सब सु:ख उसके पास होंगे । दु:ख के समय परमात्मा की सहायता मिलेगी। सांच को आंच नहीं, वरना स्वयं आग जले की तोल का आदी हो । अपना भाग्य परमात्मा और आत्मिक शक्ति से बनाए । जब तक शरीर पर सोना रहे दु:खी न हो । स्वास्थ्य मंदा न होगा। संसार में दमकता सोना होगा। किसी का मोहताज न होगा। फकीर या

लंगोटबंध साधू न होगा । बाबा की आयु 80 वर्ष से कम न होगी । परन्तु टेवे वाला और उसका बाबा कभी एक साथ न होगा। घर के सभी व्यक्तियों की ल बी आयु का पट्टा लिख देगा, अपने भाग्य को जाने न जाने मगर छुपे भेद को समय से पहिले ही बता देगा। जब तक उपस्थित रहेगा मरने वाले के प्राण नहीं निकलेंगे । हो सकता है कि बाबा उसके पैदा होन से पहले ही चल पड़े या 8 वर्ष की आयु में ऐसा हो जाये, नहीं तो बाबा की आयु 80 वर्ष होगी ।

1. भाग्य को जगाने का स्वामी, सिर धड़ से उतर जाने तक साथ देगा । वीरान जंगल में सब कुछ खोकर शरीर के कपड़े तक गवां कर जहां पर भी बैठेगा वहां ही हरियाली और साने की खाने, धन को ढूंढ़ लेगा। स्वास्थ्य धन परिवार से कभी दु:खी न होगा –जब खाना नं० 2, 4 उत्तम हों ।
2. हर ओर सोना ही सोना, भरे भंडार, छुपे भेद बतलाने की हि मत, आयु ल बी होगी । –जब चन्द्र उत्तम हो और खाना नं० 2, 5, 9, 12 उत्तम हों ।
3. कभी संतान रहित न होगा पुत्र 6 तक होगें अपनी और सबकी आयु लंबी होगी । –जब शु० खाना नं 2, 6, 8 में हो ।
4. खानदान की लंबी आयु का ठेकेदार होगा खासकर अपनी और बाप की । –जब बुध नं० 9 में न हो ।
5. शिवजी (चन्द्र) अपनी दयालुता से रावण गुरु (वृ०) को सोने की लंका दान कर देने की शक्ति देगा । मरते को पानी और दुखिया के आंसू पोंछने वाला धर्मवीर होगा । –जब मंगल नेक हो या मं० खाना नं० 2 से शुभ संबंध हो ।

मंदी हालत

1. कब्र, वीराने ओर खजाने राख से भर देगा । जमाने की हवा को मौत के खूनी तूफान से गुजा देगा । –जब या० या मं० खाना नं० 4, 7 में हो।
2. गंदा बदनाम आशिक होगा । –जब वृ० मंदा या शत्रु से घिरा हो (हाथ पर बुर्ज नं० 2 नीचा हो)।
3. आय ठीक होते हुये भी कर्जई, स्वास्थ्य, धन दोनों मंदे, उल्लू की तरह जिस जगह बैठे वहां ही सब्जबाग कदमा साबित हो और स्वयं श्मशान की खाक सिर में डाले और खून जले साधू की भांति होगा । –जब मंगल मंदा या बद हो (दिल रेखा पर मंगल बंद त्रिकोण < > / ^ निशान हो, गृहस्थी रेखा सीधी खड़ी हो या पर्वत नं० 2 या 4 पर मं० बंद के निशान हों) ।
4. बार-बार जन्म लेने का दु:ख भोगे और आयु कम ही होगी –जब खाना नं० 2, 5, 9, 12 में बु० , शु० , रा० , श० पापी होकर बैठे हों
5. छोटे दिल का दरिद्री, बिमारी का भंडार, बैठे बिठाय मुसीबत खड़ी कर ले । –जब बुध मंदा हो ।
6. खून की कमी माली धन व शारीरिक हैरानी से भरा होगा । –जब खाना नं० 12 खाली हो (हाथ की उंगलियों के नाखून पीले) ।
7. भाग्य की कोई किरण न होगी । –जब सूर्य अच्छी हालत में न हो (भाग्य रेखा सू० रेखा से न मिल) ।
8 जीवन खानापूरी का नाम हो । –जब राहु मंदा हो (बुर्ज नं० 2 पर सात खड़े खत) ।
9 निर्धन, कम दिल वाला, दरिद्री हो। –जब केतु मंदा हो (उंगलियों की पारियों पर दो शंख) ।
10 पक्का इरादा, स्वतंत्र विचार, बढ़ने का विचार, उत्साह भरी उ मीद, सब बातों से उल्ट प्र ाव हो । –जब (शनि प्रबल हो वृ० से) तर्जनी मध्यमा की तरफ झुके ।

उपाय -	**मंदे समय में वृ० या शु० की वस्तुऐं धर्म स्थान में देना लाभदायक होगा ।**

वृहस्पति खाना नं० 9

(सुनहरी खानदान मगर स्वयं धन का त्यागी और योगी जिसके धर्म मर्यादा और बुजुर्गी साया सहायता पर होगी)

माया छोड़ संसार की, न धर्म बनता ।
धर्म स्वयं उल्लंघन, सभी कुछ ही जलता ।

धन की थैली पांच तीजें[3],
माया धन मूत्र समझे,
पांच चौथे बुं बैठा,
पापी शत्रु पांचवें आया,
योग पालन 12 हों[1] ।
फोका पानी गंगा[2] हो ।
राजा योगी होता हो ।
बेटे[4] दुखिया मरता है ।

1. खाना नं० 2, 5, 9, 11 में बु० , शु० या पापी ग्रह न हों ।
2. धन, परिवार, गंगानद।
3. जब 3, 5 दोनों खाली तो माया उसके पीछे दौड़े और जब सूर्य उत्तम हो तो कभी धर्महीन न होगा ।
4. पहिली निशानी धर्महीनता व खुद पसंदी होगी, पर जब नं० 1 खाली हो तो स्वास्थ्य मंदा और दिल की बिमारियां हों ।

हस्त रेखा

भाग्य रेखा सीधी डंडे की तरह खड़ी होवे ।

नेक हालत

अपना भाग्य पुरखों की सहायता या धर्म से बढ़ेगा । प्राण जाये पर वचन न जाये का कायल, वचन से धर्म और ध र्म से धन पाये, हारे नहीं, ज्यों-ज्यों आयु बढे योगी, ब्रह्मज्ञानी होता जाए, आयु कम से कम 75 साल होगी । जन्म समय उसके बड़े मालदार होंगे, जमीन के मालिक होंगे । रूपया गिनने की बजाय तोले जायें । चाहे स्वयं त्यागी होगा और योगी भी मगर उसका शाप भी शु । फल देगा । उसका और उसको फोका पानी भी गंगा जल की तरह होगा (यानि गंग-दरिया, आल-औलाद), धन-दौलत की आमदनी व बरकत होगी । माता-पिता का सु:ख, घर वाले रास्ता दिखाऐं । हकीमी जानता हो, चाल-चलन उत्तम हो । शराब न पीता हो, परहेजगारी । सर्राफ, जौहरी कमाल का होगा । रूहानी धर्म-कर्म सदा ऊंचा होगा । दिमागी खाना नं० 9 (वृ०) का उत्तम फल । धन ही हालत खाना नं० 3, 5 से पता चलेगी, यदि दोनों खाली तो मेहनत से अमीर हो जायेगा परन्तु स त प्रयत्न से सफल होगा ।

1. प्राणों और वचनों का पालन करेगा । योग पालन वह करता हो । जगत् धर्म में पक्का। योग पालन की अच्छी या बुरी हालत खाना नं० 12 के ग्रहों पर होगी । -जब खाना 2, 5, 9, 11 में शत्रु ग्रह बु०, शु०, श०, रा० न हो।
2. राजा होते हुए भी योगी होगा । -जब बु० खाना नं० 4, 5 में हो ।
3. कभी धर्महीन न होगा, यदि होगा तो संसार में न रहेगा, दुनिया में सफल हो, स्वास्थ्य उत्तम सफलता मिले, चाहे वृ० मंदा ही हो जाये । -जब सूर्य कायम हो ।
4. धन के लिए भाग्य शनि की आयु (33-39) (साढ़े 16-साढ़े 19) से गिनी जायेगी, धन बहुत परन्तु औलाद के लिए शनि का फल मंदा होगा । -जब शनि नं० 5 में हो ।
5. कभी शाह, क ी गरीब, क ी फकीर मलंग, कभी अमीरी के ठाठे, कभी गरीबी के समुद्र की रेत की चमक भी न होगी । -जब शु० और चं० दोनों ही खाना नं० 3, 5 से देखें (वृ० के ाड़े खत बुर्ज नं० 4 या 7 पर हों (खाना नं० 9 की हदबंदी पर हो) ।
6. वृ० का प्रभाव तीन गुणा हो जाए और जो नर ग्रह नं० 3, 5 से देखता हो उससे संबंधित प्रभाव भी पक्का हो जाए । प्रमाण यदि उसके जन्म से पहिले रूपया गिन-गिन कर प्रयोग किये जाते हों तो बाद में तराजू से तोल कर प्रयोग किये जायेंगें अर्थात् धन के ढेर लग जाये । - जब नर ग्रह खाना नं० 3, 5 से देखे।

मंदी हालत

1. निर्धन, नास्तिक धर्म को छोड़ जाये परन्तु नर्धनता कारण न हो। - जब दृष्टि आदि से वृ० की हालत मंदी हो।
2. हर समय अपने आप खुदगर्ज खुद पसंदी का तूफान ज़ोरो पर हो, औलाद मंदी, बेटे से दुखी होकर मर जाता हो, पहली

निशानी धर्महीनता होगी। – जब शत्रु बु०, शु०, श०, रा०, पापी खाना नं० 5 में हो।

3. सेहत मंदी दिल की बिमारी हो। – जब खाना नं: 1 खाली हो (उंगलियों के नाखूनों का रंग पीला)।
4. अपने भाग्य के लिए दुनिया के विरुद्ध आप ही मेहनत करनी होगी।– जब खाना नं: 3, 5 दोनों खाली (भाग्य रेखा अकेले डंडे की तरह खड़ी हो)।
5. कम आयु, मंद भाग्य बल्कि मंगल बद का बुरा प्रभाव होगा।

– जब बुध मंदा हो (उंगलियों की पोरीयों पर 11 चक्र हो)।

वृहस्पति खाना नं: 10

(पहाड़ी इलाके का गृहस्थी, हर वस्तु के लिए कलपता दरवेश)

लिखा माया दौलत न था जो विधाता।
बनाएगा क्या तू यह आँसू बहाता।

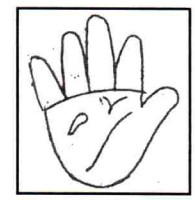

खवाबी महल[1] न कीमत अपनी,
लेख मंदा चाहे अकल सयानी,
रहम लालच शनि चन्द्र[2] चौथे,
शु०, में जब चौथे बैठे,
10 वें घर का नीच वृहस्पति[6],
शनि का गिरदां पहरा होवे,
रवि मगर खुद जला जलाया,
शनि ने हो जो पत्थर फूकें,
ना ही पिता धन छोड़ता हो।
सिर्फ शनिं ही तारता हो।
राख सोने[4] की होती हो।
रवि से सोना[5] खुद देती हो।
रवि से सोना करता हो।
हर दो चूल्हे धरता[7] हो।
मदद चन्द्र की पाता हो।
लाल रवि कर देता हो।

1. नाक साफ रखना मदद देगा।
2. शनि 11 तांबा भी सोना हो विशेषकर जब खाना नं० 2, 4, 5, 6 में सूर्य या चन्द्र कायम हो। शनि के काम, जब खाना नं० 2, 4, 5, 6 सब खाली हो तो मंद भागी, नं० 2 खाली, कम धन उत्तम स्वास्थ्य।
3. शनि नं० 4–6 हो तो 18 वर्ष की आयु में पिता का जीवन शक्की है, चं० नं० 4 हो तो माता 16 से 27 वर्ष की आयु में शक्की होगी।
4. वृ० कायम करना, केतु का उपाय चलते पानी में तांबे का पैसा बहाना, बहाते रहना सहायक होगा।
5. जब 4 में श:, च:, बु: या नं: 5 में सूर्य हो तो शु: का फल (संतान धन, स्त्री) बरबाद।
6. सूर्य नं: 4 में हो।
7. शनि नं: 10 में हो।

हस्त रेखा

सूर्य के बुर्ज बुध की ओर एक सीप, 10 चक्कर या आयु रेखा चन्द्र पर समाप्त हो यानी पितृ रेखा बनी हो। वृ: और श: के बुर्ज दोशाखी रेखा से मिले।

नेक हालत

अपने भाग्य का उदय, शारीरिक कार्य (हाथ से करने वाले) से होगा। जिस कदर कर्मी–धर्मी और नेकी करने वाला हो उतना ही गरीब, उतना ही दुखिया और हर ओर से निराश फोकी उ मीदें। न मिले राम ना माया, लालच की मंदी हवा हो। जिस कदर चालाक हो आराम पाये। परन्तु इश्क बदकारी धोखा ही देगी। धन न होते हुए भी अकल का धनी हो। भाग्य का उन्नत या नीच होना और टेवे वाले को माता–पिता का सुख, शनि की अच्छी बुरी हालत पर चलेगा।

जब शनि उत्तम हो, और खाना नं० 5, 6 में सूर्य या चन्द्र कायम हो तो वृहस्पति (का मकान) सेहन, मकान के किसी भी एक तरफ परन्तु बीच में नहीं या धर्म स्थान का साथ नेक शनि का काम देगा। शनि की तबीयत चालाकी कामयाबी का भेद होगी। मामूली गोल लोहा उसके लिए सोने का काम देगा। स्वयं भाग्यवान होगा। शनि के काम उत्तम होगें, सहायक होगें। सांसारिक सुख कार्य, माता–पिता का सुख ल बा नेक रहेगा।

1. मिट्टी भी सोना देगी, अगर इश्क चोरी छुपा कर न रखेगा। स्त्रियां बेशक 2 या कई हों परन्तु अपनी बना कर रखी हुई हों

तो कोई मंदा प्रभाव न होगा। – जब मंगल या शु: खाना नं: 4 में हो ।

2. माता-पिता का सुख सागर जैसा शनि वैसा होगा। शनि उत्तम तो 33 से 39 साल में से भाग्यवान और उल्टी हवा के चक्कर में धूमना पड़ेगा। – शनि की हालत पर फैसला होगा (आयु रेखा चन्द्र के बुर्ज पर खत्म हो या पितृ रेखा बन रही हो।)
3. वृ: अब नीच न होगा, उत्तम हो जाएगा, सोना होगा, जले हुए पत्थर से भी सोना बन जाए। – जब सूर्य नं: 4 में हो।
4. मंगल की चीजें व रिश्तेदार, कार्य, भाई की मदद या उसके साथ शुभ संबंध रखने से 28 साल की आयु में उत्तम हालत का स्वामी और सब के पूजने की जगह होगा। – जब मंगल खाना नं: 4 में हो।
5. घर घाट में पूरी बरकत होगी। – जब श: ाना नं: 2 में हो।
6. सोने-चांदी के कार्यो से फायदा, मगर शनि के कार्यो से हानि, आग की मंदी घटनाएं हों। – जब सूर्य खाना नं: 3, 5 हो और श: नं: 9 हो।
7. राजदरबार के कार्यों में धूमना, उनसे मोती पैदा हों और नेक हों। – जब सू: या चं: खाना नं: 2 में हो।
8. टेवे का बुरा असर, टेवे वाले के बाप की निर्धन और बेटे की माली सहायता चाहे जीवन में, चाहे मरने के बाद अगर कभी कोई हो तो सब बाबे पर होगा। बाप पर बुरा असर न होगा।– जब सूर्य खाना नं० 1, 4, 5 पर हो ।
9. संतान लड़के ही लड़के, तांबा भी सोना हो जाये । खुशहाल होगा, उत्तरदायित्त्व पूर्ण होगा । – जब बुध उत्तम और वृ० को बरबाद न करता हो (उंगलियों की पोरियों पर 10 चक्कर हों)।

मंदी हालत

ऐसा मनुष्य स्वयं धर्म मर्यादा मगर निर्धन, ज्यूं-ज्यूं नेकी बढ़े निर्धनता बढ़े। जमाना इसका शुद्ध तेल भी पिशाब के बराबर भी न माने । बचपन बढ़ापा दोनों मंदे। पिता भी निर्धन होगा। मरते समय कोई धन हीं छोड़ कर मरेगा । न कभी अच्छी हालत देखने को आएगी। वाब चाहे महलों के, घर पर चारपाई को बीमार पशु के तबेले में ही देखता हो। आरजू पूरी न हो ।

1. फालतू खर्च बदी का सहायक। जाहिल स प्रदायिक होगा। हर बात का फैंसला उसके उलट होगा। –जब शनि मंदा हो (सूर्य के बुर्ज पर बु० की ओर एक संदफ हो)।
2. गरब पर तरस खाकर जब कभी भी अच्छा काम करे दंड़ ोगे। अपनी जान पर दूसरों के जुल्म देखे यदि किसी को भूल कर भोजन दे तो जहर के इल्जाम में पकड़ा जाए। –जब शनि खाना नं० 4, 10 , 1 या चं० खाना नं० 4 में हो ।
3. सोना राख हो जाए, दिल में भलाई सोचने से सांस में जहर भर जाए (केतु कायम करना या वृ० कायम रखना सहायक होगा)। – जब केतु बरबाद हो।
4. सब ओर मंदी हालत, न मान मिले न माल, निर्धनता में कुत्ते की तरह थोड़ी रोटी को भी तरसता रहे। – जब श० खाना नं० 1, 4, 10 में हो ।
5. माया कोसो दूर ागे, परन्तु ईश्वर से डरने वाला, स्वास्थ्य अच्छा रहे, माली हालत नाज़ुक (खराब अर्थ में)। –जब सिर्फ खाना नं० 2 खाली (हाथ के नाखून पतले झुके और टेड़े हों)।
6. मंद भाग्य परिवार में अकेला । अपनी मेहनत से कामयाब आयु को कोई भी सहायता न देगा। –जब खाना 2, 4, 5, 6 सभी खाली हो (भाग्य रेखा उमर रेखा से अलग डंडे की तरह गुरू हो)
7. स्त्री पर स्त्री मरे या ल बा साथ न दे, एक बच्चा देकर भाग जाए या अलग हो जाये। – जब सूर्य नं० 5 में हो।
8. पिता के लिए निर्धनता का अलार्म होगा। टेवे वाले की छोटी आयु में अप्राकृतिक खून के जहर के प्रभाव से मर जाये। धन की हालत थोथा चना बाजे घना सा हो। लोक कहे इसके विवाह के लिए जब कि वह 34 साला आयु तक अंदर से खाली

ढोल हो जाये। (नाक साफ रखना और नाक छेदन करना सहायक होगा) - जब बु: खाना 4,9,10 में हो।

9. शनि के कार्य या चीजें या संबंधी शनि की मंदी घटनाएं, आग जहर, झगड़े फसाद आदि के बुरे परिणाम होगें।
   - जब सूर्य खाना 3,5 और शनि खाना नं: 9 में हो।
10. स्त्री लक्ष्मी, संतान, सफर सभी मंदे, चोरी हो सकती है। - जब खाना नं 5,4,9 में सू:, श:, या बु हो।
11. जिसका संबंध हो उसका भी बेड़ा ग़रक करे। मंदी प्रसिद्धि हो। घर में कुत्ते को रोटी, चींटी को आटा न मिले, उसके उल्ट चलने वाला जब भी सामने आये खुद ही फौरन गर्क हो जाये और वह (आने वाला) पछताने का भी मौका न पावे।
    - जब शनि स्वयं वृ: को सहायता दे।

उपाय

1. माथे और पगड़ी पर पीले केसर का तिलक लगाना और नाक साफ करके काम शुरु करना सहायक सिद्ध होगा।
2. पिता की हालत सुधारने के लिए 40-43 दिन चलते पानी में तांबे का पैसा बहाना सहायक सिद्ध होगा।
3. वृ: नं:10 में मंदा हो तो वृ: के सोने को कोढ़ होगा, हर तरफ लानत मलामत मिले। हर दरवाजे का मंदा मायूस दरवेश हो।

वृहस्पति खाना नं: 11

शनि का राज्य (इमान से खाली) के समय सिवाए धर्म बाकी सब कुछ, बल्कि कफन तक पराया, खजूर के पेड़ की भांति अकेला।

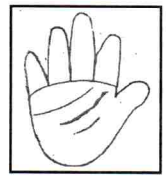

कफन दूसरों पर जो लू देता रहेगा।
बिना क़फन घर से न बाहर मरेगा

इश्क हस्द से गर हो गुरु जलता,
बुध दबाया हो शनि[2] मंदा,
धर्म पालन से हो गुणो 11,
पेशाब पड़ेगा उसको नहाना,
ऊंच हुआ चाहे शुक्र[3] टेवे,
मर्द माया पर डोलता[1] हो।
सिफर गुरु स्वयं होता हो।
गर उत्तम गृहस्थी बनता हो।
नाली चलन जब मंदा हो।
दुखी स्त्री उसकी होती हो।

1. मं: 3 में तो, घर की मौतों से दुखिया, बु: नं: 3 में हो तो अच्छी कमाई करता हुआ भी कर्जई होगा।
2. ऐसे मनुष्य से किसी को लाभ न होगा विशेष कर जब नं: 3 खाली हो आमतौर पर अपने लिए नं: 3 खाली उत्तम होगा। नं: 3 में मित्र ग्रह 23 साल की आयु में मदद देगें।
3. स्त्री दुखी मर जाए या तलाक दे जायें।

हस्त रेखा 9 चक्कर या सर की श्रेष्ठ रेखा हो।

नेक हालत

अपने भाग्य का शुभ प्रभाव, गरीबों पर दया, धर्म पालन उपदेश से होगा, जब तक घर में एक साथ रहकर काम करता जावे, खुशी से निर्वाह करने वाला होगा। परन्तु जब खजूर के पेड़ की भांति अकेला रह जाए तो वृ: सिफर मंदा हो जाये। पिता के रहने

तक सांप भी सजदा कर मगर ज्योही पिता का साया उठा, मर्द, की माया राजा, साधु वृक्ष सब का साया उठ जाएगा। संक्षेप में पिता लाखो का होते हुए भी मरते समय पुत्र के लिए कुछ भी न छोड़ कर करें। बेटा, पिता के धन से लाभ ना पावे। दिमागी खाना नं: 15 (शनि से संबंधित) खुद्दारी मगर हस्द से बुरी, दिमागी खाना नं: 35 (चन्द्र से संबंधित) पेशानी, गुजरी बातों का याद आना। धर्म अदालत, दरबार का मालिक राजा जहां शनि भी पहले वृ: का प्रभाव 11 गुणा उत्तम होगा। किए हुए वचन, वायदे पूरा करने से उत्तम हालत बनेगी।

1. वृ: सोया हुआ। फैसला शनि पर मगर टेवे वाले के लिए फिर भी हर समय उत्तम। - जब खाना नं: 3 खाली हो।
2. 23 साल ऐश के बाद फिर अंधेरी रात हो जायेगी अत: वृ: को कायम रखना जरुरी है।
   - जब खाना न: 3 में सू:, चं:, मं: मित्र हों।
3. अपना ही कोई भाई बंधु मिलने से या मिलाने से भाग्य उदय होगा, 12 साल ऐश के होंगे फिर प्राय: मंदा जो जरुरी नहीं कि

हो ही। – जब खाना नं: 5 में सू:, चं:, मं: हो

(भाग्य रेखा के समान्तर नं: 11 में दूसरा खत)।

4. सू: यानि राजदरबार या आग के काम से कमाया तांबा भले उसे सोने का काम दें। वृ: नं: 1० तरह अब वृ: नं: 11 का मंदा असर यदि कुछ हो भी तो पिता की बजाए बाबे पर होगा। – जब सू: खाना नं: 1,4,5 में हो।
5. वृ: चुप होगा मगर गुम न होगा। – जब राहु खाना नं: 9 में हो।
6. जो वृ: का मुफत माल नदारद मगर खुद पैदा किया अवश्य हो और ज्यादा धनी होगा। – जब बुध उत्तम हो। (हाथ की पोरियों पर 9 चक्र, जब बुध 6 में हो सर रेखा श्रेष्ठ या दो हों)।
7. चाहे पिता की मदद न होगी मगर वह स्वयं सदा प्रसन्नता से गुजारा करेगा और उत्तम फल देगा। – जब शनि उत्तम हो।
8. शनि वृ: दोनों का फल उत्तम होगा। – जब शनि साथी हो। (बुध खाना नं: 2 में, शनि (10) हाथ में दो शाखी से मिले हो)।

मंदी हालत

अमूमन बुध (बहन और बुआ) का फल मंदा ही होगा। धर्म विमुख राजा की भाँति स्वयं वह किसी को लाभ न दे मगर टेवे वाले की अपनी हालत उत्तम होगी। पिता की मृत्यु के बाद मच्छर से भी लड़ पाने की शक्ति न रहेगी। चालचलन गंदा तो गंदी नालियों में नहाए होगा। इश्क के संबंध में सुन्दर मिट्टी तक भी न पाएगा। परिवार चाहे कितना हो, कफन पराया ही मिलेगा, विशेषकर मंदे ग्रहों के स बंधी की मौत पर कहीं बाहर ही जाकर मरेगा, अत: दूसरों की मौत पर कफन पर दान करना उपाय है।

1. हस्द, (इर्ष्या) इश्क की अधिकता से तबाही हागी। उसका सोना गंदी मिट्टी की तरह बिक जाएगा क्यूंकि इश्क वृ: की शक्ति को जला देगा। – जब चं: नं: 1 या जब वृ: सोया हुआ दृष्टि आदि के संबंध से मंदा हो रहा हो।
2. बुढ़ापे में मंदा हाल, आयु के 90 वां साल मंदा, आंखे कमजोर और शनि का अपना प्रभाव मंदा होगा। –जब बु: नं: 6 में और चं: खाना 2 में हो।
3. वृ: की पहली उम्र का असर शक्की हो। – जब खाना नं: 3 मंदा हो।
4. धर की मौतों से दुखिया मगर ससुराल के लिए उत्तम। – जब मं: खाना न: 3 में हो।
5. अच्छी आमदन के होते हुए भी कर्जई, पिता से खुद दुखी हो। – जब बुध नं: 3 में हो।
6. स्त्री दुखिया हो। – चाहे शु: कितना ही उच्च हो।
7. मं:, वृ०:, श: तीनों का फल मंदा हो। – जब चन्द्र मंदा हो।
8. धर्म को बेचने वाला चाहे राजा ही क्यू न हो, किसी को लाभ नहीं मगर अपनी हालत अच्छी हो। –जब बुध दबाया या मंदा हो।
9. वृ: सोया होगा जिसका फैसला शनि पर होगा, कद ल बा होगा, मर्द होगा, नर्म दिल, धर्मात्मा हो। यदि अपनी ही उंगलियों के पैमाने से 68 उंगल हो तो भाग्य हीन और 52 उंगल हो तो भाग्यवान। – जब खाना नं: 3 खाली हो।

वृहस्पति खाना नं: 12

(बुरे का भला करने वाला, उत्तम ज्ञानी वैरागी)

प्रार्थनायें भले की सबकी अगर तू करेगा।
हालत राहू पर धन है[3] चलता,
चुप समाधि वर्षा सोने की,
8-9 घर 2, 10 खाली,
हुआ शनि जब 2-9 साथी,
गुरु[8] घरों जब पापी[4] बैठे,
गुरु उत्तम 2[5] राहु[6] बिगड़े,
नेकी करे सर शत्रु कटे,
बैठा शुक्र चाहे टेवे कैसा,
बुध आयु तक केतु मंदा[7]
खजाना न शक्ति का तेरा घटेगा।
केतु धर्म स्वयं बोलता हो।
धर्म[2] कडां दिया बोलता हो।
माया दौलत सब छोड़ता हो।
पाता दौलत मच्छ रेखा हो।
बु०, शु० स्वयं मंदा हो।
साधु-सेवा से बढ़ता हो।
सहाने पानी जब धरता हो।
असर अच्छा ही होता है।
पाप राहु तक दुखिया हो।

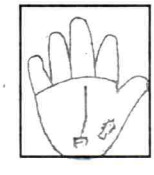

1. मंदी हालत में चन्द्र (खेती, जमीन आदि) के वीरान, खुले मैदान की फोकी उ मीदें, 42 साल आयु तक पिता निर्धन, दुखिया

कलपता ही रहेगा।

2. जमाने की हवा का पूरा और शुभ प्रभाव होगा या हवाई गैस के कामों से सदा लाभ ही होगा।
3. खाना 2, 5, 9, 12।
4. रा:, के:, श:, खाना नं: 9-12
5. 11, 19, 31, 42, 53, 67, 84, 101, 114 साला आयु।
6. दगा फरेब, धोका, झूठी शहादत, बदकारी आदि , खुद सा ता मंदे काम।
7. बुध मंदा तो 34 साला आयु तक केतु का प्रभाव मंदा, मगर शु: (स्त्री भाग) कभी मंद न होगा और न ही संसारिक माया की कमी होगी। नेकी से रात का आराम मिलेगा।

हस्त रेखा

3, खत, 6 शंख, 12 चक्कर (जब उंगलिया 6 हो) भाग्य रेखा की जड़ पर राहु का चिन्ह हो या मच्छ रेखा शुक्र के पर्वत पर या शुक्र के पर्वत पर या शुक्र और चन्द्र दोनों पर्वतों के बीच मुहं ऊपर किए हुए और उर्ध रेखा या उम्र रेखा उसके मुह में हो।

नेक हालत

गुरु पवन माया चाहे सोना ही बख्शे, मगर मर्द त्यागी जो देखे न बरते।

अपने भाग्य का शुभ प्रभाव सुख से संबंधित काम, योग, तपस्या, पूजा पाठ से होगा। छोटी आयु में राहु के समय (पिता को खर्च की अधिकता) की चिंता। माया पर पेशाब करने वाला गृहस्थी। उसके घर में गंगा होगी। (खाना) नं: 9 का उत्तम प्रभाव। माया लक्ष्मी स्वयं पांव पकड़ती होगी, चाहे बुरा बु: मंदा या के: बुरा हो, मगर माया की कमी न होगी। शुक्र कहीं भी कैसा भी हो उत्तम होगा। ऐसे व्यक्ति के आर्शीवाद से लाभ और सताने से हानि होगी। संसार के लिए भंडार खोले तो अपना घर सोने से भर ले। चूप समाधि की आदत से सोने की वर्षा होगी। दयालुता के असूल पर धर्म कड़ा मुबारक होगा (जो रात का आराम देगा) नेक काम करने का असूल, राहु के हाथी को वृ: के सोने की जंजीर से बांध देने का शस्त्र होगा जिससे रात का आराम और धन मिलेगा। कभी निर्धनता का मारा साधू न होगा। 11 साल की आयु से मंत्री की भांति उत्तम होगा (दिमागी खाना नं: 12) राजदारी का स्वामी, त्यागी हो, अच्छा खाता पीता होगा। छुपी हुई शक्ति उत्तम होगी। खर्चा चाहे अति अधिक हो पर कबीलदारी पर ही लगेगा। किसी के घर मेहमान बनकर गया हुआ, धर्म स्थान में पूजा पाठ करता या आयु के निम्न वर्ष (आयु के साल 9, 11, 19, 31, 42, 43, 67, 84, 89, 1० 7, 114) उत्तम ही होंगे और गृहस्थ का सुख मिलेगा, शर्त यह कि झूठी गवाही, धोखा, फरेब, बेईमानी (राहु) परहेज़ करें, अपनी समाधि और परलोक के विचारों की लहर में या साथी गृहस्थियों के भले की मस्ती और धुन में मग्न होगा। जातक को कोई सताएगा तो शाप पाएगा और उसकी (जातक की) सेवा से आशीष पायेगा। (शुक्र अब अपना पूरा प्रभाव कम से कम 25 साल आराम देगा और अपने लिए मन्त्री समझदार होगा।

1. शनि के कारोबार मोटर लारी मशीन आदि से उच्च भाग्यवान हो। रात को आराम पाये। राजदारी का स्वामी। कूच की तैयारी की फिक्र में शर्त यह कि शनि मंदा न हो यानि अब शनि को राहु, केतु किसी न किसी तरह न आ मिलते हो। फैंसला सांस पर हो। यदि जब दोनों या दायां सांस चल रहा हो तो शुभ कार्य, देर तक रहने वाले कार्य शुभ फल देगें। बायें सांस में किया काम या वैसे ही किया काम कोई शुभ फल न देगा। - जब श: साथ-साथी या खाना नं: 9 में हो।
(मच्छ रेखा शुक्र के पर्वत पर या बुर्ज नं: 9 में मछली का चिन्ह जिसके मुख में अर्थ रेखा हो या उम्र रेखा इसमें खत्म हो)
2. शनि के कार्यो में मच्छ रेखा का अच्छा भाग्य मगर फिर भी त्यागी हो। - जब श: साथ या साथी 2-11 में हो।
3. वृ: दो जहान का स्वामी होगा, रात का आराम देगा परन्तु सन्तान की लगन, फिजूल खर्ची और शत्रु से बचाव और मृत्यु समय उत्तम हालत होगी। - जब राहु (उच्च) नं: 6 में।
4. यदि राहु उत्तम होगा तो सोना और धन सब उत्तम और सुख देगें वरना सोना भी पीतल के भाव बिकता और दु:ख का कारण होगा (यानि धन की हालत का फैसला स्वयं राहु की हालत पर होगा।) - जब राहु की हालत वृ: के दो जहांनों की हालत (किस्मत रेखा की जड़ में राहु का निशान) हो।
5. धर्म समाधि का फैसला केतु की हालत पर होगा। बड़ा ही अमीर और संतान हर तरफ से सबका सुख हो।

– जब केतु उच्च या उत्तम हो (उंगलियों की पोरी पर 6 शंख)

मंदी हालत

1. चाहे अपनी आयु ल बी परन्तु दूसरों के लिए भारी मनहूस।– जब बुध मंदा हो (उंगली की पोरी पर 12 चक्कर –6 उंगली)
2. बदी का काम मौत का कारण बनेगा, लोगों के सामने हाथ फैलाने से राख मिलेगी। – जब वृ: सोया हुआ या दुष्टि से या शत्रु ग्रह की जहर से मंदा हो चुका होगा।
3. 42 साल की आयु तक फोकी उ मीदें विशेषकर बुध, शुक्र हर दो ग्रहों के मंदे प्रभाव होंगे।
   – जब खाना 2–5–9–12 में पापी सिवाय के: नं: 9–12 के।
4. राजा होता हुआ भी लाभ न उठायें अपितु फकीर हो जाये वृ: सोया हुआ होगा। –जब खाना 2–8–9–10 खाली हो (भाग्य रेखा मध्यमा की शिखर पर चढ़ जाए)।
5. बुद्धिमान मगर विद्या काम न दें और कार्य लाभ न दें। विचार धर्म विरुद्ध हो, फिजूल खर्च खड़ा रहे पिता को राहु की आयु तक कष्ट रहे। – जब राहु नीच 9–12 में हो (वृ: के पर्वत पर 3 खड़े निशान)।
6. स्वयं भाग्यवान परंतु संतान के विघ्न होंगे। – जब मंदा वृ: हो।
7. चन्द्र धरती जो खेती के प्रयोग में खुले मैदान, वीरान और चन्द्र के दूसरे कामों में खाली उ मीदें। – जब मंदा वृ: हो।
8. केतु 34 साल तक मंदा ही प्रभाव देगा। – जब बुध मंदा हो।

उपाय

वृ: की मंदी चीजों के काम, हर समय गले में माला, गुरु, साधु या पीपल कटवाना, मंदे भाग की निशानी होगी। वृ: की पीली चीजें, पीला तिलक लगाना या नाक का पानी साफ रखना सहायक रहेगा।

****

सूर्य

(सबका पालन करने वाला तपस्वी राजा, विष्णु भगवान् जी)

सूर्य

(सबका पालन करने वाला तपस्वी राजा, विष्णु भगवान् जी)

गर्म शौक तेरा है नींव उन्नति।
मगर बढ़ न जाये कि हर चीज़ हो जलती।।

पाप [4] मं: बुध [1] फैसला करता,
उत्तम रवि हो जिस दम बैठा,
तख्त केतु 6 मं: बैठा,
आग जली चाहे 6-7 होता,
मदद मित्र पर बाप से बढ़ता,
शत्रु साथी से केतु [2] मरता,
पांच पहिले घर ग्यारह बैठा,
ग्रहण टेवे हो जिस दम आया,
रवि देखे जब चन्द्र भाई,
आधी आयु जब चन्द्र होगी,
बुध नजर जब रवि पर करता,
असर भला सब दो का होगा,
रवि दृष्टि शनि पर करता,
शनि रवि से पहिले बैठा[3],
शनि शुक्र जब सूर्य देखें,
मकान बनावे रिश्तेदारों के,

ग्रहण होता खुद पाप से हो।
भला चं:, बु:, शु:, हो।
उच्चा रवि खुद होता है।
दान मोती का देता हो।
नमक छोड़े खुद फलता हो।
दान दिए सब बचता हो।
शत्रु मदद पर होता हो।
पाप समय तक मंदा हो।
तख्त बैठा न जब कि हो।
लेख भला सब होता हो।
दर्जा दृष्टि कोई हो।
सेहत माया या दिमागी हो।
बुरा शुक्र का होता हो।
नर ग्रह स्त्री उत्तम हो।
मौत मरे दु:ख होती हो।
माया खत्म हो जाती हो।

1. सूर्य रोशनी गर्मी, वृ: तेज, मं: किरणें, बुध आकार, चन्द्र चमक।
2. सूर्य स्वयं अकेला नीच या मंदे घरों का तो बरबाद करने वाला गुस्सा, संतान का भाग्य व आयु या बाप की मदद मंदी होगी। राहु से अपने विचारों की/पर गंदगी, शनि से बेईमानी, शुक्र से इश्क, केतु से कानों का कच्चा, पैरों की चाल ढ़ाल।
3. सिवाय सूर्य मंदी हालत के समय स्वयं सूर्य का अपना उपाय काम देगा।
4. नेक हालत का फैसला पाप (राहु- केतु) की हालत पर होगा।

आकाश में रोशनी, पृथ्वी की गर्मी, राजा भिक्षु से, सच्चाई और पालना और उन्नति की शक्ति को सूर्य का नाम दिया है। जिस का होना दिन और न होना रात, मनुष्य के शरीर में रुह, अपने शरीर से दूसरे की सहायता की हि मत का नाम सूर्य है। सर्दी (चन्द्र), रोशनी गर्मी (सूर्य का अपनापन) लाली (मंगल) और खाली जगह का घेरा (बुध का आकाश व आकार) इसके जरुरी भाग है और समय की हवा जगत गुरु, वृ: के ज्ञान संसारी बुद्धि और भाग्य की नीव इस की देन है जिसे हर सांस लेने वाले तक पहुँचाना वृ: का काम है। चलते रहना अपना अंत न बताना और इधर-उधर हुए बिना एक ही जगह रात-दिन करते रहना इसी सूर्य देव का ही एक आश्चर्य है।

12 घरों में सूर्य की हालत

सत्युगी [1] राजा घर पहिले का,
धन भंडारी दौलत स्वयं तीसरे होगा,
औलाद बढ़ेगी हर दम पांच के,
परिवार कमी चाहे होगी सातवें,
आयु लम्बी 9 बढ़ता परिवार,
धर्म पूरा घर 11 उसका,

दाता सखी जब 2 का हो।
जोड़ मरे घर 4 का हो।
फिक्र धन नं: 6 का हो।
राजा तपस्वी 8 का हो।
दसवें स्वास्थ्य धन उत्तम हो।
रात सुखी घर 12 हो।

1. बाप की पूरी मदद करो, बेटे से उ मीद न करो। चाहे बाप से धन न मिले पर बेटे को देकर जायेगा।

सूर्य दुनियावी राजा, जातक के जिस्म और राजदरबार का असर

खाना नं: 1 :-

पिता की पूरी सहायता करेगा, बेटे की तरफ से मदद की आशा न करेगा, बाप से चाहे धन न मिले परन्तु संतान को धन अवश्य देकर जायेगा। राजा होगा जिसे सिवाए न्याय के और कोई स बन्ध (धर्म आदि से) न होगा, हुकूमत गर्मी की, दुकानदारी नर्म तबीयत की शुभ होगी, पर रहम से भरा होगा।

खाना नं: 2 :-

मन्दिर की ज्योति जो किसी मजहब के अनुसार दबी नहीं है, धर्म देवता, माली हालत मध्यम, स्वभाव सतयुगी। छोटी जगह का राजा जो अपने भाग्य की शर्त नहीं करता, मगर साथियों बच्चों, स बधियों को जरुरी धनवान कर देता है चाहे आप निर्धन क्यों न हो। सेवा उन्नति की नींव होगा।

खाना नं: 3 :-

मृत्यु को रोकने तक की शक्तिवाला जिससे मृत्यु भी डरे। खुद हलवा पूरी खाये दूसरों को भी खिलाए। जो शुभ कार्य कर दिखलाएगा, झूठे को काट खाएगा। बुध जो इस घर का स्वामी है अपने जंगल को इतना घना कर देगा कि सूर्य नं: 3 की धूप जमीन तक ही न आने पाए, मगर सूर्य की अपनी गर्मी से जंगल को ही आग़ तक लगने को तैयार होगी। या तो जंगल में हरियाली हो या बुध हरे रंग की बजाए खाकी रंग हो जाये। मगर ऐसा व्यक्ति यदि दूसरों को पालेगा तो स्वयं भी पलता जाएगा नहीं तो जल कर मर जायेगा।

खाना नं: 4 :-

राजा के घर जन्म ले या न ले परन्तु स्वयं राजा अवश्य हो। आप ने चाहे जन्म से पैसा न देखा हो परन्तु संतान को (रेशम के कीड़े की तरह) पैसा खर्चने की शक्ति दे जायेगा। माता जीवित हो न हो मगर बाप की तरफ से हो सकता है कि माताएं अवश्य हो, परन्तु स्वयं चालचलन वाला होगा। ऐसा व्यक्ति स्वयं चाहे हानि उठा लें, दूसरे की हानि नहीं करेगा। यदि पराई स्त्री को साथ रखे तो संतान न पावे या निसंतान होगा। अगर दान देगा तो मोती देगा।

खाना नं: 5 :-

मनुष्यता की शराफत और दुनियावी मर्यादा से भरा राजा जो अपने परिवारिक खून को अपना मंदिर बना लेगा। जन्म से ही भाग्य का जलता दिया होगा जो किसी के जलाने से न जलेगा। यानि जन्म से ही भाग्य का स्वामी होगा। आयु के साथ धन भी बढ़ेगा। उसके खर्च किए हुए धन से संतान के लिए धन, अनाज के रास्ते खुल जायेगें, मालामाल होगा। मनुष्यों में कोई बंदर नहीं, बंधे हुए व्यक्तियों, बंदरों को आजाद् करवाने का हामी होगा।

खाना नं: 6 :-

आसमान तो गर्म, सूर्य की गर्मी जमीन भी जलने लगी जिसकी आंच रात को भी ठण्डी न हुई। तू कौन मैं खामखाह के किस्से में आग जली बेवकूफ शाह तीसमारखां। खेत में कनक के बीज जलने लगे। ऐसी हालत में वही बचा जिसने अपने घर पानी की जगह दूध दिया, और बुरा करने वाले को भी आशीश दी। ऐसा आदमी जिद पर आया हुआ वैसा ही होगा जैसा कि एक देश से निकाला हुआ राजा अपनी प्रजा को आग की लपटों में जलता हुए देख कर रोने की बजाये हंस देगा। वह स्वयं निसंतान या मंद बुद्धि ना होगा। ऐसा व्यक्ति कभी मन और वाणी से मंदा न होगा चाहे उसे भाग्य का लाख मुकाबला करना पड़े।

खाना नं: 7 :-

ऐसे व्यक्ति के पैदा होने पर ऐसा लगेगा कि घर का सूर्य पैदा हुआ। परन्तु चढ़ते चढ़ते वह दुमदार तारा बन जायेगा। उसने सब कुछ समझ और नेक बुद्धि से किया मगर परिणाम उल्टा ही निकला, मगर जब उसने स्वयं हौसला किया तो सारा जलने से आधा ही बचा लिया। अंत में जब जि मेवारी उसने खुशी से संभाली तो सुख की रोटी मिलने लगी और साथ वाले भी आबाद हुए। राज दरबार का साथ मिला। खेती पकी मगर अनाज से जले की बू आने लगी, यानि ऐसा राजा होगा जिसका ताज गुम हो गया हो अर्थात् सब कुछ होते हुए भी कुछ न होगा। बेशक राज गद्दी पर जन्म लेकर भी गद्दी पर न बैठ जाए। हाकमी गर्मी की दुकान नर्मी का हामी होना, ठीक रहेगा। अगर कोई जला देवे हम भी उसे जलना सिखाएंगे, मगर खुद न जलेंगे।

खाना नं: 8 :-

ऐसे व्यक्ति जन्म से ही कहने लगेगा, मरने वाले पूछ कर मरें जन्म लेने वालों पर कोई बंधन नहीं। जो आए अपना खर्च साथ लाए और जाने वाला कोई चीज साथ लेकर न जाए। जन्म चाहे शमशान का हो मगर गुरु गद्दी, राज गद्दी का स्वामी हो उसको नहीं हटाएगा, मगर अपने अपने हाथों से हारा भाग्य वापिस न पाएगा। यानि भंडारी रहे तो भंडारे भरे परन्तु यदि भिक्षु बने तो भिक्षा न पाए। जब तक अपने खानदानी खून पर हमला न करेगा, बरबाद न होगा। मर गए का अफसोस तो है मगर जीवित

करने की भी हमारी ही जि मेवारी है का स्वभाव और शक्ति रखेगा।

खाना नं: 9 :-

हकीमों को बिना दवाई ठीक करने की हि मत देने वाला, शाह और स्वयं भी बड़ा हकीम, डॉक्टर। अपने परिवार के अलावा अपने साथ सभी को पालेगा। 'पिछली को छोड़ और आगे को न घबरा', लेकिन संसार का सूर्य तेरे साथ चल रहा है की भांति कार्य करने वाला होगा।

खाना नं: 10 :-

पैसा तो खरा है मगर बाज़ार में कोई उसका सौदा नहीं देगा। संसार उसके सच्चे होने पर उससे डरता है। असली बची आग़ को भूत प्रेत की आग़ दुनियां समझती है। मगर फिर भी राजा घमण्डी गुस्से वाला दूसरों को माफ करना तो एक तरफ अपने मां बाप को भी फांसी का हुकम लिख देगा। नाक पर मक्खी नहीं बैठने देगा। जब तक रहेगें झुक कर नहीं रहेगें जब झुकना पड़ा तो हम नहीं रहें और अगर रहेगें तो सिर्फ उसके साथ जो हम प्याला हम निवाला हो, की प्रवृत्ति वाला। दिखावे को सच्चा मगर दिल से झूठा होने की बदमाशी की निशानी अगर नहीं देखी तो वह कर दिखाएगा।

खाना नं: 11 :-

गो लालची गर धर्म तपस्वी होगा। यदि कोई बेचकर खाएगा तो हमारा क्या खाएगा, के विचार का बुलंद स्वामी, जिस तरह नेकी से बढ़े बढ़ता चले। लेकिन जब स्वयं रोटी कनक (सूर्य) के साथ मांस (श०) मिला कर खाए तो सूर्य श: के झगड़े में केतु (नर संतान) बरबाद हो। परन्तु परिवार में ऐसा व्यक्ति आप चाहे किसी भी खून से हो 'हम नेकी कर दिखाएगें' का पक्का देवता होगा।

खाना नं: 12 :-

सुख की नींद सोने वाला बेफिक्र राजा ऐसा जिसके राज्य में बंदर भी घर बनाना सीखें, लेकिन जब धर्म हानि का आदी हो तो अंधी देवी, नाक कटे पुजारी, दिन दहाड़े चोरी की घटनाएं। बेआराम जीवन, जिसके लिए साधू की सेवा, शुक्र की पालना सहायक होगी। सुबह की मीठी हवा का शानदार जमाना न भी हो और जले भी तो आकाश का सूर्य मंदा जमाना न रहने देगा। उसे चारों ओर जितनी भी आफते (मौसम) हो मगर वह बरबादी (पतझड़) न देखेगा और न ही निर्धन और संतान रहित होगा।

12 ही घरों में सूर्य की उत्तम हालत का प्रभाव और अन्य ग्रहों से स बन्ध।

उत्तम सूर्य वाला संसार को चमकाये, धन देता हो, ल बी (100 वर्ष) आयु पावे, अंदर बाहर सब सच्चा हो। मंदे समय बुरा प्रभाव रात के स्वपन की भांति छुपे ढंग पर रहे। किसी का सवाली न हो बल्कि स्वयं खैरात पूरी कर दे। भीख चाहे न दे मगर किसी की झोली से भी कुछ न ले। स्वयं चोटे खाकर बढ़ेगा मगर दूसरों को चोट न मारेगा। चाहे मृत्यु को कोई अच्छा नहीं गिनता फिर भी सूर्य उत्तम वाले की मृत्यु भली ही होगी। 22 साल की उम्र मे राजदरबार से धन कमाने लगेगा। सूर्य की गर्मी धुप और उनका नाप तोल राहु से पता चलेगा। उत्तम सूर्य के समय चन्द्र, शुक्र और बुध का प्रभाव नेक उत्तम होगा चाहे केतु नं. 1 या मं: नं: 6 हो तो सूर्य का प्रभाव नेक उत्तम ही होगा। सूर्य किसी भी घर में और कैसा भी बैठा हो।

चन्द्र से संबंध :-

सूर्य देखे चं: को (पर सूर्य नं: 1 न हो):

चन्द्र को फल चन्द्र के आधे समय तक सूर्य के प्रभाव में दबा हुआ होगा। इसके बाद वह अपना जुदा असर सूर्य की तरह उत्तम फल देगा। सूखे कुएं भी पानी देने लग जायेंगे। (यह असर जन्म
कुण्डली 24-12-6 साला आयु में हो और वर्षफल 12-6-3 मास हो)

चं: देखे सूर्य को:-

अब चन्द्र सूर्य को कोई सहायता न देगा अपना प्रभाव चाहे कभी मंदा कर ले ।

शुक्र से संबंध :-

सूर्य की जड़ 5 में- (पापी और उसी समय शुक्र के खाना नं: 2-7 में चन्द्र राहु 1)।

माता पिता की आयु शक्की। जिस घर में शुक्र बैठा हो उसी घर की शुक्र से संबंधित चीजों की हालत मंदी। सूर्य बैठा होने वाले घर पर शुक्र कोई बुरा प्रभाव न हो।

बुध से संबंध :-

बुध 6 और सूर्य कायम: अपनी कलम से राजधानी का धन बढ़े। ईमानदारी का धन साथ दे।
सूर्य देखे बुध को 100 प्रतिशत सूर्य को सहायता होगी।
सूर्य देखे बुध को 50% ससुराल अमीर, स्त्री का भाग्य शीशे की भांति चमके।
सूर्य देखे बुध को 25% योगा यास गणित, ज्योतिष आदि उत्तम हो।
बुध देखे सूर्य को: (दर्जा दृष्टि कुछ भी हो) बुध का प्रभाव उत्तम— स्वास्थ्य, बुद्धि, स्त्री सभी पर प्रभाव उत्तम।

शनि से संबंध :-

श: देखे सूर्य को 25% सूर्य का प्रभाव बरबाद मगर शु: आबाद होगा और उत्तम फल का, गणितज्ञ स पादक होगा।
श: देखे सूर्य 50% शनि की चीजें सहायक होगी, जैसे मकानों की विद्या।
श: देखे सूर्य 100% जादूगरी का स्वामी होगा।
शनि हो पहिले घरों में और सूर्य बाद के घरों में हो तो :-
सू: का प्रभाव मंदा और शनि उसके (सूर्य) प्रभाव में अपना मंदा प्रभाव अवश्य मिलाता होगा। यानि सूर्य की रोशनी स्याही से भरी होगी। शारीरिक कमजोरी होगी। मगर चन्द्र (सर्दी) मंगल (लाली) वृहस्पति, (हवा) बु: (आकाश) जो सूर्य में आवश्यक अंग हो जाने पर कोई बुरा प्रभाव न होगा। यानि सूर्य की दी हुई भाग्य और कमाई पर मंदा प्रभाव न होगा। ऐसी हालत में रहने के मकान में दक्षिण (पूर्व की ओर मुंह करके दाई तरफ) पानी का कोरा बर्तन भरा हुआ दबायें और उसका पानी 40-43 दिन तक सूखने न दें।

सामान्य :-

सूर्य देखे शनि को यानि सूर्य हो पहिले घरों में शनि हो बाद के घरों में तो शुक्र बरबाद, स्त्री पर स्त्री मरें शारीरिक शक्ति कम न होगी।

सूर्य को जब अपने मित्र (चन्द्र, मंगल, वृहस्पति) की सहायता हो या टेवे वाला नमक कम या बिल्कुल न खाये तो वह नेकी और सांसारिक कामों में पिता से आगे बढ़ जायेगा।

जन्म कुण्डली में सूर्य के खाना नं: 1-5-11 में होने से टेवा बालिग होगा जो बच्चे के गर्भ में आने से ही प्रभाव देने लग जायेगा। ऐसी हालत में यानि जब सूर्य खाना नं० 1-5-11 जन्म कुण्डली या वर्षफल बैठा हो।

खाना नं: 1 का सूर्य नं: 1 के साथी ग्रहों को, चाहे मित्र हो या शत्रु, दोनों को मदद देगा। नं: 5-11 में सूर्य होने पर दूसरे ग्रह स्वयं सूर्य की सहायता करेगें चाहे वह सूर्य के शत्रु ही हों। टेवे में ग्रहण (सूर्य-राहु), (चन्द्र- केतु) के समय सूर्य 45 साला आयु तक कोई ाला फल न देगा, बल्कि मंदा फल ही देगा, माना गया है।

सूर्य स्वयं अकेला नीच या मंदे घरों में हो तो वह स्वयं कभी नीच न होगा मगर सूर्य की जगह केतु (नर संतान का सुख) बरबाद या मंदा होगा। बेहद गुस्सा बरबादी का कारण होगा और इसका उपाय दान कल्याण माना गया है।

सूर्य जब कभी नं: 1 में आए, अपनी जन्म कुण्डली में चाहे कहीं कहीं भी हो, शुक्र का प्रभाव नीच होगा। मगर सूर्य स्वयं के लिए उत्तम होगा। ऐसी हालत में बुध की पालना सहायक होगी।

खाना नं: 2-6-8-10 -11-12 में अकेला बैठा सूर्य इन घरों से संबधित चीजों पर अपना अच्छा प्रभाव न देगा। परन्तु यह भी अर्थ नहीं कि बुरा प्रभाव देगा। शत्रु ग्रहों के साथ यानि सूर्य-शुक्र, सूर्य-शनि, सूर्य-राहू, सूर्य-केतु चाहे किसी भी घर में हों साथ बैठे हुए ग्रह की उस खाना नं: से संबंधित वस्तुओं पर जिन में कि वह बैठा हो दोबारा उसी घर में आने पर (वर्षफल में) मंदा प्रभाव देगा। ऐसी हालत में 22 से 45 साला आयु की मध्य शत्रु ग्रह अपनी जाती मियाद पर भी बुरा प्रभाव देगें। मसलन सूर्य शुक्र नं: 5 में हो तो जब भी कभी वर्षफल में नं: 5 में फिर आवें (वह आयेगी केवल 34 या 25 वर्ष) शुक्र की मियाद में स्त्री, आवा भट्टी पर शारीरिक चमड़ी पर मंदा प्रभाव देगा। बुध की पालना से शत्रु ग्रह को नेक कर लेना सहायक होगा। लेकिन यदि शत्रु ग्रहों (शुक्र, शनि, राहु, केतु) के साथ ही सूर्य के साथ उसके मित्र ग्रह (चन्द्र, मंगल, वृहस्पति) भी बैठे हो तो

मंदा प्रभाव मित्र ग्रहों से स बन्धित चीजों, उस खाना नं: की जहां बैठे हों, पर होगा और शत्रु बचा रहेगा। शत्रु ग्रह यदि एक दो तीन की गिनती से सूर्य से पहले घरों में और दृष्टि के असूल पर भी पहली तरफ में बैठे हों तो सूर्य का मंदा प्रभाव टेवे वाले पर होगा। लेकिन यदि शत्रु ग्रह बाद में बैठे हों कुण्डली वाले की जगह मंदा प्रभाव शत्रु ग्रह और घर पर होगा।

मंदे प्रभाव का उपाय:-

यदि सूर्य का स्वयं अपना ही प्रभाव दूसरे ग्रहों पर बुरा हो रहा हो तो सूर्य के मित्र ग्रह (चन्द्र, मंगल, वृहस्पति) को नेक कर लेना सहायक होगा। खाना नं: 6-7 में बैठा होने के समय आम मंदी हालत में बुध का उपाय सहायक होगा तथा चन्द्र नष्ट करने से भी सहायता मिल सकेगी। (यानि रात को रोटी के बाद चूल्हे की बाकी बची आग पर दूध के छींटे मार कर उसे बुझाते रहना सहायक होगा)। जब कोई ग्रह सूर्य से नष्ट या बर्बाद हो रहा हो तो स्वयं सूर्य का उपाय करो। जब सूर्य का अपना प्रभाव नष्ट हो रहा हो तो शत्रु ग्रह, जो उसे बर्बाद कर रहा हो, को नेक करना सहायता देगा।

सूर्य के शत्रु (शत्रु, पापी) ग्रहों के घर (मलकियत व पक्का घर) 2-6-7-8-10-11-12 में अकेला बैठा सूर्य उन घरों के मालिक घरों से संबंधित वस्तुओं पर अपना शुभ प्रभाव बंद करेगा।

शत्रु	का घर	स बंधित वस्तुएं
शुक्र	2	स्त्री धन, स्वाद, बचत जो कि अपनी कमाई से हो, पति रहित या प्यार से फंसाई स्त्री। स बंन्धियों से माता, बुआ, फूफी, मौसी, आलु, गाय-स्थान, घी, अभ्रक, सफेद काफूर, बगैर सींग (भौंडी गाय) शारीरिक अंग, गुदा।
केतु	6	संतान (लड़का) व उसका सुख, माता पिता के ताल्लुक के रिश्तेदार (वह रिश्तेदार जो टेवे वाले की पैदाइश से पहले कायम थे, माता, नाना, नानी आदि रफतार चाल साहूकारा, खरगोश, चिड़ा यानि चिड़िया का नर, शारीरिक भाग कमर।
शुक्र	7	बाहरी स्त्री, शरीरिक त्वचा की सुंदरता, शादी गृहस्थी फल, चरी ज्वार, सफेद गाय, कांसी का बर्तन, हर दो प्यार, शारीरिक त्वचा, चमड़ा।
शनि	8	स्त्री-पुरुष, बिच्छू, कनपटी।
शनि	10	जद्दी जायदाद, पिता या माता का सुख, नमक काला व तेल लोहा, लकड़ी, दृष्टि, आयु, बाल 3 साल से रहने का मकान, मगरमच्छ या सांप का घर, भैंसे, घुटना।
शनि	11	जन्म समय आयु तक अपनी आय, खरीदा हुआ मकान, संतान की आयु व गिनती, पहला हाकिम, शारीरिक, शक्ति राहु, केतु के कार्यो का निर्णय, चूतड़।
राहु	12	धन श्राप, हड्डी, पारिवारिक खून, सर दिमागी काम काज, स्त्री पुरुष की आपसी आयु का संबंध, विचारों का बहासरना अचानक पैदा होना, बदनामी की प्रसिद्धि, कोयले, हाथी खोपड़ी, सर की हड्डी।

सूर्य खाना नं: 1
(सतयुगी राजा, हाकिम)

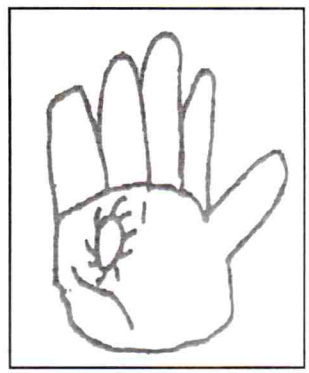

हुई राख दुनिया है, दिन रात जलती।
सिर्फ धर्म बाकी है, एहसान धरती॥

धर्मी[1] राजा खुद उम्र सदी की,
शनि कव्वा चाहे नेक हो कितना,
दूजे चन्द्र शनि ग्यारह बैठा,
शुक्र मगर जब सात आया
शनि टेवे हो आठ जब बैठा,
पांचवे मंगल हो जब कभी आया,
मित्र मंदे खुद सूर्य मन्दा,
मिला शुक्र बुध टेवे,
पांच पहले घर 11 जो
हड्डी गन्दी यज्ञ डालता हो।
माया रुतबा बढ़ता हो।
उम्र छोटी पिता मरता हो।
मुर्दा स्त्री पर स्त्री हो।
बेटा, बेटे पर मरता हो।
बुध मन्दे आकार न हो।
उम्र रिजक दरबार का हो।

1. आखों पर निश्चय, पुराने विचार और गरीबों की सहायता करने वाला, नेक धर्मात्मा नं: 7 खाली तो शादी से भाग्य जागेगा।
2. स्त्री की सेहत मन्दी (टी:बी: तक)।

हस्त रेखाः-

शुक्र बुध दोनों सूर्य की स्वास्थ्य रेखा से मिल जाएं और सूर्य रेखा स्वयं ठीक हालत में बुर्ज नं: 1 पर पाई जावे। सूर्य का सितारा सूर्य के अपने बुर्ज पर बुध की तरफ हो। सूर्य का बुर्ज कुण्डली का खाना नं: 1 है मगर सूर्य नं: 1 में तब ही होगा जब सूर्य के बुर्ज पर बुध की तरफ सूर्य का सितारा कायम हो वरना सूर्य खाना नं: 5 का होगा (सूर्य की सेहत रेखा नं: 11 के आखीर तक)।

नेक हालत

टेवे वाला धर्मार्थ मकान बनाए और कुएं लगवाने का शौकीन हो। राजा की भान्ति अफसर होगा। पुराने विचार, धर्म की पालना करने वाले होंगे । उस के अधिक भाई बहन होने की शर्त नहीं है। क्याफा (सूर्य कायम नं० 1 सूर्य का सितारा बुध की ओर) बाप की आखरी उम्र तक पूरी सेवा करेगा, और सहायता करेगा, मगर अपने बेटे से उ मीद न रखेगा । बाप से उसे चाहे धन न मिले मगर बेटे को जमा धन दे जाएगा । शराब पीने से दूर मगर गरीब की सहायता करने को हर दम तैयार । दो धारी तलवार के स्वभाव का स्वामी होगा और शरीर में सांप का गुस्सा होगा । कुछ भी हो उसका रिज़क बंद न होगा । वह स्वयं बना अमीर होगा । राज दरबार ल बा साथ देगा । सफर से धन मिलेगा या पैदा करेगा । अपना शरीर व रूहानी प्रभाव उत्तम होगा। तमाम अंग अंतिम समय तक शक्तिशाली होंगे, ईमानदारी का धन फलता रहेगा और बरकत देगा । संतान बेशक गिनती की होगी, मगर संतान का सुख और औरत का सुख आखिर तक होगा । वह अपनी आँखों पर निश्चय करेगा, मगर कानों पर एतबार न करेगा । परोपकार और सेवा साधन, संतोष माया तथा तरक्की की नींव होगी ।

1. यदि मित्र ग्रह साथ या उनकी मदद मिले तो माया धन को पैदा करेगा, मगर उसका गुलाम न होगा ।
2. उत्तम पद, भाग्यवान होगा, धन दौलत उत्तम, अपने लिए हर तरह से रिज़क उत्तम, क ाी मंदा न होगा । चाहे सूर्य को जुदा घर में ग्रहण ही क्यों न लग जाए । –जब चन्द्र नं० 2 और श० नं० 11 हो, शुक्र बुध आपसी दृष्टि में हों ।

हस्त रेखा :-

सेहत रेखा कायम हो, सूर्य के बुर्ज से रेखा बुध के बुर्ज नं० 7 में चली जाये ।

3. नेक धर्मात्मा होगा, बदकारी हरामकारी से कोसों दूर भागता होगा। शुक्र का फल प्रायः शुभ होगा। दिमागी शक्ति जिन में सूर्य का उत्तम व नेक प्रभाव हो । –जब बुध खाना नं० 7 में हो ।

मंदी हालत

खाना 1-5-11 में सूर्य के होने के समय धर्म अवस्था के लिए सदा ही शनि 1/4 हिस्सा प्रभाव शामिल होगा । चाहे सूर्य कितना ही अच्छा हो, योगी राजा के हवन (यज्ञ) कुंड में कोव्वा गन्दी हड्डी लाकर ही डाल देगा, आग का जोर चाहे कितना भी ऊंचा हो रहा होगा ।

1. पिता बचपन मे ही गुजर जावें । स्त्री की सेहत मंदी, जलता हुआ जिस्म बल्कि तपेदिक ाी हो खास कर जब दिन के समय स्त्री ोग का आदी भी हो । –जब शुक्र नं० 7 हो ।
2. लड़के पर लड़का मरे । –जब मंगल नं० 5 हो ।
3. सब ग्रह धोखा दें अपना बाज़ारी मूल्य शून्य, अंधेरे जीवन का मालिक । खुदकुशी तक की नौबत । जलती हुई आग की गर्मी से भरी हुई तक का मंदा भाग्य होगा । –जब दोस्त ग्रह मंदे हों ।
4. स्त्री पर स्त्री मरे । –जब शनि नं० 8 हो ।
5. सोया हुआ सूर्य, छोटी उम्र की शादी (24 साल से पहले) शु ा होगी नहीं तो अपने आप जगा सूर्य (राजदरबार की नौकरी या स्वयं कमाई शुरू करने की हालत में सूर्य उम्र के 24वें साल मंदा फल देगा।
–जब खाना नं० 7 खाली हो ।

उपाय

जद्दी मकान में कुदरती पानी (हैंड प प) कायम होने से 100 साल बाद भाग्य उदय होगा ।

सूर्य खाना नं० 2
(सखी दाता, अपने भुजा बल का स्वामी)

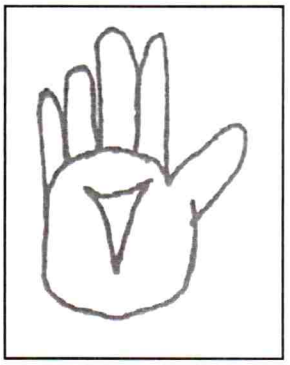

है खाना मुबारक, कमा खुद जो सीखे ।
हुए मंद सूर्य , मुफ्त दूध जो पीते ।

दर्जा सखावत राज हो ऊंचा, *शत्रु बैरी सब मरता हो ।*
पिता माता बुध पाप कबीला, *सभी घरों को तारता हो ।*
छटे चंद्र खुद चंद्र बढ़ता, **आठ चंद्र रवि[1] मरता हो।**
पहले मंगल और चंद्र 12, *दुखिया आँसू घर भरता हो ।*
न ही स्त्री जाति बढ़ती, **न गुरु प्रधान[2] हो ।**
याद इतनी ही जरूरी, **छोड़ देना दान[3] को ।**

1. नं० 8 खाली हो तो स्वयं सूर्य तथा खाना नं० 2 की चीजों का शुभ प्रभाव हो ।
2. सू०, वृ० का जुदा प्रभाव न दिखेगा या अब वृ० स्वयं सूर्य के अनुसार चलेगा ।
3. दान लेना अशु । बल्कि पूरी तबाही हो ।

हस्त रेखा

भाग्य रेखा या सूर्य रेखा जब वृ० का रुख करे मगर शनि के बुर्ज पर न हो ।

नेक हालत

1. मामा की हालत उत्तम होगी। अपनी लड़कियों के रिश्तेदारों के खानदान हरे भरे हों। 11 दिन, 11 मास, 11 साल की आयु में शत्रु की मौत होगी । वृ० का प्रभाव अलग न दिखेगा बल्कि सूर्य भी वृ० की भांति होगा, सवारी तथा चौपाया का सूख होगा । जिस कदर सखी दाता उसी कदर बढ़े शत्रु दबे रहें । अपने भुजा बल पर भरोसा करने वाला। माता-पिता, मामा और अपनी बहन, लड़की का कबीला (राहु) ससुराल का कबीला अपनी स्त्री समेत (केतु) नर संतान का कबीला इन सबको पार लगाने वाला तथा पालने वाला होगा। -जब सूर्य वा वृ० साथ, साथी या दृष्टि से नं० 8-2-6-12-5-9-10 घर, मगर शनि का संबंध न हो (भाग्य रेखा या सूर्य रेखा वृ० के बुर्ज का रुख करे मगर शनि के बुर्ज में या शनि के बुर्ज के नीचे खत्म न हो) ।
2. स्वयं हाथों से काम करने वाला होगा । हुनर जानने वाला होगा, बाबत कारोबार । -जब सूर्य नं० 2 कायम(अनामिका बिल्कुल सीधी) हो ।
3. चंद्र का फल नेक और सूर्य का प्रभाव भी ऊंचा, शक्तिशाली होगा । -जब चंद्र नं० 6 हो ।
4. बहादुर होगा । -जब बुध नं० 8 हो (अनामिका का सिरा गोल होगा) ।
5. हुनर मंद होगा । -जब राहु नं० 8 हो (अनामिका का सिरा चौड़ा हो) ।
6. दस्ती काम को व्यापार से अच्छा स झे । -जब बुध नं० 8 (कनिष्ठका अनामिका की ओर झुकी हो) ।
7. स्वयं सच्चा और सच्चाई पसंद होगा । -जब केतु नं० 8 में (अनामिका का सिरा नोकदार) हो।
8. बहुरूपिया, प्रसिद्धि को चाहने वाला होगा । -जब बुध नं० 9 (अनामिका छोटी) में हो ।
9. तस्वीरें बनाने वाला होगा, पेंटर आदि । -जब राहू नं० 9 (अनामिका बहुत लंबी) में हो ।
10. दस्ती काम की शक्ति वाला होगा (टैक्नीशियन) । -जब केतु नं० 9 या बुध नं० 10 (अनामिका लंबी) हो ।
11. शौकीन विचारों का स्वामी होगा । -जब मंगल नं 9 (अनामिका बहुत लंबी) हो ।
12. सूर्य स्वयं तथा खाना नं० 2 की चीजों का उत्तम प्रभाव देगा । -जब खाना नं० 8 खाली हो ।
13. मान और बुद्धि का स्वामी होगा । -जब शनि नं० 10 हो(मध्यमा अनामिका दोनों बड़ी हों) ।
14. कभी खुश, कभी उदास, हर दम तबीयत बदलने वाला होगा । -जब श० नं० 11 हो ।

मंदी हालत

न स्त्री जाति बढ़ती, न गुरु प्रधान हो ।
याद इतनी हो जरूरी, छोड़ देना दान को ।

इस घर में बैठा सूर्य अपने शत्रु ग्रह की चीजें(स्त्री, धन, पति हीन या माशूक स्त्री, आलू, घी, अभ्रक, सफेद-काफूर, बगैर सींग की गाय, राग, स्वाद, माता, बुआ, मासी, गुदा) पर अपना नेक प्रभाव बन्द कर देगा । जर, जोरू, जमीन के झगड़े, मिट्टी मे

आँधी के बादल (तबाही का कारण होंगे) स्त्रियों की गिनती, अपने भाईयों की माताएं, औरतें तथा बहनें घटती ही जायेंगी जिसके लिए शनि का उपाय नारियल, तेल, बादाम धर्म स्थान में देते रहना सहायक रहेगा । जिस कदर जोरू, जर, जमीन के झगड़े बढ़ाता जाएगा, सूर्य मंदा होता जाएगा ।

1. दान लेना तबाह कर देगा, अच्छा है कि वह स्वयं कमा कर खाना सीखे । -जब चन्द्र नं० 8 हो ।
2. हर तरह से दुखिया या तंग हाल होगा तीनों ग्रहों का फल मंदा होगा । -जब मंगल खाना नं० 1 चन्द्र खाना नं 12 हो।
3. लालची होगा । -जब मंगल खाना नं० 8 होगा (अनामिका का सिरा चौकोर हो) ।

सूर्य खाना नं० 3
(धन का राजा, स्वयं कमा कर खाने वाला)

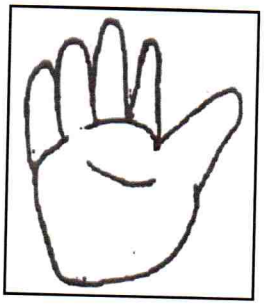

हुआ धोखा कुदरत न किस्मत का डर था ।
बजा बिगुल मंदा चलन जब तो बद था ।

बाप दादा चाहे गरीबी,[1]
लेकिन उम्र पिछली[2] अपनी,
जहर मंगल व बद कोई चलती,
माया खड़े दिन चोरी लुटती,
मंदा असर बुध टेवे पापी,
उम्र लम्बी संतान हो अपनी,
या पडौसी मर गये ।
माया जर न कम रहे ।
न ही बुरा बुध, शुक्र हो ।
हुआ बुरा जब चंद्र हो ।
केतु मामों घर मारता हो ।
सोया सूर्य चाहे जागता हो ।

1. जब नं० 9-11 का मंदा प्रभाव हो ।
2. जब चंद्र उत्तम तो आखिरी यकीनी तौर पर अवस्था उत्तम होगी ।

हस्त रेखा ***सूर्य रेखा से शाख मंगल नेक हो ।***

नेक हालत

धन का राजा आप कमा कर खाने वाला, पूरी खूबसूरती का मालिक होगा । टेवे में अब चंद्र का फल अब रद्दी न होगा और नाही मंगल बद होगा । बल्कि बुध या शुक्र का फल भी उत्तम होगा । अपनी और अपनी संतान की आयु ल बी होगी । न भाग्य मंदा न कुदरत धोखा दे । दिनों की चाल अक्ल से धोखा, फरेब से कभी मंदा हाल न होगा और दुखिया न होगा । दिमागी काम से बुध का प्रभाव सदा नेक होगा । ज्योतिष विद्या, गणित विद्या सदा भली रहे । चोरी के माल से सदा दूर रहे । मंदा चाल-चलन तेरी जिस्मानी तथा नसीबों की खूबसूरती को बदनाम कर देगा ।

1. अंतिम अवस्था में कभी निर्धन न होगा बल्कि अंतिम समय में, अपने कबीलों के सूर्य को तरक्की पर होता देखता जाएगा । चंद्र की चीज़ें खास कर (माता, घोड़ा आदि) का फल नेक और उनकी ल बी आयु का साथ हो । -जब चंद्र उत्तम हो ।
2. सूर्य की चीजें खाना नं० 3 संबंध (दिन की संतान), भाई-भतीजे कभी मंदा प्र ाव न देंगे । मगर बुध के स्वयं की संबंध चीजों के नेक प्रभाव की शर्त न होगी लेकिन अब सपाट हाथ का साथ हो तो बुध उत्तम होगा (जद्दी जगह, उदाहरणत: उंगलियों के बीच की गांठे मोटी हों) । -जब बुध साथ-साथी हो ।

मंदी हालत

1. दिन दहाड़े चोरी होगी । चाहे सूर्य सोया हो या जागता हो । -जब चंद्र मंदा हो ।
2. बाप दादा निर्धन होंगे । -जब खाना नं० 9 मंदा हो ।
3. पड़ौसी बरबाद होंगे । -जब खाना नं० 1 मंदा हो ।
4. मामा घर पर बुरा प्रभाव हो । -जब बुध या पापी मंदा हो ।

सूर्य का प्रभाव मंदा होगा जब चाल चलन मंदा हो या स्वयं मंदे काम करे, मगर भाग्य या कुदरत धोखा न देगी और ना ही मंगल बद का टेवे वाले पर बुरा प्रभाव होगा मगर दूसरों के लिए बद की बदी(मंदे ग्रह का फल) का साथ जरूर होगा ।

सूर्य खाना नं० 4
(दूसरों के लिए जोड़-जोड़ कर मरे, बच्चों के लिए दबाया धन)

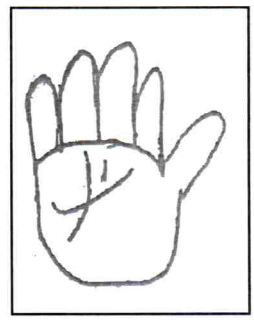

तमा माया में क्यों तूं छोड़ा बसेरा।
मंगल हालत परिवार कबीला,
कीड़ा रेशम ज़र धन[2] देता,
माया लालच शर्म से अपनी,
आग लगी न लंका बुझती,
पांच चौथे घर चंद्र मोती,
मंदा पापी औलाद हो मंदी,
मंदा राहू शनि तख्त पर[1] बैठा,
चोर[3] गुरु 10 मंगल काना,
तख्त माता 5 शुक्र बैठा,
तुख्म बदी किसी काम न आता,
वें मित्र, 5 शत्रु बैठा हो,
रवि मिले कुल नष्टी होंगे,

करोड़ों पति नाम लेवा जो तेरा ॥
चश्मा रिज़क गुरु चंद्र घर।
बुध शनि दानों के घर।
पेट हरामी भरता हो।
गांठ काटे धन हरता जो।
व्यापारी उत्तम बुध के का हो।
नोहराता शनि घर सात का हो।
असर सूर्य कुल मंदा हो।
इजाद मौजूद[4] खुद होता हो।
सात शनि खुद उच्च का हो।
नामर्द औरत या हिजड़ा हो।
मोती चाहे चन्द्र पांच का हो।
उपाये भला खुद[5] मंगल हो।

1. माता पिता की सेवा, जिसका मौका कम ही मिलता है, नींव होगी ।
2. बुध जंगल की वर्षा और शनि पहाड़ी इलाके की वर्षा की तरह माया धन बढ़ता जाएगा । बेशक स्वयं पत्ते खा कर गुजारा करे । मगर अपने पीछे रेशम ही छोड़ जाएगा ।
3. वृ० नं० 10 के समय शनि के काम या सामान (लोहा, लकड़ी) मंदा फल दे ।
4. जब चंद्र उत्तम तो ऐसा काम जो उसके बड़ों ने न किया हो, फायदा देगा । समुद्र सफ़र से मोती पैदा होंगे ।
5. सिर्फ अंधों को ही मु त खुराक या भिक्षा देना खाना नं० 5 तथा 10 में ऐसी विष को धोखा देगा ।

हस्त रेखा :-

सूर्य के बुर्ज से रेखा चंद्र के बुर्ज को मगर मंगल बद का संबंध न हो । चंद्र और सूर्य के बुर्जों के मध्य रेखा दोनों बुर्जों को मिलाती मालूम होवे, मगर मिलावे न । शराफत रेखा जब बीच में से ऊपर को झुकी हो । सूर्य रेखा दिल रेखा पर समाप्त हो ।

नेक हालत :-

रेशम के कीड़े की तरह स्वयं चाहे पत्ते खा कर गुजारा करे और इसी प्रकार जीवन पूरा कर दे, मगर उसे धन का फिक्र न होवेगा । मरते समय धन दौलत जमा रूप में छोड़ जाएगा । उसकी संतान के सदस्य करोड़पति होंगे । स्वयं दरयादिल, बुद्धिमान और हुकूमत का स्वामी होगा । चन्द्र बैठे हुए घर से माया लेगा धन की वर्षा या माया का अचानक मिलना बुध (जंगल धीमी धीमी देर से पाऐ) और शनि(पहाड़ जल्द जल्द और जोर की) बैठा होने वाले घरों पर होगी । अच्छा स्वास्थ्य धन का फव्वारा हर दम चलता रहेगा माता-पिता की सेवा (जिस का मौका कम मिलता है), फालतू धन जमा होने या करने की बुनियाद होगी । स्वयं धन या दौलत और रिजक के चश्मा का हाल चंद्र और वृहस्पति बैठे घरों से मिलेा । परिवार कबीला की हालत मंगल की हालत पर फैसला देगी ।

1. नई इजाद से लाभ का स्वामी हो । -जब चंद्र नं०4 (चंद्र के बुर्ज पर सूर्य का सितारा) हो।
2. राजदरबारी यात्रा से मोती पैदा होंगे । उत्तम व्यापारी हो । -जब बुध नं० 10 हो ।
3. धैर्य स्वभाव तथा नर्म स्वभाव का होगा । -जब मंगल कायम हो ।
4. अब वृ० नीच न होगा । बल्कि पूरा सोना और वृ० का उत्तम फल होगा । -जब वृहस्पति नं० 10 में हो ।
5. सोने-चांदी के काम मुबारक। इजाद या ऐसा काम जो कि उसके बड़ों ने ने किया हो फायदा देगा । समुद्र के सफ़र से मोती मिले । -जब चंद्र उत्तम, वृ० नं० 4 और मंगल बद न होगा (चंद्र के बुर्ज पर वृ० का सीधा खत या सूर्य रेखा हो जिस का मुंह सूर्य के बुर्ज की ओर या वृ० के बुर्ज को हो)।
6. माता-पिता की ओर से पूरा भला और उत्तम खून भला लोग, भले काम, भाग्य का उत्तम । -जब शु०,चं० हर दो साथी (वृ०के बुर्ज नं० 9 पर होगा-०-)।
7. सफरों से लाभ, उत्तम व्यापारी। -जब बुध साथ-साथी हो।

मंदी हालत :-

माया के लालच या संसारी शर्म से हरामखोरों का बोझ गले लगेगा, जलती हुई लंका की आग से तंग होगा। चोरी की आदत, मंदे शौंक और लोगों की गांठ काटने से स्वयं अपना धन बरबाद और हर जगह हानि हो। हनुमान जी की दुम की आग से रावण की लंका में आग के शोले नजर आयेंगे, जिन के बुझाने के लिए सारी दुनिया का पानी पहिले ही समाप्त हो चुका होगा । यानि अपनी बरबादी, मरने से पहले अपने सामने ही सब कुछ जलता देख जाए मगर आँसु न बहा सके ।

1. संतान मंदी होगी । -जब पापी मंदे हो ।
2. दिन को नज़र आये रात को न दिखे (रतांध)। -जब शनि खाना नं० 7 में हो ।
3. सूर्य का सब प्रभाव मंदा होगा । चंद्र की मदद मिलने पर चंद्र के उपाय में शनि से तबाह की हुई या शनि की तबाह हुई चीजों को सूर्य के उपाय के जरिये या सूर्य की मदद से कीमती लाल (मंगल भी नेक) कर देगी। राहु के मंदे असर के समय ससुराल घराना से पापी ग्रहों की चीज़ें लेना जहर का सबूत होगा ।-जब राहु मंदा 1, शनि नं० 1, वृ० नं० 10 में हो ।
4. सोने की चोरी की घटनायें होंगी । शनि लोहे की लकड़ी के काम मंदा फल देंगे। मगर आग की घटनाएं गुमनाम तथा छुपे झगड़े सोने की चोरी की घटनायें होंगी । शनि लोहे की लकड़ी के काम मंदा फल देंगे। मगर आग की घटनाएं गुमनाम तथा छुपे झगड़े फसाद खराबी (धन की) मगर चंद्र (कपड़ा, चांदी), वृ० (सोना) और माता-पिता संबंध, कार्य उत्तम फल देंगे। -जब वृ० नं० 10 में हो ।
5. एक आँख से काना होगा मगर भाग्य उत्तम होगा । -जब मंगल नं० 10 में हो ।
6. नामर्द न अक्ल न गांठ बिन बुलाया मेहमान । -जब चं० नं० 1-2, शु० 5, श० नं० 7 हो ।
7. सब ही ग्रहों का (सिवाए मंगल के) फल मंदा होगा । ऐसे समय मंगल का उपाय जद्दी मकान के द्वारा करे। उदाहरणत: वहां यज्ञ, मु त खुराक बांटने का या भिक्षा देना सिर्फ अंधो को ही देना उत्तम होगा, जो खाना नं० 5-10 दोनों की ज़हर धो सकेगें । -जब चं० , वृ० या बुध से कोई एक भी सूर्य के सामने बैठे खाना 10 में हो। उसी समय खाना नं० 5 में शु० या पापी हो, खाना नं० 4 में, शु० , बु० या 2, 5, 9, 12 में या 3, 6 में ये ग्रह हों यानि
   खाना नं० 10 में चंद्र .....राहु, केतु नं० 4 में,
   खाना नं० 10 में वृ०.....शु० , बु० नं० 2, 5, 9, 12 में,
   खाना नं0 10 में बुध.....चंद्र नं० 6 या 3 में हो ।
8 शादी और औलाद में गड़बड़, हर तरह की मंदी अवस्था होगी ।

क्याफा - चंद्र के बुर्ज से सूर्य रेखा निकल कर बुध के बुर्ज के अन्दर चली जाये ।

-जब चंद्र उत्तम, वृ० नं० 4 मगर उसी समय मंगल बद हो ।

सूर्य खाना नं० 5
(परिवार तरक्की का मालिक , कीना भरा)

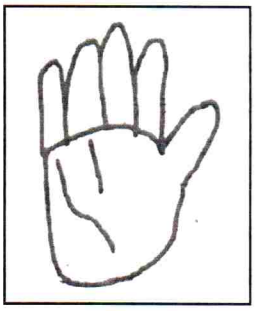

पक्षी मुर्ग बाल बच्चे जो पाले,
पड़ा सोचा तू किस वजह लंगर तू ड़ाले ।

अपना दिल[1] न जब तक,
लिपटी हुई न आरजू,
ग्रह पांचो से[4] अपने घर का,
सूर्य की वह होंगे प्रजा,
बैटे जन्म से हर दम फलता,
पाँच पहले घर शत्रु तरसता,
स्त्रियां मरती गुरु दस बैठे,
गुरु रवि जड़[6] शत्रु कटते,

(कीना) वफजून[2] से चूर हो।
कोई कफन[3] से हो ।
या पापी 9-11 जो ।
हंस,[5] हुमा भी तारता हो ।
कदर बेशक न करता हो ।
राजसभा रवि भरता हो।
लड़के श० नं० 3 मारता हो ।
संतान भला न होता हो ।

1 चंद्र या खाना नं० 4,
2 मंदा केतुया मंगल बद शत्रुता दूसरों से ८हस्द,

3 खास कर जब वृ० उत्तम हो ।
4 वृ० (9-12), सूर्य (कायम), चं० (4), शु० (2-7), मं० (1-8), बुध (3-6), पापी रा०, के०, श० (9-11) ।
5 हंस, मोती खाने वाला पक्षी (हुमा) एक ऐसा जानवर माना गया है कि वह जिस के सिर से गुजर जाए राजा बन जाए ।
6 सूर्य की जड़ खाना नं० 1-5, वृ० की जड़ खाना नं० 9-12 ।

हस्त रेखा

सूर्य रेखा बिल्कुल सीधी सूर्य के बुर्ज पर हो और सूर्य के अपने घर में ही मालूम होवे और सूर्य का बुर्ज कायम हो । स्वास्थ्य रेखा बुध से चल कर हथेली में खाना नं० 11 तक समाप्त होवे ।

सूर्य आत्मा, जिस्म और स्वास्थ्य का स्वामी है । इसलिए इसकी दूसरी रेखा का नाम स्वास्थ्य रेखा है। स्वास्थ्य या तरक्की रेखा हथेली मे श० के हैडक्वाटर से ऊपर सूर्य की ओर बुध के बुर्ज को जाती है । या सूर्य का प्रभाव बुध (दिमाग) में पंहुचाने लगती है। इस रेखा का हाथ में न होना कोई बुरा प्रभाव नहीं देती बल्कि उत्तम स्वास्थ्य की निशानी है और हाथ में इस रेखा का होना उत्तम स्वास्थ्य के इलावा आयु, सिर और दिल रेखा आदि के टूट फूट के बुरे असरों से बचता है । स्वास्थ्य रेखा बुध, चंद्र और मंगल बद को हथेली से जुदा करती है । जिस जगह स्वास्थ्य का आखिरी या उम्र रेखा का आखिरी समय या खातमा या मौत की जगह है ।

नेक हालत

औलाद के पैदा होने के दिन से रोटी पानी की बरकत होगी और पूर्वी दीवार में रसोई सू० नं० 5 का उत्तम फल देगी । दो धारी तलवार, सफा दिल तो सब उत्तम, नहीं तो भेड़िये ने कान से पकड़ कर भगाई हुई भेड़ की तरह का मंदे भाग्य का साथ, स्वयं जलता होगा (मगर राजदरबार, संतान फिर भी मंदे होंगे)। औलाद की बुद्धि और परिवार की तरक्की का स्वामी, स्वयं गृहस्थी होगा । राजा होगा तो परोपकारी होगा । लेकिन यदि साधु ी हो तो ल बी आयु का स्वामी होगा । यानि उसे यदि राजा न तारे तो साधु अवश्य तारेगा। बकरी तथा भेड़िये दानों एक ही जगह आराम से रखने की शक्ति वाला होगा । बुढापा सदा उत्तम होगा।

1 ग्रह पांचो से अपने घर का, पापी 9-11 जो सूर्य की वह होंगे प्रजा, हंस हुआ भी तारता हो । -जब मंगल नं० 1-8, बुध 3-6, पापी नं० 9-11(रा०, के० , श०) हो ।
2 हंस हुआ भी तारता होगा । जिस तरह हंस मोती खाने वाला हो, उसी तरह अब ऐसा व्यक्ति राजा समान हाकिम और अच्छी हालत का स्वामी होगा जिस का रिजक कभी बंद न होगा । -जब वृ० नं० 9-12, चंद्र नं० 4, सू० कायम हो, सूर्य की तरक्की रेखा कायम हो शुक्र खाना नं० 2-7 में हो) ।
3 हर तरह की बरकत होगी । औलाद की उन्नति होगी । सूर्य शनि का झगड़ा न होगा बल्कि एक दूसरे की सहायता करें । माता पिता का सुख ल बा और उत्तम होगा । -जब शनि नं० 11 में हो ।
4 मिसल राजा इक्बाल मंद होगा । -जब चं० नं० 4 में हो ।
5 सूर्य अब शत्रु ग्रह को भी सहायता देगा जो घर नं० 1-5 में हो । राज दरबार में या हर जगह उस का मान होगा । -जब शत्रु ग्रह नं० 5 में हो ।
6 कोई भी आरजू कफन में लिपटी बाकी न होगी । दिमागी खाना नं० 20 स्वयं की बुद्धि नं० 22 बड़ों के मान का स्वामी होगा । बुध का सारी उम्र जुदा फल न दिखेगा, जिस तरह सूर्य बादलों के बिना होता है, फल देगा। -जब वृ० उत्तम हो ।

मंदी हालत

1 विवाह एक से अधिक, स्त्री पर स्त्री मरे । -जब वृ० नं० 10 में हो ।
2 लड़के पर लड़का मरे । धुंआ धाड़ दु:ख का रद्दी पहाड़ । संतान पर माली खराबी का बहाना होता है और संतान मंदी या बरबाद हो । -जब शनि नं० 3 में हो ।

सूर्य खाना नं० 6
(आग जला, धन से बेफिक्र भाग्य पर संतुष्ट)

जो तरसे न रोजी को, पत्थर का कीड़ा,
तो माथे की तेरी को, धो कौन देगा ।

न जरूरी राज दौलत, न हुआ निसंतान हो ।
चलन मंदा लाख स्त्री, गुजर उत्तम शर्त हो ।
दीवार तोड़ी न पिछली अपनी, न ही भली हठ धर्मी हो ।
रस्म पुरानी कायम चलती हो, सूर्य उत्तम सब उन्नति हो ।
उग्र रवि[1] पर बाण न रुकता, चंद्र बुरा पांच पापी हो ।
शनि 12 पर शुक्र मरता, पिता मरे दो खाली जो ।
10 मंगल हो लड़के खाता, राज गाले बुध 12 का ।
पापी दौरा जो तख्त का करता, ग्रहण लगा हो भाग्य का ।
तीन कुत्ते गर दुनिया पाले, केतु पालन चाहे[2] तख्त का हो ।
पाताल अग्नि से लड़का निकले, लाख पापी चाहे मंदा हो ।

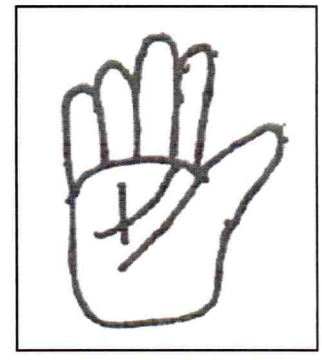

1. सूर्य के आम दौरा की आयु 22 या 11 साला है ।
2. राहु या शनि नं०1 (मंदा हाल), केतु नं० 1-7 सब कुछ उत्तम होगा ।
   केतु(संतान, मामा) पर मंदे असर के समय, बंदर(सूर्य) को सूर्य की चीजे (गुड़) देना शुभ होगा । वरना बुध का उपाय सहायता करेगा ।

<u>हस्त रेखा-</u> **सूर्य रेखा हाथ की बड़ी आयत ▱ में समाप्त हो ।**

नेक हालत

अब मंगल नं० 4 होता हुआ भी कभी मंगल बद या मंगलीक या मंदा न होगा । जिस तरह आग तथा पत्थर में कीड़े को भी रोजी मिलती है उसी प्रकार ऐसे प्राणी के माथे की लकीरों को धोकर भी कोई उसका रिज़्क बंद नहीं कर सकता । इस पर वह अपने भाग्य का भरोसा करने वाला होगा । राजदरबार की दौलत से बेफिक्र मगर आग की तरह जल्दी गर्म हो जाने वाले स्वभाव का होगा । दिमागी खाना नं० 23 रसूख पसंदगी का स्वामी होगा । स्त्री और दूसरी चीजें सुंदर होगी । मगर उसे उस की खूबी या सिफत की परवाह न होगी । चाहे लाख स्त्रियों का मिलापी, चलन मंदा मगर धन की कमी न होगी, रिजक मंदा न होगा । राजदरबार का संबंध उत्तम । जन्म नानके के घर या पैतृक घर से बाहर होगा । जन्म के समय घर वार सभी कुछ राजस्थान (रेतीला) होगा । एक बार तो अवश्य कार्य में गिरावट आएगी जो संतान के जन्म से ठीक हो जाएगी राजदरबार कई बार छोड़ कर फिर मुलाज़म होगा, मगर लड़के के दिन जिस जगह की रोजी से संबंध चल रहा होगा सदा के लिए उसी जगह टिक जाए। अर्थात् लड़के के जन्म से या तो काम न बदले या बदले तो आगे से स्थिर हालत का हो जाएगा और जीवन भर साथ देगा। संसारी तीन कुत्तों में से किसी की पालना सहायक होगी ।

1. घर मे पुराने असूलों को चलाए रखना सहायक होगा जो सूर्य को उत्तम करेगा, जंवाई लड़की के पति) को लाभ होगा ।
   -जब सू० उत्तम और जागता हो यानि नं० 2 में सूर्य के मित्र चं०, मं०, वृ०, हो।
2. राज दरबारी उत्तम, नर संतान जरूर पैदा होगी संतान के योग चाहे लाख मंदे हों। संसारी तीन कुत्तों की पालना सहायक होगा। बिना उपाय ही 48 साला आयु के बाद सब बुरे दिन अपने आप ही ठीक हो जाएंगे।-जब केतु नं: 1-7 हो या जब कभी 1-7 आए।

मंदी हालत

अकेला बैठा सूर्य इस घर में अपने शत्रु ग्रह केतु की चीजें (नर संतान और उसका सुख, मामा-नाना, नानी-साहूकारा, रफतार, खरगोश, चिड़िया का नर) पर अपना नेक प्रभाव बंद कर देगा। मकान की पिछली पश्चिमी दीवार तोड़ कर रोशनी करना या हठदर्मी का असूल उत्तम बनाना, सूर्य की आग से उस के शरीर को जला देगा। रात का आराम, चारपाई और बुढ़ापे में नजर का सहारा या लड़का मंदा होगा। केतु की जानदार चीजें (संतान या मामा) और स्वयं अपने स्वास्थ्य पर मंदे प्रभाव के समय सूर्य की चीजें गंदम (बाजरा) देना शुभ होगा। केतु की बेजान चीजों के मंदे प्रभाव समय बुध को नेक कर लेना सहायक होगा।

सूर्य के अपने मंदे प्रभाव के समय (राजदरबार की खराबियों) चंद्र की चीजें (घोड़ा, चांदी दरिया का पानी) कायम कर लेना या चंद्र नष्ट कर देने से यानि शाम की रोटी के बाद आग को दूध से बुझाना सहायक होगा।

1. 22 साला (सूर्य की) आयु में पिता और टेवे वाला दोनों में से सिर्फ एक ही सरकारी आमदनी का स्वामी होगा और यदि दोनों ही किसी कारण एक साथ नौकरी पर हों तो एक शहर या जगह में एक साथ रहकर सरकार से धन नहीं ले सकते। जुदा ही रहेंगे। टेवे वाले के लिए राज दरबार कई बार खुलता और बंद होता है। पिता की आयु समाप्त करने के लिए वह पिता पर भारी होगा। जिसके लिए धर्म स्थान में कुत्ते की खुराक की चीजें देते रहना सहायक होगा। पिता की आयु टेवे वाले की 5-11.1/2, -23 साल से शक्की होगी। इसलिए धर्म स्थान में कुछ देते रहना चाहिए, ताकि पिता के सेहत, आयु, धन बचा रहे। - जब खाना नं- 2 खाली हो।
2. अग्नि बाण, सूर्य की आयु 11-21-22 पर मंदा प्रभाव होगा । -जब चंद्र बुरा और पापी नं० 5 हो ।
3. अमूमन स्त्री भाग और स्त्री बरबाद होगी । -जब शनि नं० 12 में हो ।
4. लड़के पर लड़का मरता जाए। घर में किसी तरह भी जमीन की तह में अन्दर रखी रहने वाली आग न हो तो बचाव होगा । सोते समय चंद्र की चीजें (सिरहाने)रख कर प्रात: लोगों मे बांटना सहायक होगा। -जब मं० नं० 10 में हो ।
5 राजदरबार गर्क और मंदे परिणाम होंगे । रक्तचाप की बिमारी मंदा होगी । गर्मी के दिनों में दुपहर के समय बिल्कुल सिर पर आए हुए सूर्य की तेज धूप की गर्मी की तरह सूर्य की आग राजदरबारी संबंध में जलन पैदा करती है । -जब बुध नं० 12 में हो ।
6 भाग्य को ग्रहण लगा हुआ । हर और सूर्य की मंदी रोशनी होगी जन्म समय माता पिता की हालत मंदी हो । मगर रा० श० की आयु या वर्ष फल में खाना नं० 1 में आने के समय एक बार जरूर ही ग्रहण जैसा मंदा समय आएगा, जो संतान के दिन या केतु नं० 1-7 में आने के समय या 45-48 साला आयु मे समाप्त होगा । -जब रा० या श० नं० 1 में हो ।
7 सूर्य ग्रहण या राजदरबार और अपने स्वास्थ्य की मंदी घटनाओं के समय धर्म स्थान में दूसरे लोगों की खैरायत की हुई चीज अपने पास रखना सूर्य की रोशनी को बहाल कर देगा । -जब रा० नं० 2 शनि नं० 8 में हो ।
8 स्वयं या स्त्री एक आंख से काना हो । -जब चं० नं० 12 में हो ।
9 जन्म अपने घर घाट से बाहर या नानके घर होगा । जद्दी मकान की दीवार का पिछला भाग फोड़ कर रोशनी कर लेने से भाग्य का उजाला न होगा, बल्कि अग्नि बाण के भड़कते शोलों की आग से सारा ब्रह्माण्ड भरा होगा । जद्दी रस्मों को बंद कर देना कभी आबादी या और खुशहाली न देगा । -जब राहु नं० 1, केतु नं० 7 में हो ।

सूर्य खाना नं० 7
(कम कबीला, डरता डरता मर रहे)

जबान नर्म हाकिम, व्यापारी हो जलता।
जमाना क्यों है उसे पामाल करता।

घर पहिले के खाली होते,
दिन उसी ही सूर्य निकले,
नीच सूर्य हो, ना देना,
बुध गुरु या शुक्र उम्दा,
रिज़क बाहर सारी उम्र,
गुजरते बुध आयु अपनी,
गुरु चंद्र या मंगल दूजे,
शत्रु मगर जब घर हो बैठे,
गुरु[3] शुक्र व पापी राजा,
मौत मारे[4] घर इकदम इतना,
हाल गृहस्थी सूर्य माया,
जन्म समय था लाख जो साया,
गुरु मंगल उस घर से भागे,
पापी ग्रह भी गिने अभागे,
न धन रहे धनाढ्य,
सब माल तथा जान बरबाद हो,
सातवां फौरन सोआ ।
8 जब दूजे होया[1] ।
माया ज़र परिवार हो ।
2 भला तीन पांच जो ।
मौत आखिर घर में हो ।
खेले माया ज़र में वो ।
वजीर बुलंदी बनता हो ।
साथ पराई ममता[2] हो ।
जुदा हुआ बुध नष्टी हो ।
मिले[5] कफन न दफनी हो ।
सोने से घर मिट्टी पाया ।
बोलते बोलते आग जलाया ।
शुक्र रहे ना चंद्र जागे ।
मिली मदद बुध सब ही जागे ।
न गुल रहे गुलजार हो ।
गर बुध का ना दान साथ हो ।

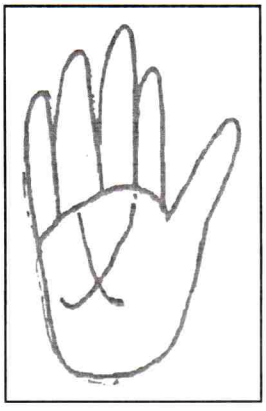

1. 13, 29, 41, 45, 64, 75, 86, 98, 114 साला आयु में ।

2. स्त्री रहे तो लाजवन्ती रहे वरना वह और उसका घराना ससुराल सब बरबाद हो ।
3. तपेदिक की बिमारी में पुरुष स्त्री दु:खों के पुतले होंगे जो हद 34 साल आयु तक का समय मंदा होगा ।
4. तपेदिक, आत्महत्या, आग की घटनाएं, गबन आदि बहाने होंगे । गृहस्थ से तंग होकर भागे हुए फकीर का सा भाग्य होगा। बेहद गुस्सा, खुदगर्जी जिस की नींव होगी ।
5. जमीन मे तांबे के चौकोर टुकड़े दबाना जब गृहस्थी हालत मंदी हो, नहीं तो चन्द्र नष्ट (दूध से आग बुझाना) का उपाय सहायक होगा-जब शनि का टकराव हो रहा हो।

हस्त रेखा :-

शुक्र के बुर्ज से रेखा सूर्य के बुर्ज को। शुक्र का पंतग हथेली पर कायम हो। खाना नं- 7 जो बुध का बली घर है। बुध जुदा प्रभाव नहीं करता।

क्याफा :- सेहन गली के साथ होगा

यानि घर के साथी गली बाजार और मकान के मध्य सिर्फ खाली दीवार होगी। जिस पर कोई छत न होगी। गली और सेहन की बीच की दीवार छोटी ही होगी बाहल गली में खड़े हों तो दीवार के साथ सेहन के साथ लगता हुआ मकान नज़र आएगा। तो सूर्य नं: 7 का प्रभाव देगा।

	दी दीवार
क सेहन	
ब बाहर से	दे देखें सड़क

नेक हालत

दिमागी खाना नं 24 होंसला, मुझ से दूसरा अपनी शान न बढ़ाने पाये का आदी होगा। बुध की 34 साला आखिरी हद बन्दी गुजरने पर माया ज़र और परिवार ही हद शुरु होगी। स्वयं अपनी जान तथा जिस्म पर सूर्य का बुरा असर न होगा, बल्कि टेवे वाले का अपना परिवार उत्तम तथा फिर आगे औलाद के दिन से माया दौलत की बरकत, मगर माता पिता, कुनबा व ससुराल खानदान के राज दरबारी संबंध में सूर्य का बुरा असर घास पर आग पड़ी हुई की तरह बुरा ही होगा। सूर्य कभी मंदा ना होगा। सब कुछ उत्तम होगा मर्द स्त्री दोनों की आयु ल बी होगी। फकीर नं: 3 न होगा। (प्रथम तो बद किस्मत ही हो तो भी बना फकीर होगा), सफर से जिन्दा जरुर वापिस आएगा और उँचे सूर्य की तरह किसी सवाली को अगर भिक्षा देगा तो चांदी या मोती ही देगा। मगर मिट्टी खाना नं: 7 शुक्र गृहस्थी मिट्टी का घर न होगा। बेशक कितने दुख देखने पड़े फिर भी अपने में एक उदाहरण पुरुष होगा। स्त्री का सुख 15 साल ही हल्का होगा, स्त्री रहे तो लाजवन्ती के फूल की तरह उंगली रखते ही मुरझा जाने वाली और अपनी इज्जत स्वयं बचाने वाली होगी, तो जीवन भर आराम से रहे। वरना वह न रहे अगर बद हो फिर भी रहे तो उसका घर (ससुराल तरफ या शुक्र साथी ग्रह जन्म कुण्डली के हिसाब) ही न रहे। फिर भी रहे तो संसारिक धन दौलत माया लक्ष्मी की जगह मन्दी मिट्टी या पराई ममता (गैर मुसीबत) ही गले लगेंगी। फिर भी रहे तो उस घर में (टेवे वाले का खानदानी या शुक्र बैठा होने का घर, जन्म कुण्डली के हिसाब) कोई न रहे। बहरहाल ऐसा व्यक्ति बुध की आयु 17 से 34 से इकबालमन्द होगा।

1. चाहे रिज़क सारी आयु परदेश में होगा, मृत्यु अपने जद्दी मकान पर होगी।
   -जब नं: 2-3-5 या बुध गुरु या शुक्र उत्तम हो।
2. स्त्री भाग हल्का, मगर मंदा नहीं गिनते, पराई ममता गले लगी रहे। - जब शनि, बुध केतु नं: 2 में हो।
3. ऊंचे दर्जे का मन्त्री होगा। - जब वृ:, मं:, या चं: नं: 2 में हो।
4. आमदन धन अच्छा मगर अकल की शर्त नहीं। - जब बु: उच्च या बुध नं: 7 या मंगल की सहायता नं: 7 में हों।

मंदी हालत

घर की मंदी हालत उस के जन्म के दिन से बोलना सीखते-सीखते मंदी (हूंज बुहारी की तरह) और जन्म दिन से बुआ फूफी बरबाद । टेवे वाले में रुहानी नुक्स आम होंगे । लड़का गूंगा या पागल होवे। इस घर में अकेला बैठा हुआ सूर्य अपने शत्रु शुक्र की चीजे(शादी या गृहस्थ का फल, स्त्री की बाहर की शान, जिस्म की जिल्द, काँसी के बरतन, चरी ज्वार, सफेद गाय, हर दो प्यार) पर अपना अच्छा प्रभाव बंद कर देगा ।

1 नर्म जुबान हाकिम और गर्म स्वभाव दुकानदार होने की हर दो हालत में टेवे वाला बरबाद ही होगा । बेहद गुस्सा, दाल सब्जी मे हद से ज्यादा नमक खाना, मन पसंदी, मंदी प्रसिद्धि बरबादी तथा मंदी हालत की निशानी है । परिवार की कमी और सोने की जगह घर मिट्टी से भरता जाए । आत्म हत्या तक की सलाह मगर हौंसला वा मुकाल (वृ० का उपाय सहायता करे), यदि सब ग्रह मंदे, स्त्री सु:ख 25 साल ही हल्का होगा ।

2 कोई न कोई स्त्री दुखी हो कर उस के गले लगती रहेगी। कोई स्त्री (गृहस्थी बोझ बनी रहेगी) उसकी अपनी स्त्री ी अपने माता-पिता को हर दम दुखी देख कर रोती रहेगी और हो सकता है कि ससुराल बाकी ही न रहे, मगर खुद इकबाली रहे । पराई ममता गले लगे । -जब शु० या पापी नं० 2 में हो ।

3 घर में इतनी मौत हो कि न कफन मिले और न ही लाशों को दफनाने वाला या जलाने वाला ही मिले । राजदरबार में खरबीयाँ दमा, तपेदिक या स्त्री पुरुष दुखों की जोड़ी, मंदा जमाना हद 34 साला आयु तक होगा । मंदी हवा और जहरीली हवा हर गृहस्थी से संबंधित साथी का दम घुटता हुआ, मरीज मे मर्ज का पता, हकीम के घर का पता न चले । पितृ ऋण का बोझ धोखा देता रहे । आत्महत्या, आग की घटनाएं, गबन गृहस्थ से तंग आ कर भागे हुए फकीर की तरह का जीवन भाग्य होता। दीवानगी दिमागी खराबियों तक की नौबत चली जाए । बदमिजाजी, खुदगर्जी, बेहद तबाही का गुस्सा। राजदरबार की कमाई तबाह हो। -जब गु० , शु० या पापी नं० 11 और बुध किसी ओर घर में बरबाद हो ।

4 लोगों में अविश्वसनीयता (बेइतबारी) । -जब बुध नं० 9 में हो ।

न धन रहे, धनाढ्य हो, न गुल रहे गुलजार हो ।
सब मालो जान बरबाद, चाहे कितना भी घरबार हो ।

5. जन्म समय लाख हजारी, बोलना सीखने तक या टूं-टूं करने पर ही कागज पर फैलने वाली स्याही की भांति भाग्य का मंदा हाल होगा । -जब बुध का साथ या मदद न हो ।

6 फुलबहरी होगी । -जब मं० या शनि नं० 2-12 और चं० नं० 1 में हो ।

7 नर्म जुबान का अफसर, गर्म जुबान का दुकानदार हो तो बरबाद । दोहता पोता की पैदायश पर स्वास्थ्य मंदा होगा । -जब के० नं० 1 या बु० नं० 11 में हो ।

8. सर्दी के मौसम में धूप मे तपस कम होने की तरह सूर्य का प्रभाव सोया हुआ या मंदा ही होगा और उसी दिन ही उत्तम होगा जिस दिन खाना नं: 8 का ग्रह नं: 2 में आ जावे। आयु के 13, 29, 41, 54, 64, 72, 78, 86, 98, 119 साल में । - जब खाना नं: 1 खाली हो।

उपाय:-

संसार की जाहिरदारी उत्तम रखना शुभ। दुकानदारी नर्मी की, अफसरी गर्मी की चाहे फर्जी ही हो, नहीं सूर्य ही तेरी अपनी मिट्टी उड़ा देगा। अगर शनि का टकराव आ जाए यानि शनि नं: 1 में आ जाए तो चन्द्र नष्ट (शाम की तेरी रोटी पकाने के बाद चूल्हे की आग को दूध से बुझाना) करने से सहायता होगी। माली गृहस्थी या केतु (नर संतान) की मंदी हालत के समय जमीन में तांबे के चौकोर टुकड़े दबाना सहायक होगा या थोड़ा मीठा मुंह में डाल कर या वैसे ही पानी के कुछ घूंट पी कर काम करना शुभ होगा। स्याह रंग या बिना सींग वाली गाए की सेवा करना शुभ फल देगा, उसका रंग देखना जरुरी है, सफेद रंग (शुक्र दही रंग) अशुभ, स्याह रंग (शनि रंग - लोहे रंग) शुभ, बगैर सींग गाय शुभ रहेगी। मगर लाल रंगे (सूर्य या मंगल शक्की नेक/बद) पर होगी। इसके अतिरिक्त रोटी खाने से पहले भोजन का टुकड़ा आग में आहुति रूप डालना गृहस्थ में सहायता करेगा।

सूर्य खाना नं: 8
(तपस्वी राजा, सांच को आंच)

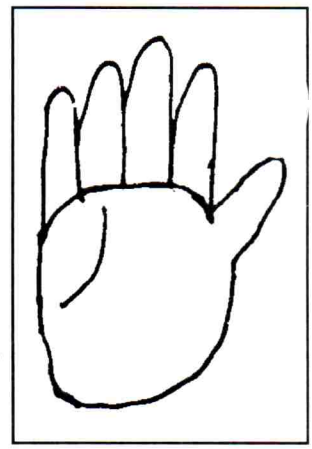

सच्चाई में ब्रह्माण्ड जब तुम से कांपे।
तो फिर झूठ दुनिया का क्यों तू है ढापें।।

राजा तपस्वी जिस घर बैठे,
मर्द नामर्दी ब्रह्माण्ड जागे,
उम्र रवि से राज तरक्की,
हालत पानी खुद किस्मत,
सगे दुनिया दिलदादा चोरी,
इश्क तबाही करता ऐसी,
शनि तीसरे गुरु हो मन्दा,
पांच पहले घर शुक्र बैठा,
मौत भागी खुद कोसों हो।
जिन्दा करेगा मुर्दो को।
भण्डारी दौलत ज़र बनता हो।
लेख साथी बुध होता।
लग्न बहुरूपी गन्दा हो।
नाम रहे न लेवा को[1]
दरवाजा दक्षिण बद मंगल हो[2] ।
उम्र छोटी जले जंगल वो।

1. को - कोई।
2. थौड़ा मीठा मुंह में डाल कर पानी पीना सहायक होगा।

हस्त रेखा:-

सूर्य के बुर्ज से रेखा मंगल, बद को, भाग्य रेखा न हो, सूर्य रेखा न हो, या भाग्य रेखा और सूर्य रेखा दोनों न मिले।

नेक हालत:-

स्वयं का भाग्य का हाल पापी ग्रहों की अच्छी या बुरी हालत पर फैसला देगा। तेरी सच्चाई की आग सारे संसार की बदी की लहर को जला देगी और तेरे छुपे शत्रुओं को भी जला छोड़ेगी। तपस्वी राजा जिससे मौत भी कोसों दूर भागती हो यानि उसके होते हुए उसके खून के किसी भी रिश्तेदार की मौत नहीं हो सकती। जब मौत हुई होगी वह इधर-उधर बाहर गया हुआ होगा। दिमागी खाना नं: 25 पापी ग्रहों से मुश्तरका (बहुरूपियापन) नकल करने की शक्ति का मालिक होगा। सूर्य की आयु से (22 साला आयु) 22 साल तक राजदरबार में तरक्की, धन दौलत का भण्डारी होगा। सूर्य की गर्मी की आग अब जलाने की बजाए आकाश से वर्षा करने लगेगी। उजड़े मकानों को बसाने वाला पानी भरे बादलों को बरसा लेने वाला पत्थर (शनि) से आग, आग से पानी (मंगल नं: 8 का मालिक, मं: अब सूर्य की सहायता से मंगलीक न होगा) और पानी से मिट्टी (नं: 8 चलाया करता है शुक्र को जिस घर का नं: 7) है या सारा संसार पैदा करने वाला होगा। मारक स्थान के बिच्छू मं: बद के जहरीले जले हुए पत्थरों (शं:) से संखिया और संखिया से हिजड़ों और नामर्दो को जवान मर्द गिना देगा। बल्कि उसके होते हुए मुर्दे भी जीवित हो जाएगें। जब तक यह संसार के तीन कुत्तों में से कोई एक कुत्ता या चोरी करने वाला न हो।

1. मंगल बद और शनि के मंदे असर की बजाए अब सब फल नेक होगा। दोस्त ग्रहों और स्वयं सूर्य का फल हर और हर तरह उत्तम होगा। - जब मित्र ग्रह नं: 1 या साथ साथी या मंगल नेक हो।

मंदी हालत :-

इस घर में बैठा अकेला सूर्य, शनि की चीज़ें (पुड़पड़ी, स्त्री लिप्सा, बिच्छू, ज़हरीले जानवरों) की सहायता से बुरा प्रभाव देगा। याल रखें कि कहीं वह प्यार जिसने अक्सर कौमों को खाकर छोड़ा तेरी तबाही के सामान न इकट्ठे कर रहा हो। यदि स्वयं बड़ा भाई या गाय की सेवा करने वाला हो तो ल बी आयु की निशानी होगी। सफेद गाय मंद भाग्य होगी। दक्षिण के दरवाज़े का साथ मौतों की पहली निशानी होगा। सगे दुनिया (दुनिया के तीन कुत्ते या किसी एक हालत का भी जो हो) या चोरी का प्यारा (दिल दादा) हो। बहुरुपियापन की लगन या शौक हो या गंदे प्यार में गलता हो तो ऐसा तबाह होगा कि न खुद उसका निशान बचे और न ही नाम लेवा हो।

1. उम्र छोटी और जंगल में जलता होगा जब दक्षिण के दरवाज़े का साथ हो और जब बड़ा भाई न हो और टेवे वाला जब अपने बड़े भाई से जुदा हो या उल्ट हो तो मंगल बद होगा। - जब शनि खाना नं० 3, वृहस्पति मंदा खाना नं० 1-5 में या मंगल बद हो।

क्याफा :-_ शुक्र का पतंग, काग़ रेखा होगी।

2. काग़ रेखा का मंदा फल हो। — जब शुक्र खाना नं० 1-5-10 में हो।
3. दूसरों को तो मौत तक से बचाये मगर खुद अपनी किस्मत के मैदान में बहुत हल्का (मंदा ही होगा)। -जब वृ०मंदा हो।

4. माली हालत में हल्का मंदा ही होगा। — जब बुध खाना नं० 2 में हो।

सूर्य खाना नं० 9

(ल बी उम्र, भारी कबीला, खानदानी परवरिश वाला, सूर्य ग्रहण के बाद का सूर्य)

उम्र लम्बी में पाप तो खूब बढ़ेगा।
खबीश कदर[1] खुद किस्मत अपनी,
दान लेना न चन्द्र चांदी,
पाँच तीजा न शुक्र मंदा,
हाथ हकीमी बरकत दुनियां,
साथ दृष्टि बुध जो मंदा,
पाँच पहले तीन राहु जो बैठा,
मगर धर्म को क्यों तू ऊँचा करेगा।।
सात पुश्त तक तारता हो।
न ही मुफ्तखोरी पालता हो।
न ही बुरा अब चन्द्र हो।
राजगुरु चाहे मंदिर हो[2]।
जलता सूर्य खुद अपना हो।
ऐशी, धर्म में कच्चा हो।

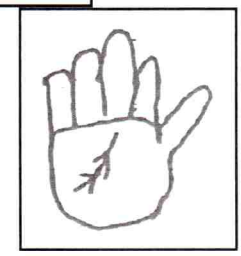

1. खानदानी खून के लिए अपना सब कुछ बहा देगा मगर इनाम न मांगेगा। परोपकार का असूल अपने घर से चला कर पूरा करता रहेगा।
2. ऐसा प्राणी जिसके खानदान में उसके जन्म से पहले किस्मत की हर तरफ मंदी हालत थी, अब उसके जन्म से कुल ाानदान का पुराना मंदा समय खत्म हो गया और उनकी किस्मत का ग्रहण हट कर सब तरफ उत्तम रोशनी (भाग्य) और अच्छी (काम में आने वाली) आग़ पैदा होगी।

हस्त रेखा :- ***किस्मत रेखा की जड़ पर चार रेखाई शाखा हो।***

नेक हालत :-

उम्र ल बी, दिमाग़ी खाना नं० 26 मसखरगी हद से ज्यादा बेवकूफ कर दे, भोलापन सदा नेक होगा और रोशनी का रास्ता हमेशा सहायक होगा, दृढ़ निश्चय उत्तम देगा। बढ़ता हुआ कबीला पोते-पड़पोते सब का सुख देख कर जाएगा। खानदानी पालना करने वाला किसी का कुछ बने या न बने मगर वह अपने खानदानी खून के लिए अपना सब कुछ बहा देगा, मगर बदले में कुछ न मांगेगा और न ही खुद कभी रोटी से भूखा मरेगा। मगर वह अपनी सात पुश्तों का रखवाला और सहायक होगा। परोपकार का असूल अपने घर से चलाकर कुल दुनिया के लिए पूरा कर देगा। राजदरबार और वृ० से संबंध चाहे मंदे ही क्यों न हो मगर उसके हाथ में इलाज़ की बरकत तो ज़रूर होगी। सात पुश्त तारने वाला होगा। अब खाना नं० तीन बहन-भाई, पाँच अपनी संतान का प्रभाव उत्तम होगा। शुक्र चाहे कुछ हल्का मगर चन्द्र अब बुरा असर न देगा। माता-पिता की रोटी कमाने का ढंग (धन्धा) अमूमन सरकारी नौकरी होगी। खर्चा कबीलदारी के कामों में बहुत होगा। खाना औलाद भी अब हरा-भरा होगा चाहे इसमें पापी या मंदे ग्रह बैठे हों।

1. उसका खानदान, उससे पहले उसके बाप-दादा और स्वयं अपनी ल बी उम्र का ठेकेदार होगा।
— जब दोस्त ग्रहों का ताल्लुक हो।

क्याफा ***किस्मत रेखा की जड़ पर चार शाखी खत।***

2. किस्मत अमूमन जवानी (34 साल की आयु के बाद) में जागेगी — जब बुध खाना नं० 5 में हो।

मंदी हालत :-

चन्द्र की चीज़ें खासकर चांदी का दान लेना, मंदे चन्द्र की निशानी है और मु तखोरी से सूर्य छिपने का समय (गिरावट का समय) निकट होगा।

1. सूर्य का मंदा प्रभाव ज़ोर पर होगा। घर में पीतल के बड़े-बड़े पुराने बर्तन बुध का ज़हर हटाएंगे
— जब बुध का साथ या बुध खाना नं० 3-5 में हों।
2. हद से ज्यादा गर्म या नर्म होने से बर्बाद होगा। धर्म में कच्चा और मु खोर ऐशी पट्ठा होगा
—जब राहु खाना नं० 1-3-5 में हों।

सूर्य खाना नं० 10
(सेहत मान धन की मालिक मगर बहमी)

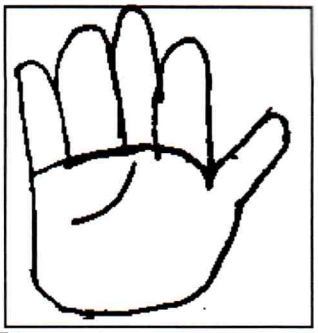

अतायत जो बड़ों की करता चलेगा।
ज़माने में तेरा कुछ बन के रहेगा।।

बड़े बुर्ज़ुग आला (उम्दा) चाहे लाखों उसमें,
रंग शनि, राहु [1]सिर जब नंगे,
गुरु, मंगल न जिस दम साथी,
छठे-सात चाहे हो कोई पापी,
4 शुक्र टेवे मंदा,
उच्च कायम 2 चन्द्र बैठा,
अकेला रवि न उत्तम हो।
लेख नसीबी रोता हो।
पाँच-छठा मंद चन्द्र हो।
अल्पायु दुःख मंदिर हो।
उम्र छोटी पिता मरता हो।
सुख 24 न माता हो।

1. सफेद पगड़ी (शर्बती रंग) उत्तम मगर सिर पर काले, नीले रंग या नंगा सिर हानिकारक होगा।

हस्त रेखा :- **सूर्य रेखा शनि के बुर्ज पर हो।**

नेक हालत :-

मान स्वास्थ्य और धन का मालिक, मगर एक वहमी आदमी होगा। मगर सिर पर सफेद या हल्के शर्बती रंग (जो काले, नीले न हों) की पगड़ी या टोपी उत्तम होगी।

मंदी हालत :-

इस घर में अकेला बैठा सूर्य अपने शत्रु शनि की चीज़ों को (जद्दी विरासत पिता या उनका सुख, नज़र, उम्र तक काली, तेल, लोहा, लकड़ी, भैंस, बाल, मगरमच्छ, तीन साल रहने का घर, पिजड़, घुटना) पर अपना नेक प्रभाव बंद कर देता है। जब तक ससुराल का साथ या उनके घर ही रह पड़ना या राहु से संबंधित काम या चीज़ों का साथ हो तो राहु सदा ही सूर्य ग्रहण या मंदा कच्चा धुआँ पैदा करता रहेगा। अपने नुक्स का ढिंढ़ोरा पीटना और मुसीबत में दूसरों के आगे रोना मंदे समय की और बर्बादी की पहली निशानी है। चाहे कोई दर्जा विद्या या डिग्री हासिल की हो और उसके बड़े बेशक कितने उत्तम भाग्यवान हो मगर वह नंगा सिर रहने का आदी होने पर आमतौर पर चिल्लाता ही होगा और उसके लिए हर जगह नाकामयाबी ही होगी। पश्चिमी दीवार में रोशनी या पश्चिमी दीवार (अपने मकान की), पड़ोसी संतानहीन या राहु की लानत से जलता हुआ होने, मंदे सूर्य की आम निशानी होगी। राजदरबार में स्याही से सिफारिशी काग़ज स्याह करके कई बार देखा और देखा न उसे कभी पार देखा बल्कि नर ग्रह की सहायता (साथ-साथीपन) के बिना न उसे दरजहां देखा। फिर भी देखा सूर्य की आग़ की गर्मी और अपने स्वयं में गुस्सा के ज़ोर से मंदे हाल वाला देखा और औलाद तबाह देगा। किस्मत अपनी के लेखे में न कभी शाह देखा फिर शाही लिस्ट में भी न उसे लिखा देखा। फिर मगर देखा तो सफेद पगड़ी या दस्तार से ही उसे गुरु के दरबार देखा, तो आखिर में उसे शाहों का शाह देखा। मगर बुध की उम्र 34 साल ही न यह हाल देखा। फिर भी देखा तो उसे न कभी योगी अलंकार देखा यानि अकेले सूर्य का प्रभाव मंदा ही होगा खासकर नंगा सिर या बाहर की स्याही या स्याह कपड़े पहनने वाला या सिर पर या सारे शरीर पर काले, नीले कपड़े मंदा मनहूस प्रभाव देंगे। हल्के शर्बती, रंग, उत्तम होंगे।

1. अल्पायु दुःखों का भरा हुआ जिस्म, धर्म और औलाद की हर तरह से हानि देखा होगा।
   — जब खाना नं० 5-6 और चन्द्र मंदा और वृहस्पति, मंगल का साथ न हो।
2. उम्र 12 दिन होगी जब नर ग्रह साथ-साथी या सहायता पर न हो। — जब चन्द्र खाना नं० 5 में हो।
3. घोड़ा, माता तथा पगड़ी सब ही निष्फल बल्कि वृ० भी व्यर्थ मगर राजदरबार उत्तम सूर्य को असर प्रबल होगा।
   — जब चन्द्र खाना नं० 4 में हो।
4. पिता टेवे वाले की छोटी उम्र में ही चला जायें। — जब शुक्र खाना नं० 4 , शनि मंदा हो।
5. उच्च चन्द्र जो टेवे बैठा, भला दौलत ज़र होता हो, साल 24 न माता सुखिया, राज असर चाहे उ दा हो। 24 साल की उम्र में माता दुखिया, अमूमन चल बसी होगी मगर ज़रूरी ही नहीं कि वह मर जाये। — जब चंद्र खाना नं० 2, उच्च कायम हो।
6. 34 साल की आयु तक मच्छर से भरपूर भाग्य यानि न स्वयं सुखी न पिता को आराम, न स्वयं योगी अलंकार और न शाही मदद की कोई गुजांयश, न संतान कायम। न ही सुख शाह, न राजदरबार में ऊंचा दर्जा, मगर बाद में उसे शाहों का शाह भी

माना है। — जब खाना नं० 6-7 में कोई पापी बैठा हो।

7. सूरज, शनि का ल बा झगड़ा होगा, अगर राजदरबार उ दा हो तो शनि के मकानों व दूसरी संबंधित चीज़ों का असर मंदा होगा बल्कि शनि की महादशा के समय 19 साल पिता को कष्ट, जुदाई और धन-दौलत की मंदी होगी। दरिया और तह ज़मीन का पानी (कुआँ, हैड प प) सदा मदद देगा । — जब शनि मंदा हो।
8. सूर्य का राजदरबारी संबंध में सोया हुआ प्रभाव होगा, यानि बुद्धि ज्ञान के अनुसार ताकत या अच्छी आदतों के होते हुए भी दरबार में उसकी कोई कद्र या गिनती न होगी, दरिया, नदी, नाले में, चलते पानी में 40 -43 दिन तक लगातार तांबे के पैसे बहाते जाना सहायक होगा। — जब खाना नं० 4 ाली हो।

सूर्य खाना नं० 11
(पूर्ण धर्मी मगर अपनी ही ऐश पसंद)

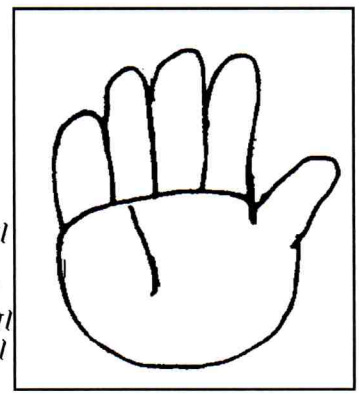

ज़ुबान तेरी जो गोश्त खाने को मांगे।
लिखे खुद निसंतान विधाता कलम से॥

पूरा धर्मी नेक चलते पूरा,
शराब खोरी गोश्त छोड़े,
मंद शनि, बुध तीजे आया,
उम्र लम्बी चाहे हरदम होगा,
5 चन्द्र दे उम्र जो 12,
खुराक शनि निसंतान होता,
परिवार मुखिया आप हो।
तीन बेटा बाप हो।
आठ चन्द्र खुद बैठा हो।
हरामकारी का पुतला हो।
औलाद पैदा न होती हो।
दान मुबारिक मूली हो।

1. मूली (सब्जी, गाजर आदि) सफेद रंग या शनि की चीज़ों का दान (रात को सिरहाने रख कर प्रात: धर्म स्थान में दे आना, बादाम शनि की चीज़ है) इस जगह शनि की काले रंग की चीज़े न लें। बुध मंदा या शनि खुराक कर लेने के बाद का दोष ज़िन्दा बकरे छोड़ने से दूर होगा।

हस्त रेखा **सूर्य रेखा हथेली पर खाना नं० 11 बचत में समाप्त हो।**

नेक हालत

यदि दाल खोर तो नर संतान जल्दी आएगी। चाहे लालची मगर राजा की पदवी का आदमी। अगर धर्म में पूरा हो तो परिवार सुखी हो। अमूमन पूरा धर्मी मगर अपना ही ऐश पसन्द होगा। आयु ल बी होगी।

मंदी हालत

इस घर में अकेला बैठा सूर्य अपने शत्रु शनि की चीज़ों (उम्र तक, अपनी आमदनी, खुद खरीद किए हुए बने बनाए मकान, औलाद की आयु, शान, गिनती, जन्म समय, पहला हाकिम, नफसानी शक्ति, राहु, केतु के कामों का फैसला) पर अपना नेक असर बंद कर देगा। गोश्त खाने वाला हो तो कम से कम 45 साल की आयु तक की जैसे कि अपनी संतान का मांस उबाल कर खा रहा हो। नर संतान व्यर्थ, अंत में निसंतान होगा खासकर जब उसके मकान के साथ लगती हुई गली और वृक्ष वाला सेहन हो। शनि और बुध की मंदी कार्यवाहियां तबाही को पहले ही बता देगी। स्वप्न में सांपों के तमाशों, ज़ुबान का खोटापन (लड़ाई-झगड़ा या गाली देने की आदत) वायदा फरामोश, झूठी शहादत, खोटी, अमानत, फरेब धोखाधड़ी, यानि जो लट्ठ मारे या झूठ शराब गाले या पत्थर शनि की चीज़ों का साथ सूर्य की चमक पर स्याही फेर देगा। वृ० के दरबार जिस जगह शनि हलफ उठाए किस्मत का फैसला कर रहा हो उसी कलम से अपने बाप सूर्य पर कत्ल का हुक्म लिख देगा। यानि शनि की चीज़ें (गोश्त, शराब) की खुराक या मंदी चीज़ों के प्रयोग से संतान की तबाही का हुक्म सादर कर देगा जिसे राहु, केतु की आयु 45 वर्ष की उम्र तक मसूखं कराना मनुष्य शक्ति से बाहर होगा। शनि की खुराक से जब ऊपर लिखी बात आ रही हो तो 45 साल की आयु के बाद ज़िन्दा बकरे छोड़ने से लानत दूर होगी।

1. उम्र ल बी और झूठ और हरामकारी का पुतला होगा। सूर्य, बुध दोनों की चमक गुम होगी मगर उसकी अपनी आयु यकीनी तौर पर ल बी होगी। — जब चन्द्र खाना नं० 8, शनि मंदा, बुध खाना नं० 3 में हो।
2. आयु 12 साल, जब नर ग्रह साथ-साथी या सहायता पर न हो। नर संतान व्यर्थ की, लाश मुर्दा पैदा हो। (मूली, शलगम,

गाजर सब्जी), शनि की चीज़ (बादाम)इस जगह काली चीज़ (शनि की) न लेंगे, को सिरहाने रख कर सवेरे धर्म स्थान में देना शुभ होगा। — जब चन्द्र खाना नं० 5 में हो।

सूर्य खाना नं० 12
(सुख की नींद, मगर पराई आग़ से जल मरने वाला)

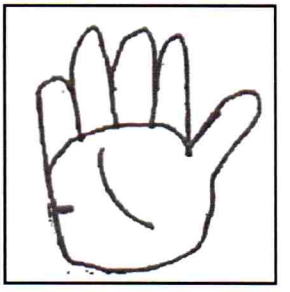

हस्त जाती जलता या ममता पराई।
शहादत, गबन दे ज़मानत तबाही॥

रवि, शनि न झगड़ा कोई, न ही शुक्र बुध मंदा हो।
असर गुरु चाहे बेशक शक्की, मर्द स्त्री सब सुखिया हो।
साधु हुआ न होगी लावल्दी, लाभ पापी न देता हो।
माया मिले या हो तंगदस्ती, धर्महीन न होता हो।
पापी तख्त पर' राज खराबी, नींद खुराक न मिलती हो।
समय मंदे जब देता मुआफी, फतह कलम सिर करती हो।

1. दस्ती कमाई या हुनरमंदी होने में सूर्य ग्रहण होगा, मगर व्यापार (बुध) उत्तम रहेगा।

हस्त रेखा :- **<u>सूर्य रेखा हथेली पर खाना नं० 12 खर्च पर खत्म हो।</u>**

नेक हालत :-

सूर्य की बुनियाद पर अब राहु का साया चल रहा होगा। सुखिया रात का मालिक मगर पराई आग़ या ममता में अपने आप गिर कर मरने वाला होगा। अब सूर्य और शनि का किसी ाी तरह झगड़ा न होगा और न ही शुक्र या बुध मंदा होगा। वृ० का प्रभाव चाहे शक्की, मगर मर्द, स्त्री का जोड़ा सुखिया, धनी हो या न हो। मालिक रहे या नौकर बन कर रहे, निर्धनता से चाहे भंगी घर बिके, मगर धर्महीन संतान रहित या लंगोटा बंद साधु न होगा। अगर होगा तो ल बी जागीरों का स्वामी, आज़ाद जीवन साफ रुह ब्रह्मज्ञानी और ज़िन्दा दिल होगा अर्थात् जितना धर्म में पक्का उतना सुखी गृहस्थी होगा। किस्मत के मैदान में अगर बहुत चमकता लाल न हो तो कम चमक का भी न होगा। घर में आटा पीसने की चक्की (जब जन्म कुण्डली में शुक्र, बुध एक साथ हो) के होते हुए रिज़क कभी बंद न होगा। अगर राजदरबार सहायता न करे तो व्यापार से लाभ होगा। दस्ती शनि की मशीनों के काम से घाटा पड़ेगा (सूर्य ग्रहण होगा) फिर भी धर्म पालना आबाद करती रहेगी और जब तक मकान का सेहन कायम रहे, सूर्य का असर मंदा न होगा या जिस कदर खुले सहन का साथ रहे, भाग्य का मैदान बढ़ता रहे।

1. अब शुक्र (गृहस्थ) बर्बाद न होंगे बल्कि शुक्र रद्दी होता हुआ भी नेक प्रभाव देगा।
— जब शनि खाना नं० 6 में हो।
2. केतु की आयु (24 साल) के बाद स्वयं कमाई करने वाला होगा या हरी-भरी जीवन की फुलवाड़ी का स्वामी होगा।
— जब केतु खाना नं० 2 में हो।

मंदी हालत :-

इस घर में अकेला बैठा सूर्य, राहु की (अपने शत्रु) की नीचे दी गई चीज़ों पर नेक प्रभाव बंद कर देता है। (सिर की हड्डी, दिमाग़ी चाल विचारों का आना-जाना, अचानक पैदा होना, मर्द, स्त्री की आपसी आयु का संबंध, बदनामी की प्रसिद्धि, कोयले, खोपड़ी, हाथी शराब या बददुआ) राजदरबार में खराबियां, दस्ती टैक्नीशियन के कामों में हानि मगर बुध उत्तम प्रभाव का होगा। जिस कदर मकान का सेहन ुला सूर्य का उत्तम प्रभाव बढ़ेगा, दिल की स्याही, ईर्ष्या, अंधेरे मकानों का साथ, पराई ममता, किसी की झूठी शहादत, ज़मानत, गबन या अमानत का मार लेना, सब के सब सूर्य की उत्तम आग़ को गंदे पेशाब से बुझाते होंगे। राहु से संबंधित कारोबार ससुराल स बन्धित आदि से मुश्तरका काम करना हर तरफ मंदा भूचाल खड़ा कर देंगे या चीज़ों का साथ-साथी होना मंदा प्रभाव देगा।

1. रात की नींद, सुबह का नाश्ता दोनों बर्बाद तंगदस्ती सूर्य के प्रभाव में खराबियां होगी। मंदे समय में दर गुजर करने का हथियार या दुश्मनों को माफ करते रहना सफलता विजय देगा । - जब पापी खाना नं० 1 में हो।
2. स्वयं या अपनी स्त्री या दोनों एक आँख से काने — जब चन्द्र खाना नं० 6 में हो।

****

चन्द्र

(आयु की किश्ती का समुद्र, जंगल की धरती माता, दयालु शिव जी भोलेनाथ)

चन्द्र
(आयु की किश्ती का समुद्र, जंगल की धरती माता, दयालु शिव जी भोलेनाथ)

बढ़े दिल मुहब्बत जो पांव पकड़ती।
उम्र नहर तेरी चले ज़हर उछलती॥

दिल का स्वामी चन्द्र है जो कि सूर्य से रोशनी लेता है और संसार में उसका छोटा राजा है। सूर्य चाहे कितना ही गर्म होकर आज्ञा दे लेकिन चन्द्र उसे ठण्डे दिल और शांति से पूरा करता है और सदा सूर्य के पैरों में रहना पसन्द करता है। चन्द्र का घर हथेली में चाहे सूर्य से दूर है मगर दिल रेखा सूर्य के पांव में ही बहती है। स्त्री (शुक्र), भाई (चन्द्र), साले, बहनोई (मंगल नेक) और अपने भाई (मंगल बद), गुरु तथा पिता (वृहस्पति) सब इस दिल के दरिया या चन्द्र रेखा की यात्रा को आते हैं जो सूर्य की चमक से दबी हुई आँखों (शनि) और दिमाग़ (बुध) को शांति ठंडक चन्द्र का प्रभाव देता है या यूं कह सकते हो कि इस दिल के दरिया के एक किनारे एक संसार के सभी संबंधी और दूसरी और मनुष्य का अपना शरीर तक आत्मा (सूर्य) और आँखें, सिर (शनि, बुध) बैठे हैं और दिल रेखा उन दोनों के बीच चलती हुई दोनों ओर से अपनी शांति से आयु बढ़ा रही है या मनुष्य के शरीर को वृ० की हवा के सांस से हिलता रखने वाली चीज़ यही दिल रेखा है। अत: कईयों ने दिल रेखा को आयु रेखा भी माना है और इसके मालिक चन्द्र की चाल से आयु के सालों की हदबंदी बांधी है।

चाँदी की तरह चमकती चाँदनी रात चन्द्र का राज्य है। जिसके शुरू में राहु, अंत में केतु और बीच में शनि स्वयं रखवाला है, यानि पापी टोला[1] (राहु, केतु, शनि) तीनों एक साथ अपनी जन्म वाली और जगत् माता के ही दरबार में हर एक के आराम और स्वयं माता के अपने दूध में ज़हर डालने की शरारतों के लिए तैयार रहते है, बेशक दूध (चन्द्र) और ज़हर (पापी ग्रह) मिल रहे हैं फिर भी दरिया दिल चन्द्र माता संसार में समुद्र के पानी में सूर्य की परछाई अवश्य होगी जिसकी शरारत के लिए संसार की हवा या मनुष्य की सांस का स्वामी वृ० हर जगह विराजमान है।

अर्थात् :-

चन्द्र मालिक ग्रह उम्र जो दुनिया[1],
जन्म वर्ष चाहे कहीं हो बैठा,
वक्त शत्रुता एक पे मंदा,
बाद केतु, गुरु पहले बैठा,
गुरु होवे जब पहले बैठा,
माता-पिता हो दुखिया बेटा,
जहर चन्द्र भर जाता हो।

गुरु राजा ग्रह मण्डल[2] हो।
असर आता रवि का हो।
बीज नाश नहीं करता हो।
मंदा स्वयं चन्द्र होता हो।
दृष्टि मगर न मिलती हो।

चावल (चन्द्र) का जितना पुराना,
नज़र चन्द्र में गुरु जो बैठा,
बुध, चन्द्र से हो जब पहले,
3-4-7-9 ग्रह बैठे,
बुध भले तक दूध[3] चन्द्र का,
मालिक उम्र जो कुल ज़माना,
बिम्ब सूर्य का हर दम मिलता,
खाली चौथा चाहे कोई अकेला,
रवि देखे जब चन्द्र भाई,
आधी उम्र जब चन्द्र होगी,

कीमत बुद्धपे बद्धती हो।
माया बालाई मिलती हो।
रेत ज़हर पानी भरता हो।
राख हुए कुल जलता हो।
मिले पापी फट जाता है।
बिगड़े[4] शुक्र न बनता हो।
मंगल बदी सब जलता हो।
असर उत्तम खुद देता हो।
तख्त बैठा न जबकि हो।
लेख भला सब होता हो।

1. सूर्य छुपने के बाद पक्की शाम का स्वामी = राहु
   सूर्य निकलने से पहले प्रात: का स्वामी = केतु
   सारी की सारी रात का स्वामी = शनि
2. दरमियाने ग्रहों की चाल के लिहाज से चन्द्र के प्रभाव में सबसे पहले वृहस्पति का समय, फिर सूर्य और आखिर पर चन्द्र स्वयं के असर का ज़माना होगा यानि चन्द्र के प्रभाव में वृहस्पति, सूर्य, चन्द्र तीनों का ही हिस्सा शामिल होगा।
3. सदा जागते रहने वाला घोड़ा :-
   मैदाने जंग में विजयी होगा — खासकर खाना नं० 3 का चन्द्र।
   धन-दौलत खाद्य अन्न की देवी — खासकर खाना नं० 7 का चन्द्र।

चन्द्र मृत्यु से बचाए, ल बी आयु दे— खासकर खाना नं० 8 का चन्द्र।

4. फटा हुआ दूध, दही या (शुक्र) का काम न देगा या मंदे चन्द्र वाले को शुक्र के कामों से फायदा न होगा मगर चन्द्र की चीज़ें लाभ देगी जबकि उन चीज़ों में दूध की सफेदी न मिली हुई हो, पानी की बर्फ लाभदायक हो मगर आसमानी रंग की बर्फ हानिकारक तथा चन्द्र की स्वच्छता रंगत की सफेदी है।

आम हालत 12 घर

ज़िन्दा माता ज़र दौलत पहले,
कमी रिज़क न चोरी तीजे,
तबीयत धर्म 5 दौलत चलता,
अवतार लक्ष्मी घर 7 होता,
माता मंदी 8 उम्र पे चन्द्र,
दुनियां पानी 10 ज़हरी समुद्र,
आराम माया कुल दुनियां चाहती,
चन्द्र 12 की चमक हो ऐसी,
दूजे दौलत खुद अपनी हो।
चौथे खर्च' से चौगुनी हो।
धर्म की आन 6 मंदा हो।
मारा हुआ न पाप (राहु, केतु) का जो।
घड़ा मोती 9 माया हो।
नाममात्र घर 11 हो।
कोई चाहे न इक दुःख को।
जले जलावे हर सुख को।

1. खाना नं० 4 खाली हो तो सारी आयु उत्तम फल देगा।

आम हालत अन्य ग्रहों से संबंध :-

अपने हाथों माता की सेवा करने का समय 24 साल की आयु।

1. कष्ट का समय एक पर ही मंदा होगा खानदान नष्ट नहीं होने देगा।
2. टेवे में जब पहले घरों में वृ० हो और बाद के घरों में केतु तो चन्द्र मंदा ही होगा। लेकिन जब तक बुध उत्तम होगा चन्द्र का प्रभाव दूध की भांति उत्तम ही रहेगा और सोया चन्द्र भी उत्तम फल देगा और स्वयं ऐसा चन्द्र जागता हुआ घोड़ा होगा।
3. शुक्र देखे चन्द्र को तो— स्त्रियों की उल्ट राय होगी, विरोध होगा।
   चन्द्र देखे शुक्र को तो— फकीर कमाल का, सब नशेबाज़ों का सरदार।
4. जैसी भी टेवे में सूर्य की हालत हो (सूर्य की छाया) ज़रूर ही चन्द्र के असर में साथ मिलता रहेगा और मंगल बद ड़र के कोसों दूर भागता रहेगा।
5. चं० के घर अकेला बैठा हुआ ग्रह चाहे कोई भी हो उत्तम फल देगा और जब चं० का घर खाना नं० 4 खाली ही हो तो स्वयं चं० सारी उम्र ही नेक फल देगा चाहे कैसी हालत का ही क्यों न हो या हो जाये।
6. किसी के पांव छू कर उसकी आशीष लेना चं० के उत्तम फल पैदा करने की सबसे उत्तम नींव है।

7. चन्द्र से बुध का संबंध :-

चन्द्र यदि कुण्डली में बुध से पहले घरों में हो तो चन्द्र का प्रभाव बुध पर प्रबल होगा। छुपा हाल अच्छा मगर सांसारिक तौर पर दोनों का ही मंदा फल होगा। यदि बुध कुण्डली में चन्द्र से पहले घरों में हो तो बुध का प्रभाव चन्द्र पर प्रबल होगा। नीचे लिखी तीनों हालतों में धन की हार न होगी दिल का संबंध खराब होगा। आत्म-हत्या तक की नौबत हो सकती है। दृष्टि से आमने-सामने तो जातक एक और स्वभाव वाला हो।

100 % दृष्टि अति हानिकारक, पौड़ियों (सीढ़ियों) के सामने कुएं खराबी का सबूत,

50 % दृष्टि बहुत ही हानिकारक,

25% दृष्टि मामूली हानिकारक,

दोनों में हर एक जुदा-जुदा होने की हालत में दूसरों के घर में यानि खाना नं० 4 चं० के घर में बुध हो या खाना नं० 7 बुध के घर चं० अकेला हो तो नेक फल देगा। लेकिन यदि इकट्ठे ही ऐसे घरों में हो यानि खाना 4-7 में तो कभी नेक फल न देंगे।

8. चन्द्र से शनि का संबंध :-

चन्द्र देखे शनि को तो— शनि का मंदा असर मगर चन्द्र का उत्तम।
शनि देखे चन्द्र को तो— चन्द्र का बर्बाद मगर शनि का उत्तम पैदा होगा।

दोनों जुदा-जुदा मगर मुश्तरका दीवार वाले घरों में बैठे हुए हो तो आपस में शत्रु होने के कारण जुदा-जुदा रहेंगे। ऐसी हालत में कुएँ की दीवार फाड़ कर मकान (शनि) या सर्दखाना बनाना चन्द्र के दूध में विष मिलाने के समान होगा। माता मरे, दौलत और संतान समाप्त हो जाए। बल्कि अधरंग होकर अपना शरीर भी आधा नकारा हो जाए, आदि बुरे प्रभाव होंगे।

9. चन्द्र के पापी ग्रहों से स बंध:-

शत्रु या पापी (रा०, के० या श०) ग्रहों के संबंध से (साथ-साथी या दृष्टि से) केतु का असर मंदा लगे और स्वयं चन्द्र का खालिस दूध फटा हुआ होगा, मगर शुक्र न बनेगा या यूं कहो कि फटा दूध (चं० मंदा दही या शुक्र) का काम नहीं दे सकता बशर्ते कि उन चीज़ों में दूध की सफेदी शामिल न हो क्योंकि चं० की असलियत रंग की सफेदी दूध समान है मगर फटे हुए दूध का पानी अपने दूध की शक्ति फिर भी दे जाता है। अत: मंदा चं० फिर भी कई दूसरों की भलाई के काम में सहायता ज़रूर देगा या मंदे चन्द्र वाले को शुक्र से संबंधित चीज़ों, काम से फायदा न होगा मगर स्वयं चं० की ही चीज़ें (बहने वाले पानी) आदि से लाभ रहेगा पानी की बर्फ सहायक मगर आसमानी बर्फ हानिकारक, दूध, सफेद चीज़े चं० नेक का सबूत देगी।

10 पापी टोला, सदा चं० के दूध में ज़हर ही मिलाएगा मगर ऐसे टेवे में उपाय केवल चं० का ही होगा। जब यह शत्रु ग्रह को देखता हो तो अपना शुभ असर बंद कर देता है। जब चं० के सामने पापी ग्रह बैठे हो तो चं० का बुरा प्रभाव (यदि किसी हालत में मंदा चं० हो) टेवे वाले की जगह उसके करीबी रिश्तेदारों पर होगा। जैसे चं० देखता हो सू० को और सू० के घर खाना नं० 5 में बैठे हो पापी रा०, के०, शनि।

11. जब टेवे में सूर्य, मंगल इकट्ठे हों तो चन्द्र प्राय: भला नहीं हुआ करता।

12. चं० देखता हो वृ० को और वृ० के घरों में खाना नं० 2-5-9-12 में (बु०, शु०, रा०, श०) पापी बैठे हों तो चं० का फल रद्दी होगा।

चन्द्र के पानी और विद्या का टेवे वाले पर प्रभाव :-

चन्द्र को यदि पानी माने तो कुण्डली के 12 घरों में टेवे वाले का पानी किस किस्म का और कौन सी हैसियत का होगा। पानी के इलावा यदि विद्या का चं० से संबंध हो तो उसका परिणाम निम्नलिखित होगा :-

खाना नं० 1 :- घर में रखे बर्तन या घड़े का अच्छा पानी।

विद्या पर लगाया पैसा व्यर्थ नहीं जाएगा, अवश्य आएगा, विद्या सहायक होगी, जिसका विशेष लाभ राजदरबार होगा।

खाना नं० 2 :- पहाड़ से ज़ोर निकलता हुआ उत्तम पानी

माता और विद्या, जायदाद रद्दी और नकद नारायण, दोनों में से एक तरफ में आखिरी पूरी दर्जे में उत्तम होगा। माता के होते विद्या होगी जिसके दरिया की बाढ़ बुध की हदबन्दी हो। पिता के होते हुए धन या बाप को (टेवे वाले की) विद्या के सुख की कोई शर्त न होगी। मगर स्वयं टेवे वाले के अपने लिए उसकी विद्या संसारी ज्ञान समझ या वाकफीयत का बहाना ज़रूर होगी और भाग्य की नींव रहेगी। स्वयं पढ़े दूसरों को पढ़ाए, मगर यह शर्त नहीं कि विद्याविभाग ही भाग्य का बहाना हो। मगर चन्द्र की दूसरी वस्तुएं ज़रूर भाग्य में सहायता देगी जैसे घोड़ों का व्यापार, चांदी के (चन्द्र की वस्तुएं) कारोबार, सिंचाई विभाग आदि भाग्य के सहायक हो सकते हैं। आम स्कूल मास्टरी करने की कोई शर्त नहीं।

खाना नं० 3 :- जंगल सहारा या रेगिस्तान का पानी।

जिस कदर विद्या बढ़े पिता की माली धन की हालत कमज़ोर होती जाएगी। मगर विद्या रूकेगी नहीं। विद्या अपनी कीमत अवश्य देगी। जब तक दरिया पर पुल हो यानि टेवे में केतु अच्छी हालत में हो और चं० को बर्बाद न कर रहा हो वरना माता ही पिता का काम देगी ज्यों-ज्यों आयु बढ़ेगी, विद्या की कीमत कम होती जाएगी या ऐसा व्यक्ति विद्या विभाग में होता हुआ ऊपर से नीचे को गिरेगा या विद्या से कमाया धन घर बार के कामों में तरक्की कम ही करेगा।

खाना नं० 4 :- चश्मे का पानी मीठा।

विद्या हरदम सहायक, विद्या के पूरे करने में सब ओर से सहायता अपने आप मिलती रहे। चाहे कैसे भी विद्या मांगे सुख देने वाली विद्या माता के असली खून का सबूत देगी।

खाना नं० 5 :- आबादी को हरा-भरा करने वाली नदी।

विद्या पर लगाया धन पूरी कीमत न देगा, मगर ऐसा व्यक्ति बच्चों की विद्या या तकनीकी विद्या की पूरी डिग्री का स्वामी होगा। मगर इसको वह डिग्री या विद्या की कीमत न मिलेगी यानि विद्या की नदी का पानी आम लोगों में पूजने की जगह टट्टी, पेशाब धोने के काम आएगा। आम लोगों का भला करते हुए भी कोई उसका भला न चाहेगा। संबंधी दुनियावी साथी नदी की मुर मत का विचार न करेंगे बल्कि मंदा ज़रूर करेंगे अपने लिए विद्या व्यर्थ नहीं होगी। यानि स्वयं अपना मन ना के बराबर और विद्या अपनी कीमत कुछ ी न देगी चाहे कितना ही विद्वान क्यों न हो।

खाना नं० 6 :- पाताल का पानी, कुआं, हाथ, प प आदि।

विद्या सहायक होगी लेकिन मूल्य और खर्च से, जिसके लिए कई तरह के कष्ठ करने पड़ेगें।

खाना नं० 7 :- मैदान और खेती की ज़मीन को हरा-भरा करने वाली नदी।

शादी होने से पहले-पहले विद्या पूरी कर लेगा या यदि विद्या चलती रहेगी तो शादी रूकी रहेगी लेकिन विद्या होगी काम की, बेशक थोड़े ही दर्जे की हो। दूध होगा मगर गाय की बजाय बकरी का जिसमें विद्या की वही हालत होगी जो बकरी अपना दूध देने में किया करती है, यानि बकरी दूध तो देगी मगर मेंगने डाल कर, मगर धन की हालत के लिए बकरी का दूध होता हुआ भी चांदी के भाव ही बिकेगा या वह मनुष्य स्वयं लक्ष्मी अवतार होगा।

खाना नं० 8 :- अमृत या ज़हर।

विद्या हुई तो माता को तरसते रहे यह ज़रूरी नहीं कि माता मर गई हो। माता हुई तो विद्या नहीं अब दूध या विद्या सूखे दूध की तरह होंगे। यानि ऐसा दूध जिसमें खुश्क पाऊडर में दूध की सब सिफते ज़रूर होगी या यूं कहें कि यदि पढ़ेगा तो पूरा नहीं तो संतान को भी पढ़ने से रोकते रहेंगे या वह दोनों को ही तरसते मर जांएगे।

खाना नं० 9 :- समुद्र।

सब को आराम देने वाला विद्या का स्वामी मंगर स्वयं विद्वान होने की शर्त नहीं। बल्कि फिर भी ज़रूरी नहीं कि वह अनपढ़ ही हो फिर भी सुख का मालिक राजा इन्द्र की तरह सब का दाता होगा।

खाना नं० 10 :- पहाड़ों की रुकावट से बंद पड़ा पानी।

दूसरों को तो क्या पढ़ाना बल्कि स्वयं भी विद्या रहित, यहां तक कि पढ़ाने वाले को पानी मांगने पर पत्थर स उत्तर दे उस विद्या में हर ओर रुकावट के पत्थर ही पड़ते होंगे, जो व्यर्थ होंगे, मगर खुश्क दवाईयों की हकीमी और प्रयोग की किस्मत के इल्म का जानकार ज़रूर होगा। बेशक हर जगह मान की जगह मुंह ही काला होता रहे, जब तक खाना नं० 8 मंदा हो लेकिन अगर खाना नं० 2 उत्तम हो तो सब कुछ दो गुना शुभ होगा।

खाना नं० 11 :- बरसाती नाला।

पढ़ेगा पूरा वरना अनपढ़ हाफज़ जी होंगे। यही लाभ हानि विद्या का होगा।

खाना नं० 12 :- आसमानी पानी ओले बर्फ आदि पाखाना बंद, गंदी नाली बंद रौ का पानी।

यदि पापी ग्रह मंदे तो मंदी लहर यानि ज्यों-ज्यों विद्या बढ़े घर घाट उजड़ता जाए वरना यदि सू० नेक और वृ० उत्तम हो तो ऐसा नेक पानी जिसमें गंदगी का नाम न हो और पानी साफ होगा जो कि एक बंद जमीन साफ नाली क्या खाली जगह में गुजर रहा हो। अगर आसमान से गिरे तो बर्फ बन जाए। मिट्टी और गंदगी से दूर रहेगा तो भी अंत में पानी से बदल कर दूध ही होगा। बेशक भार और शक्ल में बदली हो जाये यानि विद्या छोटी हो या बड़ी मगर उसके द्वारा विद्या के आराम और सुख में पानी की हैसियत होते हुए भी दूध की तासीर और रंगत होगी या साधु समाधि के लिए मिट्टी की जगह चांदी का फर्श हाज़िर होगा या वह और उसकी विद्या चांदी की भी परवाह न करेगी, मगर सोने की रंगत में झलकती होगी या लिखे न पढ़े नाम मुह मद फाजिल, पढ़े या न पढ़े, मगर पढ़े हुए का बाप ज़रूर होगा और विद्या की कीमत हो या न हो मगर मु त की दुकानदारी में पूरे दर्जे की तालीम की कीमत हासिल कर लेगा।

जौ का निशान :-

अंगूठा जुदा छोड़कर जिस पर निशान का हाल जुदा दिया गया है, दोनों हाथों की अंगुलियों की पोरियों पर उनके जोड़ों के मिलने की जगह पर जौ अनाज के दानों की शक्ल जैसे सांसारिक जीवन में खुशी-ग़मी से संबंध है। यह निशान सब अंगुलियों पर अधिक से अधिक 32 तक होने माना गया है ऐसे निशान गिनती में 21 तक की हालत में चं० का प्रभाव स्वयं अपने लिए शुभ माना है और 21 से अधिक निशानों वाला व्यक्ति संसार से जुदा होगा जो 9 ग्रह और 12 राशियों (9+12=21) की सारी चालों से जुदे ढंग पर चलेगा। अगर निशान गिनती में 32 हों तो सुख-दुःख बराबर।

खाना	निशान	प्रभाव
1	12	सारी आयु धनी, प्रसन्नता से गुजारा करने वाला।
2	22 से 32	संसार से जुदा ही होगा।
3	17	धनवानी बिना मान बेइतबार होगा।
4	14	औसत दर्जे का जीवन होगा।
5	19	धर्मात्मा राजदरबार में मान हो।
6	20	बुद्धिमान सलाहकार।
7	13	धनवान मगर गृहस्थ में दुःख।
8	16	बदब त जुआ खेलने वाला।
9	18	भला लोग, भले काम नेक स्वभाव।
10	15	चोर, डाकू फिर भी पूरी न पटे।
11	-	चन्द्र शून्य या निर्पक्ष या मंदा ही होगा।
12	21	कमब त, मंद भाग्य होगा। भाग्य की उत्तमता का यकीन नहीं, मंदा मनहूस होगा।

जिस कदर यह निशान 32 की गिनती से बढ़ते जाए उसी कदर ही प्रसन्नता का समय या भाग्य बढ़ता होगा। अगर निशान गिनती 33 हो तो 32 मंदी के मुकाबले 33 खुशी होगी यानि 33/32 खुशी अगर निशान गिनती 39 हो तो 32 मंदी के मुकाबले 39 खुशी होगी यानि 39/32 खुशी।

चन्द्र खाना नं० 1
(माता के जीवित होने तक ज़रो दौलत, खालिस दूध)

हुक्म पूरा माता का गर तू करेगा।
उम्र रिज़क माया न तेरा घटेगा।।

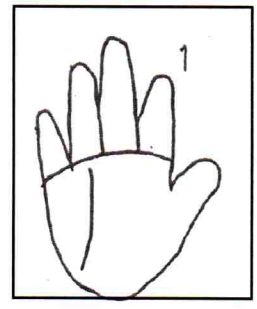

दूध खालिस ज़र [1] पहले चन्द्र,
काम मंदे या मु तखोरी,
बहन, भाई गुजरते पहले,
इल्म तपस्या हर दो मिलते,
माता चन्द्र जब त त [2] पर बैठे,
उच्च शुक्र चाहे कितना टेवे,
शनि, सूर्य जब 6 वें बैठे 2,
मित्र चौथे चाहे 10 वें आये,
आठ भला 7 उत्तम हो,
उपाय विद्या [3] हो जिस दम करते,

नहर वीराने आती हो।
शान पहली भी जाती हो।
आम निशानी होती हो।
दूध बेचे कुल घटती हो।
असर 2 गुना होती हो।
दुखिया स्त्री उस रहती हो।
तवा मिट्टी घर चढ़ता हो।
मोती सफर कुल दरिया हो।
रेत जली भी दौलत हो।
शान भली सब शौकत हो।

1. सोये चन्द्र को 24 साल की आयु से पहले जगाना (खाना नं० 7 में गाय आदि शुक्र की चीज़ें कायम करना) अच्छा होगा वरना 24 साल में स्वयं जागा चं० आयु के 25 वें साल हर तरफ मंदा प्रभाव होगा। चन्द्र कायम जायदाद जद्दी सदा उत्तम फल और बढ़ती जाए।

2. वर्षफल में खाना नं० 1 में जब आए :-
   1-13-25-37-49-61-73-85-97-109 साल की आयु में।
3. चन्द्र खाना नं० 1 के उसी खाना नं० में अलग-अलग जगा दिया गया।

हस्त रेखा

चन्द्र से सूर्य के बुर्ज खाना नं० 1 को रेखा हो।

नेक हालत

अपनी माता के खालिस दूध की सिफतों से कामयाब, जीवन ल बी आयु 90 साल और सांसारिक भाग्य में खालिस दूध की कीमत का स्वामी होगा, राजदरबार से मान तरक्की होगी। आयु सुख 27 साल और संतान का सुख विशेष कर होगा। ऐसे प्राणी के जन्म लेने से पहले उसके कई एक भाई गुजर गए होंगे और वह स्वयं तरस-तरस कर बड़ी इच्छाएं और साधनों के साथ हुआ होगा।

माता-पिता की माली हालत और उनकी जायदाद जद्दी भी उसके जन्म पर कोई ऐसी शानदार न होगी। अमूमन 28 साल की आयु में पहले या 28 वें साल में शादी का संबंध अपनी या किसी करीबी रिश्तेदार अपने खून की चं० की आयु बर्बाद और संतान का फल मंदा कर देगा। यही बुरी हालत 24 साल की आयु के पहले या 24 साल स्वयं अपनी कमाई के पहले या 24 वें साल स्वयं अपनी कमाई से नया मकान बनाने या अपनी नर संतान के पैदा होने पर होगी। खासकर 24 वें साल शादी का संबंध तो चं० का फल बर्बाद कर देगा। चाँदी के बर्तन में दूध के प्रयोग बढ़े, परिवार बढ़े और शीशे का या बुध का संबंध बुध की चीज़ें खासकर हरा सब्ज, हरा रंग, स्वास्थ्य की खाक उड़ा देंगे। संतान की गिनती उनकी उम्र की बरकत और सुख के लिए उनको दरिया पार ले जाते समय जब पता हो कि दूसरी जगह 100 दिन से अधिक समय के लिए ठहरना है तांबे का पैसा दरिया में गिराकर जाये वरना दरिया का मल्लाह अपनी मल्लाही उजरत, मासूल किराये के बदले में संतान पर ही हमला कर देते हैं और उसकी संतान तक दु:खी और छोटी आयु की होने लगती है। **चं० की चीज़ों का दान लेने या लाभ उठाने की नीयत से बेचने की जगह उल्टे दूध की खैरायत करना या दूसरों को पानी की जगह मु त दूध पिलाते रहना चं० के नेक फल को और भी बढ़ाता जाएगा।**

धन की कल्पना खूनी लाल रंग मंगल की और चीज़ों के साथ से और छोटों की पालना या मेहमानों रिश्तेदारों की हर दिल अजीजी प्यार चांदी के थाल से पूरी होगी। रात को आराम का जीवन व्यतीत करने के लिए चारपाई के चारों पाये पर तांबे की मेखें गाड़ना नेक होगा। अगर यह न हो सके तो मामूली खाली पानी के कुछ घूंट कभी-कभी बढ़ के पेड़ को डालने उत्तम होंगे जो उसे हर जगह मान और शांति देगा।

वीरान मैदानों में पानी की नहर आ जाने की तरह उसके जन्म से ही माता के जीवित होते हुए माता का भाग्य और दयालुता से धन-दौलत की बरकत होगी। 24 से 28 साल की आयु में दूध की नदियां अच्छी हालत बहा देगी और माया की कल्पना न रहेगी। विद्या, तपस्या का स्वामी होगी जब तक माता को हुक्म बजा लाता रहेगा और उसके चरण छूकर उसका आशीर्वाद लेता रहेगा, उम्र रिज़क की कभी कमी न होगी। मां-बेटा दोनों का बुढ़ापा उत्तम होगा।

चाँदी के बर्तन में बुध की नाली मंदा फल देगी। उदाहरणत: चाँदी का गंगा सागर या केतली ऐसे बर्तन का बुध की आयु तक टेवे वाले की 34 साल की आयु से शुरू करने या टेवे वाले की माता की सेहत टेवे वाले की 48 साल की आयु तक मंदी होगी। वह न सिर्फ रात दु:खी बल्कि अंधी भी हो सकती है। मां के बाद हर ओर मिट्टी रेत उड़ेगी। अत: माता के मरने से पहले ही उसके हाथों से चं० की चीज़ें चावल, चांदी आखिरी आशीर्वाद की तरह ले लेना ना सिर्फ माता के बाद आयु रिज़क धन के लिए मददगार होंगे बल्कि माता के पेट में बैठे बच्चे की तरह इस संसार में उसे माता की गोद का आराम देंगे, माता के बिना ऐसे टेवे वालों के भाग्य के दरिया में माया दौलत व संसारी सुख का पानी न होगा या वह माता के बिना दु:खी ही होगा। खुद माता की आयु के लिए 24 से 27 या अपनी आयु के 24 वें साल और 27 वें साल सफ़र में होते हुए भी कोशिश से वापिस आकर माता के पांव छूते रहना माता की आयु बढ़ाएगा। वरना ऐसे समय 24 से 27 और ऐसी हालत में टेवे वाला घर से बाहर सफ़र में माता से जुदा हो, माता की सेहत मंदी बल्कि मौत की निशानी होगा। मं० की चीज़े मिट्टी में दबाना सहायक होंगी।

1. समुद्र के सफर से मोती पैदा होंगे। -जब सूर्य, मंगल या वृहस्पति खाना नं० 4-10 में हो।
2. जली रेती भी धन देगी। -जब खाना नं० 7-8 उत्तम हों।

3. जायदाद जद्दी बिना मेहनत पैदा हो या मिले और वह उत्तम फल दे और बढ़ती होगी। पराई अमानत भी पास ही रह जाए। –जब चन्द्र कायम हो।
4. हर प्रकार की सवारी का सुख होगा धन-दौलत बढ़ेगा। –जब वृ० खाना नं० 4, श० खाना नं० 10 में हो।
5. बहू, सास, मां-बेटी की तरह उत्तम हालत, मगर संतान की मंदी हालत बचाने के लिए विवाह के दिन से कुत्तों को घर में रखना सहायक। –जब शु० खाना नं० 7 में हो।
6. सूखी रेत से भी मीठी खांड बनेगी और उत्तम जीवन होगा। लेकिन यदि खाना नं० 8 मंदा हो मीठी खांड से भी हर ओर रेत हो जाए। –जब शु०, बु०, या मं०, बु० खाना नं० 7 में हो।
7. बुद्धि कम, धन अधिक राजदरबारी कामों से समुद्र पार ल बे सफ़र लाभदायक हो। –जब बु० खाना नं० 7 में हो।

मंदी हालत

पापी ग्रहों या चन्द्र के शत्रुओं की चीज़ें, काम, रिश्तेदार से संबंध या वैसे ही दुनियावी मंदे काम और मु तखोरी की आदत से पहली शान भी जाती रहेगी। लाभ के लिए चन्दद्रकी चीज़ें खासकर दूध बेचने से अपना परिवार कम होता जायेगा। शुक्र चाहे कितना ही उच्च हो उसकी माता के बैठी स्त्री दुखिया ही होगी।

कुदरती पानी (वर्षा का) चावल, चांदी और चन्द्र की चीज़ें कायम रखना सदा सहायय होंगी। बूढ़ी औरतों की आशीष अपनी माता से कम न होगी, सोए हुए चन्द्र को (जब खाना नं० 7 खाली हो) 24 साल की आयु से पहले जगाना, यानि घर में शुक्र की चीज़ें गाय, नौकर, स्त्री नौकरानी कायम कर लेना ठीक होगा नहीं तो 25 वें साल से मंदा प्रभाव देगा। मंगल की चीज़ें दबाने से मदद मिलेगी।

1. मिट्टी के तवे चढ़ेगें, बहुत निर्धनता होगी। –जब श०, सू० दोनों खाना नं० 6 में हो।
2. हर समय का आशिक स्वभाव उसके भाग्य के सोने को मिट्टी कर देगा। शुक्र के कामदेव की लहर की देवी, स्त्री के होते ही शादी के लगन के समय से ही चन्द्र टेवे वाले की मां, सास, दादी, नानी बर्बाद दु:खी, मंगल के संबंध में पेट भाई निक मे और मंदे परिणाम देगा खासकर जब शादी ऊपर दिए गए सालों में हो। –जब वृ० खाना नं० 11 में हो।
3. दिन-रात दु:खिया बेआराम हो। –जब मं० बद मंदा बुध या खाना नं० 8 मंदा।

क्याफा साथ-साथी चन्द्र के बुर्ज से रेखा सूर्य के बुर्ज के अन्दर जाकर समाप्त हो।

चन्द्र खाना नं० 2
(स्वयं पैदा की हुई माया की देवी)

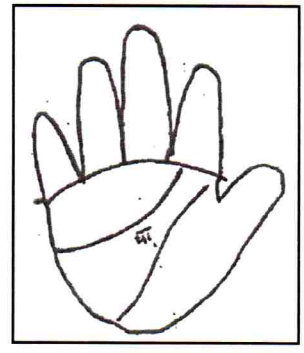

लगे बजने घड़याल मंदिर जो घर में।
बजा देंगे घंटा लावल्दी का घर में।।

बंद नस्ल न टेवे होगी,
वरसा मिलेगा घर का ज़रूरी,
मंदिर[2] कच्चे चाहे माता बैठी,
लिखत भूली कोई जन्म हो पिछला,
उम्र लम्बी हो खुद उसे आता,
4-6-10-8-9-12,
बाद उम्र खुद माता अपनी,
चीज़ चन्द्र घर कायम रहती,
मंद गुरु चाहे तख्त हो मंदा,
ज़हर टेवे की चन्द्र धोता,
योग मंदा संतान चाहे हो।
चीज़ें चन्द्र जब[1] रखता हो।
असर पक्का गुरु घर[3] का हो।
कमी पूरी कर जाता हो।
चक्र दूजे 48 हो।
शत्रु बैठे न पापी कोई।
दस्ती मुबारक देती जो।
आशीर्वाद आखिरी हो।
बुरा मंदिर न होता हो।
दौरा तख्त[4] का करता जो।

1. चन्द्र की चीज़ों के न होते हुए बुढ़ापा मंदा या उत्तम फल न देगा और अमूमन चन्द्र खाना नं० 12 का फल देगा।

2. गुरु बैठा होने का घर या गुरु खाना नं० 2 का दिया हुआ फल, हर दो हालत से जो उत्तम वही प्रभाव हो।
3. खासकर जब शनि खाना नं० 4— पितृ रेखा— पिता तथा जायदाद सुख।
   खासकर जब बुध खाना नं० 6— मातृ रेखा— माता, भाग्य उत्तम।
   खासकर जब सूर्य खाना नं० 1, शनि खाना नं० 11, भगवान् जैसी शक्ति।
4. 2-14-26-38-50-62-81-86-98-110 साल की आयु।

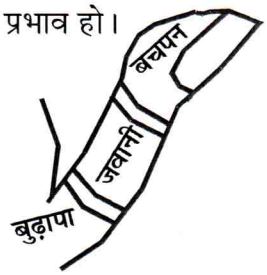

हस्त रेखा

चन्द्र से वृहस्पति को रेखा हो। दिल रेखा या भाग्य रेखा, चन्द्र से शुरू होकर वृ० पर समाप्त हो, दिल रेखा का वह हिस्सा, जो वृ० के बुर्ज के अन्दर-अन्दर हो प्यार रेखा कहलाता है, देखें शुक्र खाना नं० 2 में।

जौ का निशान अंगूठे की तीनों पोरियों पर हो सकता है। अंगूठे की नाखून वाली पोरी या बीच वाली पोरी की जड़ पर जौ का निशान अगर सही तो स्वयं की जायदाद, सुख आराम धन होगा। चन्द्र कायम बचपन का समय चन्द्र की ठंडी रोशनी की तरह उत्तम प्रभाव तथा नेक भाग का होगा वरना चन्द्र बुढ़ापे में नेक फल देगा। चन्द्र की जायदाद चीज़ों का लाभ होगा। निचली पोरी पर निशान अगर टूटा-फूटा हो, चन्द्र शत्रुओं से घिरा हुआ या मंदा और खराब, किसी पोरी पर हो तो बुढ़ापा मंदा ही होगा जिसके लिए चन्द्र खाना नं० 6 देखेंगे।

नेक हालत

ऐसे व्यक्ति की अमूमन बहन नहीं होती मगर भाई ज़रूर होंगे, यदि अपने न भी हो तो स्त्री के ज़रूर होंगे और वह अकेला भाई या सिर्फ बहनों का ही भाई न होगा, बल्कि धनवान समय का शाह, घुड़सवारी, संतान, माता-पिता का सुख, जब वृ० उत्तम हो लड़ाई के मैदान के सामान में कभी कमी न होगी। न ही कभी हार तथा हानि होगी। चन्द्र उत्तम तथा उच्च फल और वृ० खाना नं० 2 का नेक फल साथ होगा और जब चन्द्र खाना नं० 2 वर्षफल के हिसाब (2-14-26-38-50-62-81-86-98-110 साल की आयु में) खाना नं० 1 में आए तो वृहस्पति और चन्द्र दोनों का ही बराबर उच्च तथा उत्तम फल होगा। जब चन्द्र की चीज़ें कायम रखता हो जायदाद जद्दी और विरासत का हिस्सा घर से ज़रूर मिलेगा। टेवे वाले की खानदानी नस्ल कभी बंद न होगी चाहे संतान का योग लाख मंदा हो। गुरु बैठा होने वाले घर का प्रभाव सदा पक्का और उत्तम होगा या गुरु खाना नं० 2 का फल जो भी दोनों हालत में उत्तम हो साथ होगा। जब भी मौका मिले चन्द्र पिछले जन्म की कोई भूली लिखत की कमी को पूरा कर देगा। बुध (चाहे खाना नं० 9) कभी मंदा फल न देगा। जन्म अमूमन शुक्ल पक्ष का होगा, नहीं तो चन्द्र आखिरी आयु में शुभ फल देगा। यदि चन्द्र की चीज़ें कायम रहें तो चन्द्र और बुढ़ापा दोनों शुभ फल देंगे और वह कभी मंदी हालत का न होगा। माता की ममता की आँखें कभी बूढ़ी न होगी यानि माता चन्द्र के दो चक्र या टेवे वाले के 48 साल की आयु तक कम से कम ज़रूर साथ देगी। जिसके बाद भी ज़रूरी नहीं कि वह मर जाए, हो सकता है कि 3 चक्र पूरी कर जाए। अपनी आयु को ल बी रखने के लिए खुद बनाए मकान की तह में चाँदी की चीज़ें दबाना सहायक होगा या चन्द्र की चीज़ें चलते पानी का हर दम साथ शुभ होगा। घर का फर्श जब तक कच्ची मिट्टी का रहे चन्द्र का दरिया एक बर्फीली नदी (सदा चलने वाली) का उत्तम फल होगा। नहीं तो शहर की गंदगी से भरा बरसाती नाला अचानक तेज़ और भयानक पानी से भरा होगा। सफेद या पीले घोड़े के साथ परिवार में कमी न होगी। बड़ी बुढ़िया की सेवा से परिवार और लड़ाई के समान में कभी कमी न होगी। माता के जीवन में उसके हाथों से चांदी और चावल (चन्द्र की चीज़ें) लिए हुए माता की आयु के बाद टेवे वाले की माता का आखिरी आशीर्वाद (चन्द्र का फल उत्तम) का काम देंगे।

1. माता की आयु अमूमन टेवे वाले की 48 साल की आयु तक ज़रूर साथ देगी।
   -जब खाना 4-6-8-9-10-12 में राहु, केतु, शनि पापी ग्रह कोई न हो।
2. स्वयं अपनी तथा ससुराल की धन की हालत निर्वाह ठीक होगी। -जब चन्द्र जागता हो।
3. चन्द्र की हालत तथा माता की आयु का फैसला वृहस्पति की हालत पर होगा जैसे वह जन्म कुण्डली में हो लेकिन बाकी सब बातों में वृ० का उत्तम प्रभाव चन्द्र खाना नं० 2 के साथ होगा।
   -जब खाना नं० 4-6-8-9-10-12 में राहु, केतु, शनि पापी हो।
4. चन्द्र का फल उच्च होगा। कामयाब आशिक, चाहे सांसारिक हर ओर नेक फल होगा। -जब शुक्र उत्तम हो।

क्याफा **दिल रेखा का बुर्ज खाना नं० 2 के अन्दर-अन्दर का टकराव।**

मंदी हालत

1. घर में घंटे घड़ियाल, (मंदिर की तरह) लावल्दी का घंटा बजा देंगे।
2. बेशक खाना नं० 2 का चन्द्र भाग्य का स्वामी और उच्च होता है मगर अब केतु खाना नं० 12 का भी उच्च है जो चन्द्र के लिएग्रहण देगा यानि चन्द्र विद्या केतु संतान दोनों में से केवल एक फल उत्तम होगा। यानि विद्या हो तो संतान नहीं और संतान हो तो विद्या नहीं।
3. चन्द्र खाना नं० 12 का फल देगा और गुरु, शुक्र भी मंदा ही फल देंगे। ऐसा व्यक्ति किसी दूसरे के लिए किसी भी काम का आदमी न होगा। -जब खाना नं० 1-2-7-10-11 मंदे हों।
4. अव्वल तो आयु अमूमन 25 साल ही होगी वरना 25/34 साल की आयु का समय हर तरह से मंदा व गरीबी से भरपूर होगा। ऊपर का मंदा हाल अमूमन 50 (25 से 75 साल की आयु का मध्य) मंदा ही होगा। -जब सूर्य खाना नं० 1 में हो।
5. बुढ़ापे में मंदा हाल और उम्र का अमूमन 75 साल का समय मंदा होगा। -जब शनि खाना नं० 10 में हो।
6. नज़र कमज़ोर और शनि का स्वयं का प्रभाव मंदा होगा। -जब बुध खाना 6 में हो।
7. बुढ़ापे में मंदा हाल और आयु का समय 90 वर्ष मंदा होगा। -जब वृहस्पति खाना नं० 11 में हो।
8. शनि की आयु (9-18-36) में माता की आयु तक शक्की होगी। -जब खाना नं० 9-10-12 में पापी हो।
9. सब ग्रहों का मंदा असर होगा। मगर वह (राशिफल के) उपाय योग्य होंगे।
   -जब खाना नं० 1 में चन्द्र के शत्रु ग्रह बुध, शुक्र, राहु, और केतु खाना नं० 1-2-7-11 मंदे हों।
10. अब बेशक वृहस्पति और चन्द्र दोनों आपसी सहायता पर हो मगर फिर भी बकरी देगी दूध मेंगने डाल कर ही। यानि कारोबार में बरकत होगी तो सही मगर रगड़े झगड़े के बाद। -जब बुध खाना नं० 3 वृहस्पति खाना नं० 9 में हो।

उपाय -

सब्ज रंग बुध कपड़ा चन्द्र लड़कियों बुध को 40 /43 दिन तक लगातार देते जाना बुध की ज़हर को धोएगा।

चन्द्र खाना नं० 3

(चोर तथा मौत का रक्षक, उम्र का मालिक फरिश्ता जिससे मौत भी डरे)

भरा माया होगी जहाजों का बेड़ा।
पिए दूध स्वयं बहन, भाई जो तेरा।।

बुरा[1] चन्द्र न फल कभी दे,
होगा शुक्र भी उत्तम टेवे,
माता चन्द्र फल पिता का शिवजीं,
उल्ट हालत जब तख्त पे आतीं[2],
पहले सूर्य हो शनि 11,
भला गुरु हो 9 जब बैठा,
विचार बुद्धि धन-दौलत लम्बा,
ठीक उत्तर शरारत देगा,
8 मंदा[3] या आठ पे दुखिया,
चोरी कोई न बेशक करता,
खाली पड़ा 9-11 हो।
न ही मंगल बद होता हो।
नेक जभी बुध होता हो।
भला चन्द्र, बुध उत्तम हो।
बुध पाया घर 5 का हो।
राजयोग सब होता हो।
दिल से छोटापन नेक ही हो।
हुआ चन्द्र[4] चाहे नष्ट हो।
समय निशानी मंदा हो।
माया दौलत धन हानि हो।

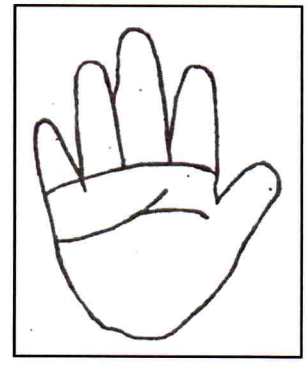

1. आयु के हर तीसरे दिन, मास, साल।
2. दोनों में से एक ही ज़िन्दा या दो का काम देगा।
3. 3-15-27-39-57-67-75-87-99-111 साल की आयु।
4. साथ या मंदा प्रभाव हो।

बुध लड़की या बहन का जन्म (वास्ते कमी संतान) चन्द्र की चीज़ों का दान, केतु लड़के का जन्म दोहते का साथ, घर के सदस्यों की कमी पर सूर्य की चीज़ों का दान। राहु ससुराल संबंध नाग हानि (अनसुनी) शरारत, कन्यादान शुक्र (स्त्री

विवाह, गाय का आना) चोरी बनावटी धन सूर्य की चीजें गूड रंग।

5. खाना नं० 8 के मंदे ग्रह की आयु या स्वयं अपनी 8 साला आयु में मंदे ग्रह से संबंधित चीजों से मंदी निशानी होगी।

हस्त रेखा

मंगल नेक से रेखा चन्द्र को या चन्द्र रेखा मंगल नेक के बुर्ज पर समाप्त होवे अपनी लिखाई या खाना नं० 8 की हालत चन्द्र की नेक या बद तासीर बता देगी। खाना नं० 8 की हालत स्वयं हाथ की लिखाई का ढंग होगी।

लिखाई	प्रभाव
बड़ा और मोटा हर्फ	खुले दिल वाला
साफ साफ पढ़ा जाने वाला	मजबूत तथा स त दिल वाला
ल बी-ल बी लकीरें	बेगैर सोचे समझे जल्दी करना
सीधा साफ	कुदरती अकल वाला
बारीक	अच्छी लियाकत वाला
गोल तथा बराबर के अक्षर	अच्छा फैसला करने वाला
अक्षर बुझा हुआ	शर्मनाक डरपोक
खूबसूरत तथा फूलदार	गप्पी

नेक हालत

1. चन्द्र का सरोवर अब शांति का दाता और जगत माया का पूर्ण अलंकार तथा योगी होगा। साधु हो तो रिद्धि- सिद्धि का मालिक, गृहस्थ हो तो धन-दौलत का भंडारी। हर दो हालत में वह धनी अवश्य होगा या मर्दो की बरकत, आयु की वृद्धि, स्त्रियों की सेवा बल्कि पूजा होगी और तीनों काल उन्नति ही उन्नति होगी। मर्द स्त्री की आपसी सेवा उत्तम प्रभाव देगी। खाना नं० 3 का शुक्र अगर कुल खानदान का तारने वाली लक्ष्मी तो चन्द्र नं० 3 साधना या रिद्धि-सिद्धि का दाता और मालिक होगा। जन्म के गरीब या यतीम को चन्द्र नं० 3 की हालत में कुदरत की ओर से बड़े ल बे हाथों से सहायता मिलेगी और मजलूम को एक दम आराम के सामान मिल जाएंगे।

इतना तो फल जरुरी कर देगा, चीजे चन्द्र। मौती से बच रहेगा, सब माल, जानों मंदिर॥

2. सांसारिक मंदे प्यार से घृणा करने वाला, शिवजी की तरह मृत्यु पर भी काबू पा लेने की तरह ऊंची हि मत का स्वामी होगा। न कभी रिज़क की कमी, न ही कभी चोरी होगी। लड़ाई में सदा जीतेगा माता भी अब पिता और चन्द्र स्वयं वृ० खाना नं० 3 का काम देगा या बुध की उम्र में दोनों में से एक कायम, कुल घर में मौतें कम होंगी या बे मौका मौतें न होगी। चन्द्र अब चोरी, मौत का रक्षक होगा, जब तक पाप राहु, केतु मंदा न हो, बुध की पूजा शुभ होगी वरना नमक हराम दलाल या घर की बदनस्ल लौंडिया (नौकर) दूध की कीमत में दूध देने वाला पशु भी साथ में बिकवा देंगे यानि चन्द्र का फल बहुत ही मंदा होगा। -जब बुध उत्तम या चन्द्र कायम हो।

3. आयु के हर तीसरे दिन मास, साल कभी बुरा प्रभाव न देगा। शुक्र उत्तम और मंगल कभी बद न होगा। चाहे कहीं भी कैसा भी बैठा हो अगर किसी कारण पुरुषों की कमी हो जाए तो स्त्रियों की कमी या स्त्रियां दु:खी हालत में न होगी। -जब खाना नं० 9-11 खाली हो।

4. चन्द्र और बुध दोनों ही उत्तम हो जाएंगे। बाकी 3 बचने वाले मकान का भाग्य, 3-15-27-39-51-63-75-87-99-111साल की आयु स्त्रियों की इस घर में पूजा और पालना होगी और वह उन्नति का कारण होगी और चन्द्र खाना नं० 3 का खानदान पर उत्तम प्रभाव होगा। -जब बुध मंदा हो और चन्द्र खाना नं० 1 आ जाए बुध खाना नं० 11 हो।

5. राजयोग होगा माता-पिता का सुख सागर उत्तम और ल बे समय तक उत्तम फल देगा। स्वयं शांति और धन का चश्मा सा चलता होगा। -जब सूर्य खाना नं० 1, शनि खाना नं० 11, बुध खाना नं०5, वृहस्पति खाना नं०9 और खाना नं० 4 भला हो।

क्याफा - **पितृ रेखा हो।**

6. दूध और मिट्टी हर दो के कारोबार भले पशुपालन और पशुओं से लाभ होगा। –जब राहु, केतु उत्तम हो।

क्याफा अंगूठा छोटा अंगुलियां तराशी हुई।

7. आयु कम से कम 80 साल हो।

–जब बुध खाना नं० 11 में हो।

8. दिमाग़ी खाना नं० 27 गौर तथा खोज की शक्ति का स्वामी, दिली याल धन–दौलत ल बे पैमाने का चाहे दिल छोटा ही हो, मगरबुद्धि अच्छी हो, नीयत नेक, शरारत का ठीक जवाब देने वाला और हि मत रखने वाला होगा। चाहे चन्द्र नष्ट ही क्यों न हो चुका हो। –जब मंगल खाना नं० 4 में हो।

मंदी हालत

1. खाना नं० 8 के मंदे ग्रह की आयु या स्वयं अपनी आयु 8 साल में मंदे ग्रह की चीज़ों से मंदी निशानी होगी। अब चोरी तो चाहे न होगी मगर धन हानि अवश्य होगी।
2. अव्वल तो मंगल बद होगा ही नहीं मगर शनि की मिलावट या स्वयं की चीज़ों या हालात के कारण या मंगल नष्ट करने से लड़की का पैसा (लड़की बेचनी) और बकरी का दूध छाती में ज़हर का प्रभाव देंगे। चोर की चोरी से डरते घर में ताला लगाकर रखने की जगह आए मेहमान को अगर दूध नहीं तो पानी से खाली न जाने दें, नहीं तो आयु की किश्ती में दरिया का पानी जले और उजड़े रेगिस्तान और वीरान जंगल की ल बी रेत में जलता होगा।
3. धन की बरकत के लिए लड़की की पैदाइश पर चन्द्र की चीज़ें दान देना शुभ होगा। बुध की पूजा अमूमन उ दा वरना नमक हराम दलाल की तरह दूध की कीमत में दूध देने वाला जानवर भी साथ ही बिकवा देगा।
4. बलाए बद से बचने के लिए राहु (ससुराल) के साथ या संबंध पर कन्यादान शुभ होगा।
5. घर के सदस्यों की गिनती बढ़ाने हेतु तथा बलाए बद से बचाव हेतु लड़के के जन्म पर (केतु के साथ) या संबंध पर सूर्य की चीज़ों का दान शुभ हो।
6. ज़र चोरी मौत जहमत से बचाव के लिए शादी या गाय आने पर (शुक्र के साथ) बनावटी सूर्य से संबंधित चीज़ों का दान शुभ यानी वह चीज़ें जो सूर्य रंग की तो हो मगर चमकदार न हो।
7. जब बुध या मंगल खाना नं० 10 हो तो माता और भाई के लिए चन्द्र और मंगल से स बन्धित चीज़ों का बुरा प्रभाव होगा। जुदाई या रंजिश आदि हो, मगर फिर भी अपने लिए शुभ और परिणाम बुरा न होगा। मंगल का स्वयं का वह मंदा फल जो चन्द्र खाना नं० 11 का हो सकता है (पूरा हाल चन्द्र खाना नं०11) यानि चन्द्र अब खाना नं० 3 में होता हुआ वही फल देगा जो चन्द्र खाना नं० 11 में हो या जो चन्द्र केतु एक साथ का हो सकता हो।

–जब केतु खाना नं० 11 में हो।

चन्द्र खाना नं० 4
(खर्चने पर और बढ़ने वाली आय की नदी दरिया)

शुक्र सुख में क्यों तू न धन का करता।
कदर दुखिया जाने हो आँहें जो भरता।।

आँख मैली तू क्यूं करता, — *रिज़क जब मालिक देता हो।*
दूध बेचे ज़र[1] चश्मा जलता, — *मुफ्त दिए ज़र बनता हो।*
मंद पापी न शुक्र हो, — *न ही बुरा 8 दूजा हो।*
आयु मंदी न पिछली अवस्था, — *बंद मुट्ठी[3] ग्रह उत्तम हो।*
माता-पिता[4] कुल घर के तारे, — *शगुन फला दूध होता हो।*
केतु[5] गुरु जब मंदिर टेवे, — *ज़हर टेवा सब धोता हो।*
साथ चन्द्र से 4 का टोला, — *बढ़ती माया कुल चौगुनी हो।*
तीन कमेटी तीनों मंदा, — *पापी मंदा 9 स्त्री जो।*
5 रवि, गुरु 2 घर बैठा, — *राजा समुद्र मोती हो।*
बुध कभी 10 मंगल आया, — *मिसल राजा स्वयं योगी हो।*

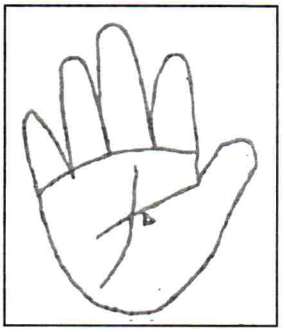

1. ज़र दौलत का चश्मा मालोधन की कमीबेशी के लिए माया दौलत के हाल में देखें। अब आयु के संबंध में राहु, केतु का

संबंध (मंदा प्रभाव) न होगा, चाहे वह खाना नं० 1-6-8-12 में कहीं ही हो। शर्त यह है कि जन्म शुक्ल पक्ष का हो और जन्म यदि शुक्ल पक्ष का न हो तो राहु, केतु का संबंध (मंदा प्रभाव) साथ होगा।

2. जब अकेला चन्द्र खाना नं० 4 में हो या फैसला आंख की हालत पर होगा।
3. खाना नं० 1-4-7-10।
4. जद्दी कारोबार शुभ फल देगा।
5. वृहस्पति, केतु खाना नं० 2 या बाबा, पोता या दोहता कुत्ता मंदिर या पितृ यज्ञ में इकट्ठे।

हस्त रेखा

धन रेखा जब चन्द्र से शुरू हो या सिर रेखा के नीचे त्रिकोण △ हो।

नेक हालत

1. चन्द्र की असलीयत का फैसला अब मनुष्य की आँख पर होगा या खाना नं० 8-10-11 शनि की हालत पर होगा। आयु 85 से 96 साल होगी।
2. जब अकेला चन्द्र खाना नं० 4 हो तो खर्चने पर और भी बढ़ने वाला माया का दरिया। माता चाहे असली चाहे सौतेली तथा माताखानदान शुभ फल के होंगे। चन्द्र के काम चीज़ें संबंधी (बजाजी) में माता साथ से लाभ और सहायता मिलेगी।
3. दिमाग़ी खाना नं० 28 शुक्र से मुश्तरका पुरानी याददाश्त की शक्ति, सवारी का सुख और खानदान हर रिश्ते की वही हालत होगी जैसा कि उस रिश्ते का संबंधित ग्रह टेवे में हो। जैसे मंगल अच्छा तो बड़ा भाई ताया, मामा सभी अच्छी हालत के होंगे। चन्द्र की चीज़ें ज़र तथा धन रहेगी। 12 साल संतान के पैदा होने का समय होगा। माता-पिता और अपने घर कबीले में सब को तार देगा। चन्द्र अब दूध समान होगा यानी जब और जिस किसी का चन्द्र खाना नं० 4 में हो तो उस शुभ काम शुरू करते समय दूध से भरा हुआ बर्तन बतौर कु भ रख लेना शुभ होगा।
   अब पापी और शत्रु (शुक्र, बुध) ग्रहों का मंदा प्रभाव न होगा बल्कि राहु,केतु जो पाप गिने जाते है वह अब माता के दूध की तरह कसम खाकर पाप और बुरा नहीं करेंगे। मंगल बद और शनि में अब ज़हर नहीं रहेगी। सब पापी ग्रह अगर भला नहीं तो बुरा भी न करेंगे और न ही खाना 8-2 कभी बुरा होंगे बल्कि खाना नं० 1-7-4-10 के ग्रह उत्तम हालत के होंगे। न आयु की कमी न बुढ़ापा मंदा, जन्म शुक्ल पक्ष तो बुढ़ापा उत्तम करना वरना बचपन उत्तम, और चन्द्र के साथ या पापी ग्रहों की ज़हर मिला प्रभाव शामिल होगा।
4. जद्दी काम उत्तम फल देंगे, पुरानी अमानत लेने वाला वापिस ही न आएगा। -जब वृ० खाना नं० 6 में हो।
5. माया धन 4 गुणा उत्तम होगी। नर ग्रह बेटे की तरह बुध, शुक्र, बहू, बेटी की तरह चन्द्र को सहायता देंगे।
   -जब चन्द्र के साथ कोई तीन ग्रह कुल मिलकर 4 का टोला हो।
6. भला लोग, उत्तम खानदानी का सबूत होगा। -जब शनि खाना नं० 9- 11 में हों।
7. पूरा इकबाल पसंद और नर संतान के जन्म दिन से इकबाली होगा। राजदरबार से संबंधित समुद्री सफ़रों से मोती पैदा होंगे। मिसल राजा योगी होगा। इतना सुखी कि उसे दु:ख का पता ही न हो और कभी शुक्रिया तक भी न करेगा। हर दो ग्रह (शुक्र तथा मंगल) का फल उत्तम, राजदरबार से धन और ल बी समुद्रों से बेशुमार लाभ होगा। कामदेव से दूर होगा।
   -जब सूर्य, वृहस्पति खाना नं० 5, वृ० खाना नं० 2-9 सूर्य खाना नं० 5, शुक्र या मंगल या बुध खाना नं० 10, अकेला चन्द्र खाना नं० 4, अकेला शुक्र खाना नं० 7 में हो।

मंदी हालत

1. अगर किसी को दूध देने का दिल नहीं या किसी चीज़ की कमी ही है तो कम से कम आंख तो मैली न करो।
2. दूध बेचने या जलाने के पेशे से धन का चश्मा जलता होगा जिसकी मुर मत आदि के लिए पानी के बदले में मु त दूध देना सांसारिक सुख सागर की नींव होगा।
3. सिर फट जाए, राहु का मंदा असर बुध (बुध की चीज़ें काम या संबंधी) पर होगा। -जब राहु खाना नं० 10 में हो।
4. स्वयं रोटी देकर ज़हर के अपराध में सज़ा पाए। वृहस्पति, केतु खाना नं० 2 हो या जब बाबा, पोता या दोहता कुत्ता एक साथधर्म स्थान में जाए या कोई यज्ञ करे तो टेवे की सब विष धुल जाएगी। -जब वृ० खाना नं० 10 में हो।

5. हर एक ग्रह का मंदा प्रभाव होगा। खाना नं० 4-9 के सब ग्रह या पापियों के ज़हर की घटनाएं मंदी । मंगल बद (पेट नाभि) बुरा हो तो संभव, शनि (आँख विष भरी) विषैला साँप हो तो संभव, शनि का हैडक्वाटर खाना नं० 8 मौत पापियों के झमेले की जगह हो तो संभव , मगर खाना नं० 4 पाप (राहु, केतु) के बुरे करने का मैदान न होगा। चाहे वह खाना नं० 2-6-8-12 में कहीं भी हो। सुख की अधिकता के कारण जब वह शुक्रगुजार न होगा तो इतना दु:खी हो जाएगा कि आंहें ही भरता होगा। -जब चन्द्र के साथ दो कोई और ग्रह या कुल 3 का टोला या पापी मंदे या खाना नं० 9 में शुक्र/शनि हो।

चन्द्र खाना नं० 5
(बच्चों के दूध की माता तथा आत्मिक नदी)

सलाह नेक की जो, बुरा करते लेता।
भला उससे बढ़कर नहीं कोई होता।।

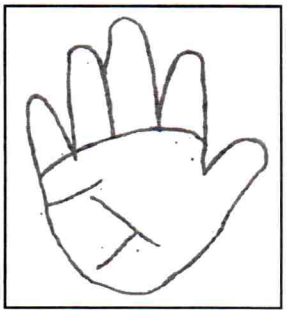

मर्द हीरा संसार काटे,
लेख राजा आयु लम्बे,
दरिया को सीधे चलते,
पर कब रुकेगी नदी,
शुक्र मंदे 3 दूजे बैठे,
बुध तीजें गुरु 9-2 मारे,
असर भले चाहे 3-8 मंदा,
नष्ट लालच खुदगर्जी होता,

झुकना खुद आता नहीं।
बोल पर मीठा नहीं।
आसान राह न होगा।
पानी भरी जो होगी।
मित्र मंदे 9-11 जो।
जलता मगर 10-12 हो।
बुध मोती 7-11 हो।
चिड़ियों से बाज लड़ाता हो।

1. मंदा बोल ही मुसीबत आने की निशानी होगी और बुध की मंदी वस्तु का आना इसकी निशानी होगी।
2. जब नर ग्रह साथी हो या मदद पर हो तो :-
   सूर्य खाना नं० 10 - आयु 12 दिन।
   सूर्य खाना नं० 11 - आयु 12 साल।

हस्त रेखा

दिल रेखा सूर्य के बुर्ज की जड़ तक ही समाप्त हो। चन्द्र की बुर्ज रेखा सेहत रेखा से मिले।

नेक हालत

1. बच्चों के दूध की माता तथा आत्मिक नदी, जिस तरह निकलता और बहता हुआ पानी सदा उत्तम होता है उसी तरह ही बच्चों के पालन और धर्म के स्वभाव पर धन की बरकत की हालत होगी। रास्ता सच्चाई तेरा पल्ला सदा भारी रहेगा। अदला इंसाफ की तू है मेज़ान (तराजू)।
2. दिमाग़ी खाना नं० 29 कद्दोकामत और बराबर की बुद्धि पुरुषों में हीरे उत्तम सा आदमी होगा। मगर उसको किसी के आगे झुकना नहीं आता। कट जायेगा तो चाहे मगर झुकेगा कौन। राजा के भाग्य और ल बी आयु का स्वामी होगा।
3. राहु अब टेवे में ठंडा होगा। आयु 100 साल पूरी ल बी होगी। चिड़ियों (केतु खाना नं० 6 अपनी मामूली संतान) से बाज (बुध साहसी शत्रु) को मरवाने के साहस का स्वामी होगा। न्याय की तराजू का स्वामी, रहमदिल मनुष्य लड़ाई-झगड़े में जिस की और हो जाए वही और जीतेगी। उसका पल्ला भारी होगा। व्यापार अमूमन मंदा होगा। मगर राजदरबार (धन-दौलत की आमदनी का जरिया) में मान होगा। जंगल पहाड़ को आबाद करने वाला धर्मात्मा होगा।
4. रफाय आम (आम चलने के नियम) के असूल की पालना करने से उसकी संतान के गांव आबाद होंगे।
5. नेक परिणाम होंगे। -जब मित्र ग्रह (सूर्य, वृ0) खाना नं० 2-3, शत्रु ग्रह (बुध, शुक्र) पापी खाना नं० 9-11 में हों।
6. चन्द्र अब मोती की कीमत और उत्तम फल देगा। खाना नं० 3-8 मंदा होते हुए भी चन्द्र का असर उत्तम ही होगा। -जब बुध खाना नं० 7-11 में हों।

7. नर संतान 5 से कम न होगी चाहे पापी ग्रहों का साथ हो, संतान पर कभी मंदा प्रभाव न होगा। -जब केतु उत्तम हो।
8. अब चन्द्र खाना नं० 5 सोया हुआ लेंगे, अत: चन्द्र से संबंधित काम के समय मंगल की मदद लेकर जाना यानि खाने-पीने की चीज़ें साथ ले जाना और स्वयं भी घर से चलते समय मीठा भोजन करके चलना मददगार होगा।
-जब खाना नं० 9 खाली हो।

मंदी हालत

1. खाना नं० 10-12 में नेक ग्रह होते हुए भी चन्द्र का प्रभाव मंदा ही होगा। जब खाना नं० 10 के ग्रह से चन्द्र बर्बाद होगा या समुद्र का पानी तक जल जाए मगर खाना नं० 10 स्वयं बर्बाद न होगा और खाना नं० 12 का ग्रह स्वयं बर्बाद हो जाए मगर चन्द्र बर्बाद न होगा।
2. आम दुनियादार तो अपने मंद भाग्य के लेख से मारे जाए मगर ऐसा व्यक्ति जब कभी भी बर्बाद होगा स्वयं अपनी ज़ुबान मंदी करने से बर्बाद होगा अक्ल में चाहे वह लाखों में एक हो। -जब बुध की चीज़ें संबंधी खासकर बहन, बुआ लड़की साली सबके सब मंदे बर्बाद या बर्बादी का बहाना या बुध से संबंधित कारोबार भी यही असर देगा।
3. जैसा कि उसका दिल होता नहीं, ज़ुबान मंदी या ढिंढोरा पीटने की आदत होती है जिससे कोई भेद छुपा नहीं सकता। अत: अपना भेदी ही उसे बर्बाद करे। लालच, खुदगर्जी नष्ट होने की नींव होगी। ऐसे व्यक्ति को किसी का बुरा करते समय दूसरे आदमी, सूर्य या दीवार से पूछ लेना कि बुरा किया जाए या नहीं सहायक होगा।
4. शतरंज के घोड़े चन्द्र की तरह ढाई घर की टेढ़ी चाल चलेगा, जिसके अनुसार बुरा प्रभाव खाना नं० 3-8-10-12 पर भी होगा। -जब चन्द्र मंदा हो।
5. बिज़ली की शक्ति के मालिक मौत के यमों की तरह मंदे नतीजे होंगे। -जब खाना नं० 2-3 में शत्रु ग्रह पापी बुध शुक्र खाना नं० 9 में मित्र ग्रह सूर्य, वृहस्पति हों।
6. बुध के काम या चीज़ें तथा कारोबार और शरीर के भाग (बुध से संबंध) जीभ बोलना आदि मंदे होंगे और आने वाली मुसीबत की निशानी और उसकी नींव भी बुध की चीज़ों का आना ही होगा। जंगल (बुध) पहाड़ (शनि) का कामयाब मुसाफिर (लाभ) न होगा।
7. आयु 12 दिन हो। -जब सूर्य खाना नं० 10 में हो और जब नर ग्रह साथी या मदद पर हो।
8. आयु 12 साल हो। -जब सूर्य खाना नं० 11 में हो और जब नर ग्रह साथी या मदद पर हों।

चन्द्र खाना 6
(धोखे की माता तथा खारा कड़वा पानी)

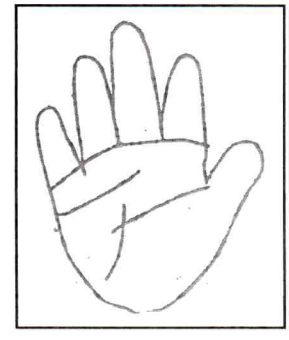

एवज़ तुझको दुनिया, हे तेरा ही देती।
नहीं पहले की गर, तो कर देख नेकी।।

आठ दूजे बुध, मंगल 12,
माता, बेटा न दो कोई बैठा,
4-12-8, 34 मंदे [2],
उल्ट मगर दिन 6 कोई तड़पे,
कुआँ [4] लगे 6-12-24,
श्मशान जाए कुल नहा उस अपनी,
मंद हुई [1] न धन हो।
पिता रोवे खुद भाग्य को।
शुक्र, केतु, बुध मंदा [3] हो।
शफा घड़ी इक देता हो।
मुसाफिर पानी या खेती जो।
मरे माया बिन बरती वो।

1. अकेला चन्द्र तो जवानी का समय उत्तम, शत्रु-मित्र बुढ़ापा उत्तम।
2. खाना नं० 4-8-12 मंदे हों तो चन्द्र का फल 34 साल की उम्र तक मंदा।
3. शुक्र मंदा हो तो ससुराल खाना बर्बाद।
   बुध मंदा हो तो माता खानदान बर्बाद।
   केतु मंदा हो तो पिता खानदान बर्बाद।
4. अस्पताल या मुर्द घाट में कुआँ लगाना सहायक होगा।

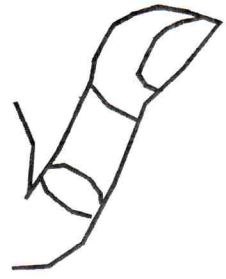

हस्त रेखा

चन्द्र रेखा जब सिर रेखा को पार करके हाथ की बड़ी आयत में समाप्त हो, अंगूठे की बीच वाली पोरी पर जौ का निशान हो, मगर सही साबुत हो। चन्द्र के समय से जायदाद का फल मध्यम होगा, लेकिन बाकि सब हालतों के लिए उत्तम होगा। अगर टूटा-फूटा हो (चन्द्र शत्रु ग्रहों से घिरा या मंदा) तो बुढ़ापा मंदा।

नेक हालत

1. जैसी करनी वैसी भरनी, नहीं की तो करके देख। उम्र 80 साल। दिमाग़ी खाना नं० 3 बोझ या बराबर पन, जैसा मुंह वैसी चपेड़ से, अच्छे से अच्छा, बुरे से बुरा।
2. चन्द्र का फैसला वास्ते मान-स मान— खाना नं० 2 से होगा।
   चन्द्र का फैसला वास्ते चश्मा रिज़क— खाना नं० 4 से होगा।
   चन्द्र का फैसला वास्ते आयु — खाना नं० 8 से होगा।
   चन्द्र का फैसला वास्ते रात का सुख, गृहस्थी — खाना नं० 12 से होगा।
3. छः दिन से तड़पते हुए मुर्दे के मुंह में पानी डालते ही उसे आराम हो जाए। -जब खाना नं० 2-4-8-12 सब उत्तम हों।
4. अब चन्द्र कोई ऐसा मंदा फल न देगा। अगर किसी और कारण माता का स्वास्थ्य निक मा या माया धन के चन्द्र की दूसरी चीज़ें, काम, कारोबार, रिश्तेदार ठीक साबित न हों तो पिता (वृहस्पति) को दूध पिलाना या धर्म स्थान में चन्द्र की चीज़ें दूध आदि देना उत्तम फल पैदा करेगा। -जब वृहस्पति खाना नं० 2 में हो।

मंदी हालत

1. शुक्र और केतु जब भी भले न रहेंगे, पिता खानदान बर्बाद। माता खानदान पर बुरा प्रभाव जो 34 साल तक मंदा हो।
   -जब खाना नं० 2-4-8-12 सभी मंदे हों।
2. चन्द्र भाग रद्दी, तकिया मुसाफिरा जीवन। आत्महत्या तक की नौबत जो कि मगर गरीबी कारण न हो।
   -जब बुध खाना नं० 2-12 में हो जाए।
3. स्वयं या अपनी स्त्री या दोनों एक आँख से काने हो। -जब सूर्य खाना नं० 12 में हो।
4. माता बचपन में ही गुजर जाए। यदि जीवित हो तो दूसरे के लिए दोनों मुर्दे से बुरे और मंदे प्र ाव के ।
   -जब मंगल खाना नं० 4-8, बुध खाना नं० 6 में हों।
5. टेवे वाला छोटी आयु का, यदि माता जीवित हो तो दोनों मुर्दे के समान हों।
   -जब मंगल खाना नं० 6-12 और बुध खाना 8 में हो।
6. चन्द्र की आयु 6-12-24 में धर्मार्थ कुआँ या कुएँ पर मु त पानी पिलाने वाले का प्रबन्ध करना या आम लोगों के प्रयोग के लिए लगाना या खेती में लगाया कुआँ मंदा होगा। मगर अस्पताल /श्मशान के आहाते के अंदर लगाना वर्जित नहीं है। स्वयं के आराम के लिए कुआँ कोई मंदा न होगा, संतान माता पिता खानदान की आयु पर हमला होगा। उसकी चांदी, मिट्टी के बराबर का मूल्य देगी। धन-दौलत, धर्म, ईमानदारी शारीरिक स्वास्थ्य मंदा, दूध का प्रयोग मंदा, रात को दूध पीना विष का काम देगा। पिता खानदान पर मंदा प्रभाव देगा। -जब चन्द्र को केतु बर्बाद करे।

उपाय

धर्म स्थान में कभी-कभी चन्द्र के मित्र ग्रहों (सूर्य, मंगल, वृहस्पति) से संबंधित कोई न कोई चीज़ देते रहना या वैसे ही धर्म स्थान में जाकर सिर झुकाना सहायक होगा। स्वास्थ्य के लिए दूध ज़रूरी हो तो केवल दिन के समय पी लें। रात के समय फटा दूध या दही या पनीर शुभ फल देगा, दूध को फाड़ कर पानी या दही में से पानी निकाल कर बाकी रहा पनीर बरता जाए।

चन्द्र खाना नं० 7
(बच्चों की माता, खुद लक्ष्मी अवतार)

नहीं दिन है परिवार बढ़ने को लगते।
भरेंगे खज़ाने जो अपने ही धन से।।

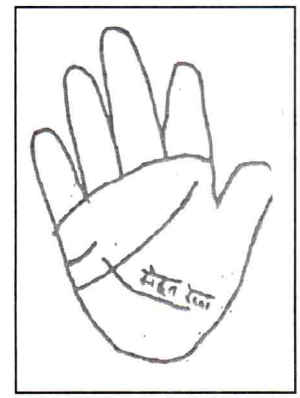

धन[1] ना बेशक पहले इतना,
खुद अकेला चन्द्र बैठा,
मूल्य बेचे दूध, पानी,
दूध[4] स्त्री साथ लाती,
पापी शुक्र, बुध हर कोई जलता,
साथ पापी गुरु, मंगल मंदा,
मंदा शुक्र घर चन्द्र मंदे,
मौत जद्दी घर घाट ही अपने,
बुध राजा सरदार नशों का,
आठ खाली बुध उत्तम बैठा,
राजा तख्त या शत्रु साथी,
उम्र मंदी मंगल तक उसकी,

न ही चाहे परिवार[2] हो।
लक्ष्मी अवतार[3] हो।
पूत माया जलता हो।
माया बेटा बढ़ता हो।
शादी उम्र जब चन्द्र हो 24।
बुध जले आठ मंदिर जो।
बुध भला न केतु हो।
लेख मंदा लाख बेशक हो।
खाक खज़ाने भरता हो।
पहुँच खुदाई 5 करता हो।
साथ पाप स्वयं चन्द्र हो।
माया जले बुध मंगल जो।

1. शनि खाना नं० 3 में हो।
2. वृहस्पति खना नं० 7 में हो।
3. शुक्र बैठा होने के घर का फल।
4. शादी समय स्त्री के घर से पति के घर तक चन्द्र की चीज़ें स्त्री के साथ आएं।
5. कवि, ज्योतिषी अगर फकीरी तो अव्वल दर्जा वरना चालचलन शक्की होगा, बुद्धि की बारीकी, दूध दिल साफ देगा।

हस्त रेखा

दिल रेखा जब कनिष्ठका की जड़ या बुध के बुर्ज पर ही समाप्त हो जावे। चन्द्र रेखा सिर की रेखा से मिलकर समाप्त हो जावे तो आयु समाप्त प्रभाव होगा। ऐसी हालत में फकीरी रेखा नशेबाजी रेखा, शरारत रेखा, सिर, दिल सभी रेखाएं मिल जायें। स्वास्थ्य रेखा दिल रेखा को काटे।

नेक हालत

शनि तीजे वृहस्पति सातवें,
स्वयं अकेला चन्द्र सातवें,

कितना ही कंगाल हो।
लक्ष्मी अवतार हो।

चन्द्र चाहे अब बुध का फल अमूमन खराब कर देगा मगर स्वयं अपने प्रभाव से वह ग्रह चाली बच्चों की माता चन्द्र पूरा उत्तम और स्वयं नेक लक्ष्मी का अवतार होगा जब तक राहु, या केतु का बुरा असर शामिल न हो। ऐसा व्यक्ति पैदा होते समय चाहे कितना ही निर्धन हो और परिवार भी ल बा न हो, फिर भी अपने जन्म से मिट्टी में चांदी की तरह चमकदार होगा। जायदाद जद्दी या स्वयं पैदा की हो या न हो मगर नकद नारायण ज़रूर होगा। मृत्यु अपने घर घाट में ही होगी। बहू, बेटी, मां, बहन के प्यार से दूर रहेगा। प्यार-मुहब्बत से दूर, दूध की तरह साफ दिल होगा, राजदरबार में शान और चन्द्र की चीज़ों के स बन्ध का सुख होगा। चीज़ें चाहे जानदान या बेजान हो। कविता तथा ज्योतिष का माहिर भी हो सकता है वरना चालचलन शक्की होगा। तिलस्मी भूत समान होगा अक्ल की बारीकी या खुदाई पहुँच दर्जा कमाल, अगर फकीरी भी हो तो सबसे उत्तम और नेक प्रभाव की होगी। दिमाग़ी खाना नं० 31 शुक्र से मुश्तरका रंग रूप में फर्क आदि की शक्ति दूध से दही और दोनों की शक्ल और रंग का फर्क भांप लेने का स्वामी होगा। स्वयं टेवे वाले के लिए संसार का सुख और शुभ स्त्री का आराम होगा।

1. अन्दर की बुद्धि और खुदाई पहुँच दर्जा कमाल की होगी। -जब बुध नेक और खाना नं० 8 खाली हो।

क्याफा :- अन्दरुनी अक्ल रेखा या चन्द्र के बुर्ज से बुध के बुर्ज खाना नं० 7 को रेखा हो।

2. धन-दौलत और परिवार की देवी चाहे शनि खाना नं० 3 (धन की कमी) वृ०, मं० खाना नं० 7 (परिवार की कमी) क्यों न हो। -जब बुध उत्तम हो।
3. सांसारिक हर कारोबार और गृहस्थी हालत में हर ओर शांति मिले। -जब शुक्र नेक हो।

क्याफा :- **चन्द्र से शुक्र के बुर्ज खाना नं० 7 की रेखा शांति रेखा हो।**

मंदी हालत

बूढ़ी माता से झगड़ा टेवे वाले की मिट्टी तक उड़ा देगा। दूध, पानी मूल्य बेचने से संतान और धन घटता होगा। अमूमन शादी के समय स्त्री घर आने के समय या उससे पहिले से चन्द्र की जानदार चीज़ें, घोड़ी, माता की आयु शक्की गिनते मिलते है। जब शादी की आयु 6-12-24 हो तो पापी, शुक्र और बुध तीनों का फल मंदा होगा। लेकिन अगर घर में चन्द्र की चीज़ें चांदी या दूध या नदी का पानी (मगर अपने वज़न के बराबर) मौजूद हो तो आल औलाद बढ़ती रहे, वरना चन्द्र, शुक्र का झगड़ा वरना चन्द्र की जानदार चीज़ें घोड़ी माता तो बेशक चल बसे। जो ज़रूरी नहीं कि गुजर जाए लेकिन लक्ष्मी की बरकत और भी बढ़ती जाए।

1. बचपन का समय मंदा, मंगल मंदा होगा। बुध के संबंधित कामों या माया दौलत के संबंध में बुरा प्रभाव ही देगा।
-जब गुरु खाना नं०7 या पापी का साथ, बुध खाना नं० 8-2 में मंदा हो।

क्याफा :-

सिर रेखा और दिल रेखा आपस में मिल कर एक ही रेखा हो जाए या सिर रेखा स्वास्थ्य रेखा को काट जाए या दिल रेखा सिर्फ बुध के बुर्ज तक ही हो, पेशा बर्बाद। रेखा चन्द्र से बुध को रेखा और मंगल बद हो।

2. शुक्र बैठा होने वाला घर मंदा होगा मगर धन मंदा न होगा और न ही भाग्य मंदा हो। -जब चन्द्र मंदा हो।
3. बच्चे छोटी-छोटी आयु में गुजरते जाए। -जब शुक्र पाप के साथ किसी भी जगह इकट्ठे हों।
4. सास, बहू, चन्द्र, शुक्र का झगड़ा। सब नशेबाजों का सरदार। जायदाद बर्बाद करे चाहे हथियार से मौत हो, मगर आयु फिर भी ल बी होगी। -जब शुक्र खाना नं० 1, बुध खाना नं० 1, शनि का साथ या संबंध हो।
5. शादी के दिन स्त्री के घर से पति के घर तक स्त्री के साथ ही अगर चांदी की चीज़ें दूध या चांदी आये या स्त्री टेवे वाले के घर में पहली बार दाखिल होने से पहले उसके पति के घर में चन्द्र की चीज़ें दूध, चांदी दरिया का पानी स्त्री के वज़न के बराबर पहले ही मौजूद हो तो औलाद बढ़ती रहेगी वरना चन्द्र, शुक्र का झगड़ा या स्त्री आते ही टेवे वाले की माता या धन बर्बाद होने शुरू हो जाएंगे।

चन्द्र खाना नं० 8
(मुर्दा माता, जला दूध)

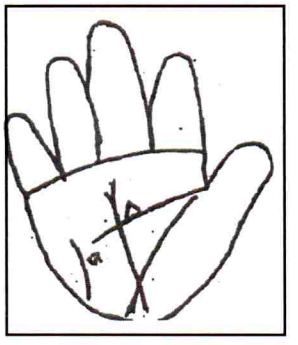

बुजुर्गों केदिन चीज़ चन्द्र जो देता।
रुके न कभी सांस, जब तक हो लेता।।

सूर्य मंदा, पापी बुरे, मंगल बद भी हो,
राहु, केतु, बुध मिलते गुरु, शुक्र नीच भी हो।
खबीस व अकारब मालो दौलत अपने और बेगाने को,
चन्द्र 8 वें चाहे सब हारे पर हारे न आयु को।

ससुराल तारे, दामाद[1] तारे,
उल्टी गंगा होके[2] तारे,
चलन धर्म[3] न जब कोई उम्दा,
नज़र कठीला हर हो जलता,
नाम बड़ो[5] के दूध जो देता,
महल कुएं छत जिस दम बनता,
पापी शुक्र, बुध 11 बैठा,
माता चौथे 8-24 मारे[6],
बुध मगर जब दूजे बैठा,
माता-पिता दो आयु लम्बा,
बुध, मंगल न पापी उत्तम,
3-4 कोई दूजे मंदा,
चरण बड़ों के पापी धोते,
असर बुरा न राहु टेवे,
तारेगा मामा को भी।
आयु के आखिर भी।
कुआँ पेशानी[4] भरता हो।
सेहत दौलत खुद मंदा हो।
हुक्म बुरा न ग़ैबी हो।
दमा लावल्दी मिरगी हो।
खाली पड़ा खुद मंदिर हो।
चीज़ भली न चन्द्र हो।
नौवें गुरु चाहे 12 हो।
असर चन्द्र का उम्दा हो।
जान स्वयं चन्द्र मंदी हो।
चन्द्र, शुक्र फल रद्दी हो।
उम्र समुद्र लम्बा हो।
मंदिर शनि, गुरु वर्षा हो।

1. चन्द्र की आयु 12-24-48 साला आयु के बाद।

2. सूर्य या शुक्र उत्तम।
3. जब शुक्र मंदा या स्त्री का संबंध मंदा, शनि मंदा। सेहत मंदी, हथियार से मौत, पाप राहु ससुराल, केतु औलाद बर्बाद अचानक हमले।
4. बुध, शनि मंदा।
5. श्राद्ध आदि खासकर जब चन्द्र खाना नं० 8 तथा वृहस्पति खाना नं० 4 में हो।
6. आयु के 4-8-24 साल में माता गुजरे।
7. शनि, गुरु के घर या खाना नं० 2 पर शनि, गुरु का प्रभाव उत्तम हो।

हस्त रेखा

सिर रेखा के ऊपर त्रिकोण हो। मंगल बद से चन्द्र को रेखा। पितृ रेखा या भाग्य रेखा चन्द्र के बुर्ज पर त्रिकोण बना दे। आयु रेखा या भाग्य रेखा दो शाखी हो < /झ जावे कलाई की ओर खाना नं० 9 के करीब आपस में मिल जाए।

नेक हालत

1. अब टेवे में राहु का प्रभाव बुरा न होगा और न ही मंगल बद होगा। चन्द्र की बेजान चीज़ों पर भला और उत्तम प्रभाव देगा। अब चन्द्र नष्ट या मंदा न होगा। -जब वृ०, श० खाना नं० 2 में हो।
2. स्वयं की आयु ल बी होगी और माता के बैठे कभी आयु की हार न होगी या पहले स्वयं मरेगा, फिर माता बाद में, जिसकी आयुकुएं के बराबर कम से कम 80 वर्ष तक ल बी होगी।-जब बुध उत्तम हो।
3. उल्टी गंगा होकर तारे। -जब सूर्य या शुक्र कोई उत्तम हो।
4. माता-पिता दोनों की आयु ल बी और चन्द्र का प्रभाव उत्तम होगा।
-जब बुध खाना नं० 2 और वृहस्पति खाना नं० 9 या 12 में हो।

मंदी हालत

1. चन्द्र बेशक किसी भी तरह मंदा हो, मगर टेवे वाले की खानदानी नस्ल कभी बंद न होगी यानि वह नि:संतान नहीं मरेगा। दिमाग़ी खाना नं० 32, शान से मुश्तरका सफाई ज़ाहिर, धुंधलापन तथा मानसरोवर, मगर अंदर से कष्ट का, अपनी ओर गंदी नाली के भाग्य का स्वामी होगा। उसकी जद्दी जायदाद और शुक्र के काम स्त्री खेती आदि उसके अपने किसी काम न आएगी और दिनों के फेर ही होते रहेंगे। यदि उसके जद्दी मकान के निकट कुआँ या तालाब हो तो जीवन भर और भी मंदा साबित हो।
2. चन्द्र अपने दूसरे दौरे के बाद यानि 12-24-48 वर्ष की आयु के बाद बुरा प्रभाव देगा। दुनियां की नज़र में शादी, मगर वह स्वयं दुखिया होगा। मौसी, नानी, दादी मुर्दा, माता, जला दूध सब दुखिया। पहली निशानी मंदा चालचलन होगी जिससे ससुराल और औलाद भी बर्बाद होंगे लड़कियां चाहे पैदा हो और गिनती में अधिक होगी।
-जब मंगल या बुध या पापी मंदे हों।
3. चन्द्र की मियाद खाना नं० 4-8-12 हद 24 तक माता की आयु मंदी होगी और चन्द्र की जायदाद चीज़ों का फल मंदा होगा। -जब पापी शुक्र, बुध खाना नं० 11 और खाना नं० 2 खाली या पापी ताकत के मालिक हो।
4. माता-पिता का संबंध जायदाद और संतान मंदे। -जब खाना नं० 3-4 में कोई 3 मंदे ग्रह हों।

क्याफा

आयु रेखा भाग्य रेखा दोनों मिलकर खाना नं० 9 में कलाई की ओर हो दो शाखी < /झ हो जाए।

5. दूध में कड़वी रेत या विषैली खांड की किस्मत या पेशाब भरा लानत का कुआँ होगा, संतान, सेहत दोनों ही मंदे होंगे। -जब शुक्र मंदा या मंदी स्त्री का संबंध या बुध और शनि दोनों मंदे हों।

क्याफा

सिर रेखा के ऊपर त्रिकोण हो या मंगल बद के बुर्ज नं० 8 से चन्द्र खाना नं० 4 के बुर्ज में रेखा चली जाये।

6. नज़र, बाल-बच्चे, दोनों बर्बाद। मंदा प्रभाव। नाक छेदन उत्तम, राजदरबार मंदा, आम शारीरिक दोष हो। 34 साल की आयुतक मंदा जीवन और धन न जाया जाए। -जब बुध खाना नं० 4-12 या शनि, राहु खाना नं० 12, बुध, सूर्य मंदे बर्बाद।

क्याफा

आयु रेखा या भाग्य रेखा, चन्द्र के बुर्ज पर त्रिकोण हो। खाना नं० 1 में या साथ ही शत्रु या पापी।

7. अपनी स्वयं की बेवकूफी से शुक्र या चन्द्र की चीज़ों का मंदा असर, मगर कुदरत मंदा असर न देगी।

-जब खाना नं० 2 मंदा या खाना नं० 2 में राहु, वृहस्पति या बुध, वृहस्पति या बुध हो।

उपाय

संतान के तकाजे में श्मशान के अहाते के अंदर के कुएं का पानी अपने घर में रखना सहायक होगा। यदि बड़ों के नाम पर दूध का दान श्राद्ध आदि न करें तो दमा, मिरगी, लावल्दी होगी या कुआं की छत कर मकान बना के खासकर जब चन्द्र खाना नं० 8, वृ०, शुक्र खाना नं० 4 हो। बड़ों के चरण छूना या पानी में धोना, धोते रहना ल बी आयु देगा।

8. चाहे घोड़ा कुआं दूध का साथ न चलता होगा, मगर इन चीज़ों के बर्बाद होते हुए भी दोबारा कायम करना, करते रहना ल बी आयु के लिए भला होगा।
9. महसूस करने की शक्ति गुम होने से मंदे समय की पहली निशानी होगी।
10. बच्चों और बड़ों बूढ़ों बुर्ज़ुगों की आशीर्वाद उनके पांव धोकर लेते रहने से हर ओर बचाव होगा।
11. खेती की पैदावार और जायदाद का फायदा टेवे वाले के ससुराल (स्त्री खानदान) को मिलेगा।
12. अगर जौहरी या जुआ खेलने वाला हो तो बदब ती होगा।
13. घर में चन्द्र की चीज़ों का होना ल बी आयु की निशानी होगी।

चन्द्र खाना नं० 9
(घड़े बराबर मोती, दुखियों का रक्षक समुद्र)

असर तु म सोहबत- ढ़ई कृतघ्न का।
फर्क दूध गाय जो-होता थोहर का।।

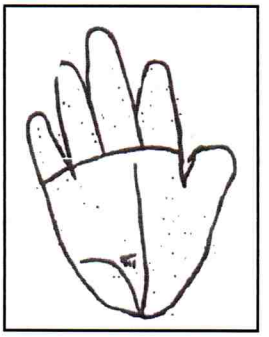

मोती गुणा 9 चन्द्र गिनते,
ग्रहण हुआ चाहे शत्रु बैठे,
शत्रु, पापी, बुध पांच या तीजे,
ताकत चन्द्र, मंगल शक्की तो,
चौथे बैठा नर ग्रह कोई टेवे,
पितृ रेखा सुख सागर लम्बे,
गुरु जगत् सब साथ या साथी,
छोटी बेड़ी से हरदम अपनी,

औलाद[1] दौलत सब बढ़ता हो।
धर्म पालन जग करता हो।
शरण चन्द्र की[3] आता हो।
माहिर गणित होता हो।
दूध भरी खुद किस्मत[2] हो।
कर्म-धर्म दया दौलत हो।
समुद्री हवाई बढ़ता हो।
बेड़ा जंगी कर लेता हो।

1. जब चन्द्र कायम हो तो 9 गुणा मोती, जब खाना नं० 3 में उत्तम या सहायक ग्रह (दोस्त) चन्द्र धन-दौलत उत्तम। जब खाना नं० 5 में मित्र हो तो संतान धर्म उत्तम हो।
2. सब से जुदा हज़ारों में एक विशिष्ट यानि जिसके बराबर का दूसरा कम ही हो।
3. बेशक चन्द्र के शत्रु चन्द्र से संबंधित चीज़ों के कारोबार में कोई बुरा प्रभाव न देंगे मगर फिर भी समुद्र में रेत (बुध), मिट्टी (शुक्र), पहाड़ी चट्टान (शनि) और तूफान (केतु) पैदा करते ही होंगे।

हस्त रेखा

भाग्य रेखा चन्द्र के बुर्ज से कलाई पर शुरू हो।

नेक हालत

1. शराफत और चन्द्र की शक्ति में सबसे उत्तम और दिमाग़ी खाना नं० 33 बुध से मुश्तरका गणित असूलों का वाकिफ और पूरा-पूरा जानने वाला होगा। भला लोग, भले काम नेक स्वभाव, धर्म-कर्म तीर्थ यात्रा का शुभ नाम या तरु यात्री, नेक अर्थ व काम का आदमी होगा और दु:खी को आराम देने वाले भाग्य का होगा। 30 साल तीर्थ यात्रा का मौका ज़रूर मिले। बेशक उसके दिल के समुद्र में कृतघ्न इन्सान की नस्ल से तमाम दुनिया को गंदा कर देने वाला कूड़ा करकट ही क्यों न ड़ाला जाए फिर भी सांसारिक हालत में वह खुदाई रहनुमा होगा।
2. खाना संतान (5) अब अपने आप रोशन होगा चाहे खाना नं० 3 में या चन्द्र के साथ ही पापी बैठे हों। अब खाना नं० 9 का चन्द्र, 5 में बैठा हुआ खाना नं० 5 के ग्रह खाना नं० 9 में बैठे हुए समझकर संतान का प्रभाव देखा जाएगा। निष्कर्ष में ऐसे व्यक्ति की संतान अवश्य होगी। आयु 75 वर्ष होगी।
3. दु:खियों का रक्षक रफाय आम। मिट्टी के घड़े के बराबर का 9 गुणा मोती उत्तम फल होगा। -जब चन्द्र कायम हो।

क्याफा

शराफत रेखा चन्द्र की बुर्ज से वृ0 के बुर्ज में रेखा हो।

4. संतान और धर्म में सब ओर बरकत बढ़ती होगी चाहे शत्रु पापी ग्रहों का साथ हो, धर्म पालना करने वाला ज़रूर होगा। -जब खाना नं० 5 में दोस्त या सहायक ग्रह हो।
5. धन-दौलत की बरकत हो। -जब खाना 3 में दोस्त या मददगार ग्रह हो।
6. दूध भरी उत्तम किस्मत होगी, पितृ रेखा माता-पिता का सुख सागर ल बे समय तक धर्म-कर्म और दया दौलत की बरकत होगी। -जब खाना नं० 4 में कोई नेक ग्रह बैठा हो।

क्याफा

भाग्य रेखा शुरू ही चन्द्र के बुर्ज खाना नं० 4 से हो।

7. समुद्री और हवाई हर दो ताकतों की बरकत होगी। मामूली बेड़ी (जन्म गरीब घर) का होता हुआ भी भारी, जंगी बेड़ों (उत्तम जीवन तथा भारी परिवार) का स्वामी हो जाएगा। सब ग्रह चाहे कोई भी खाना नं0 3-5 में बैठा हो तो चन्द्र के वश में होंगे। अब चन्द्र बड़ा भारी समुद्र होगा। -जब वृहस्पति का साथ या संबंध हो।

मंदी हालत

1. गाय का दूध और थोहर के दूध की सफेदी हर दो की मिली हुई तासीर की जांच में अक्ल धोखा देगी। साथी ग्रह और खाना नं० 9 के ग्रहों का प्रभाव ज़रूर शामिल होगा। -राहु की हालत और चन्द्र का संबंध हो।
2. अब चन्द्र के समुद्र का पानी सिर्फ इतना ही होगा जो एक कुत्ता (केतु) या भेड़ बकरी (बुध) पी कर खत्म कर दे यानि माली हालत 34 बल्कि 48 साल के बाद अच्छी होगी और उस समय तक चन्द्र की चीज़ें या रिश्तेदार या चन्द्र से संबंधित कारोबार कोई खास लाभ न देंगे यह अर्थ नहीं कि हानि हो। -जब केतु खाना नं० 2, बुध खाना नं० 5 में हो।
3. शुक्र और चन्द्र की उम्रों के मध्य माता की नज़र बर्बाद हो। -जब शुक्र खाना नं० 3 में हो।

चन्द्र खाना नं० 10
(आक मदार का दूध ज़हरीला पानी)

कब्र मुर्दों की कौन जल्दी भरेगा।
उसी ठेकेदारी को अब तू पूरा करेगा।।

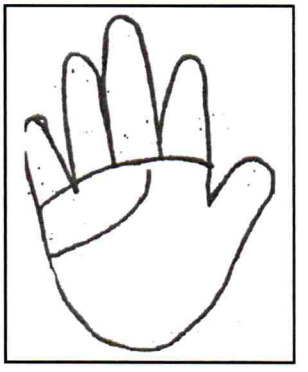

किश्ती तेरी मंदिर अपना,
पासवान घर तीजे बैठा,
चांद चमकता रात[1] हो आधी,
वैद्य धन्वन्तरि साथ चाहे होते,
आँख शरारत हिकमत मंदी[3],
ज़हर कातिल उस इकदम होगी,
खाली मंदिर नर चौथे बैठे,
खुश्क कुएं ज़र दौलत भरते,
जिसकी खबर को वह गए,
मीठा शर्बत देते-देते,
चार मुसाफिर केतु[6] पाँच हो साधु,
बाण अग्नि (सूर्य) 6, चक्र 8 पें (बुध),
साल रेखा 10 कुदरती पानी,
टेवे कौन ग्रह 6-5 कोई,
पानी दरिया 5 हो।
लंगर डाला 6 वें हो।
घोड़ा सफ़र का साथी हो।
मौत[2] पानी से होती हो।
उर्ध रेखा माया आती हो।
धर्म नाली जब गंदी हो।
काम जर्राही 24 जो।
हुआ चन्द्र चाहे जहरी हो।
बीमार मुर्दा[4] हो गया हो।
ज़हर कातिल[5] हो गया हो।
महल मंदिर धुआँ राहु जलता हो।
तूफान कबीले चलता हो।
असर चन्द्र स्वयं उम्दा हो।
चीज़ चन्द्र दिन दुखिया हो।

1. यदि खाना नं० 7-1-10 में सूर्य न हो तो असर भला ही होगा।
2. जब सूर्य खाना नं० 7 में हो तो मृत्यु पानी से और दिन में होगी।
3. मंगल खाना नं० 7 और सूर्य बैठा होने के बाद के दूसरे ही घर में शनि हो तो अंगहीन नहीं होगा। शनि खाना नं० 1 हो तो स्त्रियों
   से बर्बाद हो। शनि खाना नं० 3 हो तो चोर डाकू हो फिर भी मंदा हाल।
4. जब खाना नं० 3 मंदा या खाना नं० 3 में चन्द्र के शत्रु हों।
5. जब खाना नं० 5 मंदा या खाना नं० 8 में चन्द्र के शत्रु हों।
6. पापी खाना नं० 4 औलाद मरती जाए।

हस्त रेखा

दिल रेखा मध्यमा की जड़ शनि के बुर्ज तक हो। आयु रेखा दिल रेखा से मिल जाए। सिर रेखा, उम्र और दिल रेखा तीनों मिल जाए।

नेक हालत

1. अपनी ज़िन्दगी में ज़र के पहाड़ों से घिरे हुए दरिया को पार करने के लिए, खाना नं० 2 किश्ती की हालत खुद मुसाफिर सांसारिक साथियों की हालत, खाना नं० 5 दरिया के पानी की हालत निकलने की जगह और बहने की हालत खाना नं० 3 पासवान या मल्लाहों की हालत, ज्यों बेड़ी के चलाने से संबंध रखते होंगे, खाना नं० 6 लंगर बेड़ी आखिरी अटकने की जगह अंजाम आखिरी की हालत दिखाएगी।
2. दिमाग़ी खाना नं० 34 जगह या मुकाम की याद का स्वामी होगा।
3. स्वयं की आयु सांप कौंवे की आयु की तरह ल बी, 90 साल से कम न होगी।
4. पापी ग्रहों का अब खाना नं० 5 पर कोई बुरा प्रभाव न होगा और न ही कोई उपाय ज़रूरी है। स्वयं भाग्य के लिए खाना नं० 2 जागता होगा, यानि धर्म स्थान में आना-जाना भाग्य को बढ़ाता रहेगा। मगर स्त्रियों की कबूतरबाजी से बचकर ही चलना सहायक होगा।
5. 24 साल की आयु चन्द्र की आयु 24, 12, 6 में जर्राही चीरने-फाड़ने की डॉक्टरी का शुरू किया काम खुश्क कुएँ में माया भर देगा चाहे चन्द्र कैसे भी विषैला हो चुका हो। -जब खाना नं० 2 खाली, खाना नं० 4 में नर ग्रह हों।
6. माता-पिता का सुख सागर ल बा मगर स्त्रियों (माशूका या बेवा) बतौर फर्ज बर्बाद करेगी।
   -जब शनि खाना नं० 4 या शुक्र खाना नं० 1 में हो।

7. खुश्क कुएँ भी पानी देने लग जाएंगे। उजड़े घर आबाद हो जाएं। हर ओर चन्द्र के शुभ असर से दूध चाँदी और मोती ही मोतीबरसें तथा शुभ समय हो। –जब सूर्य तथा वृहस्पति या मंगल खाना नं० 4 में हों।

मंदी हालत

1. संसार भर की विषैली नदियों का पानी का समुद्र जो पहाड़ से निकलने की बजाये उल्टा पहाड़ में गिर कर पहाड़ को भी बर्बाद कर रहा होगा। जैसा चन्द्र होगा ऐसा व्यक्ति आँख के फरेब से बदनाम होगा और शनि की आँख की शरारत कारण होगी। हकीम चाहे कमाल का फिर भी बर्बादी बल्कि कब्रिस्तान को मुर्दों से भरने का बहाना होगा। पानी में घुली दवाईयां और रात को बीमार का इलाज मंदा प्रभाव देंगे। शनि (मकान), राहु (ससुराल) दोनों का मंदा हाल होगा। जब भाई–बन्धुओं के संबंध से कोई मकान या शनि की ठोस चीज़ लें तो चन्द्र की चीज़ें स्वयं अपना ही कुआँ तक मौत का बहाना बन जाए।
2. चन्द्र का पानी कुदरती जल या ज़मीन के नीचे का पानी, कुआँ, हैंडप प, दरिया, चश्मा, नदी, नाला झरना, आसमानी बर्फ के गोले–ओले 1 साल तक लगातार रखा रहने या जारी रहने के 15 साल बाद चन्द्र की सब ज़हर धो देगा। रात को दूध पीना ठीकन रहेगा। घर में दूध देने वाले पशु न रह सकते हैं और न फायदा देंगे।
3. चन्द्र की चीज़ें आने पर दु:ख खड़े हो जाएंगे। –जब खाना नं० 5–6 में कोई भी ग्रह बैठा हो।
4. शनि के काम कारोबार या चीज़ें जो शनि से संबंधित हों उत्तम फल देंगे। धल–दौलत उर्ध रेखा लोगों का गला काट कर या दग़ा,फरेब, झूठ, लानत से माया की बरकत के ढंग की होगी। पितृ रेखा माता–पिता का प्रभाव तो अवश्य उत्तम होगा। मगर वह स्वयं स्त्री से चाहे पतिहीन, जिसकी पालना अपनी जि मेदारी से करे, चाहे बाज़ारी या दूसरी प्रेमिकाएं बर्बाद करें और फ़िजूल धन को खराब करें या करता हो। –जब शनि खाना नं० 1–4 में हो।
5. चोर, ड़ाकू फिर भी मंदी हालत हो। –जब शनि खाना नं० 3 में हो।
6. मृत्यु दिन के समय पानी से होगी। –जब सूर्य खाना नं० 7 में हो।
7. संतान मरती जाए माता की आयु शक्की हो। –जब पापी खाना नं० 4, शुक्र खाना नं० 7 में हो।
8. चन्द्र का हाल मंदा ही होगा। –जब खाना नं० 2–3 में पापी ग्रह हों।
9. जिसकी खबर को वह गए, बीमार मुर्दा हो गया। मीठा शर्बत देते ज़हर कातिल हो गया। पानी में घुली दवाईयां बुरा प्रभाव देगी मगर खुश्क दवाईयों इस वहम से बरी होगा। –जब खाना नं० 3 मंदा या खाना नं० 3 में चन्द्र के शत्रु ग्रह पापी बुध, शुक्र हो।
10. जब धर्म की नाली गंदी हो, चन्द्र की चीज़ें ज़हर कातिल का काम देगी। –जब खाना नं० 5–6 में पापी या बुध, शुक्र हो।

क्याफा

दिल रेखा शनि के बुर्ज खाना नं० 10 में मध्यमा की जड़ तक ही हो।

11. तीनों ही ग्रहों का मंदा फल, हर जगह मनहूस साबित हो। –जब चन्द्र, बुध, शनि तीनों का आपसी ताल्लुक हो जाए।

क्याफा

दिल रेखा, सिर रेखा, आयु रेखा, तीनों मिल कर एक रेखा हो जाए या एक होती माालूम हों।

12. तमाम कबीले पर दु:खों का तूफान चलता होगा। –जब खाना नं० 4 में केतु, 5 में वृहस्पति, 2–10 में राहु, 6 में सूर्य, 8 में बुध हो।
13. शरीर का कोई न कोई हिस्सा मरा हुआ होगा। –जब मंगल खाना नं० 7 और सूर्य बैठा होने के बाद के दूसरे घर में शनि हो।
14. चोर, धोखेबाज़, तैरते को डुबोने वाला, चोर, डाकू का संबंध आम होगा। –जब मंगल बद हो।
15. फेफड़े और छाती की बीमारियां होंगी। –जब खाना नं० 2 खाली हो।

क्याफा

उंगलियों के नाखून ल बे हों।

चन्द्र खाना नं० 11
(होते हुए भी न के बराबर, निरपेक्ष शून्य समान, मंदा)

दिए दूध है पूत दुनियां में मिलता।
नहीं दिल तू खाक दुनियां में जीता।।

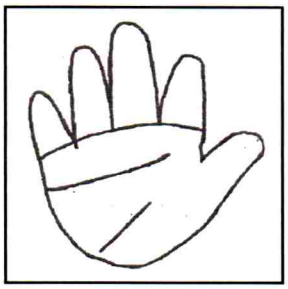

तीन हुआ घर मंदा टेवे,
नेक चन्द्र बुध ५ वें होते,
साथ पापी या शत्रु साथी,
पोता खेले न बैठे दादी,
भला गुरु ज़र दौलत बढ़ती,
उम्र माता न बेशक लम्बी,

५ ज़हर[1] स्वयं चन्द्र हो।
तख्त आया[2] या मंदिर[3] हो।
केतु मंदा खुद होता हो।
दूध पत्थर दुःख धोता हो।
4 रवि, बुध बैठा जो।
शनि उत्तम सुख दुनियां हो।

1. मंदी हालत में देखें।
2. 11-23-36-48-57-72-84-94-10 5-119 साल की आयु।
3. 4-17-27-47-55-69-81-95-10 3-115 साल की आयु।

हस्त रेखा

चन्द्र या दिल रेखा वृ० के बुर्ज खाना नं० 2 को जा निकले मगर वृ० तक न हो या चन्द्र के बुर्ज से रेखा हथेली पर खाना नं० 11 में ही खत्म हो जाये।

नेक हालत

1. दूध की खैरात से दूध, पूत संतान धन बढ़ती होगी। दिमाग़ी खाना नं० 35 वृ० से मुश्तरका गुजरी हुई घटनाओं की याद, सांसारिक सुख मकान, आयु संबंधी आदि का। -जब शनि उत्तम हो।

क्याफा दिल रेखा, शनि तथा वृहस्पति के बुर्जों के बीच खाना नं० 11 में समाप्त हो।

2. धन-दौलत उत्तम होगा। -जब वृ० उत्तम हो।
3. आय के संबंध में शांति, माकूल ठीक कमाई का स्वामी होगा। -जब सूर्य, बुध खाना नं० 4 में हो।

क्याफा चन्द्र के बुर्ज खाना नं० 4 से खाना नं० 11 में रेखा हो।

4. रिश्तेदार तथा आयु बल्कि दोनों जहान का नेक प्रभाव होगा। -जब बुध खाना नं० 5 में हो।
5. अब खाना नं० 11 का चन्द्र अति उत्तम फल देगा और राजदरबार में औसतन 12 साल खूब धन मिलेगा। -जब वर्षफल में चन्द्र 1-2 में आये।

मंदी हालत

1. चन्द्र इस घर में निरपेक्ष नाममात्र ही होगा। कभी तूफान ज़ोर की लहरों से भरा हुआ समुन्द्र और कभी ऐसा जैसे उसमें पानी तक न हो बल्कि खाली ज़मीन बाकी बची रेत तक की चमक न हो।
2. केतु का फल अब मंदा ही होगा। दादी पोते का झगड़ा या दादी बैठे पोता न खेले, यानि टेवे वाले की माता पोते को न देखेगी या उसके माता के होते हुए नर संतान न होगी। यदि हो जाए तो अब कभी उसे दादी देखे, संतान या वह स्वयं पतिहीन या बर्बाद होजाए। यदि दादी पहले ही पतिहीन या अंधी हो तो संतान बेशक कायम होगी। फिर भी लड़के की 12 साल की आयु में या शनि के समय तक दादी, पोता दोनों में से एक ही या दोनों ही न होंगे। घर में हैडप प के पानी गिरने की जगह पर अमूमन चक्की का पहुआ पत्थर होगा। इस पत्थर को टेवे वाले की मां हर रोज़ धोती रहे या माता सिर और आँखें दूध से धोया करे तो विष घटती जाए या भैंरों के मंदिर में दूध देना सहायक होगा। चूंकि चन्द्र खाना नं० 11 के समय केतु कमज़ोर ही होता है। अत: संभोग के समय सोने की सलाख को आग़ में खूब लाल करके दूध में बुझा लिया करें। यह अमल ग्यारह बार करें। नर संतान या ताकत मर्दी नर बच्चों तक उनकी ल बी आयु के संबंध में यदि केतु बहुत ही निक मा हो चुका हो यानि ऐसे व्यक्ति के दर्द जोड़ या गठिया आदि हो चुका हो या किसी और कारण दूध का प्रयोग वर्जित हो तो यही गर्म किया सोना पानी में बुझा कर प्रयोग कर लेना लाभदायक मुफीद और कार आमद होगा। फिर उस दूध का प्रयोग उन नुक्सों को

दूर करेगा। यदि पौरुष शक्ति में शक हो तो वृ० सोना आदि ऐसी दवाईयां जिनमें सोना या सोना का कुश्ता आदि शामिल हो, गई शक्ति को बनाएगा। चन्द्र के साथ वृ० सोना हो तो दोनों कभी मंदे नहीं हो और न ही दुश्मन से मार खाते हैं।

3. माता बचपन में या चन्द्र या शनि की मियाद दिन में मंदी सेहत, तबाह माली हालत या मर जाएगी।
-जब शनि खाना नं० 3 में हो।

4. बचपन मंदा होगा और नीचे की पांच बातें विष का प्रभाव देगी। -जब खाना नं० 3 मंदा हो।

1.	बहन का जन्म या बुध की चीज़ें, बुध से संबंधित कारोबार	— बुधवार को।
2.	शादी चाहे अपनी या अपने किसी संबंधी की	— शुक्रवार को।
3.	मकान बनाना, खरीदना, गिराना शनि के काम	— शनिवार को।
4.	दान लेना या देना किसी चीज़ का कारोबार से संबंध, केतु की चीज़ों का, केतु के काम	— सवेरे केतु समय।
5.	गुरु उपदेश सुनना, सुनाना, वृ० की चीज़ें, काम से संबंध पक्की राहु समय।	— शाम के समय

उपाय

अच्छा होगा कि जब स्त्री को बच्चा पैदा होने के दर्द शुरू हो तो टेवे वाले की माता वहां से किसी और जगह चली जाये और 43 दिन तक न बच्चे को देखे न हाथों में लेकर देखे। यदि टेवे वाले की स्त्री के भी चन्द्र खाना नं० 11 को हो तो टेवे वाले की स्त्री की माता, सास भी इसी तरह 43 दिन के लिए दूर चली जाये।

कुआँ लगने पर माता की मौत संतान की मौत, सफ़र दरिया समुद्र में हानि, किसी व्यक्ति की गुमराही से माल और ज़र का नुक्सान हो। -जब केतु खाना नं० 3 में हो।

उपाय

माता की मदद के लिए चन्द्र की चीज़ें दूध के पेड़े या दूध जो तौल में इतना हो कि वह एक आदमी की पूरी खुराक हो, 11 गुणा करके बच्चों में बांट दें यानि 11 3 11 = 121 पेड़े या इतना दूध जो 11 आदमियों के लिए काफी हो, यदि कोई वहम करें तो दरिया में गिरा दें।

चन्द्र खाना नं० 12
(रात के समय बाढ़, तूफान से बस्तियाँ उजाड़ने वाला दरिया)

छोड़ी याद मंज़िल बुढ़ापा उजाड़ा।
गया जल बिका उससे तेरा ही क्या था।।

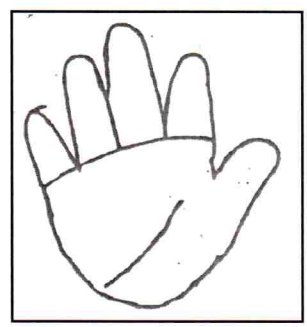

सुल्तान बोद पिदरम[1],
है याद करके रोता[2],
मैदान[3] पानी चलता,
आबाद करके दुनियां,
लेख जाती, खुद चन्द्र अपना,
बुध, रवि घर तीजे बैठा,
साथ-साथी या असर पापी का,
दूध माया ज़र दौलत जलता,
तख्त माता जब टेवे पाती,
दौरा मगर जब 12 करती,
नीम बूढ़ी से पानी टपकता रहा,
(मंगल बैठे हुए का घर),
पानी पर पानी बरसता रहा,
(खाना नं० 4 वाला घर),

इकबाल था शाहाना।
घर उजड़े हो वीराना।
तीर्थ था जो हुआ।
खुद गर्क जा हुआ।
पांच-छठे 9-2 हो।
तारे गंगा कुल घर सबको।
नाला गंदा बरसाती हो।
नरक चन्द्र खुद पानी हो।
धर्म-कर्म ज़र घटता हो।
उजड़ी खेती घर जलता हो।
माता बूढ़ी का पोता भटकता रहा।
(केतु का घर)।
बीकानेर बेचारा तरसता रहा।
(बुध का घर)।

1. जब बुध, शुक्र या पापी खाना नं० 2-12 में हों।
2. 12-24-35-46-59-71-83-97-106-111 साल की आयु।
3. खाना नं० 5-7-9 मैदान, खाना नं० 2 निकास का पहाड़, खाना नं० 10-11 रुकावट के पहाड़, खाना नं० 4 चश्मा, खाना नं० 9 समुद्र, खाना नं० 3 रेगिस्तान का पानी, खाना नं० 6 पाताल का पानी, कुआँ, खाना नं० 8 आबादी का मैदान खाना नं० 7 जहां खेती की जा रही हो, स्वयं के भाग्य का फैसला (नेक हालत में भी लिखें)।
4. खाना नं० 2 ग्रह के अनुसार— मान धन।
   खाना नं० 5 ग्रह के अनुसार— आगे आने वाली संतान।
   खाना नं० 6 ग्रह के अनुसार— सांसारिक संबंध रहने की आयु, दरिया की गुजरान।
   खाना नं० 9 ग्रह के अनुसार— भूतकाल के धर्म-कर्म, बड़ों के किए हुए बडप्पन।
5. 4-17-28-48-55-68-80 -90 -10 1-116 साल की आयु।

हस्त रेखा

चन्द्र रेखा हथेली पर खाना नं० 12 बुर्ज में समाप्त हो।

नेक हालत

1. ***नीम बूढ़ी से पानी [1] टपकता रहा, माता बूढ़ी का पोता [2] भटकता रहा।***
   पानी पर पानी [4] बरसता रहा, बीकानेर [3] बेचारा तरसता रहा।
   1. मंगल बैठा होने वाले घर का हाल।
   2. केतु बैठा होने वाले घर का हाल।
   3. बुध बैठा होने वाले घर का हाल।
   4. चन्द्र खुद का खाना नं० 4 जो पानी समुद्र का ही है, पानी पर पानी और बरसता होगा।
2. चन्द्र खाना नं० 12 में बैठा हो और उसी समय मंगल, केतु, बुध 12 घरों में जिस किसी घर में बैठे हों वहां क्या हाल होगा। चन्द्र का स्वयं अपना खाना नं० 4, चन्द्र का घर खाना नं० 4 वाले घर में बैठे हुए ग्रह पर पानी पड़ता होगा। खुद मंगल नं0 4 जो अमूमन मंगल बद या मंगलीक हुआ करता है। अब आग़ से जला देने की जगह ठंडा असर देगा। मगर केतु जो खाना नं० 4 के समय ठंडे कुएं में गिरे कुत्ते की भांति तड़पा करता है अब और भी वर्षा में भीगते हुए कुत्ते की तरह मंदा होगा। इसी तरह ही बुध खाना नं० 4 का, चन्द्र खाना नं० 12 के समय माता खानदान पर और भी मंदा हाल होता होगा। इसी तरह बाकी ग्रहों का अब खाना नं० 4 में बैठे हुओं का प्रभाव देंगे।

खाना नं०	मंगल बैठा होने वाले घर का हाल
1.	राजदरबार में ज़हर के बदले शहद मिलता रहेगा।
2.	ससुराल के धन का दरिया फालतू होकर बगैर रोके उसके घर में आता होगा और रोकने से भी न रुकेगा।
3.	भाई बन्धु पानी की जगह दूध की नहरों में नहाते होंगे।
4.	बड़े भाई ताया या माता का बड़ा भाई या बाबे का बड़ा भाई बेशक उम्र में ल बे हों या न हों मगर जब तक होंगे कभी दु:खी न होंगे।
5.	उसकी औलाद के खेड़े लगेंगे, बहुत से शहर या गाँव होंगे।
6.	जिस रिश्तेदार से उसकी लड़कियों या लड़के या माता खानदान के नाते होंगे वहाँ धन का दरिया बहने लगेगा।
7.	गृहस्थी इतनी अच्छी कि पानी मांगे तो दूध मिले।
8.	मरना है तो मरेंगे मगर गल, सड़कर दुर्घटना से नहीं।
9.	बड़ों के घर घाट में जायदाद जद्दी में दूध की नदियां होंगी उसे स्वयं चाहे शहर से बाहर निकल जाने का हुक्म हो चुका हो।
10.	सिर पर चाहे कितनी मुसीबतें आये दिल का दरिया कभी न रुकेगा और वह कभी दु:खी न होगा।
11.	गुनाहगार होते हुए भी संसार के जज उसे बेगुनाह ही कहेंगे।
12.	दूध में शहर की जीवन रात को हर तरह का आराम मिले और दिल को शांति होगी।

खाना नं०	केतु बैठा होने वाले घर का हाल
1.	जिस घर में कदम रखा कचहरी से पकड़ने के वारंट आने लगे।
2.	ससुराल में गए तो अपनी जूती गुम या चोरी हो जाने के अलावा उनको भी नंगे पाँव कर दिया।
3.	स्वयं तो संतान से दु:खी थे ही मगर भाई भी चीख रहे हों।
4.	नालायकों की औलाद खानदानी सबूत देगी (नालायकी में)।
5.	बेटा जो भी होगा बाप बन कर ही दिखाए (मंदे अर्थों में)।
6.	उसके रिश्तेदार चाहे उसको सुख न देंगे मगर खुद सुखिया शायद ही होंगे।
7.	अपने ही घर का कुत्ता या अपनी संतान स्त्री आदि ज़मीन पर पेशाब करने की बजाए उस पर पेशाब करेंगे।
8.	लड़के अचानक गुम होते हो या मरते हों, बलाए बद से।
9.	मामा खानदान नाहक मंदी आंधियों से उड़ रहे हों, और बर्बाद हो रहे होंगे।
10.	रास्ते जाती-जाती आंधी अपना ही घर उड़ा ले जाएगी।
11.	इंसाफ चालचलन, कुत्ते का शिष्य होगा यानि मामूली लालच (रिश्वत आदि मिलने) पर इंसाफ की मिट्टी उड़ा देगा और ूत के सहायक समान प्रेमिका, सुन्दर बद स्त्री की थोड़ी सी बू आने पर चालचलन ढीला कर देगा।
12.	कमाई बहुत लाखों की मगर गिनने में शून्य ही हो।

खाना नं०	बुध बैठा होने वाले घर का हाल
1.	राजदरबार मंदा उजड़ा हुआ प्रभाव देगा।
2.	ससुराल खानदान उजड़े बीकानेर वीरान के दृश्य लेगा।
3.	भाई बन्धु के बाजु कटे हुए।
4.	माता खानदान में मातमी ही रहेगी।
5.	संतान मंदे पानी में बह रही होगी, चन्द्र की बीमारियाँ दिल या आँखों के ड़ेले की बीमारियाँ।
6.	लड़कियां जिस जगह विवाही हो वह चिल्ला रहे हो।
7.	गृहस्थी हालत (स्त्री जाति) मंदी रेत में जल रही हों।
8.	ल बे खर्चे की बीमारियों का कोई अंदाज बाकी न रहा हो।
9.	बड़ों की उजड़ी जायदाद को रोते-रोते आँखों का पानी समाप्त हो गया हो।
10.	पहाड़ों के बराबर सुन्दर मकान, रात को सोए अचानक उजड़ कर रेगिस्तान हो जाए।
11.	बेगुनाह होते हुए भी दूसरों की फांसी अपने गले आ लगे।
12.	जिसका सहारा लेने की सोची वह पहले ही आगे भागता नज़र आया।

1. वर्षा का पानी सहायक होगा। चुप रहना और पिछड़े रहना स्वयं ही तबाही का कारण होंगे।
2. चन्द्र की जानदार चीज़ों का फल अच्छा, खुद विद्वान, बुद्धिमान और विद्या में उत्तम होगा।
3. अपने घर में खानदान को तारने वाला होगा। -जब सूर्य, बुध खाना नं० 3 में हों।
4. चन्द्र अब मामूली धनी की जगह उत्तम दूध की तरह माया धन देगा। -जब वृहस्पति उत्तम और सूर्य उत्तम हो।

मंदी हालत

1. अब चन्द्र रात को बाढ़ लाने और बस्तियाँ उजाड़ने वाला बंद गंदी बद रौ के पानी से भरा दरिया होगा, जिससे खेती उजड़ती होगी या यूं कहें कि माता-पिता का दिया सब कुछ उजड़ जाए। मगर अपना कमाया न उजड़े या माँ-बाप जो उसके नाम कर दे वह उसकी बर्बादी का कारण बन जाए।
2. संसार में कोई दु:खी नहीं होना चाहता, मगर चन्द्र खाना नं० 12 स्वयं आग़ की जगह पानी से जलता और दूसरों को जलाता जाएगा।

3. रात की नींद और सिर की जिल्द कभी ही सुख की होगी। चन्द्र की बेजान चीज़ों का प्रभाव अमूमन मंदा होगा।

पानी बादल में भरकर जलता,
उजाड़ खेती जागीर भाग्य,
दूध, धन ज़र पानी देता,
धर्म-कर्म चंडाली साया,

रेत मैदानों भरता हो।
अफीम खाए ले सुथरा वो।
नर्क चन्द्र धन डोलता हो।
मान इज्जत कुल फक्ता हो।

4. गंदा बरसाती नाला होगा। हर तरह से बुरा हाल खासकर जब चन्द्र खाना नं० 1 में आवे सुसराल की जायदाद फूंके और स्वयं की भी न छोड़ता हो। धर्म-कर्म दौलत की बर्बादी टेवे के अनुसार वृ० की सहायता या वृ० के उपाय उसके धर्म के स्थान में आते-जाते रहने से चन्द्र का पानी ढ़लती हुई बर्फ की तरह काम में आने वाला तथा सहायक होगा।
खाना नं० 12 का चन्द्र खाना नं० 1 में आने से समय यानि 12-24-35-46-59-71-82-97-106-111 साल की आयु में खेती को उजाड़ने वाला पानी होगा जिससे घर घाट सब बर्बाद होंगे और अपने जन्म वाले घर आने के समय यानि खाना नं० 12 का चन्द्र वर्षफल में 12 में आने पर वह सब मंदे असर देगा जो कि चन्द्र खाना नं० 12 में लिखे हैं।
खाना नं० 2 का चन्द्र जायदाद जद्दी के संबंध में एक ऐसा दरिया जो दिन प्रतिदिन संसार वालों के लिए खेती की जगह छोड़ता जाये और अपना रास्ता पीछे या किसी और तरफ करता रहे, जिससे कि आबादी वालों को बाढ़ का समय लाभ ही हो। मगर चन्द्र खाना नं० 12 का दरिया का पानी आबाद घरों को उजाड़ता और खेती की ज़मीन को बहा ले जाता और हर तरफ गंदा पानी और रेते आदि भरता जाएगा जिसके प्रभाव से टेवे वाला अपने जन्म के बाद चन्द्र के समय से अपनी खासकर जब चन्द्र खाना नं० 12 खाना नं० 1 में आवे या जब खाना नं० 2 का खाना नं० 12 में ही आए तो बड़ों की जायदाद शान का अपने जन्म से पहले और बाद का मुकाबला करके देखता हुआ इस पहेली का उत्तर कि अब क्या है और पहले क्या था केवल आंसुओं से ही देगा, मुंह से बोलेगा कुछ नहीं।
5. दिमाग़ी खाना नं० 36 राहु से मुश्तरका समय गुज़रने पर मर्द पछताए या गुज़रती हुई घड़ी से आगे जाने वाली घड़ी कोई ऐसी ल बी न होगी। ज्यूं-ज्यूं समय गुज़रेगा हाल आगे कुछ न कुछ मंदा या हल्का ही होता जाएगा।

आता है याद मुझको गुज़रा हुआ ज़माना,
या ख्वाब में ही देखा या हो गए दीवाना।
सुल्तान बाद पिदरम इकबाल था शाहाना,
तकसीर उनकी आजम या हो गया बहाना।
है याद करके रोता, घर उजड़े हो वीराना,
जाहिल बना वही, जो था माहिरे ज़माना।

6. टेवे वाला अब यह कहता होगा मुझे गुज़रा समय याद आता है, शायद वाब में ही देखा या वैसे ही दीवाना पागल हो गए। मेरा बाप बादशाह था और समय का ठाठ शान बादशाहों का, कसूर उनका बहुत बड़ा हो गया या वैसे ही कोई बहाना हुआ जिससे कि वह अब समय को याद करके रोता है। घर उजड़ कर वीरान जंगल, वीरान बियाबान हो गए हैं और वह स्वयं नालायक बन रहा है जो कि सारे संसार को जानता था।
7. निर्धन दुखिया हो। आधी आयु तक से डूबने का डर ही होगा। ऊपर की सब मंदी हालतों की आखिरी हदबंदी आयु का 48 वां साल होगा, जिसके बाद चन्द्र खाना नं० 12 की जगह खाना नं० 3 का फल देगा।
-जब मंगल खाना नं० 1, सूर्य खाना नं० 2 में हों।
8. स्वयं या अपनी स्त्री या दोनों एक आँख से काना होंगे। -जब सूर्य खाना नं० 6 में हो।
9. जो चीज़ भी बाप अपने बेटे (जातक) के नाम लगा देगा, कोड़ी-कोड़ी करके जलेगी, बिकेगी, वज़ह कोई भी हो या हो जाये। -जब खाना नं० 2-6-12 में बुध, शुक्र या पापी हो।

****

शुक्र

शुक्र

बदी खुफिया[4] तू जिससे दिन-रात करता।
वक्त मंदा वही तेरे सिर पर पड़ता।।
ऐश पसंदी इश्क खुदाई,
अकेला बुरा नहीं होता हो।
पाप[1] नस्ल का खून गृहस्थी,
मिट्टी माया का पुतला हो।
मर्द टेवे में स्त्री बनता,
स्त्री टेवे खुद मर्द हो वो।
उठी जवानी[2] इश्क में अन्धा,
बूढ़े[3] नसीहतें करता हो।
रवि दृष्टि शनि पर करता,
बुरा शुक्र का होता हो।
शनि, रवि से पहले बैठा,
नर[5] ग्रह स्त्री उम्दा है।
नज़र शुक्र में जब शनि आता,
माया दीगर खा जाता हो।
दृष्टि शुक्र पर जब शनि करता,
मदद ग्रह सब करता हो।
शुक्र बैठा जब बुध से पहले,
असर राहु का मंदा हो।
बुध पहले से शुक्र मिलते,
केतु भला खुदा होता हो।
शत्रु[6] दोनों का साथ जो बैठे,
असर दोनों न मिलता हो।
शुक्र मालिक है आँख शनि का,
तरफ चारों ही देखता जो।
चोट शनि हो जब कहीं खाता,
अन्धा[7] शुक्र खुद होता हो।
घर 5 वें परिवार बच्चों का,
नीच छठे खुद होता हो।
असर साथी ग्रह 7 वें देगा,
जलती मिट्टी घर 8 का हो।
ज़हर मंगल बद 9 वें बनता,
धर्मी शनि घर 10 वें हो
चश्मा दौलत ज़र 11 उठता,
तारे 12 भव सागर जो।
काग़ रेखा घर पहले बैठी,
भला गृहस्थी दूजे हो।
भाई मर्द घर तेरे होगा,
जोड़ा औरत दो चौथे हो।

1. राहु, केतु मुश्तरका (मसनुई शुक्र)।
2. खाना नं० 1 से 6
3. खाना नं० 7 से 12
4. जिस घर को शुक्र देखता हो वहाँ का ग्रह मंदे समय, वर्षफल के समय शुक्र मंदा।
5. सिवाय सूर्य।
6. शुक्र का शत्रु सूर्य, चन्द्र, राहु ; बुध का शत्रु चन्द्र।
7. जिस घर शनि हो शुक्र में वही असर दृष्टि भी उस घर की ओर होगी। मगर दृष्टि की चाल पिछली तरफ खुद शुक्र की अपनी होगी।

आम हालत :-

1. शुक्र के ग्रह (बुर्ज) को सांसारिक भाग्य से कोई संबंध नहीं। सिर्फ प्यार-मुहब्बत की फालतू दो से एक ही आँख हो जाने की शक्ति शुक्र कहलाती है। सब ओर से बिगड़ी या सब की बिगड़ी बनाने वाला सब कुछ ढला-ढलाया शुक्र होगा।
2. स्त्री संबंध गृहस्थ आश्रम बाल-बच्चों की बरकत और बड़े परिवार का 25 साल समय शुक्र का समय होगा। इस ग्रह में पाप करने-कराने की नस्ल स्वयं राहु, केतु आपसी बनावटी शुक्र) का खून और गृहस्थी हालत में मिट्टी और माया वज़ूद है।
3. मर्द के टेवे में शुक्र से अर्थ स्त्री और स्त्री के टेवे में उस का पति अर्थ होगा। अकेला बैठा शुक्र टेवे वाले पर कभी बुरा प्रभाव न देगा और न ही ऐसे टेवे वाला गृहस्थी संबंध में किसी दूसरे का बुरा कर सकेगा।

शुक्र से बुध का स बन्ध :-

जब दृष्टि के हिसाब से (दर्जा दृष्टि 25-50 -100% हो) आमने-सामने के घरों में बैठे हों तो चमकती हुई चांदनी रात में चकवे-चकवी की तरह अकेले -अकेले होने का प्रभाव नीचे की तरह होगा।

1. अगर बुध कुण्डली में 1-2-3 के क्रम हद 12 तक शुक्र से पहले घरों में बैठा हो तो इस तरह से दोनों के मिले हुए असर में केतु की नेक नीयत का उत्तम प्रभाव शामिल होगा। लेकिन अगर शुक्र कुण्डली में बुध से पहले घरों में हो तो इस तरह मिले हुए दोनों के असर में राहु की बुरी नीयत का प्रभाव शामिल होगा।
2. दृष्टि वाले घरों में बैठा होने के समय शुक्र का प्रभाव प्रबल होगा। लेकिन जब बुध पहले घरों का हो और मंदा हो तो शुक्र में बुध का मंदा असर शामिल हो जाएगा, जिसे शुक्र नहीं रोक सकता तथा गृहस्थ में मंदे परिणाम होंगे।

अ) जब अकेले-अकेले बंद मुट्ठी के खानों (1-4-7-10) से बाहर हर एक-दूसरे से 7 वें बैठे हों :- यानि

शुक्र नं० 2 और बुध नं० 8
शुक्र नं० 3 और बुध नं० 9
शुक्र नं० 6 और बुध नं० 12
शुक्र नं० 8 और बुध नं० 2

में हो तो दोनों ही ग्रहों और घरों का मंदा फल होगा।

ब) मगर शुक्र नं० 12 और बुध नं० 6 में दोनों का उच्च फल होगा, जिसमें केतु का उत्तम फल शामिल होगा। ऐसी हालत में (यानि अपने सातवें) बैठे होने के समय दोनों का असर आपस में न मिल सकेगा।

3. जब दोनों ग्रह अलग-अलग, मगर आपस में दृष्टि के खानों की शर्त से बाहर हो तो जिस घर में शुक्र हो वहाँ बुध अपना असर अपनी खाली नाली के द्वारा लाकर मिला देगा और शुक्र के फल को कई बार बुरे से भला कर देगा। लेकिन अगर बुध के साथ शुक्र के शत्रु ग्रह (सू० , चं० , रा०) हो तो ऐसी हालत में शुक्र कभी भी बुध को ऐसी नाली लगा कर अपना असर (शुक्र) अपने में मिलाने नहीं देगा। यानि ऐसी हालत में बुध किसी तरह भी शुक्र को रद्दी निक मा या बर्बाद नहीं कर सकता।

शत्रु ग्रहों से संबंध :-

सूर्य और शनि आपस में शत्रु हैं यदि एक साथ इकट्ठे बैठे हों तो टेवे वाले पर बुरा असर नहीं होता जोड़-घटाव बराबर होती रहा करती है। लेकिन जब शनि के साथ शुक्र बैठे को कोई भी ग्रह देखें तो शनि देखने वाले ग्रह को जड़ से मार देगा। यदि टेवे में सूर्य और शनि का झगड़ा हों तो शुक्र मारा जाएगा। सूर्य जब शनि को देखे तो शनि की बर्बादी होने की जगह शुक्र का फल बर्बाद होगा। लेकिन यदि शनि दे ो सूर्य को तो शुक्र आबाद या उसका फल उत्तम होगा। बहरहाल यदि शुक्र के साथ (साथी या दृष्टि के ढंग पर) जब शत्रु ग्रह हो तो शुक्र और शत्रु ग्रह सब की ही चीज़ें, रिश्तेदार या कारोबार संबंधित (शुक्र या शत्रु ग्रहु) पर हर तरफ से उड़ती हुई मिट्टी पड़ती और मंदी किस्मत का समय होगा।

शुक्र से राहु का स बन्ध :-

शुक्र (गाय) और राहु (हाथी) इन दोनों का आपसी संबंध कहाँ तक अच्छा फल दे सकता है।

1. जब कभी दृष्टि द्वारा दोनों मिल रह हों, शुक्र का फल बर्बाद होगाा। लक्ष्मी और स्त्री दोनों ही बर्बाद और समाप्त होंगे।
2. दो बाहम शत्रु ग्रह साथी दीवार वाले घर में बैठे हुए जुदा-जुदा ही रहा करते है, लेकिन अगर शुक्र अपने शत्रु ग्रहों के घर बैठा हो और राहु साथी दीवार वाले घर में आ बैठे तो शुक्र का वही मंदा हाल होगा जो कि शुक्र के साथ ही इकट्ठा राहु बैठे जाने या दृष्टि मिलने पर मंदा हो सकता है।
3. जन्म कुण्डली में शुक्र अगर अपने शत्रु ग्रहों को देख रहा हो तो जब कभी वर्षफल के हिसाब शुक्र मंदा हो या मंदे घरों में जा बैठे तो वह दुश्मन ग्रह जिनको कि शुक्र जन्म कुण्डली में देख रहा था शुक्र के असर को विषैला और मंदा करेंगे चाहे वहाँ शुक्र को अब देख भी न सकते हो। ऐसे टेवे वाला जिससे खुफिया बदी किया करता था अब वही (उन चीज़ों, रिश्तेदार या कारोबार संबंधित उन दुश्मन ग्रहों, जिनको शुक्र ने जन्म कुण्डली में देखा था, के संबंध में) दुश्मनी और बर्बादी का सबब होगा।

शुक्र की दो रंगी मिट्टी :-

खाना नं०1.	उठती जवानी में ऐश व इश्क की लहरों से मिट्टी की पूजना में अंधा होना। काग् रेखा या मच्छ रेखा , एक तरफा याल का स्वामी, त त के मालिक रजिया बेगम मगर एक हब्शी गुलाम पर मिटी।
खाना नं० 2.	उत्तम गृहस्थ हर तरह से सिवाए बच्चे बनाने के अपनी ही खूबसूरती और स्वभाव के आप मालिक, खुदपरस्ती स्कूल मिस्टरेस हर एक की प्रिय स्त्री, मगर वह स्वयं किसी को पसंद न करे।
खाना नं० 3.	मर्द की जगह बैल का काम दे ऐसी खैंच दे कि टेवे वाले पर कोई न कोई स्त्री मर ही जाया करती है। स्त्री मर्द जैसी हि मतवाली।
खाना नं० 4.	एक जगह दो स्त्री या दो पुरुष मगर पुरुष-स्त्री दोनों ही ऐसी दो गाय या दो बैल कि बच्चा दोनों से न बने।
खाना नं० 5.	बच्चों भरा परिवार या ऐसे बच्चों के पैदा करने वाला जो उसे बाप न कहें या न कह सके।
खाना नं० 6.	न पुरुष, न स्त्री, खुसरा, मर्द (नपुसंक) बांझ स्त्री धन भी लक्ष्मी भी ऐसी जिस का मूल्य कोई न दे।
खाना नं० 7.	सिर्फ साथी का असर जो और जैसे तुम वैसे हम। बुढ़ापे में उपदेश दे।
खाना नं० 8.	जाली मिट्टी और हर सुख में शुक्रगुजार, उत्तम तो भव सागर से पार कर दे।

खाना नं० 9.	शुक्र को स्वयं अपनी बीमारी के द्वारा धन हानि, मगर घर में ऐशो आराम के सामान या धन की कमी न होगी।
खाना नं० 10.	शनि स्वयं यदि स्त्री हो तो ऐसी जो पुरुष को निकाल कर ले जाए अगर मर्द हो तो ऐसा कि वह किसी न किसी दूसरी स्त्री को अपने प्यार में रखा ही करता है।
खाना नं० 11.	लट्टू की तरह घूम जाने वाली हालत। मगर बचपन की मोह माया की भोली-भाली स्वभाव की मूर्त और रिज़क के चश्में का निकलना।
खाना नं० 12.	भव सागर से पार करने वाली गाय यानि स्त्री लक्ष्मी जिस की स्वयं अपनी सेहत के संबंध में सारी ही आयु रोते निकल जाए।

शुक्र खाना नं० 1
(काग [1] तथा मच्छ [2] रेखा की रंग-बिरंगी माया)

यदि धर्म दुनियां न स्त्री में बिकता।
कोई लेख विधाता मंदा न लिखता।।

आँख दोनों न शुक्र देखे,
अगर दोनों का यकंसा लेते,
स्त्री रिज़क से पहले आए,
शादी मगर जब 25 हो,
शुक्र मंदे से मरती माता,
सात छठे घर मंगल 12,
बुध मंदा संतान हो मंदी,
शनि बुरे मंदे होंगे साथी,
धर्म हालत 8 हो गुरु जैसा,
तीन छठे बुध हो जब बैठा,
सात पहले घर शत्रु साथी,
शुमार इश्क 2 स्त्री [3] पकड़ी,
ऐश स्वभाव इश्क चाहे लूटे,
घर सातवां दस खाली होते,
शनि नज़र का मालिक हो।
शनि नं० 1 प्रबल हो।
शनि उत्तम जब अपने घर।
दौलत रहे न स्त्री घर।
बुरा सूर्य न होता हो।
पूरी सदी पुत्र, पोता हो।
गृहस्थ मंदा रवि करता हो।
तीनों मंदे सब मरता हो।
उच्च शनि मच्छ रेखा हो।
श्रेष्ठ रेखा सिर होता हो।
रवि आया या पापी हो।
दमा, तपेदिक, खांसी हो।
लेख लिखित न मंदी हो।
मच्छ रेखा बन जाती हो।

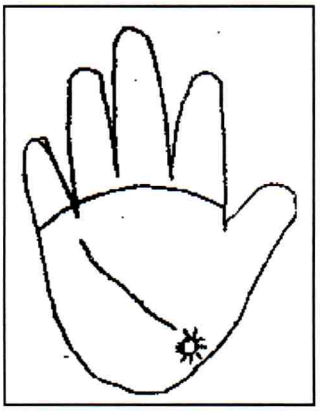

1. अगर शनि मंदा हो या खाना नं० 7-10 खाली न हो और उनमें सिर्फ पापी या बुध न हो तो काग़ रेखा होगी।
2. यदि शनि उत्तम या खाना नं० 7-10 खाली या उनमें सिर्फ (राहु, केतु, शनि) पापी और बुध हो तो मच्छ रेखा होगी।
3. दो स्त्रियों से एक ही समय बच्चे बनाने पर।

हस्त रेखा

शुक्र के पर्वत पर अंगूठे की जड़ में सूर्य का सितारा हो। शुक्र से शा ाा सूर्य के पर्वत पर हो। शुक्र का पतंग पूरा हो।

नेक हालत

1. धर्महीन हो जाये तो बेशक इश्क में मज़हब का फर्क समझे या न समझे, मगर उसका राज दरबार कभी मंदा न होगा। शुक्र अब प्रभाव के लिए एक तरफ चाल का स्वामी होगा। यानि जिस पर कृपा दृष्टि उसके लिए प्राण तक न्यौछावर कर दे। जिसके विरुद्ध उसकी मिट्टी तक उड़ा कर रख दे। शुभ हो तो मच्छ रेखा यानि सब सुख औलाद आदि। यदि अशुभ तो काग़ रेखा यानि शुक्र सिर्फ एक ही आँख से देखता या काना होगा। हर धन में शनि की हालत उसकी (शुक्र की) नज़र होगी। फिर भी सवारी का सुख और चौपाया का आराम साथ होगा।
2. धर्म की नेक तथा बद हालत का फैसला खाना नं० 8 के ग्रहों और वृ० की हालत पर होगा।
3. दिमाग़ी खाना नं० 1 इश्कबाजी और शनि से आपसी इश्क जवानी 16 से 36 आयु में उठती जवानी के समय स्त्री जाति का परस्त्री (अपनी धर्म पत्नी से अर्थ नहीं) की सुन्दरता की रंग-बिरंगी दिल को अच्छी लगने वाली कहानी के ऊंचे पुल बांध दिए और खुद पसंदी जाति घमण्ड और कामदेव की आग़ में जलते हुए सैकड़ों मील चलते मगर सोए हुए निकल गए। जिस की वज़ह से दिल और दिमाग़ पर काबू ही न रहा और आखिर पर स्त्री की खातिर ईमान भी बिकने लगा।

क्याफा शुक्र का पतंग सूर्य के बुर्ज पर केवल अनामिका की जड़ में।

4. स्त्री का प्रभाव (संतान तथा आराम) को थोड़ा हल्का सा खराब करे। मगर प्यार को धर्म में घृणा नहीं। इस रेखा के प्रभाव से मनुष्य धर्महीन, स्त्रियों के पीछे घूमने वाला होना, शुक्र से बाहर से आशिकाना मगर अन्दर से सूफीयाना फल देगा। स्वभाव फिर ी फटे खरबुजे की तरह (फूटा) होगा, **स्त्री का स्वास्थ्य मंदा होगा, स्वयं का ठीक होगा। अपने भाग्य के संबंध में भाग्यवान होगा। अपनी तथा बच्चों की शारीरिक हालत शुभ होगी। अपने कामों के लिए दूसरों से सलाह लेना ठीक होगा।**

1. स्त्री अपनी कमाई शुरू होने से पहले घर आएगी जो घर की मालिक और हर तरह से राज्य करेगी — जब शनि जन्म कुण्डली में अपने घर उत्तम हो।
2. आयु पूरी 100 वर्ष, पुत्र, पौत्र देखेगा — जब मंगल नं० 6-7-12 हो।
3. मच्छ रेखा का उत्तम प्रभाव होगा। **विष्णु भगवान् की तरह दूसरों को पालने वाला होगा।** चाहे धन के आने में माया के पहाड़ दम के दम में खड़े होते होंगे लेकिन जब तक घर में नौकरानी न हो, माया के पहाड़ों पर चरने की जगह कम ही होगी। यानि धन की थैली चाहे दिन को भरती हो मगर शाम को खाली ही देखी जाती होगी — जब शनि उच्च हो या खाना नं० 7-10 खाली हो या इन घरों में राहु, केतु, बुध, शनि हों तो 7-10 खाली ही समझा जाएगा। अगर मंगल 6 से 12 में न हो तो 7,10 खाली होते हुये काग रेखा होगी यानि राहु, केतु खाना नं: 4-10 में हो और बुध या शनि खाना नं: 7 और मंगल खाना नं: 6 से 12 में हो।
4. सिर की श्रेष्ठ रेखा उत्तम, दिमाग़ी हालत। मुकद्दमों का फैसला टेवे वाले के हक में होगा, चन्द्र का प्रभाव अमूमन बुरा न होगा। — जब बुध 3-6 में उच्च हो।

मंदी हालत

शनि, शुक्र घर पहले बैठे, काग़ रेखा कहलाती है।
मालिक चाहे हो तख्त हज़ारी, मिट्टी कर दिखलाती है।

1. जवानी इश्कबाजी घर की न बरदारी (मोहरीपन, मुखियापन, रास्ते दिखाने वाला) न सिर्फ अपनी बल्कि संबंधियों की भी तबाही का बहाना होगा।
2. शुक्र मंदा हो, माता छोटी उम्र में चल दे, या मरने से भी अधिक दुखिया। जब तक माता स्त्री से दूर रहे, दु:खी न हो लेकिन जब दोनों इकट्ठी हों तो दोनों में से एक अंधी ही लेंगे मगर सूर्य कभी बुरा न होगा।
3. काग़ रेखा खासकर उम्र के 25 वें साल शादी के समय न धन, न स्त्री ज़िन्दा रहे। - जब खाना नं: 7-10 खाली ना हों।
4. स्त्री की पागलपन की हालत, बीमार, गृहस्थी जलती मिट्टी के समान। जमींदारी की पकी हुई खेती में आग़ लगी हुई की तरह गृहस्थी हालत। स्त्री के टेवे में पुरुष की ओर से तलाक गिनते हो। शादी समय शुद्ध चांदी स्त्री को ससुराल से मिले तो खाना आबादी हो। — जब राहु नं० 7 हो।
5. संतान मंदी हो - जब बुध मंदा हो (शुक्र का पतंग हो सिर्फ कनिष्ठा की जड़ पर हो)।
6. गृहस्थ मंदा होगा — जब सूर्य मंदा हो (शुक्र का पतंग अनामिका की जड़ तक हो)।
7. साथी रिश्तेदार मंदे संबंध देंगे। शुक्र खाना नं० 10 का फल देगा। उसकी स्त्री ऐशो ईशरत में सदाबहार फूल, स्त्री को आमतौर पर मासिक धर्म के बाद स्वस्थ गिनते है। मगर ऐसे ग्रह वाली स्त्री मासिक धर्म के बिना संतान की शक्ति से भरपूर और ऐसे फूल की तरह प्रिय होगी जो कि ऋतु के बिना हर समय अपनी बहार दे रहा हो। उसमें सुन्दरता प्यार की लगन और मोह माया पूरे किनारे तक भरा हो। स्वयं ऐशी पट्ठा होगा। — जब शनि मंदा हो।

क्याफा शुक्र का पतंग मध्यमा की जड़ तक हो।

8. हर ओर मौतें ही मौतें नज़र आएगी पूरा शुक्र का पतंग होगा न सिर्फ खुद बर्बाद, बल्कि दूसरे साथियों को भी बर्बाद करने के भाग्य का मालिक होगा। — जब बुध, सूर्य, शनि तीनों मंदे हों।

क्याफा शुक्र का पतंग बुध के पर्वत से चलकर शनि के बुर्ज 10 तक पूरा हो।

9. **इश्क का परवाना या दमा, तपेदिक या बुखार के समय स्त्री भोग या किसी दूसरी स्त्री संबंध से बिगड़ा बुखार हो। गोमूत्र तथा जौ की खुराक सहायक होगी। सरसों बहुत मिलते हुए अन्न कम से कम सात नाज या चरी का**

दान शुभ। पुरुष कन्यादान, स्त्री गोदान करें तो शुभ होगा। — जब नं० 1-7 शत्रु ग्रह चन्द्र, राहु, सूर्य हो और बुध (सिवाए बुध नं० 3) मंदा हो सूर्य नं० 7 या शुक्र का साथ-साथी हो।

10. पराई ममता गले लगी रहे, नहीं तो सात साल बीमार या आधा मुर्दा तो अवश्य होगा। स्वास्थ्य कौड़ी-कौड़ी कर के हार देगा। मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। साथी ग्रह के संबंधित रिश्तेदार के साथ से स्वयं शुक्र और संबंधित साथी दोनों तंग होंगे।

क्याफा

अंगूठे की जड़ शुक्र के बुर्ज नं० 7 में सूर्य का सितारा हो या सूर्य के बुर्ज से शुक्र के बुर्ज नं० 7 में रेखा या शुक्र नं० 7 से सूर्य के बुर्ज नं० 1 में पूरी रेखा हो।

उपाय :-	**दिल पर काबू, इश्क पर काबू, किस्मत की मंदी चाल बदल देगी, दूसरों की सलाह सहायक होगी।**

शुक्र खाना नं० 2

मोह माया का उत्तम गृहस्थ सिर्फ मालिक से मांगना ही तेरी कमी पूरी कर देगा।

बने माया तेरी पशु जो मिट्टी।
तू फिर मांगता क्यों, सोने की हट्टी॥

गऊ घाट[1] जब कुटिया उसकी,
माया धन स्वयं मस्तक चलती,
शेर दहाना[2] हो घर उसका,
ग्रहण घेरा जब हो कभी टेवा,
आठ खाली 9-12 मंदे,
अपने भाई और लड़के उसके,
बर्बाद स्त्री बाज़ारी करती,
नेक चले सब किस्मत फलती,
8 छठे ग्रह 2-10 जागे,
शनि वली घर 9 जब बैठे,
टेवे शनि हो 9 जब बैठे,
पाया शुक्र ही जब घर दूसरा,
केतु गुरु बुध उत्तम हो।
शहंशाही घर आला हो।
काम करे या सोने का।
मिट्टी हो फल किस्मत का।
स्त्री धन सब मंदा हो।
हालत गुरु पर चलता हो।
पाप गुरु घर बैठा हो।
उड़ती मिट्टी जब उल्टा हो।
असर शनि 9 देता हो।
शुक्र गुणा दो होता हो।
प्रभाव शुक्र 2 देता हो।
असर शनि 9 होता हो।

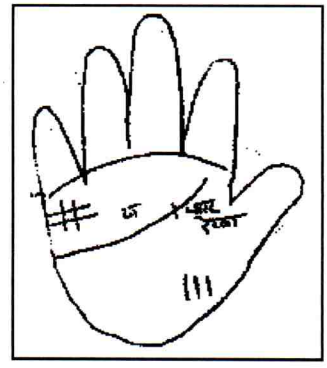

1. बाकी 5 बचने बाला मकान या ऐसा मकान जिसका अगला हिस्सा तंग और पिछला चौड़ा हो।
2. बाकी 3 बचने वाला मकान या ऐसा मकान जिसका अगला हिस्सा चौड़ा और पिछला तंग हो।

हस्त रेखा

अकेली शुक्र रेखा वृ० के पर्वत पर स्थित हो। प्यार रेखा संतान रेखा, विवाह रेखा को काटे। भाईयों की रेखा ल बी और टेढ़ी वृ० को हो। दिल रेखा का सिर्फ उतना ही हिस्सा जो कि वृ० के बुर्ज के अन्दर हो प्यार रेखा के नाम से याद होगा।

नेक हालत

1. मिन्नतकश गैर हरगिज न होगा, खुदा का ही अक्सर एहसान होगा। जूती खोर साधु वह बिल्कुल न होगा, गृहस्थी न हो, चाहे गुरु जगत् हो। कभी खाली घर न वह बच्चों से होगा, वक्त साठ साल ज़रे धन का होगा। अपना रिज़क धन और ससुराल की धर्म अवस्था सदा नेक होगी। दुनियावी तथा खुदाई दोनों ही प्यार का स्वामी।

क्याफा प्यार रेखा, वृ० के पर्वत में शुक्र का लेटा हुआ खत।

2. राशि नं० 2 में कोई भी ग्रह नीच नहीं होता बल्कि इस घर का मालिक शुक्र (मिट्टी या स्त्री है) जो पहाड़ पर सफेद झंडा लटकाए हुए, जो लड़ाई में सुलह करा लेते हैं। हर एक बीज की रक्षा करता है। शुक्र की इस अच्छाई के लिए उसे लक्ष्मी अवतार माना है। इसी नींव पर शुक्र नं० 2 के समय अपनी गृहस्थी स्त्री का संबंध नेक और उत्तम होगा।

3. दिमाग़ी खाना नं० 2 वृ० से आपसी, शादी की इच्छा मगर 37 से 70-72 साल बूढ़ी स्त्री की तरह उल्फत (प्यार से पहले का समय) और प्यार के बाद का गलवा (वियोग) या सिवाए प्यार वह कामदेव की शक्ति के बाकी दोनों भागों का मालिक यानि भूख तो बहुत अधिक हाज़मा कम कै (उल्टी) करते-करते घर ही भर दिया। स्त्री सिवाए औलाद बनाने के बाकी सब से उत्तम होगी। जानो जानदारें का उत्तम हाल होगा। चाहे बीमारी के झगड़े का कोई हिसाब न होगा, मगर रिज़क कभी खराब न होगा। बल्कि दिन दुगना रात चौगुना हिसाब होगा या गाय या शुक्र की देवी अब गुरु स्थान और अपने असली संसार में गऊ घाट में अपने ठीक स्थान तथा आराम करने की जगह (राहु के बनावटी शुक्र की बैठक) पर होगी। जिससे बाल बच्चों की बरकत। शादियों के नेक नतीजे, गृहस्थी सुख की वृद्धि और शुक्र का असली नेक फल होगा। अपनी कमाई शुरू करने के दिन से कम से कम 60 साल तो धन (शनि) आएगा। उसकी बाहर की चाल सूफीयों की सी (वृ० जैसी) मगर अन्दर की प्यार (शुक्र) भरी होगी यानि सौ चूहे खा कर बिल्ली हज को गई, यानि बगुला भक्त होगा। उसके लिए बुराई करना अपने लिए ही बुरा होगा। चालचलन का संभालना हर नेक नतीजे की नींव होगा। आम तौर पर आयु ल बी तथा शत्रु दबे रहेंगे।
4. गृहस्थ सदा ाला ही होगा —जब शनि अब टेवे में कहीं ी हो, वह शुक्र के लिए शनि नं० 9 का दिया शुभ फल देगा चाहे शनि का अपना बैठा होने वाले घर का फल खराब ही क्यों न हो।
5. वृहस्पति, केतु और बुध का उत्तम फल होगा और शनि का फल भी शुभ ही होगा। धन का उत्तम भाग्य अपने ही माथे पर होगा। घर बार राजाओं की भांति होगा।
6. जब उसका घर गऊ घाट अगला हिस्सा तंग, पिछला खुला हुआ, गऊ की शक्ल का होगा तो बाकी 5 बचने वाले मकान के भाग्य वाला होगा।
7. अपने भाई तथा लड़के का भाग्य तथा दूसरे संबंध का हाल गुरु वृहस्पति की हालत पर निर्भर करेगा।
8. भाई बन्धुओं की बरकत और सांसारिक सहायता होगी। — जब वृ० 6-12 हो।

क्याफा शुक्र के बुर्ज न० 7 पर भाईयों की ल बी-ल बी टेढ़ी रे ाएं।

9. प्यार में दर्जा कमाल और कामयाब प्यार (प्रेमी) करने वाला होगा। — जब वृ० नं० 2, मं० नष्ट हो।
10. शुक्र स्वयं जागता और शनि स्वयं अपना नं० 9 का प्रभाव देगा लेकिन यदि शनि ही हो खाना नं० 9 में तो शुक्र का दोगुणा नेक प्रभाव होगा। हर दो इश्क हकीकी और संसारी में कामयाब। स्वयं कमाई शुरू करने के दिन से 60 साल कमाई का समय होगा। पशुओं तथा कच्ची मिट्टी के कामों से रिज़क संतान बढ़ती होगी। — जब शनि खाना नं० 2-9 हो।

मंदी हालत

शेर दहाना[1] हो घर उसका, काम करे या सोने का।
ग्रहण[2] घटा जब हो कभी टेवा, मिट्टी हो फल किस्मत का।

1. 3 बचने वाला मकान अगला हिस्सा खुला पिछला तंग।
2. टेवे में ग्रहण लगा हो— सूर्य-राहु = सूर्य ग्रहण, चन्द्र-केतु = चन्द्र ग्रहण।

1. स्त्री के टेवे में शुक्र नं० 2 का अर्थ उसका मर्द संतान पैदा न कर सके, मर्द के टेवे में शुक्र नं० 2 से अर्थ उसकी बांझ स्त्री होगी यानि उसमें कामदेव की शक्ति (बुध का गुण) तो होगी मगर संतान पैदा करने की शक्ति कम होगी, कामदेव शुक्र वीर्य माना है।
2. चाहे अपनी संतान का तकाजा। मगर फिर भी दूसरे का लड़का बिना गोद लिए अपना लड़का बन बैठे।
— जब खाना नं० 2 में पापी या सिर्फ पाप का साथ हो।

क्याफा

शुक्र के पर्वत पर भाईयों की रेखा की तरह पर्वत नं० 2 को देखते-देखते ल बे-ल बे खत रेखाएं।

3. स्त्री दुखिया करे, चाहे कमाई का योग कितना ही हो। — जब खाना नं० 9-12 मंदे हो।
4. पतिहीन स्त्री की बतौर फर्ज जि मेदारी और प्रेमिका आवारा या बाजारी स्त्री बर्बादी का बहाना होगी। वीर्य का कतरा आवारा गिरते ही शुक्र की मिट्टी के कण बना कर उड़ा देगा। — जब वृ० के घरों 5-2-9-12 में राहु, केतु हो।
5. स्त्री-पुरुष स्वयं बच्चा न बना सकेंगे न उसके काबिल होंगे मगर सुन्दर अच्छा अय्याश साफ सुथरे रहने वाले होंगे। धन घटे

हर ओर मंदी हालत स्त्री बांझ। — जब खाना नं० 8 खाली हो।

6. संतान शादी में गड़बड़ स्वयं कमाई करने के योग वाली स्त्री संतान को जन्म देने और गृहस्थी योग में मंदा ही फल देगी अगर नेक ठीक चले तो जीवन आराम से भरा होगा। — जब वृ० 8-9-10 में हो (संतान रेखा विवाह रेखा को आ काटे)।

उपाय :- ऐसे प्राणी स्त्री चाहे पुरुष के खून या वीर्य में कमी, संतान की बीमारियां हो मगर पेशाब की नाली में पुरुष चाहे स्त्री शायद ही कमी या खराबी होगी। इसलिए खून में संतान पैदा करने की दवाईयां (ुराक के तौर पर) जिनमें मंगल की चीज़ें शामिल हों, अगर आवश्यकता पड़े तो सहायक होगी।

शुक्र खाना नं० 3

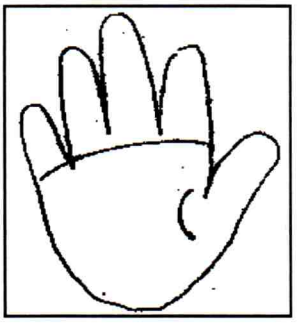

बुरा क्यों जो इज़्ज़त तू औरत की करता।
वक्त पर है तेरे जो स्वयं मर्द बनता।।

केतु[1] भले पतिव्रता औरत,
गुरु ज़हर 9 मंदा स्वास्थ्य,
बुध मंदा घर 11 बैठे,
महल बाड़ी चाहे पर्वत ऊंचे,
मित्र मंगल 7 दूजे बैठा,
लकीर लेटी खुद शुक्र सीता,
चोरी कभी न होती हो।
शनि रेखा 9 पितृ हो।
शुक्र मंदा ज़र घटता हो।
नींद 34 न सुखिया हो।
आठ मंदा न चन्द्र हो।
पार गऊ भव सागर हो

1. शुक्र खाना नं० 3 वाले पर स्त्री मरती ही होती है मंगर स्वयं की स्त्री गाय की जगह बैल और शेर स्वभाव (खूंखार तंग करने वाली होगी मगर हौसले वाली होगी) बुरी स्त्री भी लाभ देगी।

हस्त रेखा

गृहस्थ रेखा, मंगल नेक से शुक्र के पर्वत में अंगूठे की जड़ में झुक जाए, धन रेखा शुक्र के पर्वत से होकर मंगल नेक पर समाप्त हो।

नेक हालत

चाहे यह मनुष्य हर स्त्री का प्यारा होगा, इश्क का परवाना, मगर उसके स्वयं के लिए अपनी स्त्री का मान करना शुक्र नेक की नींव होगी। अब शुक्र गाय की जगह बैल की हैसियत का होगा यानि अपनी स्वयं की स्त्री मामूली हैसियत होने की बजाय टेवे वाले के सगे भाई की तरह की जैसी हि मती सहायक होगी। ऐसी स्त्री चाहे दूसरों के लिए भयानक पशु (शेर जैसी) हो मगर अपने मर्द के लिए कायर या खुशामंद पसंद ही होगी जिससे बैठे बैठे मृत्यु का देवता और चोरी और सभी घटनाओं से बचाव होता रहेगा। दिमाग़ी खाना नं० 3 मंगल से मुश्तरका प्यार या माता-पिता के प्यार का स्वामी होगी, 1 से 15 साल आयु का प्यार या माता-पिता का प्यार। अगर पकड़े ही गए तो प्यार से क्यों घृणा और सामने आती हुई थैली पर इन्कार न होगी, के स्वभाव का स्वामी होगा। पराई और बुरी स्त्री और बुरे पुरुष भी सभी फायदा और सहायता देंगे।

संक्षेप में- शुक्र खाना नं० 3 वाले पर कोई न कोई स्त्री मोहित हो जाती है। उदाहरणतया ऐसा प्राणी सड़क के किनारे जा रहा था पीछे से आवाज़ आई कि ऐ मुसाफिर मैं भी तो तेरी साथिन हूँ। कुछ दिन हुए विवाह का शुभ मुर्हूत मनाया था और मैं फिर भी आपको ढूँढ़ रही थी। मगर वह कांपती आवाज़ में उत्तर दे कि मेरी स्त्री तो हमारे घर है। बातों-बातों में वह स्त्री उसके गले चिमट ही गई जिससे वह शक में ही रहा कि असल स्त्री कौन है, कहाँ है आखिर उसकी हाँ में हाँ मिलाता समय गुजारता आगे चला गया। ऐसी मज़बूरन गलतियों के कारण टेवे वाले को अपनी स्त्री से दब कर ही रहना पड़ेगा।

3. स्त्रियों की साधारतय: इस घर में कदर होगी और स्त्री स्वयं पतिव्रता होगी। जिसकी दम तक कभी चोरी न होगी। — जब केतु उत्तम हो।
4. उत्तम पितृ रेखा का ल बा प्रभाव होगा अर्थात् माता-पिता का सुख सागर ल बा। — जब शनि नं० 9 हो।
5. मिट्टी की लकीर की तरह बहुत कम हालत की मिट्टी की बेजान चीज़ें भी बोलती हुई सीता पतिव्रता की तरह उत्तम फल देगी। शुक्र अब चन्द्र का भी उत्तम फल देगा। मु त की रोटी या गुजारा आसानी से होता होगा। 20 साल की तीर्थ यात्रा का शुभ उत्तम फल होगा, पितृ रेखा का फल उत्तम ल बे समय तक फल होगा। — जब मित्र ग्रह बुध, शनि, केतु या मंगल नं० 2-7 में हो।

क्याफा

गृहस्थ रेखा बुर्ज नं० 3 से चल कर बुर्ज नं० 7 पर समाप्त हो या धन रेखा शुक्र के बुर्ज 7 से शुरू होकर मंगल के बुर्ज नं० 3 में समाप्त हो। यदि बुध भी नेक हो।

6. मिट्टी की हालत में भी तालाब की मिट्टी ऐसी मिट्टी होगी जो पशुओं के पेट की बीमारियां दूर करने के लिए उसके हाथ से दी हुई शुभ होगी। शुक्र अब वृ० और सू० से भी उत्तम फल देगा। बुध, केतु अब चन्द्र का असर शुक्र में पैदा होने पर शुक्र से शत्रुता न करेंगे। खाना नं० 8 के बुरे ग्रह का मंदा प्रभाव भी नेक करके मौत का मुंह तोड़ देगा।
— जब नं० 8 मंदा न हो बल्कि चन्द्र भी उत्तम हो।

क्याफा :- कलाई रेखा या अंगुलियों की पोरियों पर शुक्र के लेटे खत।

7. शुक्र का जब खाना नं० 9-11 में उसके मित्र-शत्रु पर बुरा प्रभाव न होगा, अपने खानदानी मर्दों पर शुभ प्रभाव होगा हर तरह से प्रसन्न होगी। उत्तरदायित्व पूर्ण करके निश्चिन्त हो। — जब वृ० दोबारा खाना नं० 2 में आए या वृ० का दूसरा दौरा शुभ यानि आयु का 49वां साल।

मंदी हालत

1. स्वयं शुक्र का विषैला प्रभाव और मंदा स्वास्थ्य बल्कि सारी कुल की ही मंदी सेहत और दुखिया। हर ओर बीमारी जहमत।
— जब वृ० नं० 9 हो।
2. शुक्र स्वयं बर्बाद होगा, 34 साल की आयु तक चाहे लाख कितने ही धन महल गाड़ियां हों। सुख की नींद नसीब न होगी। धन हर रोज़ घटता ही जाएगा। — जब बुध खाना नं० 11 में हो।
3. अब 9-11 के ग्रह बर्बाद न होंगे, बल्कि वहाँ शत्रु ग्रहों के वक्त खुद शुक्र बर्बाद होगा।
— जब खाना नं० 9-11 के ग्रह हो।
4. लाखोंपति होता हुआ भी अपने पेट के लिए अनाज की कीमत के बराबर मेहनत किए बगैर रोटी न पाएगा।
— जब शुक्र, मंगल बद का संबंध (अंगुलियों की पोरियों पर लेटे खत)।
5. शुक्र खाना नं० 3 का मंदा असर सिर्फ धन पर होगा औरत का हाल इसके टेवे वाले के अपने लिए बर्ताव के संबंध में उ दा न होगा। गुरु (16 से), चन्द्र (24), बुध (34) साल की उम्र तक के भाग्य का असर मंदा हो। लड़कियों (बुध) स्त्रियों (शुक्र) का मंदा हाल और भाई बन्धुओं के हाथों से धन हानि आम होगी। लड़कियों के हाथ और संबंध में धन बर्बाद होगा। **अपने बनाए मकानों का सुख न होगा न ही पिता (वृ०) की जायदाद या उसका (पिता का) सोना जातक के किस काम आएगा। पिता की तरफ से बुध की चीज़ें (ल बी-ल बी किताबों की लाईब्रेरी) संगीत के सामान राग रंग के सामान प्राय: बाकी मिलेंगे।** — जब बुध, मंगल मंदा हो।

शुक्र खाना नं० 4

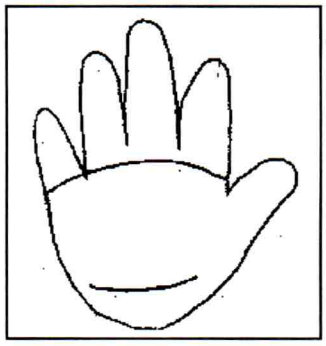

नुक्स चार अपना इश्क औरतों का।
चश्म पोशी करते भी लानत ही देखा।।

साथ टेवे न ग्रह कोई साथी, सात दूजा भी खाली हो।
औलाद कमी की अजब कहानी, ज़िन्दा स्त्री दो बैठी हो।
नशा उजाड़े सात शनि से, चन्द्र फकीरी रेखा हो।
बैठा कोई ग्रह 2-9 टेवे, एक स्त्री ही जीवित हो।
शनि मंदा बुध, राहु मंदा, भला शुक्र न चन्द्र हो।
गुरु, केतु भी चलते उल्टा, लेख स्त्री ग्रह मंदा हो।
बुध स्वभाव साथ शनि का, लेख स्त्री गुरु चलती हो।
पापी बैठे बुध मंगल राजा', औलाद कल्पना हरती हो।

1. पहली ही स्त्री से यदि मर्द पूरी तरह दो बार शादी कर ले तो शुक्र की दो स्त्री होने की शर्त न रहे। संतान जल्दी होगी, मगर अब स्त्री की सेहत खासकर गर्भाशय बर्बाद होती हो। ऐसे समय मंगल की चीज़ें, काम, कारोबार, रिश्तेदार जो मंगल से

संबंधित हो से शुक्र को मदद मिलेगी। घर की सबसे पुरानी दहलीज मंदे समय सहायक होगी।

हस्त रेखा

फकीरी रेखा, नशा रेखा, शराफत रेखा सीधी लकीर लेटी हुई जो चन्द्र, शुक्र को मिलाये।

नेक हालत

ज़मीन सफ़र सदा होता रहेगा जो नेक हालत और उत्तम परिणाम देगा, शादी के 4 साल बाद खूब आराम मिले, बाग लगाने का मौका मिले। उसके भाग्य की कलम उसके वृहस्पति के हाथ होगी, जब तक वृ० से शनि का संबंध न हो। वरना बुध के अपने स्व ाव के नियम पर बुध की हालत से फैसला होगा। फिर भी मर्द के लिए उसकी स्त्री के भाग्य की सहायता साथ न होगी, मगर वह स्वयं ऐश करेगी। दिमाग़ी खाना नं० 4 चन्द्र से आपसी दोस्ती या मुलाकात की शक्ति, ऐश पर पर्दा, खूबी पर नज़र डालने की शक्ति, उल्फत, प्यार और प्यार के बाद का गलवा, प्यार के तीन हिस्सों का स्वामी जहाँ दिल और आँख मिले-मिलाते जाना। एक चारपाई पर दो अतिथि या एक अतिथि के लिए दो चारपाईयों तो ज़रूर होगी, मगर आराम करने की जगह या नवार सदा भीगा ही रहेगा या सब होते हुए माया बर्बाद, संतान की कमी होगी। ऐसे समय चन्द्र का उपाय सहायता देगा वरना कुएँ में वृ० की चीज़ें गिराना सहायक होगा।

स्त्रियां एक ही समय में दो जीवित होंगी एक बूढ़ी मां की तरह बड़ी आयु की, दूसरी ऐशो आराम की मालिक हरफनमौला समय की बेगम होगी। मगर संतान की फिर भी कमी होगी या नि:संतान होगी।

— जब खाना नं० 2-7 खाली और शुक्र किसी दूसरे का साथी ग्रह न बन रहा हो।

शुक्र चौथे जब पानी आया, *स्त्री हुआ विराग।*
एक से दो भी हुई, *पर बुझी न उनकी आग।*

मंदी हालत

पत्थर (शनि) भी रेत हो गर, *तो रेत (बुध) उड़ता होगा।*
औरत की हो आज़ादी (बदमाश), *बुध, केतु मंदा होगा।*

1. इस घर के शुक्र से संबंध में यह साफ होगा कि सुन्दरता जवानी के बाज़ार में बिकने लगी। जिसके तबादले में जवाब होगा कि चोरी कर लेने की जगह किसी को चोर न कहना न सिर्फ दिली खून को जोश देगा बल्कि जान लेने का हमला करने के बराबर होगा।
2. बंद कुआँ या कुएँ पर छत **डाल कर मकान बनाने पर पूरी लावल्दी का सबूत होगा। प्यार-मुहब्बत बुरे अर्थों में बर्बादी के लिए दीमक से कम न होगी। ऐब पर पर्दा खूबी पर नज़र डालना सहायक होगा। 22-24-25-32-34-47-51-60 साल की आयु में शादी अशुभ होगी।**
3. नुक्स (जब शुक्र अकेला और खाना नं० 2-7 खाली हो) अपना इश्क औरतों का, चश्मपोशी करते वह लानत ही देगा।
4. स्त्री का भाग अच्छा या बुरा वृ० की हालत पर होगा। — जब शनि, वृहस्पति साथ न हो।
5. नशे से बर्बाद होगा। बुध की चीज़ें और काम बहाना होंगे बल्कि वृहस्पति, केतु भी निक मे होंगे। शुक्र और चन्द्र के मिलाने वाली नशे की फकीरी रेखा। — जब शनि का साथ हो।
6. फकीरी रे ा बहुत निर्धनता हाथ तंग मगर भगवान् की सहायता ज़रूर होगी तथा उत्तम। — जब चन्द्र का साथ हो।
7. प्यार तबाही का कारण होगा और संतान की कमी होगी। — जब शनि मंदा हो।
8. शुक्र और चन्द्र की लड़ाई, बहू और सास का झगड़ा हर दो ग्रहनाकस। मामा बर्बाद मंदी और खराब हालत की नींव स्वयं चन्द्र पर होगी। — जब वृ० खाना नं० 1 में हो।
9. शुक्र मंदा फल देगा लड़कियां बर्बादी का कारण होगी। उसकी स्त्री, मर्द के खानदान के लिए मंदी और अशुभ होगी। — जब बुध खाना नं० 6 या चन्द्र मंदा हो।
10. संतान की कमी दूर होगी। — जब मंगल, बुध बल्कि पापी ग्रहों से कोई भी अपने दूसरे दौरे के अनुसार खाना नं० 1 में आ जाये या शुक्र का साथी हो जाये।

शुक्र खाना नं० 5
(बच्चों से भरा परिवार)

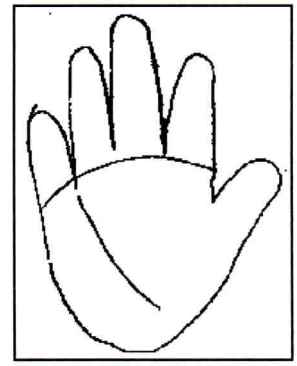

ज़माने की माताएँ औरत जो तेरी
नस्ल तेरे बच्चों की तुझे कौन देगी।।

आग़ जली न मिट्टी उड़े, उड़ेगी जिस दम वो।
जो ग्रह [1] पहले 9 वें, अंधा, काना हो।
दोस्त शुक्र ग्रह कायम होते, पार माया भवसागर हो।
शत्रु मगर 7 पहले बैठे, पतंग फटा शुक्र घर शुक्र हो।
कायम ग्रह नर शुक्र देखे, माया दौलत सब चढ़ता हो।
12 जले घर शुक्र मंदे, बैठा भला चाहे 3-8 हो।
दृष्टि शुक्र न जब कोई करता, चोर शुक्र स्वयं होता हो।
एक अकेला न कोई मंदा, औत गया ही आवा हो।
सेवा गऊ और चन्द्र होते, संतान सोना घर भरता हो।
चलन मंदे बच्चे बाहर बनते, आग़ जली जोड़ी मरता हो।

1. जो गृह खाना नं० 1 या 9 में हो उस ग्रह के संबंधित रिश्तेदार सिवाय सूर्य नं० 1 और वृहस्पति खाना नं० 9 में हो।

हस्त रेखा स्वास्थ्य रेखा या सूर्य की तरक्की रेखा शुक्र से चल कर बुध पर समाप्त हो जाये।

नेक हालत

बच्चों के परिवार से भरी हुई स्त्री जिसके बैठे (या शुक्र की चीज़ें कायम होते) रिज़क कभी बंद नहीं होगा।

1. दिमागी खाना नं० 5 ऐश तथा परिवार के प्यार वाला और देश भक्ति का परवाना हो। अगर सूफी तो भवसागर से पार यदि आशिक दुनियां हुआ तो वृक्ष में अड़ी कटी पतंग की तरह का भाग्य होगा। बल्कि एक को क्या रोते यहां तो कबीला ही मंदा हो गया होगा। एक आदमी ने कुत्ता, बिल्ली पाले, आदमी ने मकान बदला तो कुत्ते ने मालिक को न छोड़ा, बिल्ली पिछले मकान की तरफ भागी। तेरे चालचलन से ही तेरे भाग्य खासकर माली हालत का भेद खुल जायेगा मगर स्त्री और संतान पर फिर भी मंदा प्रभाव न होगा।
2. **सूफी धर्मात ा होगा और भवसागर से पार करने वाली गऊ माता की तरह उत्तम लक्ष्मी और कुल को तारने वाली स्त्री होगी।** — जब मित्र ग्रह बुध, शनि, केतु कायम हो।
3. माया धन बढ़ता, देश परिवार के प्यार को चाहने वाला तथा शुभ होगा। — जब नर ग्रह कायम या साथ-साथी हो।
4. खाना नं० 1-9 के ग्रह से संबंधित रिश्तेदार शुक्र से धन की बरकत पाएंगे या टेवे वाले को उस ग्रह के संबंधित कारोबार दौलत की बरकत देंगे। — जब बुध या पापी खाना नं० 1-7 में हो।
5. हर तरह की बरकत होगी। — जब सूर्य खाना नं० 1, मंगल खाना नं० 3 में हो।

मंदी हालत

1. अपना मंदा चालचलन शनि करवाता रहे। मंदा भाग्य मंदे चालचलन का सबूत देगी। शुक्र कम ही मंदा होगा। अब संतान पर कभी बुरा असर न होगा, यानि संतान ज़रूर होगी। अगर होगी तो खाना नं० 1-9 के ग्रह सिवाय सूर्य नं० 1 या वृहस्पति नं० 9 का संबंधित रिश्तेदार जैसे राहु (ससुराल), मंगल (बड़ा भाई, ताऊ) आदि अंधा या काना या उस ग्रह से संबंधित कारोबार बर्बादी का कारण होंगे। — जब शुक्र मंदा हो या मंदा कर लिया जाये।
2. खाना नं० 12 जलता होगा, चाहे खाना नं० 3-8 अच्छा ही हो। टेवे वाले पर मंदा प्र ााव न होगा। मगर साथियों पर शुक्र अब वृक्ष में फंसे हुए पतंग की तरह लिपटा हुआ भाग्य की हानि देख रहा होगा। चन्द्र उसे डोर का काम देगा। इश्क सांसारिक कामकाज होगा, देश प्रेमी होगा। — जब दुश्मन ग्रह सू० -चं० -रा० खाना नं० 1-7 में हो।
3. शुक्र (स्त्री या शुक्र से संबंधित कारोबार खुद चोर हो और चोरी में गया माल शायद ही वापिस हो) और ऐसे टेवे वाले की स्त्री ही ऐसी न होगी बल्कि वहाँ तो आवा ही उत गया, सब एक जैसे होंगे जो भी न हो सकने वाली कही सत्य हो। दिन को ज्ञान, रात को इश्क स्नान। धर्म सिर्फ एक धोखे का ही पर्दा बनाया गया है, के विचार का आदमी होगा।
— जब शुक्र की दृष्टि में कोई भी ग्रह न हो।
4. आशिकाना प्रेम के नतीजे की हुई शादी या माता-पिता के विरुद्ध किया विवाह सौन्दर्य की वजह से की शादी हो तो ऐसे

प्राणी की औलाद उसे बाप न कहेगी या बाप न मानेगी। औलाद बाप के काम न आएगी।

5. चन्द्र का मंदा असर अब शुक्र पर हो। चन्द्र अब शुक्र के पतंग की डोर का काम देगा मगर अब उपाय भी चन्द्र का ही मददगार होगा। — जब चन्द्र मंदा हो।
6. शत्रु ग्रहों का अब शुक्र पर या शुक्र के फल पर कोई मंदा असर न होगा। — जब शत्रु ग्रह साथ बैठे हुए हो।
7. गऊ और माता की सेवा करने और साफ पवित्र दिल रहने से घर बार में धन-दौलत की बरकत होगी और चालचलन की बर्बादी से जब बच्चे बाहर बनने और बनाने लगे तो मर्द औरत की जोड़ी दु:खी, जल कर बर्बाद हो।

उपाय

सेहत के संबंध में शुक्र की जगह (गुप्त अंग) पर मर्द चाहे औरत दूध और दही से धोते रहना शुक्र की उड़ती मिट्टी (दुनियावी अफवाह) से बचाव होगा, बल्कि शुक्र का स्थान (लिंग, योनि) आदि साफ रखते हुए गृहस्थी परिवार माल सामान में माया के आने-जाने की नाली भी साफ गिनी जाएगी।

शुक्र खाना नं० 6

(शान से रखी तो दौलत के महल वरना नीच दौलत— कुलक्ष्मी)

जवानी तू न गर बच्चे भुलाता।
बुढ़ापा न दुनियां में तुझको रुलाता।।

ज़ाहिरदारी और मान उत्तम,
आठ मंदा दो साथ जो मिलता,
गुरु रवि कोई 6-2 बैठे,
साथ शनि या मंगल होते,
राज संबंध बेशक नीचे,
लड़का गर उस घर कोई जन्मे,
छठे-सात घर शत्रु बैठे,
रवि, गुरु चाहे चन्द्र मिलते,
बुध मंदे की सेहत मंदी,
केतु हुआ मंद दुश्मन बैरी,
शुरू शरारत पाप हो करता,
जन्म मंदा ग्रह तख्त पर आता,
शुक्र बुरा न खुद कभी होगा,
भला जन्म ग्रह जब कभी मंदा,
असर गिना घर दो का हो।
शुक्र देता फल 12 को।
शुक्र रेखा मच्छ होता हो।
हीरा रिज़क, ज़र चश्मा हो।।
साया धन का होता हो।
साल 12 न दूसरा हो।
केतु साथी गुरु 12 जो।
असर सभी का मंदा हो।
शनि बुरे ज़र घटता जो।
बांझ स्त्री या खुसरा हो।
मंगल नतीजा देता हो।
ज़हर टेवा सब धोता हो।
असर बुरा हमसाया हो।
दृष्टि मारा ज़र माया हो।

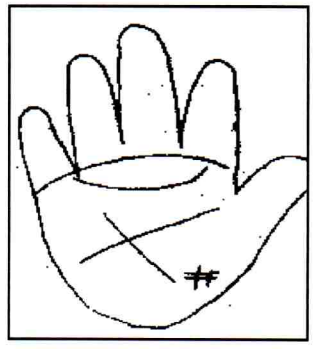

शुक्र का पतंग— कामदेव रेखा

यह रेखा पतंग या (दिल रेखा) जो बुध और शनि को मिलाए घर की रहनुमाई या भाई बन्दों पर संयम या न बरदारी ज़ाहिर करती है। ऐसा व्यक्ति धर्महीन होने के इलावा स्त्री जाति की प्रशंसा के पुल बनाने और ज़ुबानी याद में समय गुजारने का हामी होगा और दूर बैठे जवान की तरह इश्क को याद करता होगा। स्वास्थ्य अच्छा, जवान और आँखों की शक्ति सलामत हो। स्त्री जाति तथा अपनी स्त्री के खानदान के संबंध नेक होगा मगर सूर्य की किरणें इस शुक्र के दरबार में मैला सा रंग दिखाती है। यानि वह सरकार के घर से पैसा कमाने वाला सीधा संबंध नहीं रखता होगा मगर राज दरबार वालों की कमाई से अपना कारोबार लगाए बिना नहीं रह सकता। इतना ज़रूर है कि वह अपने साथ चलने वालों को कई बार खराब कर देता है (शुक्र नीच का फल होगा) और गृहस्थ के कामों में बुरा प्रभाव होता है, क्योंकि शुक्र और सूर्य आपस में मित्र नहीं है इस रेखा का उसके स्वयं पर कोई बुरा असर न होगा। टूट-फूट से दिमाग़ी कमज़ोरी, दीवानगी और बुध के बुर्ज से शनि तक की पूरी ल बाई की हालत में उसके विचारों में पशुता और परेशानी हुआ करती है ऐसे प्राणी (शुक्र खाना नं० 6) की स्त्री सदाबहार और खुद ऐशी पट्ठा होगा। स्त्री के टेवे शुक्र खाना नं० 6 के टेवे में यही बात उल्ट कहेंगे। उसकी स्त्री को ज़मीन पर नंगे पाँव नहीं चलना चाहिए अच्छा तो यह है कि जुराब आदि डाले ताकि तलवा फर्श से न छुए। गाय, बैल धन-दौलत चोरी या गुम हो जाना निशानी होगी। वृ सांस, दमा आदि सूर्य शरीर और गुस्सा नीच हालत की निशानी है। दिल रेखा के सही होते यानि चन्द्र कायम होते हुए शुक्र का असर कभी बुरा न होगा, मगर चन्द्रोदय बुरा प्रभाव देंगे शुक्र जब कभी भी खाना नं० 1 में स्वयं नीच हो उसने मंगल बद का असर

न दिया शुक्र गुम से चाहे बुद्धि जाती रही। बुध ने साथ छोड़ा स्त्री को कष्ठ हुआ मगर धन गुम न हुआ। अगर शुक्र नीच से अक्ल गुम हुई तो भाग्य ने हार नहीं दी। लल्लू करे कव्वालियां रब सिद्धियां पावे। यानि रोज़ी अक्ल के हिसाब से होती तो नादान या बेवकूफ से तंग रोज़ी वाला और कोई न होता यानि शुक्र का नीच हो जाना अपने लिए मंदा नहीं होता यानि इस ग्रह का दुनियां से संबंध होना, न होना विशेष फर्क नहीं। दुनियां का आशिक न होगा तो दुनियां का त्यागी ज़रूर होगा, विराम से नहीं बल्कि अक्ल की कमी से। खराब रेखा से कृपा न करने की आदत, स्वभाव का बदल जाने वाला होगा।

नीच हालत

शुक्र खाना नं० 6 गरीबों की सहायता और उनको रुपया पैसा खिलाएगा बुद्धि के उल्ट कई काम करेगा। अपने घर का फायदा न पाएगा, स्त्री, परस्त्री या स्त्री सुख न होगा। **आखिरी आयु में आराम होगा, जिसके लिए चन्द्र का उपाय सहायक हो,** जब यह रेखा शुक्र की पतंग सिर्फ बुध के पर्वत खाना नं० 7 कनिष्ठा की जड़ पर ही हो तो शुक्र खाना नं० 7 होगा और सूर्य के बुर्ज खाना नं० 1 पर अनामिका की जड़ ही में हो तो शुक्र खाना नं० 1 का होगा और जब शुक्र का पतंग सिर्फ मध्यमा की जड़ में ही हो तो शुक्र खाना नं० 10 का फल देगा जिसके लिए शुक्र खाना नं० 10 का हाल देखें।

हस्त रेखा

सेहत रेखा या सूर्य की तरक्की रेखा जब शुक्र से चल कर हथेली की बड़ी आयत खाना नं 6 में समाप्त हो, शुक्र पर राहु का निशान हो।

नेक हालत

लल्लू करे कव्वालियां, रब सिद्धियां पावे।
लड़के उस घर से डरे, कुड़ियां पल्ले पावे॥

स्वयं अपना दिखावा उत्तम तो सांसारिक शान उत्तम होगी। आखिरी आयु में आराम के लिए चन्द्र का उपाय सहायक। दिमाग़ी खाना नं० 6 केतु से मुश्तरका दिलचस्पी या पक्का प्यार हर काम के लिए तैयार या लगा रहने वाला काम पूरा किए बिना न छोड़ने का हामी। मगर भाग्य का ऐसा चक्कर कि इन्तज़ार करते-करते समय निकल गया और अंत में वस्ल की रात और आशा का फल निक मा ही मिला। संतान के लिए नीच फल बाकी वही फल जो शुक्र खाना नं० 2 का है।

1. शुक्र खाना नं० 12 का उत्तम फल होगा। राज दरबार का संबंध चाहे नीचा। — जब ाना नं० 8-2 का मंदा प्रभाव शामिल हो या खाना नं० 2-8 में शुक्र के शत्रु सू० , चं० , रा० ग्रह उपस्थित हो या वैसे ही खाना नं० 8-2 मंदे हो रहे हों।
2. शुक्र कभी बुरा होगा -जब तक चन्द्र कायम हो।
3. उत्तम जीवन। मगर शुक्र का अपना प्रभाव रा: के: की हालत पर होगा, -जब मंगल साथ साथ हो।
4. मच्छ रेखा चाहे अपनी या अपने पिता की। -जब सू: या वृ: खाना नं: 2-6 और खाना नं: 12 में कोई ग्रह अवश्य हों।
5. खूब धनवान होगा। शुक्र कीमती हीरा मगर संतान नालायक ही होगी। भाई बन्धु और गृहस्थी साथियों की बरकत और सहायता। बल्कि मच्छ रेखा चाहे पिता की तरफ से यानि 7 भाई तीन बहने या मच्छ रेखा अपनी तरफ से 7 लड़के तीन लड़कियां। -जब सू: या वृ: या दोनों खाना नं: 6-2 साथ-साथी हो।
6. शुक्र खाना नं: 6 वाले पुरुष-स्त्री को अच्छा होगा कि वह ऐसे पुरुष-स्त्री से शादी करवाए जो अकेली बहन, अकेला भाई न हो अर्थ यह है कि शुक्र खाना नं: 6 सिर्फ उस समय ही मंदा होगा जब मंगल (भाई-बन्धु) की तरफ से वह अकेला ही हो।
7. शुक्र के मित्र ग्रह (श:, बु:,के:) पहले स्वयं मंदे असर का सबूत देंगे या शुक्र के शत्रु ग्रह (सू:, वृ:, चं:, रा:) अपनी मंदी या बुरी हालत जाहिर करेंगे जिसके आने की पहली निशानी (मकान मशीन (शनि), बहन, बुआ, लड़की (बु:) संतान या शारीरिक जोड़, कान, रीढ़ की हड्डी) आदि (केतु) से शुरु होगी, जिस की सहायता में टेवे वाले के जद्दी मकान की तहखाना, तह ज़मीन के अन्दर या दीवारों का अपनी बनावट के अन्दर से छुपाए मगर खुद बनाए पोल या बहुत बड़े-बड़े बर्तन, गोल शक्ल के चाहे मिट्टी या धातु के हो (बुध की चीजे) या शनि के समान हो लोहे के बड़े, कद से बड़े बक्से, लोहे का सेफ आदि तह जमीन में दबे हुए)। फैंसला बुध की हालत तथा बुध को शनि की सहायता की शक्ति पर होगा।

राहु केतु शरारत की सब से पहिले खबर देगें और मंगल आखिरी परिणाम बना देगा। यानि शुक्र का प्रभाव उसके सहायक साथी साथ वाले ग्रहों से फैसले पर पहुँचेंगे।

मंदी हालत

1. शुक्र और उसका साथी दोनों बरबाद मंदे, चांदी ठोस घर में रखनी शुभ,
   -जब खाना नं: 6-7 में कोई भी साथी हो सिवाए मं: वृ:।
2. शुक्र अब मंदा असर देगा: औलाद हर तरह से मंदी, पिता बचपन में चल दे और स्त्री का फल (संतान आदि) 28 साला आयु के बाद उत्तम। -जब खाना नं: 2 खाली या सू: नं: 6 और नं: 2 खाली हो।
3. स्त्री जिस तरह शान से रखी, धन के महल बने वरना नीच धन होगा, कुलक्ष्मी होगी।
   -जब बुध खाना न: 5 मंदा हो।
4. खाना नं: 3-4-7-9 के ग्रहों का मंदा हाल होगा मगर नं: 10 का ग्रह सहायता देगा। या बुध न: 1 में आ जाने पर सब कुछ आ जायेगा। -जब बुध खाना न: 5 मंदा हो।
5. सब ही ग्रहों का फल मंदा होगा चाहे सू:, चं:, वृ: सब की सहायता हो जाए। -जब केतु साथी और वृ: खाना नं: 12 में हो।
6. पहली स्त्री मर जाए। राहु के समय तक शत्रुओं से कष्ट हो। -जब रा: खाना नं: 2 में हो।
7. सेहत मंदी होगी और हाशिया दिए हुए सब ही खाना न बरों का प्रभाव मंदा बल्कि बर्बाद कर देगा मगर ऐसी हालत में खाना नं: 1 का ग्रह सहायता देगा या खुद बुध खाना न: 1 में आने के समय से सब कुछ फिर से हो जायेगा।
   -जब बु: मंदा सिवाए बुध खाना नं: 5 और खाना नं: 9 बड़ों का खानदान, खाना नं: 3 भाई-बन्धु, खाना न: 4 माता खानदान तथा माता खाना नं: 6 मामा, खाना नं: 7 स्त्री लक्ष्मी, खाना नं:10 पिता की आयु नं: 11 आय, खाना नं: 12 रात का सुख।
8. शु: का फल मंदा होगा, नर संतान की कमी होगी -जब बुध नं: 8 हो।
9. धन दौलत प्रतिदिन घटता जाएगा। -जब शनि मंदा हो।
10. गंदी नाली, औरत बांझ या मर्द खुसरा होगा। नर संतान न होगी या दु:खी रहेगा। अगर होगी तो लड़कियों के टोकरे भरे होगें। अक्ल की चाहे कमी हो मगर रिजक की कमी न होगी। फिर भी त्यागी होगा। पराई और मंदी स्त्रियां बर्बादी का वैसे ही गले पड़ने की तरह बहाने बनेगी। -जब केतु मंदा या साथ-साथी खाना नं: 6 हो।
11. शुक्र खाना नं: 6 वाले पुरुष या स्त्री के नर संतान पैदा करने के संबंध में कोई बीमारी न होगी अगर होगा तो उसकी गुप्त अंग की जिल्द में नुक्स होगा वह भी फालतू कीड़े पैदा होंगें। खासकर जब संतान पैदा करने के सवाल को भूले हुए, स्वप्न में भी याद न लाया जाए।

उपाय :- संतान की मंदी हालत

पैदा न होना या होकर मर जाना या लड़कियाँ ही लड़कियाँ पैदा होने के समय ऐसे प्राणी मर्द चाहे स्त्री के गुप्त अंगों की सफाई के लिए मंगल की चीजें जिससे कीड़े मर जाते हो, प्रयोग करे। डाक्टर की सलाह लेकर ऐसी चीजों से धोए। (लाल दवाई या सौफ का उबाला रस किसी और दवाईयों से मिलाकर धोने के लिए बनाया पानी इस्तेमाल करें जिस का रंग मंगल का रंग हो, लें।

12. घर की न बरदारी से सबको सूखे तालाब में ी डूबो देगा, खास कर जब स्त्री के लिए मुंह से प्रशंसा या इश्क में फर्जी पुल बनाते हो। -जब शु: दृष्टि से खाली या बर्बाद हो।
13. नर संतान जब भी हो तो दूसरा बच्चा 12 साल बाद ही हो। -जब शुक्र सोया हो या मंदा हो, नीच हो।
14. धन बर्बाद शुक्र का हर तरह से मंदा फल ही होगा। मंदे समय की शरारत पहले पापी ग्रहों द्वारा ही होगी और नतीजा मंगल की हालत पर ही होगा। पापी ग्रहों के द्वारा का अर्थ है कि पापी ग्रहों की चीजें कारोबार संबंधी आदि।
    -जब वृ: खाना नं० 7 से 12 या सू: भी खाना न: 6 के

बाद के घरों में हों।

15. जन्म कुण्डली का मंदा ग्रह जब नं: 1 में आएगा, टेवे की सारी विष धो देगा, शुक्र स्वयं भी बुरा न होगा। साथ वाले ग्रह का बुरा प्रभाव होगा, स्त्री के नंगे पैर फिरना पैर के तलवे का धरती पर लगना संतान की कमी देगा। शु: खाना नं: 6 का फैसला बुध की हालत (बुध को शनि की सहायता या शक्ति) पर होगा। स्त्री के सिर पर बालों में सोना रखना धन और लक्ष्मी की वृद्धि में सहायक होगा पेशाब गाह को दही से धोते रहना उत्तम होगा। शादी के समय अगर माता पिता होने वाले जवाई या बहू, जिसका शुक्र नं: 6 में हो, को खालिस सोने के दो टुकड़े संकल्प कर दे तो सारी आयु वह संतान के संबंध में सहायक होंगे।
16. जो काम करें मन्दा परिणाम । अक्ल खराब होगी। वृ:, सू:, चं: तीनों ही का फल मंदा या तीनों ग्रह सोये होगें या तीनों ही ग्रह से संबंधित चीजों का कोई लाभ साथ या सहारा न होगा। –जब खाना नं: 7 में शु: के साथ ग्रह या कोई भी बाहम शत्रु लड़ रहे हो।

क्याफा:- शुक्र का बुर्ज नीच हो।

शुक्र खाना नं: 7
(जैसा यह वैसी वह साथी का प्रभाव, अकेला नेक)

एवज़ गैर पतिव्रता अपनी जो भूली।
सफर गुजर हो उस की लम्बी,
लगन पराई स्त्री मंदी,
नकल फौरन हो' रानी करती,
सात पहले 9-11 बैरी,
शनि 9 वें घर 11 बैठा,
चन्द्र टेवे जब तख्त हो पाता,
4 रवि और चन्द्र पहले,
4 रवि और चन्द्र पहले,
नामर्द हुआ या सुथरा गिनते,
औलाद केतु और शनि गृहस्थी,
परिवार कबीला बुध की गिनती,
4 दूजे बुध नेकी करता,
साथ राहु या हो गुरु मंदा,
जली माया घर की यह क्या नार आग ले ली।
रिजक तिलक परदेसी हो।
चंडाल गुस्से जड़ कटती हो।
उम्दा होता जब ग्रह कोई हो।
माया दौलत सब बढ़ती हो।
सामान आराम कुल दुनिया हो।
जले शुक्र खुद रोता हो।
साथ शनि खुद रोता हो।
साथ शनि भी बैठा हो।
सांड खस्सी जन खुसरा हो।
हालत राहु खुद माली हो।
चाल शुक्र 4 तरक्कीं की हो।
आठ रवि बुध मंदा हो।
असर शुक्र सब मंदा हो।

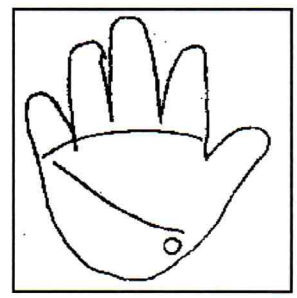

1. खाना नं० 1 का ग्रह या जब शुक्र खाना नं० 1 में हो या जो साथी ग्रह की तासीर और शनि की आखों जैसी चाल होगी, यदि शनि की एक आंख भी साबित हो जाए तो शुक्र उत्तम होगा।
2. ऐसी लक्ष्मी जो चारों और ही चली जा कर रक्षा कर सके।

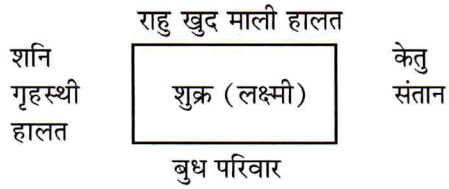

हस्त रेखा :-सेहत रेखा बुध से चलकर शुक्र के बुर्ज की जड़ में समाप्त होगी या शुक्र के बुर्ज पर बुध का चक्र 0 हो।

नेक हालत

1. दिमागी खाना नं० 7 (आयु, जिंदगी बढ़ने की इच्छा) बुध से मुश्तरका ल बी आयु मगर तरक्की से अर्थ नहीं। समय और गृहस्थ में चलते जब तक अकेले हो दिन की उकसाहट के पीछे न जाएगें, मगर दो दिल की दोरंगी का किसी दूसरे से एक रंग होने में प्यार का नाता कभी मंदा न जाएगा।
2. अकेला शुक्र बहुत नेक होगा मगर जो साथी हो उसी का असर और फल देगा। मगर जिस के घर में हो उसी का धर्म होगा और शनि की आंखों की रफतार होगी। जिस के लिए खाना नं० 10 में शनि का हाल देखे और टेवे अनुसार जहां शनि बैठा

हो उसकी आखों के गिनती के अनुसार अगर शनि की एक आंख भी साबित हो तो शुक्र शुभ फल देगा।

3. सफर में ज्यादा समय गुजरेगा और उत्तम होगा या यूँ कहे कि जब तक स्वयं कमाए उस समय तक सफर और परदेस में होगा। आयु का कभी धोखा न होगा जद्दी घर का आराम कम ही मिलेगा और न ही नई बैठक (पुरुषों के बैठने की जगह) बनेगी।
4. जैसा कि खाना नं० 1 का ग्रह होगा या जब भी शु० खाना नं० 1 में आये (3 साल आयु) या टेवे में जब कोई ग्रह उत्तम हो तो शुक्र भी उत्तम होगा या नं० 1 का ग्रह शुक्र का फल और शुक्र खुद नं० 1 में साथ बैठे साथी का फल देगें। शादी, गृहस्थ और स्त्री खानदान की हालत शुक्र की उम्र 25 साल का समय उत्तम होगा।
5. **स्त्री उत्तम नेक स्वभाव जब तक स्त्री रंग में हद से अधिक सफेद या आम दरजा से अधिक सुन्दर न हो या सफेद गाय का संबंध न हो जावे, वह शुभ ही होगी, किसी लेने देन या इधर उधर के झगड़ों में दखल न देगी।**
6. आयु भर जोड़ी सलामत, सुखी अपना गृहस्थ और माता पिता की हालत उत्तम होगी स्वभाव की नर्मी, इंकारी, भाग जाने की निशानी और माया की बरकत की सीढ़ी होगी आयु 80 -90 साल के करीब होगी।
   -जब शु० कायम और उत्तम हो।
7. सफ़र से जिंदा घर वापिस आएगा, मौत कभी परदेस में न होगी।
   -जब वृ० सोया हुआ हो। शुक्र के बुर्ज खाना नं० 7 पर वृ० के खड़े खत पर छोटे-छोटे हो।
8. माया दौलत सब बढ़ती और शुक्र का फल उत्तम होगा। -जब नं० 1-7-9-11 में शत्रु ग्रह सू० , रा०, चं०, हो।
9. शुक्र वही फल देगा जैसा इन चारों में से कोई भी होवे। -जब 1-9-7-11 में मित्र श०, बु० , के० , हो।
10. आम लोगों के आराम के सामान कारोबार बरकत देगें। -जब श० नं० 9-11 हो।
11. शादी के दिन से पुरुष के लिए शुक्र और बुध दोनों का उत्तम फल, 37 साला समय तक उत्तम।
    -जब बु० 4-6-2 में शुभ हो।
12. विवाह शादी और शुक्र से संबंधित काम सदा नेक फल देगें। -जब शुक्र नेक हो।
13. संतान की हालत केतु की हालत पर, गृहस्थी की हालत श० की हालत पर, माली धन की हालत राहु की हालत पर, परिवार की हालत बु० की हालत पर फैसला होगा।

क्याफा स्वास्थ्य रेखा शुक्र के बुर्ज नं० 7 पर समाप्त या शु० नं० 7 पर बु० का 0 चक्र हो।

14. कामदेव से दूर होगा। -जब अकेला शुक्र नं० 7 और अकेला चन्द्र नं० 4 हो।

मंदी हालत

1. धन स्त्री के बहुत काम में लगेगा बल्कि मिट्टी की पूजना में भी लगेगा, इश्कमिजाजी सब कुछ धन जायदाद बर्बाद जिस का सबब अपनी खुद गर्जी हो व दिमागी नकल (राहु की शरारत) होगी। गुस्सा (सूर्य की गर्मी) नीच होगी। आयु 85-90 वर्ष तक की होगी। स्त्री खानदान के पुरुषों का टेवे वाले के साथ कारोबार में हिस्सा डाल कर साथी होना धन और गृहस्थी खराबियों के बहाने होंगे।
2. संसारी लेन देन या व्यापार का हाल मंदा होगा, संतान के विध्न। -जब शु० , वृ० मिल रहे हो।
3. चोरी, धन हानि की घटनाएं होंगी। 4-16-28-40 -52-60 -76-88-100 -114 साला आयु में।
   -जब वर्षफल में शु० के शत्रु खाना नं० 1 में आये और मं० 3 भी मंदा हो।
4. शुक्र का फल मंदा और भाग्य बरबाद ही होगें। -जब चं० नं० 1 हो।
5. स्त्री चाहे पुरुष, ास्सी, खुसरा सांड नपुंसक, नामर्द बांझ होवे या सुथरा जो संसार छोड़कर विराग से भर रहा हो।
   -जब सू० नं० 4, चं० नं० 1, रा० नं० 7 में हो।
6. शुक्र खाना नं० 8 के साथ के ग्रह के समय हर दो का मंदा हाल। स्त्री पर स्त्री मरे खासकर जब घर की छत में आसमान की ओर से रोशनी आए। -जब खाना नं० 8 में बुध या सूर्य हो।
7. स्त्री का मंदा हाल, स्त्री को सारी आयु तक नीला कपड़ा अशुभ। -जब राहु नं: 8 में बुध या सुर्य हो।

8. शुक्र हर तरह से मंदा प्रभाव देगा खासकर जब कि वह बिल्ली की जेर चमड़े के बटुए मे हो, शनि के काम मंदे। खाऊ मर्द उड़ावे। मंदी हालत में स्त्रियों को खूब ऐश करावे, खुद बर्बाद हो। -जब राहु साथ-साथी या मंदा हो।
9. शुक्र सोया हुआ या मंदा न होगा, बल्कि उत्तम प्रभाव देगा, पराई स्त्री का लगन और गुस्सा बर्बादी की नींव होगी। -जब खाना नं: 1 खाली हो।
10. शुक्र हर तरह से मंदा होगा। खुदगर्जी बरबादी की नींव होगी जिससे जद्दी जायदाद का फायदा न उठायेगा। -जब खाना नं: 4 मंदा या खाना नं: 4 में शु: के शत्रु सू:, चं:, रा: हों।
11. संतान न होगी या दुखिया होगा। -जब वृ: खाना नं: 2 में मंगल नष्ट हो।
12. जब खाना नं: 8 खाली हो। -जब शुक्र के पक्के घर खाना नं: 7 में उसका दूसरा साथी बुध मिट्टी में रेत, मर्द-स्त्री में विषय की शक्ति और साथ वाले घर 2 में बुध, केतु सहित कामदेव की नाली और 8 में मंगल और शनि (शैतान) सही या गलत किसी भी ढंग से अपना मतलब निकाल लेगा माने गए है। शर्म व खाना नं० 7 में शुक्र, बुध की चक्की को चलाने वाली लोहे की कीली भी खाना नं: 8 का ही ग्रह गिना गया है जो गृहस्थी की हालत में सांसारिक शर्म व हया के 8 गुणा शक्ति में गिनते हैं। इसलिए खाना नं: 8 खाली होते हुए शर्म और हया का हवाई पर्दा उठ जाने से स्त्री में विषय (गंदी नाली) में कामदेव का खून खूब ज़ोर पर होगा जिसके कारण बेहयाई तक हो सकती है। स्त्री-पुरुष में किसी एक को या दोनों को तपेदिक या जिल्द जलते रहने की बीमारियां हो सकती है।
13. **स्त्री शुक्र के गुप्त अंग की खराबियों के कारण दिल की खराबियों, दिल की बीमारियां हो जाने के समय शनि की चीज़ें (पानी की तरह बहने वाली नर्म जिल्द को बिना जलाए खुश्क रखने वाली जैसे शराब (अलकोहल) आदि, जिसके लिए बुद्धिमान डॉक्टर या हकीम की सलाह के साथ (तरीका) प्रयोग का फैसला करना आवश्यक है, से सहायता होगी।** -जब शनि खाना नं: 6 में हो।

शुक्र खाना नं० 8
(जली मिट्टी की हालत स्त्री)

कब्र दूसरे की न जब कोई पड़ता।
कसम पर ज़मानत क्यों फिर तू करता।।

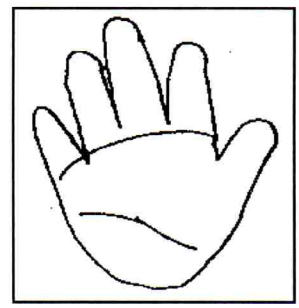

बने बड़ी घर दो कोई बैठा,
खाली पड़ा हो घर जब दूजा,
सुराल नाव ज़र भर कर डूबे,
लकीर पत्थर जो स्त्री बोले,
दान छोड़े, सिर मंदिर टेके,
चन्द्र, मंगल, बुध कायम होते,
असर जाती 8-2 का हो।
पाप शुक्र सब मंदा हो।
बर्बाद खाना संतान का हो।
जनाही मंगल बद हो।
शत्रु कलम सिर होता हो।
असर शुक्र न मंदा हो।

हस्त रेखा

शुक्र से मंगल बद को रेखा। स्त्री का स्वास्थ्य जब मंदा हो तो चरी (ज्वार) का दान देना या उसे ज़मीन में दबाना उत्तम होगा।

नेक हालत

1. मेहनत की रोटी कोई विष नहीं होती मगर मेहनती को आराम कर लेना भी ज़ुर्म नहीं।
2. स्त्री स त स्वभाव (मर्द ने कहा कि दाल पतली है, और स्त्री ने हाथ पर चिमटा मारा, मर्द ने फौरन कहा कि दाल पतली है मगर स्वाद है, कह कर जीवन बिताया) स्त्री की ज़ुबान का असर पत्थर की लकीर होगा जो बुरा कहे एकदम सच होगा। नेक कही बात के पूरा होने की शर्त न होगी इसलिए स्त्री को तंग करना दोनों के लिए अच्छा न होगा।
3. दान लेना छोड़ दें और मंदिर में सिर झुकाता रहे, शत्रु का सिर अपने आप कट जाएगा।
4. शुक्र खाना नं० 8 वाला कहता है कि उसे सब कुछ पता है मगर उसे पूछता कोई नहीं इसलिए वह बोल कर थक कर बैठे

हुए मर्द की तरह अपनी खदी के तन्दूर में जल रहा होगा।

5. शुक्र भी खाना नं० 2 के ग्रह का ही प्रभाव देगा। –जब खाना नं० 2 में कोई ग्रह हो।

मंदी हालत

1. यह ग्रह सदा मंदा न होगा, इसके लिए मंद फल का आम समय 11 साल की आयु तक ज़ोर में होगा, 12 साल की आयु में शुक्र जब खाना नं० 12 में या जब कभी खाना नं० 12 में आये नेक फल देगा। बदी के दरिया को बाढ़ 1 से 11 साल की आयु = 11 साल, आयु का 27 वां साल = 1 साल, 34 वां साल = 1, 39 से 45, 7 साल (कुल 11+1+1+7 = 20 साल), 25 साल की आयु तक शादी करनी अशुभ होगी जब तक चन्द्र, मंगल या बुध जो अमूमन ऐसे टेवे में मंदे ही हुआ करते हो कायम हो शुक्र का बुरा प्रभाव टेवे वाले पर न होगा, इन ग्रहों की संबंधित चीज़ें कायम करना या संबंधित रिश्तेदार चन्द्र (माता), मंगल (भाई), बुध (बहन) का आशीर्वाद लेते रहना सहायक होगा।
2. गंदे नाले में तांबे का पैसा या फूल डालते रहना शुभ होगा। गाय की सेवा या गायदान से बरकत होगी। धर्म स्थान में सिर झुकाते रहना तेरे शत्रुओं का सिर उड़ाता रहेगा। अगर ऐसा न हो तो चालचलन शक्की होगा।
3. जब खाना नं० 2 खाली हो। –चाहे लड़ाई में सहायता देगा मगर स्वयं अपने सिरहाने चंडाल मंदी मिट्टी की तरह गृहस्थी की हालत होगी। बड़ों का साया डोलता या हर समय खतरे में होगा। स्त्री के स्वास्थ्य के मंदे धन के लिए ज्वार का दान या ज़मीन में दबाना सहायक होगा। खीचों बाहर कुएं में, गिरने वाला उल्टा मर्द, स्त्री होगा, ससुराल की नाव को भर कर डुबोने वाला और खाना नं० 5 शादी के बाद का आने वाला समय संतान भी बर्बाद होगी। वही गोबर में मिलावट से बिच्छू पैदा होने की तरह कष्ट पर कष्ट अपने लिए खड़ा करेगा।
4. किसी के लिए कसम खाना ज़मानत देना कभी उत्तम और नेक फलदायक न होगा। जनाही मर्द और औरत मंगल बद का असर खासकर जब मंदे मर्द या स्त्री का साथ हो जाये। जब चालचलन का हल्का हुआ तो आतशक सुजाक आदि सब मंदी बीमारियों का शिकार होगा। गायदान सबसे उत्तम उपाय होगा। शुक्र खाना नं० 10 मंदी हालत में देखें।

–जब दुश्मन ग्रह सूर्य, चन्द्र, राहु, का साथ खाना नं० 8–2 में हों।

शुक्र खाना नं० 9
(मिट्टी काली आंधी— मंगल बद)

गिना है बेहतर चाहे, मेहनत का खाना।
मगर शेखी क्या, खून हरदम बहाना।।

हाल बड़ा लाख हो उम्दा,
औलाद औरत, ज़र अपना मंदा,
मंदा चौथे या शत्रु बैठा,
गुरु, चन्द्र कोई मंदा होता,
चीज़, चन्द्र या मंगल साथी,
नीम वृक्ष टुकड़े चांदी,
मर्द माया न इकट्ठा हो।
साथ पापी बुध होता हो।
तख्त ' चक्कर जब लाता हो।
गृहस्थ माया सब जलता हो।
असर शुक्र ९ चन्द्र हो।
भला गृहस्थी मंदिर हो।

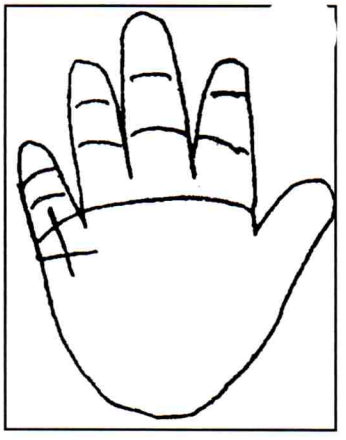

1. 4–16–28–40–52–64–76–88–100–114 साल की आयु खाना नं० 4 को मंदा करने वाले या शुक्र के दुश्मन जो खाना नं० 4 में हो सूर्य या राहु या चन्द्र।

हस्त रेखा :– धनु राशि से कोई रेखा आकर विवाह रेखा को काट दे।

नेक हालत

1. चाहे बुज़ुर्गों का धन–दौलत बढ़ता होगा। औलाद का हाल ऐसा भला न होगा और खुद उसके अपने यहां मर्द और धन दोनों शायद ही इकट्ठे होंगे। मगर तीर्थ यात्रा ज़रूर उत्तम होगी। वह व्यक्ति अक्लमंद वज़ीर तकदीर वाला होगा। लाखोंपति होता हुआ भी अपने पेट की रोटी की कीमत के बराबर मेहनत करके रोटी खाएगा। स्वयं मेहनती होगा या होना पड़ेगा। आराम करने की जगह हद से अधिक मेहनत करने वाला या खून बहाते रहना कोई शुभ फल न देगा। माली हालत के लिए

नीम के वृक्ष में चाँदी के चौकोर टुकड़े दबाना शुभ होगा।

2. दूसरों की मुसीबत और मंदी सेहत स्वयं बुला कर मोल ले ली, जिसे खूबसूरत समझते थे वह स्वयं अपनी बदसूरती से डराने लगा, के कौल का हाल होगा।
3. **मकान की नींव में या मकान में चन्द्र की चीज़ें (घोड़ी, कुआँ चाँदी) के साथ या मंगल (शहद) के कायम रखने से शुक्र उड़ती हुई मिट्टी की जगह 9 गुणा उत्तम और चन्द्र (शांति, माया, दौलत की सहायता) का उत्तम फल देगा।** *-जब चन्द्र या मंगल का साथ हो।*

मंदी हालत

1. भाग्य के संबंध में काली मिट्टी की आंधी।
2. शुक्र की 25 साल की आयु में शुक्र के कारोबार (शादी या चीज़ें (गाय, खेती)) या रिश्तेदार शुक्र से संबंधित के साथ से घर की चाँदी की बनी दीवारें भी जली हुई मिट्टी की तरह मंदी हो जाएगी।
3. माली हालत के लिए मंगल बद, औलाद तथा धन मंदा, बुध और केतु का फल अमूमन मंदा और राहु (शरारत और खराबी) का बहाना ही होता रहेगा, जिसके लिए नीम के वृक्ष में सुराख करके चाँदी के चौकोर टुकड़े डाल कर फिर सुराख को नीम की लकड़ी से ही भर देना शुभ होगा।
4. 17 साल की आयु से नशे और बीमारियाँ आम तंग करेंगी। शुक्र और भी मंदा होगा, अस्पताल से बीमार मुर्दा उठा कर लाए हुए की तरह शादी के दिन की होली में दुल्हन का खून बर्बाद और उसकी मंदी सेहत के कारण खर्चे पर खर्चा। रक्षा बंधन सुर्ख चूड़ी नीचे चाँदी और ऊपर लाल रंग पहने, जब शनि खाना नं० 1 में आये या मकान बने सब कुछ उत्तम हो जाये।
   -जब पापी या बुध किसी तरह भी आ मिले या साथ-साथी हो।
5. धन माया बर्बाद हो जब खाना नं० 4 वाले ग्रह खाना नं० 1 में आए यानि 4-16-28-40-52-64-76-88-100-114 साल की आयु में। -जब खाना नं० 4 में मंदे शुक्र के शत्रु ग्रह शुक्र के बुर्ज खाना नं० 7 में रेखा अगर शराफत रेखा बुर्ज नं० 4 से न हो।
6. गृहस्थ मंदा (सिर्फ संतान और धन के लिए)। -जब चन्द्र खाना नं० 7 या चन्द्र का मंदा चाहे किसी जगह हो।

क्याफा

कनिष्ठा की जड़ में चन्द्र का आधा आकार निशान हो।

7. खून की कमी की बीमारियाँ होंगी, पहली निशानी नाखून सफेद हो जाएंगे।
   -जब खाना नं० 1 खाली हो।
8. संतान के विघ्न होंगे। लोगों से साथी सांसारिक लेने-देने व्यापार का मंदा हाल होगा।
   -जब वृहस्पति और शुक्र मिल रहे या वृहस्पति मंदा हो।

क्याफा

अंगुलियों के नाखून ज़र्द रंग, शुक्र के बुर्ज नं० 7 और वृहस्पति के बुर्ज नं० 9 को मिलाने वाला लेटा हुआ खून हो।

शुक्र खाना नं० 10
(स्वप्न हूरां स्वयं शनिचक्र, शनि उत्तम तो धर्म मूर्ति (पुरुष या स्त्री)

सदा फूल औरत जवानी पर मरता।
गवां खाली औलाद पीरी तरसता॥

4 दृष्टि खाली होता,
उत्तम शनि से बुध हो उत्तम,
दीवार पश्चिमी जब तक कच्ची,
नज़र भली न जब शनि अपनी,
पाँच पहले ग्रह चाहे कोई बैठा,
साथ मगर जब शत्रु साया,
चन्द्र बैठा 7-4 या दूजे,
पत्थर मिट्टी जब खांड हो बनते,
शनि जन्म घर शुक्र आता,
काम शनि न जब तक करता,
11-9 वे शनि टेवे बैठा,
बुध असर सब उत्तम देगा,
औरत मिट्टी की लक्ष्मी बनती[1],
बदली स्त्री कुल मिट्टी होती,
शुक्र, शनि बन खेलता हो।
हादसा न कभी देखता हो।
परिवार धन ज़र उत्तम हो।
शुक्र अंधा लेखा रोता है।
आराम उम्र सारी होता हो।
मंगल, चन्द्र, केतु मंदा हो।
साथी कोई न उसका हो।
लारी मोटर कुल उत्तम हो।
पाया तख्त या सातवां हो।
असर मुबारक हर्जा हो।
साथी कोई न होता हो।
बाग-बगीचे उम्दा हो।
चलन नाली न गंदी जो।
दुखिया नज़र तक शक्की हो।

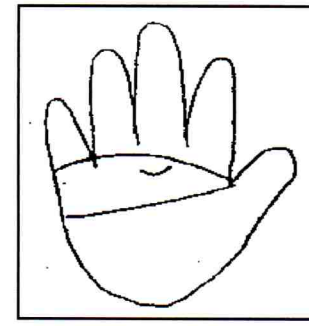

1. स्त्री जाति को ज़ेर नज़र रखता और अिमूमन उसके स्वप्न देखेगा, चन्द्र और मंगल का फल भी निक मा ही होगा।

हस्त रेखा :- शुक्र का पतंग या शुक्र रेखा शनि के पर्वत पर मध्यमा की जड़ में स्थित हो।

नेक हालत

1. जवानी में सदाबहार फूलों की तरह पराई स्त्री के स बंध का बहुत मौका मिलेगा। ऐसा मर्द/स्त्री अमूमन स्त्री जाति/मर्द धन को अपनी नज़र में रखता होगा और अमूमन उसके ही वाब देखता होगा जिससे चन्द्र मंगल का फल मंदा ही होगा। कपड़ा, चमड़ा जब धोकर साफ हो सके तो वह दिन-रात, नर-मादा की तमीज क्या, लानत और मैदानी गार और पहाड़ी चट्टानों की सैर से क्यों नफरत हो, के कौल का व्यक्ति हो।
2. धर्मी शनि का शानदार उत्तम प्रभाव। खुद शनि का स्वभाव (शैतान, चालाक, होशियार) हर ग्रह का नेक प्रभाव जबकि शनि के मंदे कामों से दूर रहे। -जब शनि साथ-साथी या खाना नं० 1 में हो।
3. शुक्र अब स्वयं शनि का ही उत्तम फल देगा, मिर्जा (पति), हल्का (स्त्री) सारंगी भारी। ऐसी जो किसी दूसरी स्त्री के मर्द को निकाल कर ले जाए, पूरी कामदेव से भरी हो और मद पर आई हुई स्त्री। -जब खाना न० 4 खाली हो।
4. बुध भी उत्तम फल देगा, हादसा कभी न होगा यानि स्त्री के होते हुए कही जा रहे हो मोटर लारी में और कुदरत की और से कोई दुर्घटना होने को हो तो जब तक वह इस सवारी से उतर न जाएगी हादसा न होगा। इसी तरह उसके बैठे होने तक मकान न गिरेगा। बाग-बगीचे मकान आदि उत्तम होंगे। स्त्री की सेहत उत्तम, मर्द, स्त्री दोनों धर्म मूर्ति होंगे। जब तक पश्चिमी दीवार कच्ची रहे तो धन उत्तम, बुढ़ापे में आराम।
-जब शनि उत्तम या शनि खाना नं० 9-11 मगर शत्रु का साथ न हो।

क्याफा :- शुक्र की पतंग सिर्फ शनि के बुर्ज और मध्यमा की जड़ में हो।

5. सारी आयु और खासकर जवानी में खूब ऐश आराम हो। यानि शनि के इश्क की हर ओर से सफलता होगी। बुढ़ापा शुभ होगा। -जब खाना नं० 1-5 में कोई न कोई ग्रह शत्रु या मित्र बैठा हों।
6. पत्थरी मिट्टी की उ दा खांड का उत्तम फल देंगे। मोटर लारी, सब से उत्तम असर के फलते-फूलते होंगे। -जब अकेला चन्द्र खाना नं० 2-4-7 में हों।

मंदी हालत

1. औलाद में विघ्न या न ही होना या होकर मर जाए या औरत की संभोग में हद से अधिक रुचि। स्त्री के गुप्त अंग को दही से साफ रखना तो खाना नं० 10 का शुक्र जो शनि बन जाता है, अब शुक्र की चीज़ों से अपनी असली हालत में होकर संतान

की सहायता करेगा। ऐसे व्यक्ति के खून में संतान की पैदाईश के संबंध में खून में कोई कमी या बीमारी न होगी। मगर होगी तो पेशाब की मर्द/स्त्री की जिल्द में नुक्स हो सकता है।

2. मंदी सेहत के समय गाय या कपिला गाय का दान शक्ति की मंदी ज़हर से बचाता होगा। ऐसा मरीज व्यक्ति गाय का दान करवाने के बाद एकदम एक तरफ हो जाएगा यानि यदि उसकी आयु बाकी न रही होगी तो चल देगा गले सड़ेगा नहीं। लेकिर यदि जीवन बाकी हो तो ठीक हो जाएगा, बीमारी हर हालत में जाती रहेगी। अमूमन नतीजा शुभ ही हुआ करता है। जवानी इश्क का घर तो बुढ़ापे में संतान के संबंध में रोता रहेगा। पराई स्त्री से कामदेवी संबंध 12 साल तक केतु (संतान) मंगल (भाई) और चन्द्र (माता, दौलत (बर्बाद हो) काली कपिला गाय शनि के प्रभाव से बचाएगी। स्वयं शुक्र खाना नं० 1 (10 -22-32-47-58-70 -79-96-108 -120) साल की आयु या खाना नं० 7 (4-16-33-44-50 -66 -76-94-98-111) साल की आयु या शनि जन्म कुण्डली के हिसाब अपने बैठा होने के घर में आने के दिन से शुक्र हर तरह से शुभ होगा जबकि ऐसे टेवे वाला शनि के मंदे काम न करे।
3. मर्द का 12 साल का समय मंदा होगा। -जब शत्रु ग्रह सूर्य, चन्द्र, राहु का साथ हो।
4. शुक्र भी मंदा फल देगा। स्त्री अक्ल या आँखों से अंधी होगी और हर तरह से दुखिया होगी। -जब शनि मंदा हो।
5. प्राय: खाना नं० 10 और 5 के ग्रह आपस में शत्रु हो जाते हैं अत: गाय का सांप की ज़हर से विघ्न या स्त्री को आँखों की तकलीफ शनि से हो सकती है अगर किसी वज़ह से 10 गऊए बर्बाद हो जाये तो कोई बहम नहीं। ग्रहचाली ज़हर हो। बकरी का पालन, गाय और स्त्री के लिए शुभ होगा। -जब शनि खाना नं० 5 में हो।

शुक्र खाना 11
(सुन्दर स्त्री-पुरुष माया के संबंध में घूमता लट्टू)

इश्क लहर औरत न हो इतनी बढ़ती।
चिमट बाद जिसके हो जाती नामर्दी॥

तीन भाई खुद स्त्री होते,
साथ माता न बेशक देवे,
साथ दृष्टि बुध जो मिलता,
रिजक दौलत न बेशक घटता,
तीन खाली 2 शुक्र ' मंदा,
बादशाही 3 दौलत घटता,
भंडारी जगत् कुल बनता हो।
कन्या स्त्री धन बढ़ता हो।
घटती मर्द कुल अपनी हो।
मंदा असर बुध पापी हो।
संतान नर मारती हो।
बुध गिना नामर्दी हो।

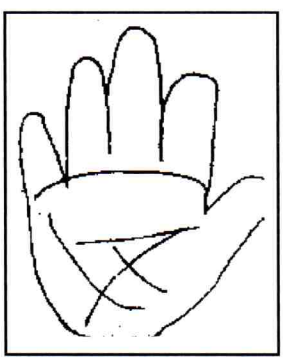

1. शुक्र की महादशा का 20 साल का समय मंदा।

हस्त रेखा :- शुक्र से रेखा हथेली पर खाना नं० 11 बचत में समाप्त हो।

नेक हालत

1. बचपन की मोह माया में लगे रहना अक्सर स्वभाव होगा।
2. सुन्दर स्त्री/मर्द, धन का/की भंडारी अमीर माल वाला या फिर हिज़ड़ा, शुक्र या जिल्द की बीमारियां।
3. सांसारिक कामों में लगे हुए अपने कामदेव की शक्ति ही भूल बैठे। मिट्टी की मासूम स्त्री इसलिए नहीं कि उसका खून खानदानी है मगर इसलिए कि उसका कोई दूसरा ग्राहक नहीं। क्योंकि अपनी ही नज़ाकत वह सब से बढ़ रही है। कुछ ऐसे भी हालात है कि कोई दूसरा उसका कुछ बना नहीं सकता या यूं कहो कि वह कुएं में गिरी बेशर्मी के तान हंस रही होगी या हंसती नज़र आती होगी। मगर उसका दिल चन्द्र का पानी शादी (शुक्र) के दिन से ही जल चुका होगा या जल रहा होगा।
4. छुपे (खुफिया) काम करने का आदी होगा। हरदम स्वभाव बदलने वाला होगा। मगर धन से खाली न होगा। मौत सिर कटने से होगी और 12 साल खूब धन न आए तो हिज़डा ही होगा। 5 लड़कियों की शादी के बराबर धन कायम होगा चाहे शादी कोई भी न की जाए या की हो। -जब बुध या चन्द्र कायम हो।
5. लड़कियों के साथ से ही धन की ज़्यादती होगी। -जब राहु खाना नं० 12 में हो।

मंदी हालत

1. हर काम पर्दे में करने वाला। दिखाने को भोला-भाला, अंदर से हजरत, हरदम स्वभाव बदलने की आदत जो कोई अच्छी बात न होगी। चाहे दिमाग़ की कमज़ोरी कहो चाहे शनि की चालाकी। अमूमन मौत सिर कटने से ही होगी। स्त्री अब घर की खजांची अशुभ होगी। कपिला गाय शनि के बुरे प्रभाव से बचाएगी।
2. चाहे धन-दौलत मंदा न होगा। मगर मर्द की अपनी कुल खानदान घटती ही जाएगी। लड़कियां घर का धन बर्बाद करेंगी, बुध और पापी ग्रहों का मंदा फल होगा और शुक्र का कोई एतबार न होगा। -जब बुध खाना नं० 3 या साथ-साथी।

क्याफा हथेली पर खाना नं० 6 वाली आयत जो दिल रेखा तथा सिर रेखा से बनती है, इससे सूर्य के बुर्ज नं० 1 (अनामिका) और शनि के बुर्ज नं० (मध्यमा की हदबंदी पर क्रॉस का निशान हो या सिर रेखा के नीचे एक और (-) लकीर छोटी सी हो।

3. **मंगल की सहायता :-**

दृष्टि के साथ-साथ या किसी भी तरह भी या खुद मंगल का उपाय या स्त्री के भाईयों की सहायता शुक्र को मंदी ज़हर से बचाएगी। यानी धन भी होगा और परिवार भी। शादी के तीन साल बाद बर्बादी होने लगेगी और नामर्दी तक हो सकती है। हाथ से वीर्यपात, एतलाम की अधिकता या गुप्त अंग बिल्कुल व्यर्थ। वीर्यपात की बीमारियां आदि से बिगड़ी हालत के समय शनि (लोहे फौलाद का कुश्ता या किसी और तरह या मछली का तेल) या चन्द्र (चाँदी का कुश्ता या किसी तरह दूध की चीज़ें) इस मर्ज़ की दवाईयों के साथ मिलाकर 40-43 दिन तक ऐसे ढंग पर प्रयोग करें कि फौरन खून जोश भड़क उठना हा जाए। सोना दवाईयों में मिला भी सहायता कर सकता है जब केतु टेवे में निक मा न हो, वरना शनि और चन्द्र की चीज़ें ही दवाईयों में सहायता देगी। दूसरी ओर नर संतान मरती जाए या कायम ही न हो सके। 20 साल शुक्र की महादशा का मंदा समय होगा। बुध की पालना सहायक होगी। स्त्री चाहे भाग्य, आय की स्वामी मालूम होती हो, मगर वह स्वयं की तबाही का कारण होगी। मंदे समय तेल का दान कल्याण करेगा। -जब खाना नं० 3 खाली हो।

शुक्र खाना नं० 12

(आड़े समय हर जगह सहायता की देवी, भव सागर से पार करने वाली गाय)

लहर माया चलती फिरा कुल ज़माना।
गया भूल क्यों फिर तू जिस घर को जाना॥

जन्म समय चाहे मिट्टी उड़ती,
तीन गुणा नर चन्द्र उन्नति,
राजा संबंध हरदम ऊंचा,
नशा बैरी कुल एकदम होता,
गुरु, शनि मच्छ रेखा सातवें,
बुध बैठा जब कायम 6 वें,
खाली मंदा सात दूजा होते,
तीन-छठे जब उत्तम टेवे,
जवान औरत बुध टेवे मंदा,
राहु मगर जब साथ ही बैठा,
नाम स्त्री पर दान जो देता,
मंदे मदद न जब कोई करता,

शादी समय पौ बारह' हो।
असर भला दो मिलता हो।
37 साला सुखी स्त्री हो।
रात भली ज़र दौलत हो।
सुखिया औरत न होती हो।
परिवार सुखी औलाद का हो।
शुक्र होता सब मिट्टी हो।
कामधेनु गाय होती हो।
रात धुएं से दुखिया हो।
गृहस्थ 25 तक मंदा हो।
सेहत स्त्री ज़र दौलत हो।
लेख सहायक खुद स्त्री हो।

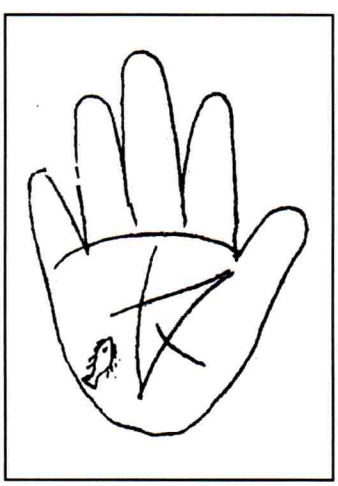

1. बहुत ही अच्छा, उत्तम समय हो।

हस्त रेखा :-

शुक्र से रेखा हथेली पर खाना नं० 12 खर्च में समाप्त होते या हाथ में मच्छ रेखा हो।

नेक हालत

1. जवानी की रात और मिले हुए आराम में चारपाई से नफरत क्यों जबकि लोगों को शिक्षा देने के लिए बुढ़ापा बहुत पड़ा है। बाबू साहिब की मंजे-चारपाई की कहानी, स्त्री की बीमारी और स्वभाव की नासाजी कभी समाप्त न होगी। स्त्री स्वयं

पतिव्रता और सुखबन्ती होगी।

2. स्त्री की पूजा और प्यार करने वाली गाय माता की तरह भाग्य की मालिक होगी। जन्म समय चाहे मिट्टी उड़ती हो शादी के समय से उत्तम हालात होंगे। चन्द्र और नर ग्रहों का तीन गुणा उत्तम प्रभाव और खाना नं० 2 का प्रभाव भी उत्तम होगा या शुक्र खाना नं० 2 का उत्तम फल साथ होगा। राजदरबार हरदम ऊंचा। स्त्री का कम से कम 37 साल का सुख होगा। रात का आराम और धन का सुख होगा।
3. मच्छ रेखा मगर स्त्री स्वयं दुखिया ही होगी परिवार और संतान सुखिया ही होंगे।

–जब वृहस्पति, शनि खाना नं० 7 या आपस में साथ-साथी हो।

क्याफा

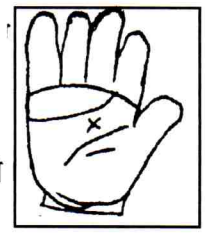

हाथ पर मच्द रेखा का निशान या हथेली के खाना नं० 12 में शुक्र के लेटे खत हो।

4. राग़ी, कवि और भण्डारों का मालिक होगा। उम्र बहुत ल बी 96 वर्ष तक मर्द चाहे स्त्री।

–जब बुध खाना नं० 2-6 में और कायम हो

मंदी हालत

1. हर मुसीबत के समय पहले उसकी स्त्री को भोगेगी, फिर उसके मर्द को कोई कष्ट होगा। ***इसलिए स्त्री का स्वास्थ्य मदा ही होगा, यानि मर्द की जान को स्त्री और स्वयं की स्त्री की जान को उसके हाथ (औरत की ओर) से दान कराना या वैसे ही स्त्री के नाम पर गाय दान या कोई भी चीज़ दान रूप में देते रहना स्त्री के स्वास्थ्य और अपने धन की बरकत देगा। जहाँ कोई सहायता न करेगा। मंदे एवं कठिन समय उसकी स्त्री का भाग्य एकदम सहायता देकर उसे पार करेगा जब तक ऐसा व्यक्ति नास्तिक न हो या जब तक वह मालिक को याद रखे। स्त्री के अपने हाथ से शाम के समय नीला फूल (राहु की चीज़ें) बाहर वीराने में दबाने से सब दूर होंगे।***
2. शुक्र मंदी मिट्टी की तरह बुरा फल देगा। –जब खाना नं० 2-7 खाली मंदे हों।
3. स्त्री स्वयं और उसकी ज़ुबान और स्त्री का आराम सब के सब मंदे प्रभाव के होंगे।

–जब बुध मंदा हो।

4. **गृहस्थ 25 साल की आयु तक बर्बाद, नीली गाय शुभ न होगी।**
राहु की चीज़ों का साथ और संबंध भी मंदा ही होगा।

–जब राहु खाना नं० 2-7-6-12 में हो।

5. शुक्र गाय का साथ हर समय शुभ होगा।
क्योंकि शुक्र अब एक ऐसी कामधेनु गाय होगी जो बिना बच्चा पैदा किए सारी आयु अपनी स्वामी के प्यार में दूध देती रहेगी।

****

मंगल

(शस्त्रधारी)

मंगल
(शस्त्रधारी)

दो रंगी अच्छी ना, इक रंगा हो जा ।
सुर असुर तू हो मोम, या पत्थर हो जा ।

दान भलाई , दुनिया जितनी,
तुख्म बदी का, बदला खूनी,
मौत नमानी (मूर्खा) रास्ता तीजे,
मारक घर 8 दुनिया लेते,
चें रवि की मदद जो पाता,
माता चें से बेशक डरता,
पापी' कोई दो, शत्रु साथी,
नेक कुलों की दूर लावल्दी,

नेक मंगल खुद होता हो ।
हिस्सा में बद लेता हो ।
नेक मंगल जा रोकता हो ।
जिसमें में बद बैठता हो ।
में बदी ना होता हो ।
मंगलीक वही घर माता हो ।
में मंदा ना होता हो ।
बेड़ा गर्क बद करता हो ।

1. कोई पापी (श०, रा०, के०) या कोई दो आपसी शत्रु (बुध केतु) ग्रहों के साथ से मं० मंदा ना होगा ।

आम हालत 12 घर:-

तेग अदल घर पडते जंगी,
शेर होता घर तीसरे कैदी,
पाँच ईस बाप हो दादा,
विष्णु पालन घर7 वे करता,
तख्त बना घर 9वें शाही,
11 लेते जो भेस फकीरी,
बुध मंदे से मंदे असर दे,
घर चौथे ग्रह फैसलाँ करते,

मालिक लंगर लौह दूजे हो ।
आग समुद्र चौथी वो ।
केतु कमी घर6 की हो ।
बेडी गर्क8 भाई हो ।
राजा होता घर 10 का हो ।
नष्ट राहु घर 12 हो ।
शेर पले घर बकरी जो ।
बदी में या नेकी वो ।

2.तमाम शरीर के बीच का भाग नाभि(मं०) की किरणे माना, जिनसे मं० का रंग पता लग जाएगा ।

मंगल से शनि का संबंध

1. शनि नेकी और बदी के फरिश्ते, केतु और राहु दोनों ही शनि के एजेंट हैं, अत: शनि में नेक और बद दोनों ओर जाने का स्वभाव है । यह आँखो की शक्ति का स्वामी है जिसे अच्छा या खराब जैसा चाहे कर सकता है । निष्कर्ष मे सामने आये को पहचान लेना या लिखे हुए को देख कर पढ़ लेना शनि की शक्ति है । शनि तो शत्रुता नहीं करता मगर मं० स्वयं शनि से शत्रुता करता है । मं० के घर खाना नं० 3 में शनि निर्धन, कंगाल होगा ।
2. मं० ऐसा नेक और सीधा चलने वाला है कि जब कभी इसे बुराई तरफ जाने की उकसाहट हुई तो फिर ये पीछे ना हट सकेगा और अपनी सारी शक्ति बुराई की तरफ उकसाने वाले को ही दे देगा । यह नजर का स्वामी तो नहीं मगर नजर का प्रभाव का परिणाम इसका भाग है । किसी को नजर लग गई या नजर से ही किसी जगह बैठे हुए सैंकड़ों मील की चीज को वाब की तरह देख आना इस की शक्ति है। शनि के घर नं० 10 में मंगल राजा होगा जब अकेला मं०, या मं०, श० 10 में हो ।

दोनों की आपसी दृष्टि के समय :-

चूल्हे में जला भाग (हाथ पर चूल्हे का निशान) एक चोर फरेबी की तरह का बना देगा और शनि नं० 1 और मं० नं० 4 का दिया मंदा फल साथ होगा ।

1 **मं० देखे शनि को :-** अब मं० की चीजें काम संबधी या मं०, स्वयं सिफर संतान से हीन होगा मगर शनि की चीजें काम संबंधित दुगना नेक और अच्छा होगा ।

2 **शनि देखे मं० को:-** दोनों डाकू एक ही नियम के मिले हुओं की भाँति दोनों ही ग्रहों का नेक और अच्छा फल होगा ।

मंगल से राहु का संबंध:-

मं० देखे राहु को तो राहु का बुरा असर ना होगा ।

राहु देखे मं० को तो बाजुओं, पेट या खून की खराबियों से जिस्म के दायें भाग में बड़ा कष्ट हो। चं० का उपाय सहायता दे ।

मंगल से केतु का संबंधः-

जब सिर्फ दोनों ही आपसी दृष्टि या मुकाबले पर आ जाए तो भाग्य के मैदान में मं० (शेर) केतु (कुत्ता) की लड़ाई की तरह भाग्य का हाल होगा, यानि दोनों मंदे होंगे। **ऐसे समय में वही उपाय सहायक होगा जो मंगल, केतु आपसी में लिखा है ।**

आम हालत

जब टेवे मे सू०, बु० इक्टठे हों तो मं० नेक होगा अगर सू०, श० इक्टठे तो मं० बद होगा । खाना पीना, भाई-बंधुओं की सेवा, लड़ाई, झगड़ा शारीरिक दुःख, बीमारियां, 20 साला आयु का समय मं० है । सारे शरीर के बीच का भाग नाभि मं० की राजधानी और सू० की सीधी किरणों की जगह मानी है । अतः कुण्ड़ली की नाभि खाना नं० 4 के ग्रह मं० की नेक और बुरी हालत का पता बतायेंगे, यानि जैसे नं० 4 में बैठे होने वाले का असर होगा, वही हालत मं० के खून की होगी । न सिर्फ दान इसका जरूरी पहलू और कुल दुनिया के भलाई काम और भंड़ारे खोलने की हि मत उसकी नेकी का पता बतायेंगे, बल्कि कुल खानदान की लावल्दी दूर करेगा । अकेला बैठा मं० जंगल के शेर समान होगा । मं० नेक अपने असर की निशानी सदा उस ग्रह की चीजों के जरिये देगा, जो कि टेवे मे उत्तम हो और उस ग्रह के अपना असर देने का समय हो और मं० बद टेवे से मंदे ग्रह की चीजों के जरिये उसके मंदा असर देने के वक्त बरे असर की हवा का आना पहिले बता देगा । हर हालत मे मं० के असर से एक साल लगातार और बीच के ढंग की रफतार न होगी, चाहे मं० नेक शेर बहादुर हमले की शक्ति का हो या मं० बद डरपोक हिरण की तरह कोसों ही दूर भागता हो ।

मंदी हालत

बदी का तु म, खून से लेना हरदम जरूरी ओर जब घी (शुक्र) और शहद (मं०) नेक बराबर के हो तो जहर मं० बद होगा। यानि टेवे में सबसे पहले शुक्र और उसके बाद सूर्य का फल एक के बाद दूसरे का मंदा होगा । लेकिन अगर सू० या चंद्र की मदद मिल जाए तो मं० बद ना होगा (खाना नं० 4 में देखें), कोई दो पापी(श०, रा०/श०, के०) या कोई दो आपसी शत्रु में (बुध-केतु, सू०-शु०) मं० के साथी होतो मं० बद ना होगा । जब अपनी मार पर आयेगा तो एक का बुरा न करेगा बल्कि अगर हो सके तो कुल खानदान का ही बेड़ा गर्क करेगा । जब बुध मंदा हो तो मं० बद और भी मंदा होगा और खूनी शेर बहादुर की बजाय बकरियों में रहने वाले पालतू शेर की तरह अपनी असलीयत से बेखबर होगा ।

क्याफा दो रेखा < >/ ∨ ∧ △ त्रिकोण या द्वीप की शक्ल मं० बद या मं० के बुरे प्रभाव की निशानी होगी । सिर रेखा को अपनी कुदरती हालत अगर अन्त तक बढ़ाये तो मं० मंदे के घर या खाना नं० 8 की हदबंदी, खाना नं० 6 से मं० जुदा ही हो जायेगी । शुक्र के बुर्ज नं० 7 की उत्तरी हद बंदी की लकीर अगर और आगे बढ़ाये तो नं० 8 का दक्षिण मिलेगा या यूं कहें कि स्वास्थ्य रेखा मं० बद खाना नं० 8 का पूर्व होगा ।

मंगल के अपने भाई बंधुः-

मं० खाना	मंगल की आम हैसियत	टेवे वाले के भाईयों की तादाद क्या होगी
1.	इंसाफ की तलवार ।	छोटे भाईयों की शर्त नहीं मगर अकेला भाई न हो ।
2.	दूसरों हेतु पालन योग,	पैदाईश से वह खुद ही बड़ा भाई होगा ।
3.	चिड़िया घर का कैदी शेर जिसे अपनी ताकत का पता न हो ।	बहन भाई जरूर होंगे मं० की उम्र और बुध बैठा होने वाले की की खाने की गिनती के बराबर, 7 या 14 साला आयु के बाद तीन भाई ।
4.	भाई की स्त्री धनी अपनी माँ नानी सास सब पर मौत तक भारी।	आप बेशक जन्म से छोटा हो मगर वह टेवे वाला 28 साला आयु तक खुद ही बड़ा भाई हो जाएगा । वरना उसका बड़ा भाई बेबुनियाद लावल्द या मंदी सेहत का स्वामी हो ।
5.	रईसों का बाप दादा जब तक मं० नेक हो, लेकिन जब मं० बद तो आँख से ही तबाही करता जाये ।	खाना नं० 3 में अगर नर ग्रह = 4 भाई, स्त्री ग्रह = 3 ाई, पापी ग्रह = 5 भाई , बुध अकेला = 2 भाई ।
6.	साधू संन्यासी के स्वभाव वाला जो	एक अकेला ही धर्मवीर होगा।

	खुद अपना आप ही मारे।	
7.	विष्णु जी, भाई की औलाद की पालना सहायक होगी ।	मच्छ रेखा या लावल्दी जब मं० को बुध का साथ मिले ।
8.	मौत का फंदा	4,8,13 बल्कि 15 साला आयु के बाद दूसरा भाई बल्कि कई बार तो एक अकेला ही रह जाये ।
9.	त त, शाही खजाना, भाई की स्त्री की सेवा और ताबेदारी मं० की बुलंदी की नींव होगी ।	जितने बाबे उतने ही आप भाई ।
10.	अगर शनि उत्तम तो राजा की भाँति जो भाई के लिए जीवन भर सहायक होगा ।	जितने ताये चाचे उतने ही स्वयं भाई वरना मच्छ रेखा ।
11.	फकीरी भेस जो बुध और शनि की नकल करेगा यानि जैसे बु०, श० टेवे में हो ।	फैंसला वृ० पर होगा यानि जिस घर में वृ० बैठा हो उसी घर का नं० का असर मं० का लिखा असर लेंगे और अमूमन जब वृ० नं० 1 से 10 में हो तो 9 भाई तक हो सके, जब वृ० 11 में हो तो 2 भाई तक हो सके, जब वृ० 12 में हो अकेला ही भाई या सिर्फ एक और तथा वह भी कम सुखी ।
12.	गुरु चरणों का ध्यान रखने मगर धर्म न जाये ।	बड़ा भाई जिंदा न रहने देगा । मगर टेवे वाले के जन्म लेने स पहले उसको वाला, सर जाये बड़ा भाई जरूर जीवित हो । मगर स्त्री के टेवे में अपने बड़े भाई को तबाह करने की कोई शर्त नहीं ।

मंगल खाना नं० 1
(मैदान जंग ओर इंसाफ की तलवार)

अगर मं० बद तो दुमदार सितारा, बदी से दूर तो अपनी जड़ मजबूत वरना उसका खून भी पाखाना से कम कीमत देगा।

थमे कटती तलवार शहजोर हो कितना । रूके दांत 32 ना खुद बोल अपना ।

राज ताल्लुक जिस्म' हो उम्दा,
वक्त गुजरते पाप शनि का,
ससुराल भाई घर अपने तारे,
खून कीमत ना परवाना देवे,
बुध तीजे' दो मंदिर खाली,
चंद्र रवि 2-12 साथी,
चंद्र, रवि, बुध पापी साथी,
नेकी कर वो संसार इतने,
में बदी पर जिस दम आता,
मर्द आयु ना बेशक घटता,
काम शनि' लाभ देता हो ।
वजीर जंगी' राजा होता हो ।
पत्थर पानी मे तैरता हो ।
पुतला बदी का बनता जो ।
बहन नसीबे बढ़ती हो ।
उम्र पिता पर भारी हो ।
सात चक्कर से बैठता' हो ।
मौत पराई लेता हो ।
दुमदार सितारा चढ़ता हो ।
धन बुरा ही होता हो ।

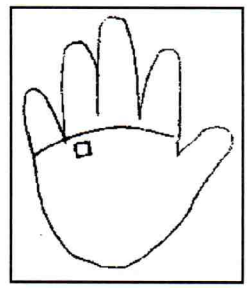

1 ससुराल के कुत्ते और आम साधू का साथ भाई की सेहत के लिए जहर होंगे।
2 लोहा लकड़ी मशीनरी या मकान के समान आदि ।
3 शत्रुओं से भगवान् की ओर से बचाव रहेगा ।
4 जब मं० नं० 1 और बुध नं० 3 दानों सोये हुए तो अपनी और भाई दोनों की किस्मत सोई हुई ।
5 मं० की उम्र 13 - 15 या कुल 28 साला आयु ।

हस्त रेखा:-सूर्य के पर्वत पर चौकोर □ हो, मं० नेक से रे ा सूर्य के पर्वत में चली जाये ।

नेक हालत

1. अकेला भाई ना होगा स्वयं चाहे वह छोटा चाहे बड़ा । दांत आमतौर पर 32 होंगे 31 दांत भी मं० नेक ही होता है, 28 साला आयु से धनवान जरूर होगा । किसी की नेकी और अपनी सच्चाई को कभी नहीं भूलता । दिमागी खाना नं० 8 सूर्य से

मुश्तरका-हमला रोकने की हि मत और जंगी भाग्य का स्वामी जब खुद बड़ा भाई हो ।

2. लड़ाई के मैदान की तलवार का स्वामी होगा । राजदरबार, अपना शरीर सदा उत्तम अैर शनि के काम और रिश्तेदार शनि से संबंधित (ऐसा व्यक्ति जो उम्र में टेवे वाले का मगर रिश्तेदारी में बड़ा या छोटा हो) जैसे कि (कोई बराबर का भतीजा, दोहता, पोता) चाचा आदि लाभ देंगे ।
3. कम से कम 28 साल अपनी कमाई या नौकरी का समय या आय अच्छे दर्जे की होगी ।
4. शत्रुओं से बचाव होता रहेगा और शनि या पाप (रा०, के०) की मियाद गुजरते ही राजा का लड़ाकू वजीर या अच्छी हालत का स्वामी होगा।
5. अपने भाईयों और ससुराल को तारने वाला बल्कि पानी में तैरने वाला पत्थर होगा, खासकर जब रंग काला हो ।
6. खूद नेक सच्चा और नेक और सच्चाई पसंद होगा । उसकी अपनी जबान का थोड़ा सा भी मंदा शब्द खाली ना जाएगा । उम्र कभी छोटी ना होगी ।
7. बहन शायद ही होगी अगर होगी तो रानी समान बुलंद भाग्य होगी मगर अपना भाई कभी शाह कभी फकीर होगा ।

-जब बुध नं० 3 और नं० 2 खाली होगा ।

मंदी हालत

1. ऐसे जन्मे चंद्र भान, चूल्हे आग़ न मंजेबान।
2. जिस कदर बदी से दूर उसी कदर अपनी जड़ मज़बूत होगी वरना अपने खून की कीमत पाखाना से भी कम होगी । मु त माल लेने की आदत से दरबदर होगा ।
3. खानदान के लिए दुमदार सितारा होगा और निकलते ही 40-43 दिन के अंदर - अंदर अपना राजा या प्रजा पर बुरा प्रभाव दि ाा देगा। यानि मं० बद की आग से भरी हवा चलने लगेगी । घर बरबाद भाई बंधु संसारी फुजले (परवान) की भी कीमत ना देंगे । शनि की आयु में माता-पिता की उम्र तक भारी, ऐसा आदमी नेकी और अहसान का बदला कभी वापिस न देगा । जब बदी करने का आदी होगा तो ससुराल भाई और खुद अपनी लावल्दी तक नौबत होगी । अपनी और भाई की किस्मत सोई हुई होगी चाहे लाख हि मत करने वाले हो ।
4. घर 9-11 के लिए गुरु का उपाय, वृ० की चीजों को कायम करेगा और नं० 7 के लिए शुक्र की पालना या शुक्र की चीजों या कामों का फल शुभ देंगे । ससुराल का कुत्ता भाई की बीमारी का बहाना होगा और फकीर साधू का साथ शुभ ना होगा क्योंकि वह गृहस्थी आराम वाला नहीं होगा, 39 साला आयु के बाद यह शर्त नहीं ।

-जब बुध नं० 3 और नं० 7-9-11 सब खाली हों ।

5 पराई मौत खुद खरीद कर बरबाद होवे । खुद तलवार का धनी और नसीबे का मालिक मगर 13-15 हद 28 साला तक माता पिता दोनों ही की सब हालत बल्कि आयु तक मंदी बरबाद ही लेंगे ।

-जब नं० 7 में सू० या चं० या वृ० के साथ बुध पापी हो ।

6 मु त के माल या खैरायत के माल पर गुजारा, दूध में जहर होगी । खुद की किस्मत जलती होगी और जिस्म में खून की जगह पानी होगा । आलसी, निर्धन, दु:खी होगा वरना माता पिता के लिए मनहूस मंद भाग होगा। टेवे वाले की छोटी उम्र में ही माता-पिता चल बसेंगे । -जब सू० नं० 12, चं० नं० 2 या सू० नं० 2, चं० नं० 12 हो ।

मंगल खाना नं० 2

(धर्म मूर्ति भाईयों की पालना करता हुआ, लौह लंगर का मालिक, अगर मंगल बद तो आस्तीन का साँप)

गिरे नजर से भाई अपने जो तेरे ।
पहाड़ा दो दूनी' का दो तुझ को घेरे ।

1. दो दूनी = 2 3 2 का जवाब 2 ही होगा,
बड़ा भाई खुद आप ही होगा,
रिजक दौलत हो 'साथी सभी का,
दहेज स्त्री से हरदम फलता,
शत्रु जहर बद में मरता,
साथ हकूमत लाखों पाले,
लावल्द कभी ना दो घर होंगे,
गुरु, रवि, बुध, शनि हो मिलता,
सारी उम्र गुजरान हो उत्तम,
कभी चार ना होगा, यानि तरक्की की उम्मीद ना हो ।
वरना बड़ा खुद बनता हो ।
अपनी शर्त ना करता हो ।
दौलत राहु से पाता हो ।
लड़ाई में जा मरता हो ।
गाँठ ना अपनी बांधता हो ।
शर्त कबीला पालता हो ।
8, 9वें 10-12 जो ।
शत्रु असर ना मिलता जो ।

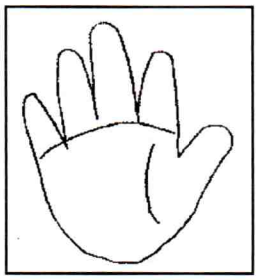

1 दूसरी को पाले तो बढ़ता जाये वरना घटता जाए ।
2 खुद अपना और ससुराल का घर ।

हस्त रेखा :- गृहस्थ रेखा वृ: के बुर्ज में जा निकले।

नेक हालत

1. जन्म से खुद बड़ा भाई होगा, वरना खुद बड़ा बनता होगा। भाईयों से उसका भाईपन न रहेगा , लौह लंगर का स्वामी, जब खुद बड़ा भाई हो, अपने जाती ून, भाई बन्धुओं को पालता हुआ, खुद कभी तंग दु:खी, भूखा न मरेगा, बल्कि लौह लंगर हर वक्त बढ़ता ही होगा। वरना उसकी दो दूनी चार की बचत दो ही रहेगी कभी चार ना होगी।
2. खासकर मं:, मं: बद की तबीयत का हो या यूँ कहें कि साथियों की जरुरत के लिए जिस कदर भी माया दौलत की जरुरत असली हो हर समय मिलेगी खुद अपनी शर्त ना होगी। - जब मं० खाना नं० 2 कायम हो।

क्याफा

गृहस्थ रेखा मं० के बुर्ज नं० से उछलकर वृ० के बुर्ज नं० 2 में खत्म हो।

3. ससुराल राहु की चीजें या संबंधियों से धन पायेगा, इरादे का पक्का, हकूमत का इच्छूक, स्त्री का लाया दहेज फले, पर कभी लावल्दी ना होगी। ससुराल घर सदा बरकत होगी और वो हर तरह से सुखदायी होगें, जब तक ससुराल में चन्द्र की चीजें काम संबंधी या कुँआ आदि कायम हो। - जब मं० में बुध या केतु का किसी तरह से भी असर ना मिलता हो।

क्याफा

चौकोर हाथ उंगलियों के सिरे चौड़े हो □।

4. खुद बना अमीर होगा। धन अपने आप जमा होता जाएगा। सारी आयु हर तरह से सुखी। अच्छा खाना, पहनने वाला, शक्तिशाली शरीर, जरुरत के समय पैसा हर वक्त हाजिर, आय चाहे हो या ना हो गरीबी तंगदस्ती कोसो दूर भागे। - जब 8-9-10 -12 में से वृ० , सू० , बु० या श० का प्रभाव मिल रहा हो सिवाए बुध नं० 2 के।

क्याफा

उंगलियों नाखून वाले सिरे की तरफ से गाजर की तरह मोटी होती चली जाए और बाहम मिलाने पर उनमें कोई सुराख नजर न आवे।

5. ऐसी ग्रह चाल के वक्त अगर बुध के काम, संबंधी या चीजे जो नं० 8-9-10-12 से संबंधित हो तो उनकी जहर से खून मंदा और इरादा कच्चा होगा। - जब बुध नं० 2 हो।
6. खुशनसीब हाकिम जिसको कल की फिक्र नहीं। - जब केतु का साथ हो।

मंदी हालत

दूसरों के लिए छाती का सांप और स्वयं अपनी मौत लड़ाई झगड़े में जंग में अचानक हो। - जब मं० बद हो।

मंगल खाना नं० 3
(लोगों के लिए फलों का जंगल मगर अपने आप की माया और आराम में सब्ज़कदमा, मं० बद चिड़िया घर का शेर)

झुकी सर कलम कटती तलवार तिरछी,
पड़ा खम ना जालिम पकड़ तेग जिस ली।

एतबार मं० न तीजे गिनते,
शेर दहाना बैठक होवे[2],
चं० रवि 9–11-7 वें,
उल्ट गुरु बुध जिस दम[3] होवे,
असर मन्दा ना राहु टेवे,
ऐयाश भोगी सब ठनठन होवे,
शनि टेवे में[4] जब होवे,
महल, मकानां सब कुछ उत्तम,
तरम तबियत इकदम बढ़ता,
उल्ट गरम हो जिसदम चलता,
नेक मिला[1] बद में हो।
तदबीर जंगी सब कामल हो।
नेक में खुद होता हो।
जहरी मं० बद बनता हो।
सुखी गृहस्थी होता हो।
मंगलीक टेवे जब बनता हो।
मौत बीमारी बचत हो।
शनि असर शुभ देता हो।
मौत आई तक रोकता हो।
जेरजारी[5] दुख भोगता हो।

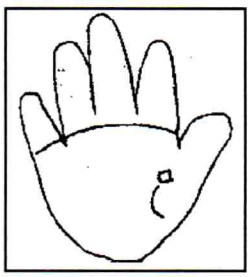

1 राजा वरना फोकी ठन–ठन।
2. बाकी 3 बचने वाले मकान का भाग्य होगा।
3. अब बुध खाना नं० 3 और वृ० खाना नं० 11 को नेक ही होकर रहना पड़ेगा।
4. पानी के नीचे।

<u>हस्त रेखा:-</u> **मं० नेक पर चौकोर या गृहस्थ रेखा मं० नेक के अन्दर अन्दर खत्म हो**

<u>नेक हालत</u>

1. भाई बहन जरूर होंगे चाहे छोटे या उनसे बड़े हो। असल में मं० का असर शक्की होगा, लोगों के लिए तो वह फलों का जंगल मगर अपने लिए चिड़ियाघर का पिंजरे में पकड़ा कैदी शेर होगा, जिसे अपनी बहादुरी काा पता न होगा ।लेकिन जब उसके मुंह खून लग जायेगा तो वह फिर सर खून चढ़ने से न ड़रेगा विशेषकर जब वह स्वयं बड़ा भाई हो ।अगर मं० नेक हो तो आरजुओं को तारने वाला शिवजी की तरह भोला भंडारी ।अगर उसकी बैठक का मकान शेर दहाना हो तो वह व्यक्ति लड़ाई की तदबीर का बुद्धिमान पुरुष होगा । नरम तबीयत हो तो तरक्की दिन प्रतिदिन होती जायेगी । आयु 90 साल हौंसला और नजर उत्तम और तीन बचने वाले मकान के भाग्य का स्वामी होगा ।शेर समान होगा और बुरे लोगों को मारने वाला होगा, मगर सांसारिक व्यवहार में मित्र और सहायक होगा । ससुराल अमीर होंगे या उससे अमीर हो जायेंगे ।उसको धन का हिस्सा देंगे इसका अर्थ यह नहीं कि उनका लड़का नहीं होगा तो धन देंगे।वह वैसे ही धनी होने पर धन देंगे वह किसी पर ज्यादती होते नहीं देख सकेगा।दिमागी ाना नं० 17 वृ० से मुश्तरका अदल व मुंसिफ मिजाजी ।
2. राहु का टेवे में बुरा असर न होगा सुखी गृहस्थ होगा । –जब वृ०, सू०, चं० नं० 7, 9, 11 हो ।
3. ससुराल अमीर होंगे और दौलत देंगे । –जब वृ० खाना नं० 9 में हो ।
4. मौत बीमारी से बचाव, अच्छा स्वास्थ्य, मकान, धन में हर तरफ सुखी और शनि का उत्तम फल होगा। –जब शनि नं० 9 हो ।

<u>मंदी हालत</u>

1 चालबाज धोखेबाज होगा ।खाना पीना लाभकारी चीज हे इसदम का क्या भरोसा कि कौल का आदमी होगा ।फोकी ठन ठन एयाश गरीब शाह होगा ।उम्र 90 साल सब्जकदमा (मनहूस हालत) अगर अकड़ खाँ रहा तो मृत्यु बीमारी से तंग और कर्जे के बोझ के तले रोता हुआ।सिर छोटा, पेट मोटा, खून खराब होगा ।नर संतान की मंदी हालत होगी जिसका नतीजा भी भला ना होगा ।–जब मं० बद हो या बद हो रहा हो।

क्याफा

मं० नं० 3 का बुर्ज चर्बी से भर कर इतना मोटा हो जाए कि मं० , शु० , वृ० के बुर्ज जुदा-जुदा ना दिखे।

2. संबंधियों की मौतों से दुखी मगर अपने लिए उत्तम हो । -जब वृ० खाना नं० 11 में हो ।
3 जब मं० बद या मंदा हो तो आ बैल मुझे मार के मंदे परिणाम मगर उसकी स्त्री के खानदान को मदद मिलती रहे । हर तरफ मंदा हाल । -जब वृ० या सू० या चं० नं० 7, 9, 11 हो ।
4 घरबार में माली खराबियां मगर कुण्डली वाले के खानदान को मदद मिलती रहे या देता रहे जब शनि नं० 11 हो तो कुदरत की तरफ से मौत आदि ना होगी । -जब बु० या श० नं० 3-11-9 या बु० श० दोनों नं० 3-7 हो।

उपाय हाथी दांत का कायम करना सहायक होगा ।

मंगल खाना नं० 4

(जलती आग, बदी का सरदार जलाने पर आये तो मर्द माया के समुद्र भी जला दे)

पकड़ हौंसला तो मुसीबत सब कटती ,
मगर लेख उल्टे में हिम्मत ना हो बनती ।

चं० मुट्ठी बंद बाहर नथी,
मदद ग्रह नर चंद्र मिलती,
बुध केतु 8,4 या 3,
में बदी मंगलीक हो जलते,
गुलजार भरा जो कबीला अपना,
माता नानी और सास जनानी,
6वें चंद्र बुध माता मंदी,
अकल 12 बुध टेवे मारी,
किसी जगह 8,4 या 3,
बाकी घरों बुध केतु आये,
लकड़ी खुश्क से आग बनाना,
मुर्दे सुखा कर चूल्हा जलाना,
बैठा सामने शनि के जलता,
नज़र गैबी दो मालिक होता,
पढने लिखने की शक्ति दृष्टि,
पहाड़ फटे जब नज़र से उसकी,
राहु सवारी नेक मं० की,
बैठे-बिठाये अकल जो करती,
राहु होगा बुनियाद दोनों की,
नेक हालत में मदद दे शिवजी,
गुरु रवि 8 चंद्र बैठा,
उत्तम असर दूध सागर देगा,

रवि छटे खुद बैठा हो ।
बदी में ना होता हो ।
मदद रवि ना चंद्र हो ।
आग समुद्र मंदिर हो ।
28 भस्म जो करता हो ।
मौत चारों की मांगता हो ।
परिवार पापी 9 मंदा हो ।
पेट जला खुद दुखिया हो ।
में टेवे खुद बैठा हो ।
जहरी मंगल बद बनता हो ।
काम शनि का होता हो ।
राख में बद करता हो ।
कोसों मं० बद फूँकता हो ।
आकाश पाताल में देखता वो ।
मालिक नजर शनि होता हो ।
असर नजर बद करता हो ।
मील लाखों से देखता जो ।
मं० देखने की शक्ति देता हो।
बुरा भला हो जब कोई दो ।
विष्णु पालन खुद करता जो ।
4,9,3,11 जो ।
दांत सुबह पानी धोता जो ।

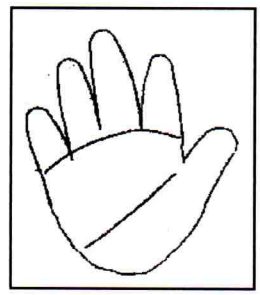

1. खाना नं० 3, 4, 8 में मं० होने वाला घर छोड़कर बाकी किसी दो घरों में ।

हस्त रेखा :- श्रेष्ठ धन रेखा या पितृ रेखा चं० से शुरू होकर मं० नेक पर समाप्त हो ।

नेक हालत

1. मं० बद न होगा बल्कि जहर के बदले दूध का उत्तम असर देगा । शरारत के बदले ठीक जवाब देने की हि मत का स्वामी, कबीले को पालने वाला होगा, दिल का साफ और सरल, सच्चा ।
-जब

अ. कोई दो पापी इक्ट्ठे मुश्तरका हो (श०, रा०, या श० के०) या दो बाहम शत्रु ग्रह (बुध, केतु)।

ब. चं० या शुक्र अकेले या मं० के साथ मुश्तरका खाना नं० 3-4-8 में हो, तो खुद उनका अपना असर बेशक कुछ ही और कैसा ही हो मगर मं० को मंगलीक या मं० बद न होने देगें।

स. जब चं० खाना नं० 1-4-7-10 से बाहर किसी जगह नष्ट हो रहा हो या सू० नं० 6 या मित्र ग्रह (सू०, चं०, वृ०) नं० 3-4-8-9 में हों यानि मित्र ग्रह (सू०, चं० , वृ०) मं० को मदद दे रहे हो तो मं० बद ना होगा।

नीचे लिखे हालतों में मं० को सूर्य की मदद ना होगी:-

1. जब खाना नं० 1-8 में मं० के साथ सू० ना हो ।
2. जब खाना नं 7-10-12 में सू० अकेला हो, या सू० नं० 5-9 के साथ केतु हो या सू० 6-12 के साथ राहु हो। या सू० नं० 7 शुक्र हो या सू० नं० 10 के साथ शनि हो या सू० नं० 12 के साथ बुध हो।
2. भाई की स्त्री, दबी दौलत उत्तम शुभ होगी। बड़े भाई की ओर या उनकी औलाद पर कोई बुरा असर ना होगा।

- जब मं० नेक हो।

मंदी हालत

1. **मोती भरे समुद्र ना लेख घर का जलता। माता शिकम के अंदर जो पांव तू ना धरता।।**
2. 32 दांत वाला तो बुरा बचन कह कर किसी का बुरा करेगा, मगर मं० बद या मंगलीक तो नज़र से ही तबाह करता होगा। उजड़े जंगल में उखड़े हुए या कटे हुए सूखे वृक्ष की लकड़ीयों से चूल्हा गर्म करना शनि का काम होगा, मगर बसे घराने से मूल्यवान और आवश्यकता वाले पुरुष को काट कर उसकी सुखाई गई लाशों से भट्टी जलाना मं० बद का काम होगा।
3. मं० बद का मालिक ऐसे घर में जन्म लेगा जहां कि एक दो पुश्त पहले कोई बुजुर्गी पूरा वृ० (ब्रह्मगुरु) खालिस सोना या शाहाना हो चुका हो और हर तरफ पूरा हरा बाग़ लहराता और हर तरह से मालिक की नजरे इनायत हों, जिसे ऐसा बदनसीब बरवाद कर सके। उजड़े खानदानों और वीरान घरों में कभी मं० या मंगलीक पैदा ना होगा। ऐसा व्यक्ति अमूमन स त कड़वा स्वभाव, अकड़ खां, एय्याश स्वभाव कम अकल हुआ करता है कोताह अन्देश और तकरीबन सारी आयु गुलामी में गुजार देगा। खुद मियाँ फजीहत औरों को नसीहत करने वाला होगा। मुंह फाड़ कर हरेक को उसके खिलाफ या ऐब की बातें सुना देगा।
4. बेमुहार ऊंट की तरह गर्दिश का घुमने वाला, बुरी नजर वाला, काला, काना, लावल्द आँख का नुक्स चालीस चंद्रा । हर तरह से मंदा, हर समय जलती आग और बदी का सरदार होगा। समुन्द्र को आग से जला देने वाला या ऐसी आग जो पानी से बुझने की बजाय ही सारे समुन्द्र को तह तक जला दे। खुद मां, सांस, नानी, स्त्री की आयु तक भारी होगा। भाई (बड़े) की स्त्री, दौलत और छुपे धन पर 28 साल आयु तक हर तरह से मंदा असर देगा। अगर किसी कारण से बड़े भाई जीवित हो तो वह लावल्द या मुर्दे के बराबर तंग होने या मन्दी सेहत के स्वामी होगें।
5. मं० बद के प्र ाव को नीचे लिखी हालते और भी मन्दा कर देगी:-

अ. जब मकान की तह जमीन के 8,18,13,3 कोने हो या मकान के अंदर तहखाना बंद किया हुआ या तहखाना फाड़ कर कुए के साथ मिलाया हो ।

ब. दरवाजा दक्षिण में हो या घर से बाहर निकलते वक्त आग दायें और पानी बायें या मकान रिहायश के ऊपर वृक्ष का साया या कीकर या बेरी का वृक्ष सहन में या पिछली दीवार के साि लगता पीपल का कटा हुआ रुंड़ मुंड़ वृक्ष साथी या सामने साथ ही लगता हो ।

स. घर के दायें बांये भड़भूंजे की भट्टी या आग के काम या मकान के अंदर कब्र या साथ लगता कब्रिस्तान हो ।

द. संतान रहित की जगह लेकर बनाया गया मकान या कूंए (चाहे पानी वाला या खुश्की) पर छत ड़ालकर बनायाा गया मकान हो या ऐसा मकान जिससे आम रास्ते में से आ कर हवा सीधी टकराने वाली हो, घर से निकलने का बड़ा रास्ता दक्षिण को हो ।

6. जब भी एय्याश स्वभाव हो कम अकल होगा, उम्र भर गुलामी में गूजारे, क्योंकि वह कोताहअंदेश होता है ।
7. खाना नं० 8, 4, 3 में सू० , चं० , वृ० ना हो या सू० या चं० या वृ० की मदद न हो और सू० , वृ० , चं० भी हो लेकिन अगर शनि या केतु (मंदी हालत) का साथ हो जाये तो भी मं० बद ही होगा और मं० बद मंगलीक की आग जोर पर होगा, जिससे घरबार, धर्म और पानी के समुद्र की तरह माया दौलत के सब खजाने जलते जायें । बुध, पापी ग्रहों की चीजें, संबंधी या काम बुध से संबंधित और पापी ग्रह बरबाद हों या करें। जब अकेला मं० हो और मं० 8, 4, 3 में से किसी एक घर मं० हो और बाकी दो में बुध केतु हो तो मं० बद होगा जिसके समय पतिहीन औरतें और अपना की कबीला बरबाद करे ।
8. **हर खाना नं० के लिए मंगल बद के हाथ की शक्ले :-**

किस्म	खाना नं०	प्रभाव
मं० बद	1-8	अपनी जान और खून के संबंधियों पर बुरा होगा या सिर्फ धन दौलत पर मंदा हो । जब केतु मंदा हो खाना नं० 8 का मंगल बद सिर्फ धन दौलत के मंदे स्वपन दिखाएगा, दोनों ही घरों पर मंदा हो अपने और दोस्तो, संबंधियों पर एक ही समय मंदा होगा ।
		क्याफा :- सेहत रेखा मंगल बद को ।
मं० बद	2	अपनी जान और खून की संबंधियों की औरतों की जान पर मं० बद, जब शनि मंदा हो ।
मं० बद	5,9,12	अपने और खून की संबंधियों की जानों पर मंदा हो ।
मं० बद	5,9,12	दूसरों पर मंदा हो जब बुध मंदा हो ।
मं० बद	6,10,11	दूसरे पर मंदा हो सिर्फ धन दौलत के लिए ।
मंगलीक	7	दूसरों की स्त्रियों की जानों पर मंदा, जब शनि मंदा हो ।
मंगलीक	4	अपनी ही स्त्रियों, मां, सास, जनानी पर मंदा जब शनि मंदा हो।

9. मं० नं० 4 का मंगलीक माल व जान व धन व परिवार दोनों तरफ से मंदी आग होगा । मगर सिर्फ एक ही घर बरबाद हो। मंगलीक (सिवाय 8, 12) वो अपनी 28 साला आयु तक बड़े भाई कोले मरे या अगर जिंदा तो लावल्द कर यादे या उसके बाजू बरबाद हो जावें । मं० नं० 8 साला आयु तक अपने छोटे भाई और मं० 12 वाला 28 साला उम्र तक अपने बड़े भाई पर मंदा होगा ।
10. 70 साला उम्र तक अपने वंश (जिसमें जन्मे) पर मंदा, उसके बाद 70 साला उम्र आने पर दूसरे वंश (बाप, दादा के संबन्धी) पर मंदा हो आखिरी उम्र में अंधा और सेहत में दु:खी होकर मरे।
11. बुध तायी चाची होगी। अपने घर की जहर बरबाद करती होगी जो ये बुध होगी ।

-जब बुध केतु नं० 8 ।

क्याफा

हाथ पर मंगल के पर्वत 8 पर लेटे खत ।

12. बरबादी के लिए अपने ही घर की जहर होगी जो प्राय कोई ताया चाचा होगा 7

-जब शुक्र या मंगल से कोई 4-8 में हो ।

इन हालतों में विधवा चाची ताई व विधुर चाचा, ताया की आशीष लेते रहना मदद दे ।

13. मंगल बद के वक्त एक तरफ मं० और दूसरी और मं० की दृष्टि में नर ग्रह हो तो खून के संबंधियों पर (हकीकी पर) मंदा हो । यदि स्त्री ग्रह हो तो स्त्रियों को बरबाद करे या खुद टेवे वाले पर मंदा । यदि ऐसी हालत में स त या पापी बुध, पापी ग्रह की चीजों का फल बरबाद हो या बरबाद करे ।
14. अपने लेख में सूखी घड़ी तंग हाल, ाईयों से अलग दु:खी, जिस वृक्ष के नीचे बैठे वह जड़ से उखड जाये या जहरीले साँप की तरह औरों को भी बरबाद करे । आवाज ढोल की तरह बुलंद होगी ।

-जब शत्रु ग्रहों का साथ हाथ पर मंगल का चिन्ह हो ।

15. छोटी उम्र में माता की उम्र तक मंदा साबित हो । जुबान की बीमारी और चोरों का शत्रु होगा ।

-जब बुध या चन्द्र नं० 6, शनि के साथ मं० बद हो ।

क्याफा

उम्र रेखा चंद्र के बुर्ज पर आखीर में त्रिकोण बनावे ।

16. अपने परिवार के लिए मंदा साबित हो । -जब पापी नं० 9 हो ।
17. दु:खों से मारा हुआ बेवकूफ तंग, अंदर के जलते हुए खून से तड़फता फिरे।

-जब बुध नं० 12 में हो ।

18. कायर, दरिद्र हो। -जब वृ० नं० 8 में हो ।
19. चोर, फरेबी, चूल्हा की भांति मंदा हाल । -जब शनि नं० 1 हो ।

उपाय

हर रोज पानी से दांत साफ करना, चन्द्र का उपाय या बढ़ (बरगद) के वृक्ष को दूध में मीठा डाल कर चढ़ावें, गीली की हुई मिट्टी का तिलक पेट की खराबी को दूर करेगा। आग की घटनाओं पर छत पर खांड की बोरियाँ, घोड़े के मुंह में देसी खांड, शहद में मिट्टी का बरतन ार कर शमशान में (लावल्दी के समय या और संतान की बरबादी), मृगछाला (लंबी बीमारी से छुटकारा), चाँदी चौकोर की मदद देगा। दक्षिणी दरवाजा लोहे से कील देवे। काले, लावल्द, काने, ढाक के वृक्ष से दूर रहे। सूर्य (तांबा, गुड1, गेहूं), चन्द्र (कुआं, घोड़ा, चांदी), वृ० (सोना, बुजुर्ग, साधू) को कायम करे, चिड़े-चिड़िया को मीठा डाले, हाथी दांत पास रखना मदद देगा।

मंगल खाना नं० 5

(रईसो का बाप दादा यदि बद तो शरारती, जद्दी घर से बाहर लगातार रहना लावल्दी ही देगा)

भरा सुख से सागर, जहाजो का बेड़ा।
खुश्क दम में करदे, न महबूब तेरा।

बाप दादा[1] वो रईसां होगा,
योग दृष्टि ऐसा बदला,
नेकी बदी 5 ताकत गिनते,
3-9 चाहे दुश्मन बैठे,
तकलीफ पीछे आराम हो
रात सिरहाने पानी रखता,

नींद पूरी[2] न सोता हो।
नजर तबाही बद का हो।
चं० भला नेक शुक्र हो।
बाहमी मदद ही करता हो।
मिलता, जन्म[3] औलाद से बढ़ता हो।
राहू मन्दा नहीं होता हो।

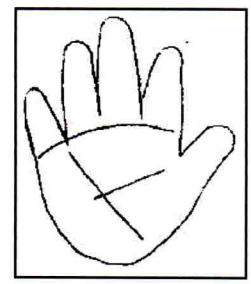

1. जब नं० 10 खाली।
2. जब नं० 9 और 10 दुश्मन हो।
3. जब मं० जागता हो या मन्दा न हो और नं० 10 खाली हो।

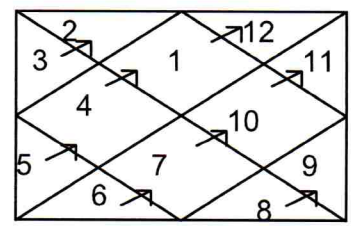

मंगल के शेर की दृष्टि:-

शेर से डरे हुए जानवरों की तरह सब ग्रह बुराई या मंदा असर करने के वक्त अपनी दृष्टि बदल लेंगे मगर बाहमी दोस्ती दुश्मनी बहाल होगी और चं० शुक्र सदा ही नेक ही फल के रहेगें, आपसी दोस्ती-दुश्मनी सबकी नियम के मुताबिक होगी।

दृष्टि बदली	कौन देखगा किस फर को	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
		12	बा-दस्तूर	नेक होगा	3	4	7	10	9	नेक होगा	11	वा-दस्तूर	वा-दस्तूर

हस्त रेखा

मं० नेक से शाख जब सेहत रेखा को काटे।

नेक हालत

1. खाना नं० 3 के ग्रह अब मं० के आधीन और खुद मं० नं० 9 के ग्रहों चाहे मित्र चाहे शत्रु पर मेहरबान होगा या 3-5-9 सब के ग्रह अब आपस में सहायक होगें और शुक्र और चं० चाहे टेवे में कैसे ही हो नेक फल देगे। मं० की नेकी और बदी हर दो कामों के लिए 5 गुणा शक्ति होगी। नीम का वृक्ष जिस कदर बूढ़ा होवे उससे ऐसी कीमती पानी निकले जो हजारों दवाईयों के काम आये। इसी तरह ऐसा व्यक्ति जितना बूढ़ा उतना अमीर होता जाये।
2. संसारिक कामों में न्यायप्रिय होगा, जिसका फैसला खाना नं० 3 से होगा, खुद या खानदानी हकीमी या डाक्टरी का जरूर संबंधित होगा।
3. दृष्टि बदली हुई होगी सिर्फ उस वक्त जब कोई भी ग्रह मन्दा होने या बुरा करने की हालत पर हो रहा हो। मसलन चं० जब अपने पानी से तूफान लाये या कुआं गर्क होने लगे तो 8 का चन्द्र, नं० 5 मं० के समय अपना बुरा असर खाना नं० 9 या अपने माता पिता पर करेगा उस वक्त जबकि वह खुद अपने बड़ों के नाम पर श्राद्ध दूध की खैरायत बन्द करे तो उसके माता-

पिता को दमा मिरगी संतान रहित मिलेगी।

4. वह विद्वान तथा संतान वाला होगा। स्त्री और संतान सुख होगा। उसके बुजुर्ग चाहे कैसे हो मगर वो और उसकी संतान के लिए हर गुजरी हुई पिछली घड़ी शुभ और कष्ट के बाद आराम देने वाली होगी संतान नेक और सुख देने वाली होगी मगर याल रहे कि सुख की नदी सिर्फ खूबसूरत पर ही ना खर्च होती जाये। रईसों का बाप और दादा होगा (बच्चे पोते रईस हो)।
5. संतान के जन्म दिन से बढ़ेगा जब मं० जागता हो और मन्दा न हो यानि खाना नं० 9 में कोई न कोई ग्रह जरुर हो या बड़ा भाई कायम हो और नं 10 खाली हो।

मंदी हालत

1. मंदे असर का वक्त जब कभी भी होगा, रात होगी, जिसकी निशानी केतु से संबंधित चीजो से पर होगी शरारती नजर से तबाही करता होगा।
2. आग का डर खतरा तथा नजर का डर होगा। संतान का सुख कम होगा, सफर गले लगे रहेगा और औलाद को अठारा [1] की बीमारी। माता-पिता के भाई-बन्धु पुरुषों की मौतें। अपने भाई की संतान की मौतें, मगर स्त्री, लड़की भाभी या किसी भी स्त्री जाति की मौत ना होगी। करीब संबंधियों पर बुरा असर हो। अपने जद्दी घर घाट से लगातार बाहर रहना लावल्दी देगा।

   1- अठारा संतान का हर आठ अंक या 18 पर गुजर जाना यानि 8 दिन, 8 साला और आाखरी हद 18 साल की आयु पर गुजर जाना।
3. तेरा महबूब ही तेरे जहाजों के बेड़े की तबाही का कारण होगा।
4. रात की पूरी नींद नसीब न होगी जिसके लिए रात को सिरहाने पानी रख कर सोने से मं० बद और राहू की मंदी शरारतों से बचाव होता रहेगा। - जब नं० 9-10 में शत्रु (बुध, केतु) हो।

मंगल खाना नं० 6
(तरसेवें की औलाद, संन्यासी साधू, अगर मंगल बद तो फसादी)

बजे नाम लड़के पे बाजा जो शादी।
ग़मी देर करती ना उस जगह पे आती।

न कमी औलाद माया, *ना ही दुखिया बाप हो।*
भाई बंधु होवे सुखिया, *बढ़ता जिस दम आप हो।*

वरना

वही हो शिव शम्भु, *गिरा कोठे लगा तम्बु।*
केतु शुक्र बुध चंद्र जाती, *मंदा जानो पर होता हो।*
रवि बैठा चाहे टेवे रद्दी, *असर भला वो देता हो।*
गुरु रवि या हो बुध मंदा, *संतान होती नर एक ही हो।*
शुक्र भला हो 7 हो उम्दा, *फलती नस्ल तीन पुश्तो हों।*
खुशी संतान ना हरगिज फलता, *ना ही दिखावा उत्तम हो।*
जिस्म पे उनके सोना आता, *दुखडे खड़े और मातम हो।*

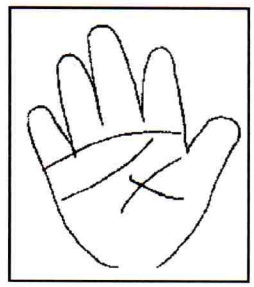

1. जब जागता तथा कायम हो ।
2. शनि(जाति गृहस्थ), बुध(भाई) की मदद ।
3. जब केतु मंदा हो तो 34 साला उम्र तक ।
4. मकान गिरा कर त बू लगा दे ।

उपायः- बुध चंद्र द्वारा संतान (केतु-शत्रु), चालचलन का उपाय सहायता देगा ।

हस्त रेखाः- मं० नेक से रेखा आयत खाना नं० 6 में समाप्त हो ।

नेक हालत

1. हि मत से भरा हुआ पाताल और पानी में भी आग जला देने की शक्ति का स्वामी, कबीले का रक्षक, खुद हाकिम तथा संसारी

न्यायप्रिय हो । साधु संन्यासी की तरह अपने आप मारने वाला अकेला ही धर्मवीर होगा।

2. सूर्य अब टेवे में कहीं भी कैसा ी बैठा हो उत्तम फल देगा । बुध के कारोबार दोस्ती तथा लिखाई की विद्या, राग विद्या, बोलना-चालना व्या यान आदि का शौकीन व मस्ताना होगा । कलम में तलवार से अधिक शक्ति होगी जो लिख देगा वह मिटाने पर भी न मिटेगा । अपने चाल चलन पर पूरा काबू होगा। राहू का अब नं० 12 में कोई मंदा असर ना होगा वरना मगर केतु शक्की ही होगा ।
3. जिस दम खुद बढ़ेगा बड़े भाई और दूसरे साथी बढ़ेगें जिसके सबूत में अनाज भरने की कच्ची मिट्टी की कोठियां 14 साला आयु तक कायम होगी। वरना वह गिरा कोठा लगा त बू तैसा हाल हो। जाती गृहस्थ के वास्ते लडकियों की पूजना, भाईयों की मदद, माता द्वारा बुध की पूजा यानि लड़कियों और केतु और शत्रु से बचाव का उपाय सहायक होगा ।

-जब मं० जागता हो या कायम हो ।

4. पोते-पड़ोते देख कर मरे तीन पुश्त तक औलाद की बरकत और परिवार बढ़े ।

-जब शुक्र भला या नं० 7 उ दा या नं० 7 में श० बुध, केतु हो।

क्याफा

गृहस्थ रेखा अंगूठे की तरफ झुक जावे।

5. संतान की कोई कमी ना होगी बल्कि संतान उत्तम ही होगी, 24 साल संतान होती रहे । -जब वृ० , सू० , बु० उत्तम ।
6. संतान के लिए मंदे मगर गुरु, सू० और बु० उत्तम होने पर संततान का परिणाम नेक होगा ।

-बेशक के० नं० 8,श० नं० 5 हो ।

मंदी हालत

1. खुशी के बाजे से मातम की आवाज क्यूं आने लगी । जिस जगह बैठकर संतान के नाम पर खुशी की महफिल करता होगा वहीं ही कुछ दिन के अंदर मातम के आंसू बहाता होगा । उसके भाई उससे माली हालत में कम होंगे अगर किसी तरह अच्छी हालत के हो गये हों तो भारी हानि देखें, अत: उसके भाईयों को चाहिए कि वह मं० नं० 6 वाले भाई को कुछ न कुछ दे रहें जिससे कि उनका बचाव होता रहे । अगर वो भाई ना लेवे तो चलते पानी में ऐसी चीजें जो कि वो उसको देना चाहे वहाँ दें ।
2. केतु (मामों, संतान): शुक्र-स्त्री भाग्यु(स्त्री नहीं): बुध लड़की, बहन, बुआ: (चं०) दूध वाले पशु माता: केतु, शु०, बु०, चं० चारों ग्रहों से संबंधित रिश्तेदारों की जानों पर मंदा होगा। स्वयं झगड़ालू पर नर संतान की कमी करने वाला । मामें दुखी या बरबाद, तरस के ली हुई संतान ।
3. नर संतान सिर्फ एक लड़का हो, मगर लावल्द न होगा । -जब गु० , सू० , बु० मंदा हो ।
4. 34 साला आयु तक संतान जरूर कायम होगी । संतान की खुशी मनाना संतान की मंदी हालत की निशानी होगी । पहला लड़का शायद ही कायम रहे अत: मिठाई की जगह नमक की चीजे बाँटना शुभ होगा । संतान के शरीर पर सोना डालना भी उनके लिए जहमत डालना होगा । जब तक शरीर पर सोना न डालेगी, सोना कमायेगी, सोना डालने पर सोने को खाक में उड़ायेगी । -जब केतु मंदा हो ।
5. बहन भाई कम होंगे, दुख का बहाना हो । -जब बुध नं० 12 हो ।
6. माता छोटी उम्र में चली जाए । -जब बुध नं० 8, सू० ,चं० की मदद हो ।
7. पहिले खुद छोटी उम्र में गुजर जाये, बाद में माता भी गुजर जाये । -जब बुध नं० 4 हो ।

उपाय

1. खुद अपना गृहस्थ मंदी हालत में होने के समय शनि का उपाय करें।
2. भाईयों की मदद के लिए लड़कियों की पूजा तथा आशीर्वाद सहायता करे।
3. संतान के लिए चं० (माता, दूध, चांदी), बुध (लड़की, बहन, बुआ, फूफी, मासी) का उपाय ।
4. चालचलन की मजबूती लंगोटे का यतिपन, निर्धनता: केतु-देरवेश मिट्टी उड़ती और तूफानी हालत के घर जन्म का होते हुए भी समय का शेर बहादूर और शत्रुओं को पांव तले दबा लेने की हि मत का प्राणी होगा ।

मंगल खाना न० 7
(मीठा हलवा, विष्णु पालना अगर बद तो मनहूस)

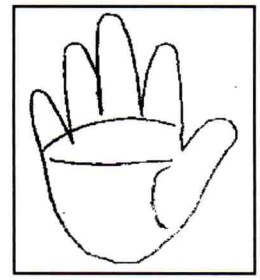

मिलेगा सभी कुछ, जो दरकार घर में ।
शर्त सिर्फ इतनी, दोबारा न तलबे ।

शान मकानां सब कुछ उत्तम, धन दौलत परिवार ही सब ।
सब का सब ही रद्दी होगा, बुध मिले में से जब ।
बुध शनि घर 6-7 बैटे, मौत पराई लेता हो ।
बुनियाद भतीजा अपनी गिनते, तुख्म सोहबत ना छुपता हो ।
शुक्र, गुरू कोई हो घर पहले, राज हुकूमत बढ़ता हो ।
गणित विद्या प्रवीण गिनते, खून वजीरी होता हो ।

1. शनि का मकान बनाकर गिराते जाना वाला उपाय सहायक होगा।

जब बुध नं० 1-7-8 या किसी और जगह मंदा हो, व्यापार विधवा बहन, भाई का आपस संबंध ।

2. नेक अर्थों में । 3. मंदा।

हस्त रेखा:- मं० नेक से गृहस्थ रेखा जब शुक्र में खत्म हो। मं० नेक से रेखा बुध में जा निकले ।

नेक हालत

1. भाग्य की तकड़ी तौलने वाला छुपा देवता धन में अगर देगा तो बेशुमार धन दौलत वरना खाक ही उड़ेगी। अर्थ ये कि मध्यम दर्जे का जीवन नहीं होगा ।
2. मीठा हलवा, मीठी रोटी पकवान से अधिक उत्तम जीवन होगा । अगर उत्तम हुआ तो मच्छ रेखा, नहीं तो संतान रहित ही होगी । भाई के औलाद की पालना मुबारक होगी । स्त्री सुख पुरा, छोटा वजीर, धर्मात्मा, नेक नाम, दुख समय रोते को ढांढस बंधवा कर साहस और मदद देकर हंसाने वाला हो ।
3. विष्णु जी की तरह पालना करने वाला, सांसारिक न्याय प्रिय होगा । मगर सोहबत का असर कभी खाली न होगा । राज हकूमत बढ़ता होगा । गणित में प्रवीण होगा और वजीरी खून का संबंध होगा । जागीर और दौलत की बरकत होगी ।
4. जिस भी किसी चीज की इच्छा हो वह एक बार तो जरूर मिलेगी मगर दूसरी बार या बारबार मिलने की कोई शर्त ना होगी। -जब गुरु या शुक्र कोई नं० 1 हो।
5. गुरु शुक्र कोई घर जब पहले योग पूर्ण खुद मं० करता। -जब धन-दौलत परिवार ही सब मिले मं० से ।

मंदी हालत

1. *मं० 7वें सब कुछ उत्तम, धन-दौलत, परिवार ही सब । सब का सब ही रद्दी होगा, बुध मिले मं० से जब।।*
2. मनहूस मन्दी हालत कोढ से कम न होगी, खासकर जब खुश्क, खाली कुँए का साथ हो या बुध की चीजों का व्यापार और बुध के संबन्धियों द्वारा या साथ से होने लगे वहन जल्द बेवा हो और पतिहीन बहन का साथ ही रहना टेवे वाले हो संतान रहित देगा और बुध की गन्दी चीजों का साथ मंदे प्रभाव का सबूत देगा। मसलन विधवा बहन या साली या भतीजी, भाभी, बुआ, दोहती, पोती का साथ ही रहना । कलम या उसकी मु त मिली नीव, मकान में चमगादड़ या चौड़े पत्तों के दूध, मोहर, तोता या मैना, खुश्क फूल कलीगिरी का काम, सफेदी का काम, दूसरी चीजों का ठप्पा या ढांचा, भोंड़ी गाय या बकरी, खाली बांस या खुश्क घास के अ बार, शराब-कवाब, या भूत की खुराक, सीड़ियां बारबार बना कर गिराना, ढोलक या तबले का हर समय बजना (बतौर अपने शौंक से) सब मंदे परिणाम देंगे। मगर शनि के उपाय द्वारा छोटी सी दीवार बनाते रहना और गिराते रहना सहायक होगा। -जब मंगल बद हो या बुध खाना नं० 1, 7, 8 या किसी और जगह मंदा हो।

क्याफा

मं० के बुर्ज नं० 3 से रेखा बुध के बुर्ज नं० 7 पर जा निकले या सिंह रेखा आखीर में दो शाखाएं हो जाएं।

3. खून मंदा या जिस्म का सीधापन अगर डॉक्टर या हकीम राय दें तो मंजूर (जली हुई ईंट शनि की चीज) और दही की लस्सी (शुक्र) ठीक ढंग से प्रयोग करना सहायक होगा। -जब कभी बहन आये मीठे से खाली ना जाये। आपस में इक्ट्ठे

रहने के समय विधवा बहन को सुबह मीठा देकर काम शुरु करना सहायक होगा। घर में ठोस चाँदी कायम रखने से परिवार की बरकत होगी।

4. मौत पराई अपने सिर पर लेगा। पूरा मंगल बद मगर कबीला परवर (पालने वाला) होगा। भतीजे अपने भाग्य की मदद की नींव होंगे। -जब बुध, शनि खाना नं० 6-7 में हों।

मंगल खाना नं० 8
मौत का फंदा (बलि की जगह)

वचन बेवा देती जो नेकी का तुझको।
बुझे आग़ खुद ही जला देती घर को।

खाली मंदिर' से मंगल उत्तम,
तीन-चौथे 9 पहले चन्द्र,
बुध मंगल ना इस घर मंदा,
तंदूर मिट्टी हो जब घर जलता,
चीज़ मंगल ना मंदी कोई,
बुध बढ़ेगा जितनी जल्दी,
इस्तकलाली मर्द हो पक्का,
शक्ति शुभ आक्रमण रोके,
मालिक टेवे ना में मंदा,
आयु दौलत खुद अपनी लम्बी,
असर शुभ देता हो।
ज़हर मंगल न रहता हो।
कायम अंधेरी कोठरी जो।
बचता बाकी ना कोई हो।
मंद मुसीबत बुध से हो।
उतना बुरा बद मंगल हो।
जिस्म मेहनत पूरी करता हो।
बैठा चंद्र चाहे कैसा हो।
मंद करीबी खून पै हो।
जलता जलाता औरों को हो।

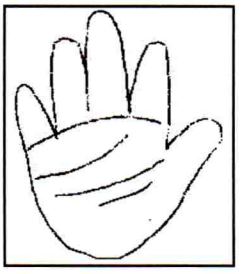

1. खाना नं० 2 ।

हस्त रेखा:- **मंगल नेक से शाख मंगल बद को ।**

नेक हालत

1. दिमागी खाना नं० 8 शनि से आपसी, पक्के इस्तकलाल (जो कह दिया सो करे) का पुरुष होगा । परिणाम चाहे जय हो या पराजय । उसका जिस्म पूरी मेहनत करने का आदी होगा । उसका शत्रु चाहे कितना ही आग से भरा हो, शत्रु का हमला रोकने की पूरी शक्ति का स्वामी होगा । स्वयं न्याय प्रिय स्वभाव का होगा ।
2. मंगल का फल नेक तथा उत्तम होगा। -जब मंगल सोया हुआ या खाना नं०2 खाली हो या नं० 2 में मंगल के मित्र ग्रह चं०, वृ० हो।
3. मंगल बद ना होगा । -जब नं० 1, 3, 4, 8, 9 में चंद्र हो ।
4. अब बुध मं० दोनों ही सबसे नेक फल देंगे जब तक जद्दी मकान के आखिर पर अंधेरी कोठरी कायम हो । -जब बुध नं० 8 हो ।

मंदी हालत

मंगल 8वें आठ बरस तक,
लाख मुसीबत खड़ी है करता,
फर्क छोटा भाई गिनते हैं।
अंत बुरा नही गिनते हैं।

1. टेवे वाले और उसके छोटे भाई की आयु में अमूमन 8 या चार बरस का फर्क होगा । कई बार 13-15 साल तक भी छोटा भाई नही होता। कई बार तो छोटा भाई होता ही नहीं। छोटे ाईयों का बेड़ा ही गर्क करने वाला साबित हो । आने वाले ाईयों को रोके और वापिस भेजे। अगर उसकी अपनी 8 वर्ष की आयु से पहिले या अपने से छोटे की 8 वर्ष की उम्र के बाद कोई और भाई जीवित हो तो सब के लिए दु:ख या मातम की निशानी होगी ।
2. मंगल का बुरा असर टेवे वाले पर न होगा। जब मंगल को चंद्र, सूर्य वृहस्पति की सहायता ना मिले या जब मंगल बद हो तो मंगल से संबंधित बड़ा भाई, ताया, मामा (जो माता का बड़ा भाई हो), करीब संबंधियों पर माता के पेट में आने के वक्त या जन्म समय से ही बुरा असर होना शुरू होगा । मगर अपनी माता पर किसी तरह ी मंदा प्रभाव ने देगा वो अच्छी सेहत, ल बी उम्र और कल की फिक्र न करने वाली होगी उस की अपनी आयु और धन भी ल बे होंगे । चाहे आयु का स्वामी चंद्र कभी ी कैसा ही बैठा हो जलता जलाता दूसरों का होगा । विधवा का बुरा वचन या बददुआ तेरे भाग्य और किस्मत की उ दा शान को जला देगी। उसकी आशीर्वाद ऐसा तारेगा कि वारे न्यारे कर देगा । मंदी हालत में तंदूर में लगाई हुई रोटी बनाने

का तवा जब गर्म हो जाये और उस पर ठंडे पानी के छींटे ड़ाल कर फिर रोटी पकाने से घर की बिमारियां दूर होंगी ।

3. अगर किसी कारण से छोटा भाई जीवित हो तो उसका खून या भुजा मंदे या निक में होंगे । -जब बुध केतु नं० 2 हो ।
4. अकेला बैठा मंगल बद 28 साला आयु तक मौत का फंदा होगा । खाली कब्र होगी जिसमें जो भी बदनसीब हो आ लेटे । मं० अब मंगल बद होगा जिसमें धन दौलत के मंदे स्वप्न आम होंगे मगर जानों पर फिर भी मंदा न होगा । गले में हर वक्त चांदी को कायम रखना शु ाफल देगी। दक्षिण द्वार या वैसे ही घर में जमीन के नीचे भट्टी सदा के लिए कायम सीमेंट से बना कर जो हर विवाह शादी पर खोले और फिर बंद करे या जमीन के नीचे तंदूर मंदा होगा । इतने मातम हों कि कबीला तक भस्म हो जाये। ऐसी भट्टी पर जिस किसी भी पुत्र या पुत्री की शादी के लिए खाद्यान्न बनाया जाये वह संतान रहित होंगे । मंदी हालत की निशानी और बहाना बुध की चीजें होगी। मंगल की कोई चीज भी दु:ख का कारण होगी। तंदूर में लगाई मीठी रोटी कुत्ते को 40-43 दिन देते रहना सहायक होगा । -जब खाना नं० 2 खाली न हो मंगल बद होगा।

क्याफा

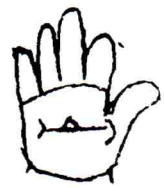

सिर रेखा के ऊपर त्रिकोण △ या दो रेखा < > / ∧ ∨ या मंगल के बुर्ज नं० 3 में उल्टी गृहस्थ रेखा यानि अंगूठे के जोड़ की तरफ गृहस्थ रेखा की पीठ हो ।

5 माता बाल्यकाल में गुजर जाये । -जब बुध नं० 6 में हो ।

6 दु:खी तथा निर्धन हो । -जब मं० बद हो यानि चं० या सू० या वृ० खाना नं० 1, 3, 4, 8 में ना मिलते हो।

7 जिस कदर बुध उ दा होगा उसी कदर मंगल मंदा होगा। -सिवाय खाना नं० 8 या 6( ) के बुध टेवे में कहीं भी हो ।

उपाय:- नं० 8 के मंगल बद का वही उपाय हो जो मंगल नं० 4 में लिखा है ।

मंगल खाना नं० 9

(बड़ो से चलता आया सिंहासन, यदि बद तो नास्तिक बदनाम)

बड़े भाई की ताबेदारी जो रहता,
जमाना गुलामी ना तुझे कोई कहता ।

सामान हकूमत पहले बने, *पीछे जगत में आता हो ।*
उम्र 13 घर धन गिनते, *28 राजा खुद बनता हो ।*
शुक्र चंद्र का नेक' हो मंगल, *असर उत्तम मच्छ रेखा हो ।*
राज रवि हरदम प्रबल, *बैठे टेवे चाहे कैसा हो ।*
बुध मंदा खुद में मंदा, *भला पिता ना माता हो।*
बड़ा भाई जब साथी उसका, *गुजर बुरा ना होता हो ।*
शेर मैदानी किस्मत उसकी, *हाथ फैलाए न होता हो ।*
माता पिता की हालत अपनी, *चंद्र गुरू पर चलता हो ।*
सेवा भाई न गुलामी गिनते, *विजय जगत दो मिलता हो ।*
शेर राजा वो जंगल कटते, *लंगा जले भाई लड़ता हो ।*

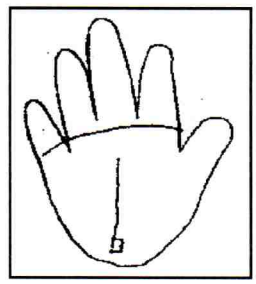

1 जब शुक्र या चंद्र की दृष्टि या साथ हो जावे ।

हस्त रेखा **किस्मत रेखा की जड़ में चौकोर हो ।**

नेक हालत

दम दमे में दम ना हो, चाहे खैर हो 3-5 की' । बुध अकेला छोड़ के सब, उत्तम हो ग्रह चाल की ।

2. किस्मत के मैदान का शेर भागते हुए गीदड़ से मांग कर खाए ।
1. एक जंगल में दो शेर या एक जगह दो खानदानी बहादुर राजा इकट्ठे गुजारा नहीं कर सकते मगर ऐसे टेवे मे भाईयों की अलहदगी से लंका जलने की तरह उनकी हालत होगी यानि इकट्ठे रहने से दो भाई भाग्य के मैदान में दो शेरों का जोड़ा होंगे। अकेला ही मं० हो तो बड़ों से चलता आया शाही ज त जन्म से ही तैयार हो जाये । स्वयं संसारी न्याय प्रिय हो । भाई की स्त्री किस्मत का आधार होगी । जितने बाबे उतने ही स्वयं भाई होंगे ।
2. शुक्र चं० का फल नेक (जब शुक्र या चं० का साथ या दृष्टि द्वारा संबंध हो जाये) और स्वयं अपना सूर्य टेवे में चाहे कैसा बैठा हो प्रबल होगा, नेक बल्कि उच्च फल देगा और जद्दी मकान यानि उसके बुजर्गों के संबंध में सूर्य नं० 2 का दिया फल पैदा हो, खाना नं० 3-5 अवश्य ही शुभ होंगे ।

3. अकेला मं० धन की मच्छ रेखा का फल देगा जब बड़े भाई मं० की चीजें काम या संबंधी का साथ हो। गुजारा सदा उत्तम होगा । संसार में बहादुर शेर की तरह उजले भाग्य का स्वामी होगा और गरीबी से तंग आकर किसी के आगे हाथ न फैलाने वाला होगा ।
4. माता-पिता की हालत का फैंसला चं० (माता), वृ० (पिता) की हालत पर होगा । जंगी खून और शाही जंगी धन से राजाओं जैसा पालन और स्वयं उसी काम से राजाओं जैसी हालत का स्वामी होगा जिसे संसार में राज्य तथा धन एकत्रित करने का सामान बहुत मिलेगा। जंगी खून व काम और जंगी शाही धन सदा मदद देगा, कर्म धर्म और आयु सब उत्तम हो।
5. 13 साला तक माता पिता की हालत उत्तम करे और 28 साला आयु में खुद राजा की गिनती का मनुष्य हो । जिसका निर्वाह बहुत उत्तम हो ।

मंदी हालत

यदि मं० बद तो नास्तिक बदनाम भाग्य के मैदान के शेर को अब गीदड़ से ही मांग कर खाना पड़ेगा, माता पिता दु:खी (जंग) लगे होंगे । -जब बुध ममदा हो भाग्य रेखा की जड़ में मं० बद का निशान < / ^ त्रिकोण आदि हो ।

मंगल खाना नं० 10
(चींटी के घर भगवान् राजा)

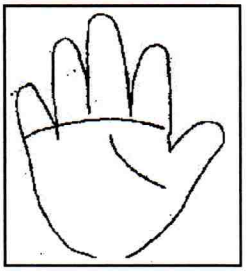

बिके घर से सोना तो हो दूध जलता ।
रहा जब ना चैं तो परिवार घटता ।

खाली दृष्टि मं० राजा,
मदद शनि से चीता बनता,
शुक्र चंद्र ओर पापी दूजे,
राज मुबारक चैं चौथे,
चं० रवि गुरु 6,3 बैठे,
लड़के पोते हो अकसर मरते,
4 रवि 6 चंद्र बैठा,
शनि मगर जब चौथे आया,
नजर शनि पे चलता हो ।
हमला मर्द न करता जो ।
संतान[1] देरी से पाता हो ।
परिवार शनि 3 देता हो ।
जलता जंगल[2] जर[3] घटता हो ।
सुखिया पिता न माता हो ।
मालिक[4] टेवा खुद काना हो ।
कैद राजा की पाता हो ।

1. हिरण का साथ या पालना शुभ होगा। 2. बुध । 3. गुरु । 4. जब माता घर का कुत्ता बने ।

हस्त रेखा :- गृहस्थ रेखा, शनि पर कायम हो ।

नेक हालत

1. चींटी के घर भगवान् आये की तरह परिवार को तारने वाला होगा अर्थात् जिस घर में जन्म लेगा वह घर पहले तो चाहे गरीब घराना ही होगा या हो मगर बाद में जरूर धनाढ्य का घर बन जाएगा और धन स्वयं पैदा करेगा । वह कभी संतान रहित ना होगा । दुनियावी शान का स्वामी हो जब बड़ा भाई मौजूद होवे । असल में मंगल नं० 10 के शेर की आंखो की दृष्टि का स्वामी शनि ही होगा या भाग्य के फैसले के लिए शनि जैसा भी टेवे में हो उसका रासता दिखाने वाला होगा । यानि मं० नेक और बद का फैसला शनि की हालत पर होगा। अगर मं० का प्रभाव शेर की हैसियत का ना हो तो अकेला मं० हिरण की तरह नेक और उत्तम होगा। चीता तो जरुर होगा जो पुरुषों पर हमला ना करेगा मगर बाकी सब सिफतों में किस्मत के मैदान में चीता ही होगा।
2. भाई का जीवन, भाग्य में माया की आय का आधार होगा। जितने ताये चाचे उतने खुद भाई नहीं तो मच्छ रेखा। आयु 96 वर्ष, धनी, अच्छी सेहत, गृहस्थी आराम, लड़ाई की शक्ति साहस का पक्का होगा।
3. राजदरबार उत्तम फल देवे, दूध में शहद की तरह सु ी जीवन हो परिवार दिन रात बढ़े और बरकत होवे। - जब चं० नं० 4 हो।
4. शेर से ज्यादा शरारती चीता होगा। - जब शनि का साथ साथी या मदद हो।
5. जायदाद, मकान चाहे कितने मगर नकद माया कम हो। - जब शनि नं० 3 हो।
6. सब असर उत्तम हो। - जब नं० 5 खाली हो।

7. राजा समान हर तरह से उत्तम फल हो। – जब दृष्टि आदि हर ओर से खाली और मं० अकेला ही हो।

मंदी हालत

घर से सोना बेचते ही दूध जलेगा और जब दूध गया तो संतान और कबीला बरबाद होगा।

1. एक यान में दो तलवारें, एक जंगल में 2 शेर या एक समय दो राजाओं के राज्य की ांति मन्दा असर हो या बरबाद करने वाला काला जादू हो। – जब दुश्मन ग्रहों का साथ हो।
2. संतान बहुत देरी से होगी ।

उपाय

हिरण का साथ या पालना करना या मं० बद काला, काना, संतान रहित की सेवा सहायक होगी।

– जब शुक्र या चं० या पापी नं० 2 में हो।

3. बुध मंदा होगा, जंगल उजाड़ की तरह हालत का स्वामी होगा। वृ०नष्ट,सू० बरबाद, मंदा सोना, मंदी हवा जो जलाती फिरे। अपनी कमाई बरबाद, लड़के पोते मरते हो और माता पिता सुखी न हो। – जब नं० 3–6 मं०,चं०, गुरु या सू० , मं० बद हो।

क्याफा

आयु रेखा शुरु से अंत तक 2 रेखा वाली हो।

4. टेवे वाला एक आंख से काना होगा जब माता घर का कुत्ता बने (नानके घर दोहता रहने लगे)। – जब सू० नं० 4 या चं० नं० 6 हो।
5. ना चोर ना डाकू, बिना कसूर बदनाम चोरी के गुनाह से राजा की कैद में बरबाद। – जब शनि नं० 4 हो।
6. दूसरों के लिए मं० अब मं० बद ही होगा मगर खुद आबाद होगा। – जब नं० 5 में कोई भी ग्रह हो।
7. लड़के पर लड़का मरे। – जब सू० नं० 6 हो।

मंगल खाना नं० 11

मिले कुत्ता दुनियां[1], कि हर दम जो होते।
असर शेर देगें चाहे, कितने ही सोते।

चीता मं० दरबार गुरु के,
हाल वृ० जैसा टेवे,
मं० 9 वे का असर देवें 13,
बुध शनि जब उत्तम बैठा,
उल्ट हालत बद मं० होगा,
पाप उम्र[2] तक दुखिया करता,
पकड़ा गुरु जंजीर में हो।
असर वही खुद में हो।
गुरु हालत चाहे कैसी हो।
सुखीया 24 जर 28 हो।
केतु भला न लड़का हो।
ना ही सुखी खुद होता हो।

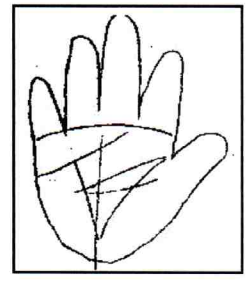

1. संसारी तीन तरह के कुत्ते।
2. राहु 42 केतु 48 , दोनों एक साथ 45 साला आयु।

हस्त रेखा:- मं० नेक से रेखा खाना नं० 11 बचत में हो।

नेक हालत

घर में अपने रखना मंगल,
शहद उत्तम उसका होगा,
फूल छोड़ मक्खी 3 शनि ही जब,
दम के दम ले आएगी सब,
शहर के बरतन मे 1 मीठा जीवन
फल 2 बध हो जसके खरे।
नेक और उत्तम मिले।
शहद के बरतन भरे।

1 गुरु चरणों के चरणामृत का आदी खूनी भोजन कब लेगा। ऐसा प्राणी दूध से पला पालतू शेर फकीरी हालत अच्छे अर्थो में मगर भेस में राजा समान होगा, जिसे संसार के तीन कुत्ते और केतु की चीजें काम, संबंधी शुभ फल देगें। 13 साला आयु से उसके माता पिता के पास धन का भंडार जमा हो। राज्य का साथ और सु ा कायम हो और 28 साल की आयु में माता पिता की वही हालत होगी जो उसके जन्म लेते समय चमकती शान वाली थी।

2. सोने की जंजीर में गुरु के हाथों में पकड़ा चीता होगा। यानि जैसी वृ० की हालत वैसी मं० की हालत जो बुध और शनि की नकल करेगा
3. जिस घर वृ० हो उस घर में लिखे हुए भाईयों की गिनती का स्वामी या वृ० 1 से 10 हो तो 9 भाई, 11 हो तो 2 और 12 हो तो प्राय: अकेला भाई।
4. 13 साला आयु से मं० का 9 दिया हुआ उत्तम फल देगा चाहे वृ० कैसा भी हो।
5. 24 से 28 साला आयु तक माया खूब जमा होगी। -जब बुध शनि उत्तम हो।

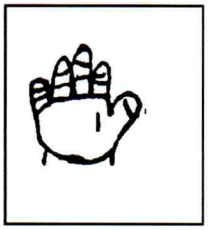

मंदी हालत:-

1. मं० के बुर्ज नं० 3 पर वृ० का सीधा खड़ा खत (काग रेखा) हो चन्द्रभान मनहूस अच्छी खासी आमदन होते हुए भी कर्जइ माता पिता का फल व्यर्थ जब तक वृ० (बाप दादा) की जायदाद को कौड़ी कौड़ी कर के न बेच देवे तभी उसका धन ठीक होने लगेगा। - जब नं० 3 खाली या मन्दा हो।
2. मं० बद की हालत में न सिर्फ केतु (संतान) 42,48,45 साल की आयु तक मामू बरबाद भाई बन्धु और मं० की जानदार चीजे दुख का कारण होगी, लेकिन वे खुद भी सुखी ना होगें लड़के जन्म दिन या केतु की पालना 3 कुत्ते आदि मं० के नेक समय के आने की निशानी होगी।

मंगल खाना नं० 12

दिया मीठा लोगों, चाहे मीठा खिलाया
कमी जर ना दौलत, सभी कुछ हो पाया

राजा होगा सुख का मं०, घर गुरु प्रवेश हो।
जन्म कुटिया या कि जंगल, चाहे वह दरवेश हो।
साथ गुरु या दूजे बैठे, पाया केतु घर तेरा हो।
मच्छ मुआवन हर दो तारे, बुध पापी नहीं बोलता हो।
8 तीजा ना मन्दा होगा, ना ही बुरा खुद राजा हो खाना 1
साल 24,28 में उत्तम होगा, या जब लडका पहला या दूसरा भाई हो
गुरु, शुक्र और केतु टेवे, आठ पहले 3-11 जो।
मदद मं० की हरदम करते, बैठा कोई चाहे कैसा हो।
8-3-9-12 बैठा, बुध असर खुद अपना अपना 1हो।
रवि बैठा 3-11 उत्तम, मौत बीमारी रोकता हो
रवि मन्दे में असर में का, तीन पहले फिर 11 हो।
असर राहु ना टेवे होगा, चुप हुआ वो बैठता हो।
बुध टेवे 8-4 जो आता, मंगल 6 वे चाहे 12 हो।
उम्र छोटी स्वयं पहले मरता, बाद उड़ावे माता को।

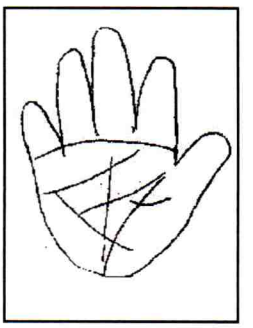

1. बुध का अपना ही 3-8-9-12 में दिया हुआ मन्दा प्रभाव।

हस्त रेखा :- मं० नेक रे ा खाना नं० 12 खर्च में हो।

नेक हालत

1. अब बुध का नं० 1 का कभी बुरा असर ना होगा चाहे नं० 1 वाला ग्रह कैसा ही बैठा हो और केतु नं० 1 का फल नेक होगा। ऐसा व्यक्ति गर्म स्वभाव वाला स्वतन्त्रा का स्वामी होगा और राहु का सारे टेवे में मन्दा असर ना होगा बल्कि राहु अब चुपचाप ही होगा।
2. गरजता हुआ शेर, दमकता परिवार, पकड़ते शत्रु और कड़कती तलवार का स्वामी होगा। साधु, गुरु, वृ० की पालना सेवा करने वाला या गुरु चरणों का ध्यान रखने वाला होगा। धन का खजाना चाहे हाथ में हो या ना हो मगर रात की नींद का बेआराम ना होगा।
3. वह सुख का राजा होगा चाहे जन्म किसी निर्धन की कुटिया या उजड़े जंगल की हालत के घर का ही हो। हाथी के लिए महावत, साधु के लिए समाधि। शेर के साथ गाय, कुत्ता और बकरी के साथ की तरह दूसरों से मिलने के लिए उसके अपने स्वभाव का मिलन होगा। अब बुध और पापी ग्रहों की कोई आवाज ना होगी, मगर बुध 3-8-9-12 फिर शक्की ही होगा। सारे टेवे में सब ग्रह नेक होकर चलेगें और नं० 11-8-3-1 के ग्रह अब कभी मन्दा असर ना देंगे, मगर केतु (कुत्ता भौं भौं) और बुध (बकरी दूध में मेंगने) अपनी नसल की आदत नहीं छोड़ सकते। सिवाय खाना नं० 1-3-8-11 में जहां कि

उनको (बुध, केतु को) भी चुप होना पड़ेगा।

4. 24-28 साला आयु या जब लड़का पहला, भाई दूसरा पैदा हो तो उत्तम होगा।
5. मच्छ रेखा निर्धन को धन और अमीर को सिहासन। हरदम बड़े परिवार लौह लंगर सवाया। ठीक आयु रेखा। कब्र से जिंदा वापस आए या फांसी लटकते पांव तले त त देना ताकि गला ना घुट जाय। बिन बुलाये सहायक आ उपस्थित हो। पृथ्वी और आसमान के बीच सब शत्रु छुप कर गारों में गुजरा करेगें। मं० की मदद पर होगें चाहे कैसे ही बैठे हो।

– जब केतु नं०3 या वृ० का साथ वृ०नं०2 या वृ०शु०केतु 8-1-3-11।

6. मौत बीमारी से सदा बचाव होता रहेगा जब तक नं० 11 का ग्रह नं० 8 का शत्रु न हो। – जब सू० नं० 3-11 में हो।

मंदी हालत

1. बुध अपना मंदा असर बहाल रखेगा और मं० का उस पर कोई जोर न चल सकेगा। – जब बुध नं० 3-8-9-12 में हो।
2. मं० का बुरा असर, सू० का मंदा असर नं० 3 पर बाद में नं० 1 और फिर नं० 11 पर होगा। – जब सू० मंदा हो।
3. मं० चाहे 12 नं० 6 हो पहिले खुद छोटी आयु में मरेगा बाद में माता भी जल्द ही गुजर जाएगी।

– जब बुध नं० 4-8 मगर चं० या सू० के संबंध ना हो।

मंगल बद के समय निम्न हालते आम होगी

4. सांस की मंदी हालत(वृ० से संबंधित), स्त्री दुख या माया की कल्पना (शुक्र से संबंधित), संतान की कमी दुख (केतु से संबंधित), शत्रुओं की गुमनाम शरारतें, फिजुल र्चा, जहमत बीमारी (राहु से संबंधित), मकान अपना या दूसरे का सजो समान शनि से संबंधित ।

मं० (तलवार) का बुध (दलील) से प्यार नहीं बेवकूफी का ठेकेदार, बेवकूफी के कामों में धन बरबाद, स्त्री सुख नष्ट, व्यापार मंदा बल्कि दृष्टि की शक्ति का भी बुरा असर गिनते है यदि अन्धा नहीं तो काना जरुर होगा (ज्यादा से ज्यादा 2 बड़े भाई), मगर उसकी 28 साला आयु तक वह खुद ही बड़ा होगा या अमूमन उसके बड़े भाई नहीं होंगे अगर हो तो दुखी और संतानहीन हो, लड़की के टेवे में यह शर्त नहीं। उनकी (टेवे वाली लड़की) लड़की के बड़े भाई की मदद के लिए ऐसे टेवे वाले के सिर पर मं० के रंग की पोशाक सू० या वृ० के रंग या चीजे वृ० चोटी, सू० खाकी रंग की पगड़ी सहायक होंगे। उसके बड़े भाई को चाहिए कि मं० 12 वाले को पानी की जगह दूध पिलाये और अपने पास चं० की चीजे, चावल चांदी रखे। मीठा खाना और मीठा खिलाना धन और आयु के लिए सहायक होगा। सू० को पानी देना (मीठा डालकर) शुभ होगा । कुत्ते को मीठी रोटी देना सहायक होगा।

5. अपनी 28 साला आयु तक बड़े भाईयों की आयु तक भारी होता है सिवाय उस बड़े भाई के जिसके टेवे में नं० 10 में मं० हो, ऐसी हालत में जब कभी नं० 12 वाले का बुरा असर बड़े भाई पर होता मालूम हो वह बुरा असर उस मियाद पर खुद नं० 12 वाले पर ही हो जाएगा। – जब नं० 3 में कोई भी दो या दो से अधिक ग्रह हो।
6. मंदी हालत के समय अपने धर्म स्थान से सहायता सहायक होगी और चं० मं०, दुध में शहद या खांड़ मिला कर दूसरे संसारी साथियों को देना या मीठी रोटी का खुद प्रयोग करना और दरवेश, फकीर कुत्ते आदि को भी मीठी रोटी का हिस्सा देना और अंत में सू० को पानी देना या मीठा मिला पानी देना सदा नेक फलदायक होगा।
6. मं० का असर मंदा होगा। भुजा निक मी दुखिया होगी, धर्म स्थान में पताशे देना (बुध) मं०, शं० का फल नेक कर देगा। बेशक मं०, बुध, शनि तीनों ही कुण्डली के बाकी घरों में कितने ही मंदे क्यूं न हो। – जब शनि नं० 2 में हो।

———

बुध

बुध
(शक्तिमान वनस्पतियों का राजा)

खुला करते सुराख मैदान बढ़ाता।
बढ़ी अक्ल इसकी खर्च खुद जो करता।।

उल्ट पांव चमगादड़ लटका, *छुपी शरारत[1] करता हो।*
घर पक्का जिस ग्रह का होगा, *वहां वही बन बैठता हो।*
साथ बुरे ग्रह सबसे मंदा, *भला भले से होता है।*
चन्द्र, राहु का हो जब झगड़ा, *बुध[2] मारा खुद जाता है।*
बुध नज़र जब रवि हो करता, *दर्जा दृष्टि कोई हो।*
असर भला सब दो का होगा, *सेहत माया या दिमाग़ी हो।*
बुध, चन्द्र से हो जब पहले[3], *रेत ज़हर पानी भरतद्य हो।*
तीन-चौथे 7-9 ग्रह बैठे[4], *राख हुए कुल जलता हो।*
शुक्र बैठा जब बुध से पहले, *असर राहु का मंदा हो।*
बुध पहले से शुक्र मिलते, *केतु भला खुद होता हो।*
बुध, शुक्र न इकट्ठे मिलते, *उम्र जाया यों करता हो।*
शत्रु दोनों का साथ जो बैठे, *असर दोनों न मिलता हो।*

1. बुध बैठा होने वाले घर का मालिक ग्रह जब खाना नं० 9 में बैठ जाए तो बुध की तरह वह खाली चक्कर या बेकार निष्फल होगा।
2. मंदे बुध वाले को नाक छेदन करवा लेना और दांत साफ रखना, लड़कियों की सेवा सहायक हो।
3. खासकर गुरु और चन्द्र ही मंदे।
4. शुक्र का शत्रु सूर्य, चन्द्र, राहु; बुध का शत्रु चन्द्र वगैरा।

आम हालत 12 घर:-

घर 2-4 या 6 वें बैठा[1], *राज, योगी बुध होता हो।*
7 वें घर में पारस होता, *ग्रह साथ को तारता हो।*
9-12-8 तीसरे 11, *थूके कोढ़ी बुध होता हो।*
घर पहले 10 घूमता राजा, *परिवार[2] धन 5 देता हो।*

1. सिर्फ खाना नं० 4 के बुध में राहु, केतु का प्रभाव नहीं, इसलिए राजयोग है बाकी हर जगह पाप बुध के दायरे में होगा।
2. ज़हर से भरा बुध जब बैठा हो।

अ) खाना नं० 3 में कबीले पर भारी और खानदान पर मंदा हो।
खाना नं० 8 में जानदार चीज़ों और जानों पर मंदा हो।
ब) खाना नं० 9 टेवे वाले की अपनी ही हर हालत धन-दौलत मालोजान पर मंदा हो।
स) खाना नं० 11 में आमदन की नाली में रोड़ा अटका दे।
खाना नं० 12 में कारोबार और रात की नींद बर्बाद करे।

ज़हर से भरा बुध स्वयं मारा जाए तो बेशक मगर 1 से 4 (सिवाए खाना नं० 3 जहाँ कि दूसरों के लिए थूकना कोढी मंदा होगा) पर मंदा न होगा, 5-10 में डर तो ज़रूर देगा। 11-12 में हड़काए कुत्ते की तरह जिसे काटे वह आगे हड़का कर भागे। बुध अमूमन खाना नं० 1-9 से 12 में शनि की सहायता करेगा यानि विषैला लोहा मार देने वाली विष, निर्धन करने वाला होगा। 3 से 8 में सूर्य की सहायता, धन के उत्तम चाहे 3-8 में हज़ारों दु:ख खड़े करेगा।

राहु का स बन्ध :-

जब बुध और राहु दोनों इकट्ठे या दोनों में से हर एक जुदा-जुदा मंदे घरों में बुध अमूमन 3-8-9-12 में, राहु अमूमन 5-7-8-11 में हों तो अगर जेलखाना नहीं अस्पताल या पागलखाना या कब्रिस्तान वीराना तो अवश्य मिलेगा, कसूर या बीमारी चाहे न हो। फ़िज़ूल दु:ख मंदे खर्चे आम होंगे। फौलाद का बेजोड़ छल्ला जिस्म पर सहायक होगा और दोनों ग्रहों की चीज़ें या काम करने से बुध, राहु इकट्ठे गिने जाएंगे।

बुध का अर्थ :- <u>बहन, बुआ, फूफी, मौसी, साली, व्यापार तथा दूसरे बुध के काम होगा।</u>

राहु का अर्थ :- <u>ससुराल, नाना-नानी, बिज़ली, जेलखाना आदि राहु के काम हैं।</u>

बुध से केतु का स बन्ध :-

जब दोनों दृष्टि से आपसी मिल रहे हों, बुध का आम साधारण जैसा कि टेवे में बैठे होने के हिसाब से हो, मगर केतु का फल, नीच केतु या मंदा ही होगा। बुध के बिना सब ग्रहों में झुकने-झुकाने की शक्ति कायम न होगी।

सामान्य फल :-

1. बुद्धि के काम, व्यापार, हुनरमंदी, दस्तकारी, दिमाग़ी बुद्धिमता से धन कमाने का 34 साल की आयु का समय बुध की हुकूमत होना, किसी भी चीज़ के न होने की हालत बुध का होना या उसकी हस्ती कहलाती है।
2. ज़हर से भरा बुध खाना नं० 1 से 4 में (सिवाए खाना नं० 3 जहाँ कि दूसरों के लिए थूकता हुआ कोढ़ी मंदा होगा) साथ बैठे ग्रह पर कभी मंदा प्रभाव न देगा। स्वयं चाहे अपने बुरे प्रभाव टेवे मगर कोई मन्दी घटना न करेगा।
3. 11 से 12 को जिस ग्रह को काटे वह हड़काए कुत्ते की तरह दूसरों को भी आगे हड़काता चला जाएगा।
4. चन्द्र, राहु के झगड़े में बुध बर्बाद होगा।
5. बुरे ग्रह के साथ बैठा उस ग्रह का प्रभाव और भी मंदा कर देगा और भले ग्रह के साथ बैठने से न सिर्फ उस भले ग्रह को और भी भला कर देगा, बल्कि स्वयं भी भला हो जाएगा यानि जिससे मिलेगा उसकी ही शक्ति का प्रभाव देगा। यह ग्रह वृक्षों पर उल्टे पाँव लटके हुए चमगीदड़ की तरह अंधेरे में जागकर छुपी हुई शरारत करता होगा। मकान में मंदे बुध की पहली निशानी होगी कि नए बने-बनाए मकान में किसी न किसी कारण से सिर्फ सीढ़ियां गिराकर दोबारा बनने का बहाना होगा। चारदीवारी और छत नहीं बदली जाएगी।
6. मंदे बुध वाले को नाक छेदन करवाना और फिटकिरी आदि से दांतों को साफ करना, लड़कियों की पूजा करना सहायक होगा। अगर घर के बहुत से सदस्यों का बुध खराब हो या स्वयं अपना बुध टेवे में मंदे घरों में आता रहे तो बकरी की सेवा या बकरी दान करना उत्तम फल देगा। अगर ज़ुबान, में थथलापना हो तो वह थथलापन के अलावा और कोई मंदा फल न देगा चाहे टेवे में मंदा हो। घर में एक के बाद एक बीमार पड़ जाए की लानत खड़ी हो जाने के समय बुध से बचाव के लिए हलवा कद्दू (जो पक्का रंग पीला और अंदर से खोखला हो चुका हो) पूरा का पूरा धर्म स्थान पर देना सहायक होगा।
7. पाप, राहु, केतु, बुध के दायरे में चलता है, सिवाए खाना नं० 4 के जहां कि बुध राजयोग होगा क्योंकि वहाँ राहु, केतु पाप न करने की कसम खाते हैं।
8. शुक्र मंदे को अवश्य सहायता देगा मगर पाप मंदे के समय बुध स्वयं भी मंदा ही होगा और मौत गूंजती होगी, बल्कि ऐसी हालत में अगर शुक्र भी ऐसे घरों में हो जहाँ कि बुध मंदा गिना गया है तो वह शुक्र को भी बर्बाद करेगा।
9. अकेला बैठा हुआ बुध निक मा तथा बिना शक्ति का होगा और उस ग्रह का फल देगा जिसका कि वह पक्का घर है जहाँ कि बुध बैठा है। बात को धोखा से बचाने के लिए यह बात साफ होनी चाहिए कि घर की मालकियत दो तरह की होती है एक तो बतौर घर का स्वामी और दूसरी हालत में हर घर किसी न किसी ग्रह का पक्का घर मुकर्रर है।

उदाहरण :-

खाना नं० 1 में मंगल बतौर राशि का स्वामी ग्रह या बतौर घर की मालकियत बैठा होगा मगर पक्का घर खाना नं० 1 का स्वामी सूर्य होगा।

उदाहरण :-

बुध हो खाना नं० 1 में और सूर्य हो खाना नं० 12 में, अब खाना नं० 1 है, पक्का घर सूर्य का इसलिए बुध खाना नं० 1 में बैठा सूर्य का फल देगा जो कि उस सूर्य के लिए खाना नं० 12 में स्थित है क्योंकि बुध खाना नं० 1 के समय सूर्य खाना नं० 12 में बैठा है। लेकिन यदि सूर्य बैठा हो तो खाना नं० 4 में हो तो खाना नं० 1 में बैठा हुआ बुध वही प्रभाव देगा जो कि सूर्य खाना नं० 1 का निश्चित है।

2. बुध बैठा हो तो वही ऊपर कहे गए खाना नं० 1 में हो तो बुध का बुरा प्रभाव अगर कोई हो तो मंगल पर हो सकेगा क्योंकि घर की मालकियत या राशि का मालिक मंगल है। अगर उस राशि का मालिक ग्रह यानि वह ग्रह जो घर की मालकियत या राशि का मालिक हो जहाँ कि बुध बैठा है उस समय (जब बुध खाना नं० 1 में हो) खाना नं० 9 में बैठ रहा हो तो वह ग्रह खाना नं० 9 वाला बेबुनियाद और मंदा होगा। ऐसी हालत में बैठे हुए बुध का मंदा प्रभाव नीचे की सूची से पूरा-पूरा ज़ाहिर हो जाएगा।

बुध खाना नं० में बैठा हो	किस ग्रह का फल देगा	अमूमन किस ग्रह को बर्बाद करेगा खासकर किस ग्रह को मंदा करेगा जो कि उस समय खाना नं० 9 में बैठ रहा हो
1	सूर्य	मंगल
2	वृहस्पति	शुक्र
3	मंगल	शुक्र
4	चन्द्र	चन्द्र
5	वृहस्पति	सूर्य
6	केतु	केतु, बुध
7	शुक्र, बुध	शुक्र
8	मंगल, शनि	मंगल
9	वृहस्पति	वृहस्पति
10	शनि	शनि
11	वृहस्पति	शनि
12	राहु	राहु, वृहस्पति

खाना नं० 3-8-9-11-12 का मंदा बुध बेवकूफ कोढ़ी मल्लाह जो खतरे के समय अपनी बेड़ी को खुद ही गोता देने लगे और आमदन की नाली में रोड़ा अटकाने वाला हो बैठे।

दूसरे ग्रहों की सहायता :-

बुध बैठा हो खाना नं० 1 से 2 तो शनि ग्रह को मदद देगा।
बुध बैठा हो खाना नं० 3 से 8 तो सूर्य ग्रह को मदद देगा।
बुध बैठा हो खाना नं० 9 से 12 तो शनि ग्रह को सहायता देगा।

दूसरे ग्रहों के साथ संबंध :-

किसी ग्रह के साथ :-	वृहस्पति	सूर्य	चन्द्र	शुक्र	मंगल	बुध	शनि	राहु	केतु
बुध का संबंध कैसा होगा :-	राख	पारा	मानिद में पानी	दही	शेर के दांत	x	कलई	हाथी की सूँड़	कुत्ते की दुम

बुध और शनि कुंडली के सांझी दीवार वाले घरों में होने के समय शहतीर या गार्डर खड़े करके उन पर सेहन बनाने पर बुध बर्बाद होगा, पागलपन, सिर की खराबियां, बहन, बुआ, फूफी बर्बाद होंगी।

बुध का अण्डा अक्ल का बीज नहीं मगर अक्ल की नकल ही बुध का अण्डा है जो कुण्डली के खाना नं० 9 में पैदा होता है। ग्रह कुण्डली में खड़ा अण्डा (मैना आम बकरी) बुध कुण्डली के खाना नं० 2-4-6 में होगा। लेटा हुआ अण्डा (तथा भेड़) बुध कुण्डली के खाना नं० 8-10 में होगा। गंदा अण्डा बुध कुण्डली के खाना नं० 12 में होगा। आम हालत मां, बेटी बुध कुण्डली के खाना नं० 1-7 में होगी। चमगीदड़ किसी चीज़ का साया या अक्स अगर असल चीज़ (जिसका साया है) का पता न लगे कि वह कहाँ है बुध कुण्डली के खाना नं० 3-9 में होगा। दूध वाला बकरा मगर बकरी दाढ़ी वाली बुध कुण्डली के खाना नं० 5 में होगा। चौड़े पत्तों वाला वृक्ष, मैना का उपदेश, लाल कंठी वाला तोता, वृ० की नकल बुध कुण्डली खाना नं० 11 में होगा।

बुध की खाली नाली :-

हर तीसरे घर के ग्रह यानि 1-3 कभी आपस में नहीं मिल सकते इसलिए आपस में असर भी नहीं मिला सकते। लेकिन यदि बुध की नाली से मिल जाएं तो वह आपसी बुरा प्रभाव न देंगे, अगर शुभ हो जाए तो बेशक हो जाए।

शुक्र, बुध दोनों इकट्ठे ही शुभ है और खाना नं० 7 दोनों का पक्का घर है लेकिन जब जुदा-जुदा हो जाए और अपने से सातवें पर हो तो दोनों का फल रद्दी, लेकिन जब तक उस सातवें की शर्त से दूर हो, मगर हो दोनों जुदा-जुदा तो बुध जिस घर में बैठा

हो वह बुध उस घर के सब ग्रहों का और उस घर में आकर बैठा होने का अपना असर शुक्र के बैठा होने वाले घर में नाली लगाकर मिला देगा। यानि दोनों ग्रहों का असर मिला-मिलाया हुआ इकट्ठा माना जाएगा। फर्क सिर्फ यह होगा कि शुक्र अपने घर का असर उठा कर बुध बैठा होने वाले घर में नहीं ले जाता। मगर बुध अपने बैठा होने वाले घर का असर उठा कर बुध बैठा होने वाले घर में नहीं ले जाता। मगर बुध अपने बैठा होने वाले घर का असर उठा कर शुक्र बैठा होने वाले घर में जा मिलाता है। संक्षेप में जब कभी शुक्र का राज्य हो तो शुक्र बैठा होने वाले घर में बुध बैठा होने वाले घर का असर साथ मिला गिना जाएगा। मगर बुध की त त की मालकियत के समय अकेले ही उन ग्रहों का होगा जिनमें कि बुध बैठा हो। शुक्र बैठा होने वाले घर के ग्रहों का असर बुध वाले घर में मिला हुआ न गिना जाएगा। बुध, शुक्र के इस तरह असर मिलाने के समय यदि बुध कुंडली में शुक्र के बाद के घरों में बैठा हो तो बुध का अपना स्वयं का प्रभाव बुरा होगा और अगर बुध कुंडली में शुक्र से पहले घरों में बैठा हो और उठा कर अपने बैठा होने वाले घर का अपना असर बुरा न होगा बल्कि भला ही गिना जाएगा। इस मिलावट के समय अगर बुध वाले घर में शुक्र के शत्रु ग्रह भी शामिल हों तो शुक्र इजाजत न देगा कि बुध अपने बैठा होने वाले घर का अपना असर शुक्र के घर में मिला दे यानि ऐसी हालत में बुध की नाली बंद होगी और शुक्र को जब बुध की सहायता न मिले तो अब शुक्र, बुध के बिना पागल होगा। लेकिन यदि बुध के साथ वहां शुक्र के मित्र ग्रह हों तो शुक्र कोई रुकावट न देगा। बल्कि बुध को ज़रूर अपना असर शुक्र बैठा होने वाले घर में ले जाना पड़ेगा। हो सकता है कि ऐसी मिलावट में खाना नं० 1 में हो केतु, दोनों में ही शामिल हो (यह हालत सिर्फ उस समय होगी जब राहु, केतु अपने से सातवें घर होने के कारण से बुध और शुक्र भी आपस में सातवें घर पर होंगे) तो मंदा परिणाम होंगे। खासकर उस समय जब बुध हो शुक्र से बाद के घरों में और साथ ही राहु, केतु का दौरा भी आ जाए, यानि उनमें से कोई एक त त की मालकियत के दौरे के हिसाब से आ जाए, (उस समय जबकि इस मिलावट में राहु, केतु, शुक्र, बुध के साथ मिल रहे है और राहु, केतु अपने उधर राज पर एक साथ होने का भी समय है) कुंडली वाले के लिए नाजुक स्थान का भयानक समय होगा, मगर यदि यह शर्तें पूरी न हो या बुध हो शुक्र से पहले घरों में तो यह मंदा समय न होगा। मंदा समय सिर्फ राहु, केतु के दौरे के समय का होगा। शुक्र या बुध के दौरे (ग्रह के दौरे से अर्थ ग्रह संबंधित का खाना नं० 1 में आने का समय होगा के समय यह लानत न होगी। इस बुध की नाली का खास लाभ मंगल से संबंधित है। कई बार मंगल को सूर्य की सहायता मिलती हुई मालूम नहीं होती या चन्द्र का साथ होता हुआ मालूम नहीं होता। इस नाली के कारण से मंगल को सहायता मिल जाती है और मंगल जो सूर्य, चन्द्र के बिना मंगल बद होता है, मंगल नेक बन जाता है। इसी तरह ही मंगल, बुध बाहम शत्रु है, मंगल के बिना शुक्र की संतान कायम नहीं रहती। बुध जब मंगल के साथ हो तो वह लाल कंठी वाला तोता होगा और स्वयं उठकर और मंगल को साथ उठाकर शुक्र से मिला देगा या शुक्र की औलाद बचा देगा जिससे कुंडली वाला नि:संतान न होगा, ऐसी हालत में बुध या शुक्र के बाहम पहले या बाद के घरों में होने पर बुध के जाती असर की बुराई की शर्त न होगी। भलाई का प्रभाव ज़रूर होगा क्योंकि मंगल ने शुक्र के दौरे के पहले साल में अपना असर अवश्य मिलाना है यानि बुध की नाली 100 प्रतिशत, 50 प्रतिशत, 25 प्रतिशत और अपने से सातवें होने की दृष्टि से बाहर एक और ही शुक्र और बुध की बाहम दृष्टि है और यह इसलिए है कि शुक्र में बुध का फल मिला हुआ माना जाता है। मिलावट में राहु के साथ हो जाने के समय जब शुक्र ने बुध को बाहर ही रोक दिया तो शुक्र में बुध का फल न मिला तो बुध के बिना शुक्र पागल होगा या शुक्र खाना नं० 8 के प्रभाव वाला होगा। इसी तरह पर शुक्र के बिना बुध का असर सिर्फ फूल होगा फल न होगा अर्थात् विषय की शक्ति तो होगी मगर बच्चा पैदा करने की ताकत का शुक्र को फायदा न मिलेगा।

बुध की दांत :-

दांत कायम हो तो आवाज़ अपनी मर्ज़ी पर काबू में होगी यानि वृ० की हवाई शक्ति पर (संतान के जन्म) काबू होगा। मंगल भी साथ देगा। यानि जब तक दांत (बुध) न हो तो चन्द्र मदद देगा, जब दांत न थे तो दूध दिया जब दांत दिए तो क्या अन्न (शुक्र) न देगा। यानि बुध हो तो शुक्र की अपने आप आने की आशा होगी। लेकिन जब दांत आकर चले गए (और मुंह के ऊपर के जबड़े के सामने के) तो अब मंगल, बुध का साथ न होगा। न ही वृ० पर काबू होगा या उस व्यक्ति या स्त्री की अब संतान का समय समाप्त हो चुका होगा। जबकि दांत गए दांत क्या गए वृ० समाप्त तो लावल्द हुआ।

बुध का भेद :-

जब कुंडली हर प्रकार से मुक मल (पूरी) हो और खाना नं० 1 का अक्षर देकर तरह से बात समाप्त हो चुकी हो, तो बुध का खास भेद या बुध का स्वभाव देखने के लिए नीचे का असूल काम में आएगा। ग्रह कुंडली के किसी न किसी घर में चाहे

अकेले-अकेले घरों में चाहे एक ही घर में कई एक या आठ एक ही साथ हों, (राहु या केतु अपने से सातवें के असूल पर होने के कारण से दो में से एक ज़रूर रह जाएगा), तो हर एक की अपनी शक्ति के भाग को खाना नं के अक्षर से जिसमें कि वो ग्रह बैठा हो गुणा देकर नौ ही ग्रहों के जवाब का कुल योग लेकर 9 पर भाग करें।

1. बाकी कुछ न बचे तो बुध का स्वभाव उस कुंडली के खाना नं० 5 में बैठे हुए ग्रह का होगा। यानि बुध के खाली ढांचे में राहु, केतु पकड़े गए। यानि जब बुध की शक्ति सिफ़र (शून्य) हो उस कुंडली में राहु, केतु का किसी भी दूसरे ग्रह पर प्रभाव न होगा या ऐसी हालत में राहु, केतु की दृष्टि बुध के दायरे में बंद होकर सिफ़र (शून्य) हो उस कुंडली में राहु, केतु का किसी भी दूसरे ग्रह पर प्रभाव न होगा या ऐसी हालत में राहु, केतु की दृष्टि बुध के दायरे में बंद होकर शून्य होगी। मगर राहु, केतु का जाति असर ज़रूर कायम होगा क्योंकि बुध में हमेशा ही राहु, केतु का असर शामिल गिना जाता है, सिवाए खाना नं 4 में जहां कि राहु, केतु का अपना प्रभाव शून्य होगा। राहु घड़ी की चाबी तो केतु घड़ी का कुत्ता है। दोनों को चलाने वाला वृ० है मगर वह घूमते बुध के दायरे में ही है। अगर खाना नं० 5 खाली हो तो जिस घर में सूर्य हो और जैसा भी हो वैसा ही बुध होगा।
2. यदि कोई अक्षर पूरा भाग न दिया जा सके कुछ बाकी थोड़ा-बहुत दशमलव भिन्न में बच जाए तो उस दशमलव भिन्न की मिकदार के लिए जो कि स्थापित है वह ग्रह कुंडली में जहां बैठा हो उस ग्रह की शक्ति तथा स्वभाव का बुध होगा। यह स्वभाव बुध का अपना स्वभाव होगा जैसा कि शनि का स्वयं का स्वभाव राहु, केतु, शनि के पहले या बाद के घरों में होने पर निश्चित है।

उदाहरण कुंडली में :-

ग्रह का नाम	टेवे में किस घर का है	ग्रह की शक्ति	खाना नं० के अक्षर को ग्रह को मिकदार से गुणा किया
वृहस्पति	4	6/9	24/9
सूर्य	3	9/9	27/9
चन्द्र	6	8/9	48/9
शुक्र	5	7/9	25/9
मंगल	5	5/9	25/9
बुध	3	4/9	12/9
शनि	12	3/9	36/9
राहु	2	2/9	4/9
केतु	8	1/9	8/9
कुल		= 45/9 = 5	219/9 = 24+3/9

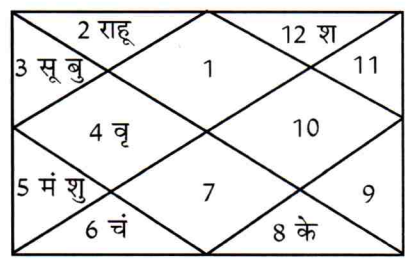

अ) कुल में से पूरे-पूरे हिस्से छोड़ दें तो 3/9 बाकी रहा यानि शनि की शक्ति है जो खाना नं० 12 में बैठा है ये बुध का स्वभाव हुआ यानि बुध जो खाना नं० 12 में अकेला बैठा है वह खाना नं० 12 में बैठे हुए शनि के स्वभाव का है। दी हुई कुंडली में पहले घरों में राहु बाद में केतु और आखिर पर शनि, शनि का अपना स्वभाव खराब फल का है इसलिए जब बुध का समय होगा शनि दो गुणा मंदा फल देगा क्योंकि बुध, शनि दोनों ही खराब स्वभाव के है।

ब) बुध का स्वभाव जिस ग्रह से मिलता हो उपाय उस ग्रह, बुध दोनों का मिलाकर करना होगा।

स) खाना नं० 3 या 9 के बुध के लिए लाल गोली की मदद ले। मगर ध्यान रहे कि यदि बुध नेक स्वभाव साबित हो तो लोहे की बजाय शीशे की गोली ले जिस पर या जिसमें वह रंग करें या शामिल हो, जो रंग कि उस ग्रह का हो जिस ग्रह के स्वभाव का बुध ऊपर के ढंग का साबित हुआ हो।

द) खाना नं० 12 के बुध के लिए नष्ट ग्रह वाले की सहायता का इलाज या केतु (कुत्ता रंग-बिरंगा काला-सफेद मगर लाल न

हो) को कायम करना शुभ होगा।

वास्तव में बुध खाली खलाव सफेद काग़ज, शीशा और फटकरी होगा। जब उस पर जरा भी मैल या किसी भी और ग्रह का ताल्लुक हुआ तो उसकी गोलाई का ठिकाना मालूम करना वैसा ही मुश्किल होगा जैसा कि ज़मीन का अक्ष मान लेना। इसलिए उसकी जांच पूरी कर लेना ज़रूरी होगा बहरहाल बुध खाना नं० 9 या 3 या किसी और घर का मंदा प्रभाव उस साल या समय ही नेक होगा, जिसमें कि वह अपने स्वयं के स्वभाव के असूल पर नेक हो जाए मगर जन्म के पहले साल या पहले मास में उसका हीरा ज़हर से खाली न होगा। अगर होगा तो जन्म-मरण का झगड़ा समाप्त होगा।

सूर्य और मंगल के मुकाबले में बुध का फल गायब या सूर्य, मंगल के नेक के साथ अपना 1/2 समय चुप होगा, मगर छुपी शरारत ज़रूर करता ही होगा (मंगल नेक वही है जिसमें सूर्य हो) और यह सूर्य के साथ चुप होगा। सूर्य रेखा और चन्द्र रेखा दिल रेखा को मिलाने वाली त्रिकोण मंगल बद का प्रभाव देगी जिसका प्रभाव दिल की शक्ति पर होगा चाहे बुरी तरफ ही हो। बहरहाल दिल की शक्ति अधिक होगी।

बुध खाना नं० 1
(राजा या हाकिम, मगर खुदगर्ज शरारती बदनाम)

मिल तख्त औरत को कितना ही ऊँचा।
जवानी में तोहमत का खतरा ही होगा।।

फिक्र दुनियां छोड़ो बाबा, *समय सुलझाने को है।*
लड़के जैसी लड़की राजा, *लेख जग जाने को है।*

तबला चाहे न अपना उत्तम, *राग़ सबका दिल हरे।*
रंग काला हो गर उसका, *पानी में पत्थर तरे।*
बुध घर पहले पांचवें, *सूर्य का[1] परिवार।*
बारिश धन की हो रही, *दिन न[2] गुज़रे चार।*
शनि चलेगा बुध इशारे, *पाप[3] पड़ा खुद रोता हो।*
धर्म पक्का न बेशक कदरे, *राज सेहत ज़र उम्दा हो।*
बुध चीज़ों पर बुध चाहे मंदा[4], *तोताचश्म चाहे होता हो।*
शराबी कबाबी बेशक कितना, *रिज़क मंदा न अपना हो।*

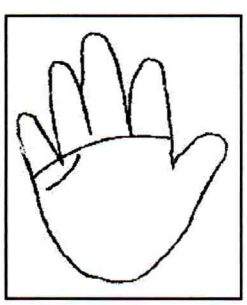

1. जब खाना नं० 7 में कोई ग्रह हो खासकर शनि या शुक्र हो।
2. जिस घर में सूर्य हो उस घर के संबंधित रिश्तेदार।
3. राहु- ससुराल, केतु- औलाद हर दो उसकी जान को रोते होंगे या मंदा असर देने वाले होंगे।
4. मंगल जब खाना 12 में हो तो बुध का खाना नं० 1 पर मंदा प्रभाव न होगा।
5. जाग उठने।

<u>हस्त रेखा :-</u> **सूर्य के बुर्ज से बुध के बुर्ज की रेखा।**

<u>नेक हालत</u>

1. आकाश में किसी भी चीज़ का न होना बुध का होना कहलाता है या खाली खलाव सूर्य का दायरा फर्जी चक्र इस ग्रह की हस्ती होगी।
2. खाली मंगल का फल चाहे निक मा कर दे मगर सूर्य का असर क ी मंदा न होगा बल्कि ऐसे आदमी का खून ऐसा होगा जो पारे की तरह गर्मी से ऊपर-नीचे चलता हो।
3. अपने स्वभाव का घूमता हुआ राजा होगा।
4. सूर्य की हैसियत पहले पुराने ज़माने की माया दौलत की कमी का फिक्र छोड़ो, अच्छे समय की निशानियां होने लगे, अब लड़कियां भी राज भोगेंगी और स्वयं भी सुख की सांस लेगा।
5. जिस घर में सूर्य हो उसके घर के संबंधित रिश्तेदार थोड़े दिनों में धनी हो जाएंगे।
6. राजदरबार से लाभ होगा।
7. धर्म से किसी कदर दूर रहने वाला होगा, मगर रिज़क आमदन क ी मंदा न होगा।

8. न सिर्फ शनि बल्कि अब सब ही पापी ग्रह बुध के इशारे पर चलेंगे।
9. पानी में पत्थर को तैराने की शक्ति वाला खासकर जब रंग काला हो।
-जब खाना नं० 7 में कोई ग्रह हो खासकर शनि या बुध हो।
10. स्त्री, अमीर नेक घराने से नेक तथा उत्तम होगी। -जब सूर्य का संबंध हो।

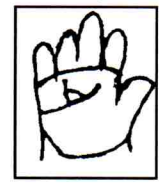

क्याफा :- **सूर्य के बुर्ज से बुध के पर्वत को रेखा।**

मंदी हालत

1. जब बुध सोया हो, मंदा हो या मंदा कर लिया जाए ।
2. स्त्री का राज बेशक उ दा या स्त्री के टेवे में चाहे राजयोग मगर उससे या उसकी जवानी में फिर भी बदनामी या तोहमत का डर ही होगा।
3. मंगल का असर कभी मंदा या बर्बाद हो तो बेशक मगर सूर्य का कभी मंदा न होगा।
4. शरारती बदनाम होगा।
5. जब मंगल खाना नं० 12 हो तो बुध का खाना नं० 1 पर कभी मंदा असर न होगा चाहे वह टेवे में कैसा भी मंदा हो।
6. मंदी हालत में बुध की चीज़ों पर मंदा होगा। अंडे खाने से स्वास्थ्य बिगड़ेगा लेकिन 1/2 आयु पर धन के लिए उत्तम होगा।
7. स्वयं बुध का अपना प्रभाव हरित रंग चीज़ें व्यापार हिकमत मंदे ही होंगे।
8. राहु- ससुराल, केतु- संतान का हाल मंदा ही होगा जिसकी निशानी वह शराब और मांस प्रयोग करने वाला होगा।
9. परदेश में रहने वाला रागी मगर लालची होगा जवानी का समय उत्तम होगा।
10. दांत 30 से कम या 32 से अधिक मंद भाग्य और बुध खाना नं० 12 का असर साथ होगा, जब 32 हो तो बुरा सुखन (मनहूस) बंद दुआएं, बुरी आवाज़ का मंदा असर ज़रूर होगा। खाना नं० 2 का असर साथ लेंगे।
11. मंदे बुध वाले को एक जगह पर टिक कर बैठना आवारा चक्र से अच्छा होगा।
12. बुध का अपना असर मंदा। तबला मंदा, मगर राजयोग दूसरों का दिल अपने काबू करेगा या वह दूसरों के लिए लाभकारी होगा। -जब अकेला बुध और खाना नं० 7 खाली हो।
13. नशेबाज़ी का सरदार, ज़ुबान का चस्का बर्बाद करेगा। -जब चन्द्र खाना नं० 7 में हो।

बुध खाना नं० 2
(योगी, राजा, मतलब परस्पत, ब्रह्मज्ञानी)

पता उसके पिता[1], अगर मौत चलता।
दुआएं पैदाइश, न लड़के की करता॥

अकेला बैठा सबको तारे,
आठ 6 घर खाली होते,
राज नसीबा दुश्मन मारे,
कलम ज़ुबान से मोती गिरते,
आठ 6 वें ग्रह बैठा कोई,
आयु 16 से 19 उसकी,
साथ चन्द्र का जब कभी मिलता,
इज़्ज़त गुरु 9-12 देता,
शनि मिले तो सांप हो उड़ता[4],
भेड़, तोता हो जब कभी रखता,
राज, योगी बनता हो।
श्रेष्ठ रेखा सिर पाता हो।
शुक्र, मंगल न मंदा हो।
ससुराल घराना तारता हो।
भरता तबेला कन्या हो।
पिता[3] न उसका बैठा हो।
आयु पिता न शक्की हो।
आयु माता की लम्बी हो।
साथ भला न साली हो।
मंद कहानी होता हो।

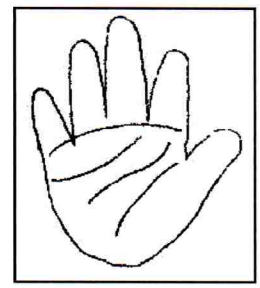

1. लखपति पिता बेटे (टेवे वाले) के लिए शून्य होगा।
2. दिमागी खराबियों का कभी शिकार न होगा। चाहे पिता का सुख न होगा, मगर स्वयं पक्का इरादा होगा, राजयोग होगा। चाहे संतान से दु:खी मगर संतानरहित न होगा।
3. नाक छेदन करवा कर सिर्फ 4-5 दिन सुराख कायम रखा जाए।
4. उत्तम शुभ अर्थों में हर ओर उत्तम, मगर ससुराल मंदे ही हाल में होते जाएंगे।

हस्त रेखा :- **सिर रेखा जब जुदी होकर वृ० के पर्वत की ओर जाए।**

नेक हालत

1. ल बी गहरी (कुशादा) बाहर को उभरा हुआ मस्तक का स्वामी होगा, जिसमें बुद्धिमता और साथ लाया हुआ स्वयं के भाग्य का नेक प्रभाव शामिल होगा। मगर वह अपनी ही तान पर मस्त योगी, राजा और कुछ-कुछ मतलब परस्त होगा। अपने लिए स्वयं वृ० के सोने का स्वामी, मगर शुक्र का फल मंदा होगा।
2. काफिर को मारने वाला, शत्रुओं को बर्बाद करेगा मगर राजाओं को परिवार की बरकत देगा।
3. अपनी स्वयं वृ० सोने की हैसियत मगर पिता के लिए सोने का कोढ़ या कली का टांका (मंदे अर्थों में), चाहे पिता का सुख न होगा मगर स्वयं अमीर होगा, उसकी अपनी आयु भी लंबी होगी। माता पर कोई बुरा असर न होगा। माता की आयु लंबी (लगभग 80 वर्ष) हो। उसे अपने आप पर भरोसा होगा, कबीलों का भारी बोझ उठाएगा। प्रयत्न से उत्तम जीवन का स्वामी होगा।
4. ससुराल, घर को तारने वाला गिनती का आदमी हो।
5. शत्रुओं पर विजयी, शुक्र, मंगल की चीज़ों का नेक असर होगा।
6. हाजिर जवाब होगा। -जब राहु खाना नं० 8 में हो, कनिष्ठा का सिरा चौड़ा हो।
7. उत्तम भाषण दे सकेगा। -जब राहु खाना नं० 9 में हो, कनिष्ठा बहुत लंबी हो।
8. ज़ुबान और कलम में शक्ति हो। -जब मंगल खाना नं० 8 हो, कनिष्ठ का सिरा चौकोर हो।
9. पक्की राय, शक्ति का स्वामी, ज़ुबान से इतनी शक्ति कि सब नुक्स छिपा लें। -जब मगल खाना नं० 9 में हो, कनिष्ठा बहुत ही लंबी हो।
10. सब को तारने वाला योगी राजा होगा। -जब बुध अकेला खाना नं० 2 में हो।
11. सिर की श्रेष्ठ रेखा, दिमाग़ी खराबियों का कभी शिकार न होगा। -जब खाना नं० 6-8 खाली हो।
12. पिता की आयु कभी शक्की न होगी अगर चन्द्र स्वयं रद्दी न हो रहा हो तो न ही पिता की उम्र और न ही खज़ाना बर्बाद होगा। दिल की पूरी शक्ति होगी हो सकता है कि खूनी भी हो। -जब चन्द्र खाना नं० 12-8 से मदद दे।

क्याफा

सिर रेखा से रेखा उठकर ऊपर दिल रेखा में जा मिले।

13. रास्ता दिखाने वाला होगा। -जब केतु खाना नं० 8 हो, कनिष्ठा का सिरा नोकदार हो।
14. उत्तम बोलने की शक्ति वाला होगा। -जब केतु खाना नं० 9 में हो कनिष्ठा लंबी हो।
15. स्वयं की अपनी इज्जत मान और माता की आयु लंबी हो। -जब खाना नं० 9-12 में वृ० हो।
16. अब बुध खाना नं० 2 में बैठा हुआ वृहस्पति- पिता पर कोई बुरा प्रभाव न देगा, अगर करे तो मंगल पर बेशक शरारत कर सकता है, जो ज़रूरी नहीं कि मंगल का बुरा करे। -जब खाना नं० 6 में मंगल अकेला या मंगल, वृहस्पति दोनों खाना नं० 6 में हों।
17. दस्ती काम करने वाला व्यापारी मगर पैसे का पुत्र हो। -जब सूर्य खाना नं० 8 में हो।

क्याफा :- **अनामिका, कनिष्ठका की ओर झुक जाए।**

18. उड़ता सांप (नेक हालत) हद से ज़्यादा तेज़ होगा। -जब शनि खाना नं० 6 में हो।

मंदी हालत

1. बुध एक ऐसी राख होगा जो हर एक का मुंह मिट्टी से खराब कर देगा।
2. अब केतु का भी मंदा असर होगा यानि नर संतान की कमी, देरी या संतान से दु:खी। बल्कि संतान के सुख से रहित परन्तु नि:संतान न होगा।
3. हरी कनी से कटता और धन राख होता होगा। व्यापार सट्टा, जुआ फर्जी माली व्यापार का प्रभाव मंदा ही होगा। पिता लाखोपति होता हुआ भी टेवे वाले के लिए सिफ़र ही होगा या पिता का सुख न होगा। बल्कि 16 से 21 और आखिरी हद 34 से 36 के करीब पिता की मृत्यु होगी। अगर वह जीवित हो तो मरे से भी बुरी हालत का होगा। पिता का धन बर्बाद यानि

पिता जब तक ज़िंदा रहेगा या जब तक पिता की कीमत देता जाएगा पिता ज़िंदा रहेगा यानि पिता की साल भर की कमाई के बराबर एक बार ही घाटा या हानि होता रहेगा और जीवित चलता रहेगा।

क्याफा

सिर रेखा जब शुरू में आयु रेखा से न मिले।

4. बुध की चीज़ें बहन, लड़की, बुआ सभी विष का प्रभाव देंगी। नाक छेदन 4-5 दिन तक कम से कम 96 घंटे सुराख कायम रहे तो सहायता मिलेगी, 16-21 साल से पहले पहल अधिक ला ादायक मगर बाद में भी नाक छेदन सहायता ही करेगा।
5. गौर खोज ध्यान में रहने का स्वामी अपने दिमाग़ पर पूरा भरोसा, मगरुर शरीर उत्तम, मगर धन का हल्का होगा।
   -जब सूर्य खाना नं० 8 में हो।
6. साली का साथ अशुभ जैसे शुक्र खाना नं० 12 और बुध खाना नं० 2 ऐसी हालत में यदि साली आकर टेवे वाले के पास या साथ रहने लग जाए तो पहले शुक्र (स्त्री) को बुध खाना नं० 12 में जाकर बर्बाद करेगा और फिर स्वयं बुध खाना नं० 12 के मंदे परिणाम होंगे यानि दोनों ही ग्रहों का खाना नं० 12 का मंदा फल होगा, मगर हर दो का मंदा या दोनों ही ग्रह बर्बाद इस तरह हो कि बाकी घर शुक्र खाना नं० 3-8-9 का मंदा हाल होगा यही हाल भेड़, तोता आदि पालने की पहली निशानी होगी। -जब खाना नं० 12-3-8-9 या शुक्र ऐसे घरों में जहां बुध मंदा हो।
7. बुध क्लाक टावर की घूमती चिड़िया होगा यानि उसके असर का एतबार न होगा।
   -जब शनि और सूर्य प्रबल हो।
8. अब पिता की जगह दादे पर बुरा प्रभाव होगा तथा वृ० की चीज़ों और रिश्तेदारों का भी ऐसा बुरा हाल होगा।
   -जब वृ० खाना नं० 8 में हो।
9. बुध की मियाद 17 साल की आयु से शुरू होकर शनि का समय आने तक यानि 33 से 36 साल की आयु से पहले शनि 32 या 35 साल की आयु पिता की कमाई धन टेवे वाले को जद्दी मकान से पूर्वी-पश्चिमी (खाना नं० 12 के) कुएं में जाती होगी। चन्द्र की चीज़ें धर्म स्थान में देना शुभ होगी। -जब चन्द्र, शनि खाना नं० 12 में हो।

बुध खाना नं० 3
(थूकने वाला, कोढ़ी मंदा)

चरण घर में रखते, लगी कुछ न देरी।
चले सब गए, आयु बाकी है तेरी॥

पहले मंगल, बुध हरदम उच्च,
असर चीज़े बुध उत्तम देगा,
4 शुक्र संतान में देरी,
मामा शुभ धन होगा,
आठ चन्द्र से शुक्र मंदा,
छठे-सात हो पापी बैठा,
अंधेरे जंगल में मुसाफिर[1] लुटते,
9 मरते हों 11 उजड़े,
दौलत कबीला बढ़ता हो।
मंदे केतु जा मरता है।
आयु लंबी रवि 11 जो।
वैद्य दमे का उत्तम हो।
शनि, राहु भी जलता हो।
खालू (फूफा) पिता, मामा मरता हो।
आग़ चक्र बुध जलता हो।
चार-पाँच 3 गरकता[2] हो।

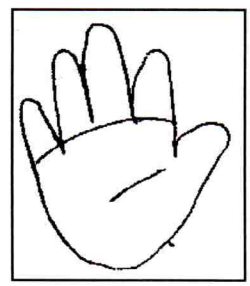

1. अंधेरा जंगल = मंदा बुध, मुसाफिर = केतु, चक्र आग़ = मंगल बद।
2. 9+11+4+5+3 = 32 दांत जब तक कायम, उन घरों पर बुध मंदा असर देता होगा, मगर स्वयं बुध का अपना असर भला ही होगा। जब मंगल खाना नं० 1 में हो तो अपनी और भाई की किस्मत की सहायता के लिए वृहस्पति 9-11 और शुक्र खाना नं० 7 की संबंधित चीज़ों तथा कारोबार सहायक होंगे।

हस्त रेखा :- सिर रेखा मंगल नेक में समाप्त हो।

नेक हालत

1. अपने भाई बंद तथा बिरादरी वाले उसके अपने लिए ज़रूर सहायक तथा नेक प्रभाव होंगे।
2. दूसरों के लिए जद्दी कोढ़ी (बहुत मंदा) अपनी सहायता के लिए शेर के तेज़ दांतों का मालिक। मगर धन-दौलत के लिए अपने लिए कभी मंदा न होगा।

3. आयु 80 वर्ष से कम न होगी।
4. बुध हरदम उत्तम प्रभाव देगा, दौलत कबीला बढ़ता होगा। बुध की चीज़ों का उत्तम फल होगा। अगर मंदा असर हो भी तो केतु बर्बाद होगा। अपनी तथा भाई के भाग्य की सहायता के लिए वृ० खाना नं० 9-11 और शुक्र की संबंधित चीज़ों के कारोबार सहायक होंगे। -जब मंगल खाना नं० 1 में हो।
5. केतु (औलाद मामा) का उत्तम फल और दमे के मरीज का उत्तम हकीम होगा। स्वयं सूर्य और बुध दोनों की चमक या शान न होगी। मगर आयु ज़रूर ल बी होगी। -जब सूर्य खाना नं० 11 में हो।
6. अब बुध का हर तरह से उत्तम फल होगा। -जब खाना नं० 3 का सोया बुध यानि 9-11 खाली हो।

मंदी हालत

1. अगर ज़ुबान में थथलापन हो तो बुध का असर बेशक मंदा न होगा वरना खाना नं० 3 का बुध जद्दी कोढ़ी जो किसी की जड़ काटने के लिए शेर के तेज़ दांतों या तलवार से अधिक बुरा करने की शक्ति का मालिक होगा और अपने ही कबीले पर भारी (जाती, खून से संबंधित) और खानदान (ताये, चाचे, दादा) में खून के संबंधियों पर मंदा होगा। जब तक मंगल नेक हो बुध की ज़हर से बचत होती रहेगी वरना मंदी किस्मत के चक्र में फंसा हुआ जगह-जगह का उजड़ा हुआ मुसाफिर होगा। खाना नं० 3 असल में बुध की अपनी राशि या दुनियावी हालत में एक भारी जंगल माना गया है। बुध खुद खाली खलाव आकाश का चक्र या फर्जी दिमाग़ी ढांचा होगा, संक्षेप में संसार के जंगल में मंदी आंधी चल जाने के समय वृक्ष जड़ों से कट कर इस कदर ऊंचे उड़ेगें कि सारा आकाश (बुध) ज़ुबान से थथलाता होगा। कोई इधर कटा, कोई उधर कटा कोई ऊंचा उड़ा और कोई वृक्ष किसी प्राणी की चोटी पर टकरा कर उसका नाश कर रहा होगा, थोड़े शब्दों में बुध खाना नं० 3 की हालत मंदी जिस कदर थोड़े समय नुक्सान पर समाप्त हो जाए भला ही होगा, क्योंकि यह जालिम लौंडी अपने खानदान के भाई-बन्धु (खाना नं० 3 के संबंधित रिश्तेदार) सबके सब गर्क करवा कर अपनी दांतों की चमक ज़ुबान के राग़ और छोटी आयु के भोलेपन की दिलदादा होगी।
2. अंधेरे जंगल में मुसाफिर लुटने की तरह भाग्य के मैदान में खराबियां होंगी। फ़िजूल फर्जी चक्र के दायरे में आकर प्राणी खराब होता और कष्ट में होता होगा। आग़ का चक्र (मंगल बद) का बुध जलता हो मंदे 32 दांतों वाला कई घरों को तबाह करेगा।
3. खाना नं० 9 में बैठे हुए ग्रह के संबंधित रिश्तेदार की चीज़ें और कारोबार उजड़े हुए, उजाड़ देने वाले असर के खाना नं० 11 में बैठे हुए ग्रह से संबंधित रिश्तेदार मुर्दा या मुर्दे की तरह मंदी हालत पैदा करने वाले। खाना नं० 3-4-5 में बैठे हुए ग्रह के संबंधित रिश्तेदार गर्क होते या गर्क करते होंगे। मुंह में दांत (आम तौर पर 32) कायम होने तक बुध का मंदा असर खाना नं० 9-11-4-5-3 पर होता रहेगा। 34 साल की आयु तक जोर पर होगा। 42 तक शरारत 45 तक मध्यम नर्म हालत में मंदा और 48 पूरे होने पर बुध बदजात के बुरे प्रभाव से छुटकारा होगा। हर हालत में बुध का खुद अपना प्रभाव टेवे वाले पर भला ही होगा।
4. मंदी हालत की किरणें केतु की चीज़ें काम संबंध संतान मामा पर सबसे पहले चमक देगी। इसलिए केतु कायम करना (कुत्ता आदि पालना या 3 सांसारिक कुत्तों की सेवा करना) सहायक होगा। अमूमन बुध की आयु 34-17-8, 1/2-4, 1/4 साल की आयु तक की संबंधित चीज़ें (जैसे पूजा पाठ पुरखों की शान धर्म ईमान की खानदानी स्वर्णमय नींव आदि) अमूमन खाना नं० 9 और खाना नं० 9 के ग्रह के संबंधित रिश्तेदार या कारोबार मौतों का शिकार या मातम का बहाना होंगे। खाना नं० 11 से संबंधित चीज़ें जैसी कमाई का खर्चा संबंधियों से पहले मकामी ऑफिसर की मेहरबानियां या धन की आमदन के दूसरे रास्ते और खाना नं० 11 के रिश्तेदार या कारोबार, खाना नं० 9 की तरह मौतों का शिकार या मौतों का बहाना तो न होंगे, मगर उजड़ जंरूर जाएंगे जैसा कि फलदार हरा-भरा जंगल उजड़ चुका हो। खाना नं० 4 की चीज़ें जायदाद जद्दी आय का फव्वारा, शांति, छुपी मदद, ऊपरी आमदन खाना नं० 4 के रिश्तेदार गर्क होंगे। यानि वह अपनी वर्षों से चली आई ही जगह छोड़ कर किसी ऐसी जगह चले जाएंगे जहां कि उन्होंने और उनके बड़ों ने जन्म नहीं लिया होगा अर्थ यह है कि मौतें भी नहीं होंगी, उजाड़ भी नहीं होगा। मगर जगह की तबदीली तो शायद ज़रूर ही होगी। इसी तरह ही खाना न० 5 और खाना नं० 3 का जवाब होगा। बुध से संबंधित चीज़ें मूंग की दाल आदि का प्रयोग आम तौर पर बीमारी का बहाना हुआ करेगा।

5. दक्षिण का दरवाज़ा बुध खाना नं० 8 का फल देगा और सब तरह खासकर स्त्री धन ससुराल की तबाही देगा। हर रोज दांत फटकरी से साफ करना सहायक होगा। रात के समय मूंग सालम पानी में भिगो कर प्रात: उसे जानवरों को डाल दें और 43 दिन तक करते जाएं व्यापार में सहायता होगी, पलाश ढाक के चौड़े पत्ते दूध से धोकर बाहर वीराने में, जिस जगह किसी का वहम न हो, दिन के समय एक गढ़े में डालकर और उसके ऊपर एक पत्थर का टुकड़ा (शनि) रखकर मिट्टी डाल दें। जिस चीज़ से गढ़ा खोदें और जिस बर्तन में दूध लें उसे घर वापिस न लाएं मगर पत्थर का रंग जन्म कुंडली के हिसाब खाना नं० 9-11 के ग्रह के उल्ट न हो। इसी तरह यह पत्ते मकान के मध्य या पश्चिमी दीवार की तह में भी दबाने ठीक माने हैं। मगर घर से बाहर वीराने में दबाने अधिक शुभ हैं, घर में लगा हुआ पत्थर दूध से धोते जाना सहायक है। पीले रंग की कोड़िया जला कर उनकी रा ा दरिया में डाल देना भी बुध कोढ़ी से बचाएगा।
6. कलम का फल मंदा न होगा और चन्द्र का भी प्रभाव उत्तम होगा, चाहे चन्द्र बर्बाद हो रहा हो।
   -जब शुक्र कायम हो।
7. संतान में देरी होगी। -जब शुक्र खाना नं० 4 में हो।
8. शुक्र का फल मंदा, शनि, राहु भी बर्बाद होगा। -जब शत्रु ग्रह चन्द्र खाना नं० 8 हो और खाना नं० 6 में मित्र न हों।
9. पिता की माया, मामा चालू, घर सब बर्बाद हों। -जब पापी ग्रह खाना नं० 6-7 में हों।

उपाय

हर रोज फटकरी से दांत साफ करना सहायक। आए दिन की कयामत को दूर करने के लिए अच्छा होगा कि बकरी (बुध की चीज़ों) का दान कर दिया जाये, जिस तरह से गाय दान की जाती है। पक्षियों की सेवा सहायक होगी।

बुध खाना नं० 4
(राजयोग)

जन्म तेरे पर हंस माता क्यों रोई।
पता उसे लगा आयु बाकी न कोई॥

धन का तो दरिया चलता है,
बहन, बेटी राज मिलता,
बुध दूजे था पिता पर भारी,
तीन-चौथे 6 चन्द्र साथी,
चन्द्र, रवि घर 3-5-11,
पाप-पापी हो सबने छोड़ा,
पाप मंदा खुद मर्द हो मंदे,
माता मगर जब मंदिर[1] बैठे,
उत्तम स्त्री ग्रह नर होते,
ऋण पितृ जब टेवे बैठे,

जो समाप्त नहीं होता।
दिल मगर होता नहीं।
चौथे माता पर मंदा हो।
हीरा अमूल्य दुनियां हो।
साथी गुरु 9 बैठा हो।
परिवार उम्र धन लम्बा हो।
सफ़र सलाही डोलता हो।
सूखे घड़े ज़र भरता हो।
पारस बना बुध होता हो।
माता दौलत घर जलता हो।

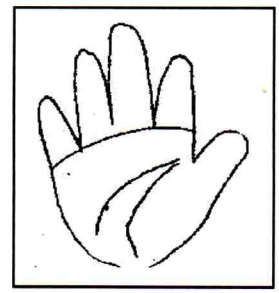

1. जब वृहस्पति उ दा या चन्द्र खाना नं० 2 या खाना नं० 2 खाली हो।

हस्त रेखा

1. दिल रेखा और सिर रेखा मिल जाए। सिर रेखा, दिल रेखा को काटे। सिर रेखा झुककर चन्द्र के पर्वत पर समाप्त होगी।
2. सिर रेखा आखिर पर चन्द्र के पर्वत में आम हालत की जगह अचानक झुकती जाए, तो दिल की कमज़ोरी होगी।
3. अगर आम हालत में चन्द्र के पर्वत में जा निकले तो दरिया का पानी गहरा, बहुत धन या और ठंडा रेत संसारी-सांसारिक सुख सागर उत्तम और तोते, मैना की तरह मर्द, स्त्री की जोड़ी उत्तम तथा आबाद होगी

नेक हालत

1. हर एक की मां-बेटी से डरने वाला। दूसरों की मुसीबत अपने ऊपर लेकर मरने वाला। मगर सब्र वाला होगा।
   -जब स्त्री या नर ग्रह उत्तम हो।
2. जब अकेला ही बुध हर तरह से उत्तम और सबके लिए अपने साथ स्वयं पारस होगा। चन्द्र का सांसारिक फल माया धन उत्तम, मगर छुपा प्रभाव दिल की शांति और दूसरों की शांति के संबंध में मंदा ही लेंगे।

3. राजयोग (सरकार के घर का हिस्सेदार), बुध और चन्द्र हर दो ही उत्तम फल सूखे घड़े धन से भर देगा। 32 दांत हो तो भी मंगल बद या मंगलीक न होगा बल्कि सारे कुनबे को तारने वाला होगा। बुध और शुक्र दोनों का फल उत्तम होगा।
–जब चन्द्र खाना नं० 2 में हो।
4. परिवार धन और आयु की बरकत होगी और पापी ग्रह कोई बुरा प्रभाव न देंगे।
–जब खाना नं० 3-5-11 में से किसी में भी सूर्य, चन्द्र और वृहस्पति खाना नं० 9 में हो।
5. माता-पिता का सुख सागर ल बा होगा। –जब चन्द्र खाना नं० 6-3 या खाना नं० 2 खाली हो।

क्याफा :- जब मंगल के बुर्ज खाना नं० 3 से शुरू होकर चन्द्र के बुर्ज खाना नं० 6 में समाप्त हो

तो मातृ रेखा जब सिर रेखा वृ० के बुर्ज के नीचे तक जाती मालूम न हो और सिर्फ शनि के बुर्ज तक ही रह जाए आयु रेखा होगी। जब वृ० के बुर्ज से शुरू हो तो आयु रेखा, जब आयु रेखा वृ० की जड़ या खाना नं० 2 में या चन्द्र के बुर्ज में खत्म हो तो पितृ रेखा, याल रहे कि वृ० के बुर्ज पर समाप्त हो तो सिर रेखा होगी।

6. **राजयोग :-** उजड़े मैदान भी आबाद और सिर रेखा का उत्तम फल और ल बा समय उनमें प्रसन्नता होगी। सरकार के घर से हर तरह की सहायता और बरकत होगी। –जब गुरु उत्तम हो।

मंदी हालत

1. इसके जन्म पर माता हंसी कि बेटा पैदा हुआ है, शुभ होगा, मगर जल्दी ही रोने लगी जबकि उसे पता लगा कि उसकी (माता की) तो उम्र अब बाकी नहीं रही। बुध की जानदार चीज़ें बकरी, तोता घर में आएंगे तो चन्द्र की चीज़ें माता, घोड़ा चलते बनेंगे या मर जाएंगे। माता की आयु शक्की ही होगी। अगर जीवित तो धन-दौलत की हालत और वह खुद मुर्दे से बुरी हो। मंदे बुध के समय सूर्य की चीज़ों का उपाय सहायक होगा, धन के लिए वृ० का उपाय सहायता देगा।
2. मर्दों की हालत मंदी होगी। –जब राहु मंदे घरों में या मंदा हो।
3. सफ़र और दूसरे सांसारिक साथ सलाहकार मंदे नतीजे देंगे।
–जब केतु मंदा या मंदे घरों में हो।
4. स्त्री धन और आम गृहस्थी सुख सब कुछ जलता और बर्बाद होगा।
–जब ऋण पितृ 2-5-9-12 में शुक्र, राहु या शनि पापी ग्रह हों।
5. आत्महत्या करने तक आमदा। –जब चन्द्र खाना नं० 6 में या मंदा बर्बाद हो।

क्याफा :- खुदकशी की रेखा- सिर रेखा चन्द्र के बुर्ज पर बहुत झुक जाए, सिर रेखा और दिल रेखा मिल जाए, सेहत रेखा, दिल रेखा को काटे।

बुध खाना नं० 5

(प्रसन्न, उसके मुंह से निकला ब्रह्म वाक्य उत्तम होगा, मासूम की आवाज़)

जुबान से पता नस्ल तेरी जो चलता।
उसे काबू फिर क्यों न तू अपने करता॥

चन्द्र हो या नर ग्रह,
बुध आ निकले पाँचवें,
शुक्र, चन्द्र हो जैसे टेवे,
पैसा गले का खज़ाना गिनते,
असर शनि सब उत्तम होगा,
मदद ज़रूरी शुक्र देगा,
गुरु, चन्द्र जब टेवे मंदा,
तीन-चौथे 7-9 ग्रह बैठा,

बैठे 9-3-11 हो।
दादा, पोता तारा।
असर वही बुध देता हो।
खून नस्ल सब उत्तम हो।
संतान कभी न मंदी हो।
चीज़ चन्द्र से तरता हो।
बुध [1] ज़हरी आ होता हो।
राख [2] हुआ सब जलता हो।

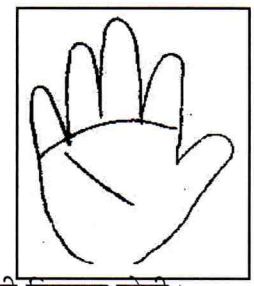

1. चाहे पिता के लिए मंद भाग्य, मगर संतान पर कभी मंदा न होगा। बाकी 5 बचने वाले मकान की किस्मत होगी।
2. खासकर जब बुध टेवे में चन्द्र से पहले घरों में हो। मगर आमतौर पर चन्द्र या वृहस्पति 3 या 9 में उत्तम फल और सूर्य खाना नं० 9/3 के समय भाग्य 34 के बाद जागेगा। हर हालत में खाना नं० 5 का सोया बुध उत्तम फल देगा।

हस्त रेखा :- सेहत या तरक्की रेखा कायम हो ज़रूरी नहीं कि शुक्र के बुर्ज की जड़ तक हो। सही हालत यह होगी कि हथेली में खाना नं० 11 की जड़ तक ही हो।

नेक हालत

1. ज्ञान भंडार उसके मुंह से निकला ब्रह्म वाक्य (अचानक निकला शब्द) का उत्तम मगर शुभ फल होगा।
2. राजा को भी तार दे। टेवे वाले के लिए धन और परिवार का दाता, मगर सूर्य के असर के लिए गुड़ में रेत और राजदरबारी संबंध में गेहूँ की रोटी में रेत मिली हुई, वह भी निक मी या नहाने के बाद शरीर पर रेत पड़ जाए या पेशाब के बुलबुलों की तरह भाग्य का फर्जी उभार मगर आखिर पर फर्जी चक्र लगा देगा।
3. अब सूर्य और बुध दोनों का उत्तम फल होगा, चन्द्र से संबंधित चीज़ें तारने वाली होंगी।
4. शनि का फल उत्तम पाँच बाकी बचने वाले मकान, बाल-बच्चों की बरकत होगी।
5. संतान स्त्री और स्वयं अपना भाग्य सब उत्तम जब अपना घर गऊ घाट हो। सूर्य राजदरबार ी सहायता पर होगा और बुध का स्वयं नेक फल साथ होगा। -जब सिर रेखा की ल बाई सिर्फ खाना नं० 11 तक हो और स्वास्थ्य रेखा कायम हो।
6. मनुष्यता की सिफते, जद्दी मकान का असर हर तरह से उत्तम होगा, गृहस्थी, संतान की हालत हरदम उत्तम होगी। -जब दृष्टि का घर खाली या खाना नं०5 का सोया हुआ बुध हो।
7. 34 साल की आयु के बाद भाग्य का सूर्य चढ़ेगा। -जब सूर्य, चन्द्र, वृहस्पति खाना नं० 3-9 में हों।
8. बुध खाना नं० 4-6-7-8-9 के ग्रहों को मार देगा। -जब चन्द्र खाना नं० 1-2-4 में बैठा हो या वह 6-12 में मंदा हो रहा हो।
9. जिस तरह गुरु (वृहस्पति), को ज्ञान (सूर्य) सहायक है उसी तरह ही लड़के (सूर्य), को तड़ागी (बुध) सहायता देगा।

मंदी हालत

1. खाना नं० 3-4-7-9-5 सब का प्रभाव मंदा और खाना नं० 1 के ग्रह की तो मिट्टी ही बोलती होगी। लेकिन यदि स्वयं ही चन्द्र या वृहस्पति खाना नं० 3-9 में हों तो उत्तम फल होगा।
2. चन्द्र की चीज़ों से सहायता होगी या चन्द्र की चीज़ें तारती होंगी और शुक्र (स्त्री) हर तरह से सहायक होगा। सूर्य की चीज़ों का फल उत्तम होगा। पिता के लिए बेशक मंद भाग्य हो, मगर संतान पर कभी मंदा प्रभाव न होगा।
3. गले में तांबे का पैसा खज़ाने की बरकत होगा।
4. बुध ज़हरीला प्रभाव देगा, इंसान और पशु में सिर्फ ज़ुबान बुध की चीज़ का फर्क है, मगर पता नहीं चलता कि अब उस ज़ुबान को क्या हो गया यानि स्वयं उसकी अपनी ही ज़ुबान खराबी का बहाना होगी। -जब चन्द्र या वृहस्पति जब नीच या रद्दी, खासकर बुध टेवे में चन्द्र से पहले घरों में हो।

बुध खाना नं० 6
(गुमनाम योगी और दिल का राजा)

निकले सुखन मुंह से पूरा जो होगा।
ज़ुबान मीठी तेरी भला दूसरों का॥

श्रेष्ठ रेखा जब शुक्र उत्तम,
भला गुरु, शनि, सूर्य बैठा,
हाल शुक्र घर दूजा जैसे,
कायम बैठा ग्रह जो कोई टेवे,
बुध चीज़ें न होंगी मंदी[2],
लड़की हो जो उत्तर विवाही,
हक्रीम लालच जड़ अपनी कटता,
सूर्य, शनि, गुरु दूजे बैठे,
बुरा मंगल न चन्द्र हो[1]।
योग राजा ज़र मंदिर हो।
चाल वही बुध चलता हो।
उत्तम असर सब देता हो।
आयु छोटी चाहे कितनी हो।
सुखिया कभी न होती हो।
सुखिया साबिर खुद फलता हो।
जागीर, राजा धन बढ़ता हो।

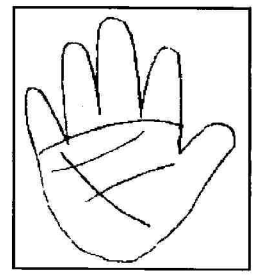

1. चन्द्र की जानदार चीज़ें (माता, घोड़ा आदि) का बेशक कोई फायदा तथा आराम न होगा, मगर चन्द्र की बाकी चीज़ों की पूरी मदद होगी।
2. दिमाग़ी कारोबार और व्यापार का पूरा फायदा, मगर हुनरमंदी दस्ती काम आदि हल्का ही फल देंगे।

हस्त रेखा :- **बुध से शुक्र तक सेहत रेखा कायम हो। सिर की श्रेष्ठ रेखा कायम हो।**

नेक हालत

1. ऐसे टेवे वाला माता के पेट में आने के समय से ही अपना प्रभाव शुरू कर देगा।
2. बुध अब कुत्ते की तरह हर समय मालिक के पीछे दुम हिलाने वाला और वफादार लौंडी की तरह उत्तम फल देगा आखिरी समय ज़ुबान बंद न होगी और ज़ुबान का बोला शब्द अच्छा या बुरा ज़रूर
   पूरा होगा, हर एक पूछता होगा कि उसकी एक आवाज़ से कुल ज़माना ही क्यों गूँज उठा।
3. फकीरी से स्वयं बना अमीर और फूल की तरह जीवन का मालिक होगा। गुमनाम, राज, योगी और मन का राजा। खाना नं० 2 या शुक्र की हालत पर बुध का आम असर होगा। जो ग्रह कायम होगा, बुध उसी का असर देगा या टेवे में जब भी कोई ग्रह उत्तम हो (खासकर खाना नं० 2 के) बुध फौरन उसी की नकल करेगा। अमूमन जैसा शुक्र हो वैसा ही बुध का भी फल हो जाएगा।
4. बुध की जानदार चीज़ों तथा संबंधित रिश्तेदारों की आयु छोटी हो जो ज़रूरी नहीं कि छोटी ही हो मगर बुध की चीज़ें कभी मंदा फल न देगी। सब्र वाला रहे तो हरदम फलेगा। समुद्री सफ़र का परिणाम शुभ होगा।
5. दिमाग़ी काम व्यापार और विद्या से संबंधित कारोबार, अक्ल की बारीकी और दिमाग़ी काम का पूरा फायदा मिलेगा मगर दस्ती काम हुनर मंदी आदि हल्का ही फल देंगे। झगड़ों का फैसला अपने हक में होगा।
6. खेती की ज़मीन से फायदा लिखाई और व्यापार का शुभ फल हो।
7. ईमानदारी के धन की बरकत होगी।
8. शुभ कामों में बुध की चीज़ों (फूल, लड़की, कन्या) का शगुन शुभ होगा।
9. बुध का जाती फल बुध की जाती चीज़ों पर कभी मंदा न होगा सारी कुंडली में जब भी कोई ग्रह उत्तम फल देने वाला होगा, बुध भी फौरन उसी ग्रह के नेक फल का हो जाएगा या यूँ कहो कि बुध खाना नं० 6 के समय पर उत्तम ग्रह दो गुणा उत्तम हो जाएगा।
10. चन्द्र की जानदार चीज़ों के अलावा चन्द्र का बाकी सब नेक फल होगा। छापाखाना काग़ज आदि के कामों से फायदा होगा। -जब बुध अकेला दृष्टि खाली हो।
11. स्त्री अमीर घर की होगी। -जब शनि खाना नं० 9-11 में हो।
12. राजयोग धन और धर्म मर्यादा की स्वामी जागीरदार होगा। -जब खाना नं० 1 में सूर्य या वृहस्पति या शनि हो।
13. राजयोग काग़जी कामकाज छापाखाना आदि लोगों के काम के लिए (जैसे अखबार, रसाले आदि छापना) ईमानदारी का धन साथ दे। -जब वृहस्पति कायम हो।

मंदी हालत

1. बुध अब भाग जाने वाली लड़कीयों की तरह होगा जो जाती हुई मालिक के लड़के को भी उठा भागेगी। नमकहरामी करता होगा।
2. उत्तर का रास्ता या दरवाज़ा (जो नया बनाया होगा) मातम कुंड की तरह बुरा प्रभाव देता होगा, खासकर वो लड़की उत्तर दिशा में (जद्दी मकान से) विवाही गई हो कभी सुखी न होगी।
3. लालची हकीम हो तो खुद ही अपनी जड़ काटता और बर्बाद होगा।
4. खाना नं० 6 का बुध टेवे वाले की 34 साल की आयु में मंगल बद का असर देगा, माता मरे या बर्बाद हो जाए आदि।
5. जब बुध मंदा हो दूध का बर्तन बाहर वीराने में और जब चन्द्र सहायक हो तो गंगा जल की बोतल खेती की ज़मीन में दबाना सहायक होगा। -जब शुक्र रद्दी होवे।
6. माता छोटी आयु में गुजर जाए, घर बर्बाद हो। -जब मंगल खाना 4-8 में हो।
7. संतान 34 साल की आयु के बाद कायम हो, स्त्री के बाएँ हाथ पर चांदी का छल्ला सहायक होगा। -जब शुक्र खाना नं० 4 में हो, जब केतु मंदा हो।

8. नज़र कमज़ोर और शनि का जाती प्रभाव मंदा होगा बुढ़ापे में मंदा हाल और आयु का समय अक्सर 90 साल होगा।
–जब वृ०, चं० खाना नं० 2 या वृ० खाना नं० 11 और चं० 2 में हो।

बुध खाना नं० 7
(संसार के लिए पारस, लड़के के टेवे में दूसरों की तारे, लड़की के टेवे में बुध अपने लिए कभी मंदा न होगा)

मरे कफन पहने खुदा घर जो चलते।
भला फिर भी जाएंगे लाखों का करके॥

जागता बुध हीरा होगा,
जान चीज़ें बुध हो मंदा,
खाली थैली[3] लेख अपना,
साथ-साथी ग्रह जो बैठा[2],
चीज़ें शुक्र या चन्द्र जाती,
चन्द्र, शनि या मंगल पापी,
चन्द्र आया घर पहले टेवे,
बैठा शनि हो जब घर तीसरे,
10 वें पहले चाहे शत्रु ज़हरी,
गुरु 9 वें घर मिट्टी उड़ती,

सोया[1] मिट्टी जलता हो।
साल 34 ज़हरी हो।
न ही शाही उम्दा हो।
डूबा पत्थर तैरा हो।
उत्तम नेकी ब्रह्माण्ड की हो।
नेक भला न कोई हो।
सफ़र समुद्र मोती हो।
ससुर अमीर होता हो।
नेक प्रभाव सब उनका हो।
भला शुक्र चाहे बैठा हो।

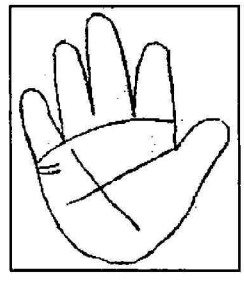

1. चाहे अक्ल की बारीकी साथ न देगी मगर सांसारिक शान तथा सुख सागर भला ही होगा।
2. सिवाए मंगल के जिसके साथ या ताल्लुक से यानि मंगल 1-7-8 हर दो मंदे और चन्द्र खाना नं० 7 भी दूध में मेंगने होगा। यानि 34 साल की आयु तक उसका स्वयं और खानदानी हाल बहुत हल्का, मगर हाजिर माल का व्यापार उत्तम फल देगा मगर स्वयं दौलत का रक्षक ही होगा।
3. जन्म रेगिस्तान बीकानेर की भांति रेतीले प्रांत में, दरिया नदी, नाले के निकट हो सकती है।

हस्त रेखा :- सिर रेखा की ल बाई सेहत रेखा की हद तक हो। शादी रेखा बुध पर गिनती में दो हों।

नेक हालत

1. बुध अब स्त्री की बफादार बहन जानिसार साली और मिट्टी में रेत की तरह एक ही जिस्म होकर दूसरे ग्रहों की मदद करेगा। संसार के लिए पारस होगा चाहे अपने लिए मिट्टी ही होना पड़े। लिखारी कलम का ऐसा जो तलवार को भी काटा दे, रास्ते चलते-चलते ही किसी का कुछ न कुछ तो ज़रूर ही बना देगा।
2. बुढ़ापा सदा उत्तम होगा।
3. हाजिर माल के व्यापार से लाभ, दस्ती काम से फायदा, फौजदारी मुकद्दमें या तकरार फसाद में उलझन कभी न होगी। तलवार की जगह कलम पर अधिक ज़ोर देगा। चाहे अक्ल की बारीकी साथ न देगी मगर खज़ाने की दौलत सदा सहायता पर होगी।
4. अपना कुल (ाानदान) तारने वाला हीरा होगा। -जब जागता हुआ बुध खाना नं०1 में कोई न कोई ग्रह ज़रूर हो।
5. समुद्री सफ़र मोती देंगे। -जब चन्द्र खाना नं० 1 में हो।
6. स्त्री का घराना अमीर हो जाएगा। -जब शनि खाना नं० 3 में हो।
7. इन ग्रहों का प्रभाव कभी मंदा न होगा स्वयं चाहे आपस में या बुध से लड़ते ही रहे।
-जब खाना नं० 10-1 के ग्रह चाहे मित्र चाहे शत्रु हों।
8. शुक्र से संबंधित चीज़ों में शुक्र तथा बुध दोनों का अपना-अपना प्रभाव उत्तम स्त्री के इश्क में गर्क रहेगा जो उसे सुख ही देगा।

मंदी हालत

1. टेवे वाले की बहन, बुआ, साली या टेवे वाले की लड़की सब की सब बर्बाद दुखिया होंगी।
2. स्त्री की बिगड़ी हुई बहन (बुध) तेरे ही भाईयों से मिलकर तेरी ही स्त्री की मिट्टी खराब करेगी यानि मंदा बुध टेवे में मंगल

और शुक्र का फल भी मंदा ही कर देगा। -जब केतु खाना नं० 1-8 में हो।

3. साहुकारी का फल भी उत्तम न होगा। मंदी रेत। बचपन का समय मंदा। मगर बुढ़ापा फिर भी उत्तम चाहे अपना भाग्य मंदा। फिर भी साथ के ग्रहों को तारता होगा। 34 साल की आयु तक शुक्र का भी फल मंदा होगा। -जब सोया हुआ बुध खाना नं० 1 से दृष्टि खाली हो।
4. रुखा गृहस्थ, मिट्टी उड़ती स्वयं बुध मंदे रेत की तरह बुरा फल देगा। चाहे गृहस्थी कारोबार के लिए शुक्र का फल नेक ही क्यों न हो। -जब वृहस्पति खाना नं० 9 में हो।

बुध खाना नं० 8
(बीमारी जहमत और लानत का घर, छुपा तबाही का फंदा माली हानि करने वाला कोढ़ी)

कब्र तक की लानत, फरिश्ता भी भागे।
जले आग़ ऐसी, नज़र जो न आए॥

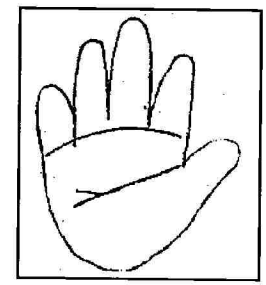

साथ ग्रह नर बुध ' न मंदा,
मंद समय साल 34 का,
मौत मंदी का बाजा बजता,
नाग ज़हर ग्रह नीच में भरता,
बैठा कोई हो ग्रह जब दूजे,
आयु गुरु पर बुध जो खड़के,
4 रवि या चन्द्र उत्तम,
छठा मंदा ग्रह मंडल मंदा,

न ही बुरा बुध मंगल हो।
हाल वही जो नर ग्रह हो।
खाली मंदिर जब होता हो।
तीर मंदे ग्रह चलता हो।
ज़हर भरे बुध लानत हो।
न ही पिता न दौलत हो।
ज़हर धोता बुध अपनी हो।
मुआफी गुरु को मिलती हो।

1. बुध के साथ खाना नं० 8 में नर ग्रह या मंगल खाना नं० 12 हो तो बुध का खाना नं० 8 पर मंदा प्रभाव न हो।

हस्त रेखा :- सिर रेखा मंगल बद में समाप्त हो या अंत में दो शाखी हो जाए।

नेक हालत

1. बुध खाना नं० 8 को अगर किसी नर ग्रह का साथ मिले तो कभी मंदा न होगा और उसका वही उत्तम प्रभाव होगा जैसा कि नर ग्रह का हो। -जब नर ग्रह का साथ खाना नं० 8 में हो।
2. 34 साल की आयु में बुध अपना ज़हर धोएगा। अब केतु बर्बाद न होगा, माता की आयु और चन्द्र की चीज़ों का फल नेक होगा। -जब सूर्य चन्द्र या खाना नं० 4 उ दा हो।
3. बुध का खाना नं० 8 पर मंदा असर न होगा। -जब मंगल खाना नं० 12 में हो।
4. अब बुध और मंगल दोनों का खाना नं० 8 का फल उत्तम होगा हालांकि दोनों अकेले-अकेले खाना नं० 8 में मंदा असर दिया करते है। -जब मंगल खाना नं० 8 का साथ हो।
5. ज्ञानी होगा। -जब बुध खाना नं० 8 में हो, कनिष्ठका का सिरा गोल हो।

मंदी हालत

1. चाहे बुध अब सेहत के संबंध में टेवे वाले के अपने शरीर (खून और नज़र मंगल, शनि) की तो अवश्य मदद करेगा मगर दांतों और नाड़ियों के द्वारा (उनकी मंदी हालत करके) अपना ज़हर उगलता होगा। वह एक ताजा कोढ़ी फांसी की रस्सी या विषैले दांत की भांति चलता होगा।
2. ऐसी छुपी सज़ा मिले कि बड़े से बड़ा भी अज़ल का फरिश्ता चिल्लाने लगे मगर कसूर का पता कभी न चले। नतीजे पर अगर करे तो सिर्फ धन की हानि करेगा। अगर ज़्यादा नहीं तो 1/2 कर देगा या कभी ज़रूर कर देगा मगर शून्य कभी न होगा।
3. राजदरबार में अचानक धोखे की घटना से जिनका परिणाम सिर्फ माली हानि होगा। जैसे लड़की के दिल में आया जवानी का परिणाम क्या होगा, जब जन्म से ही कब्रिस्तान का बाजा बजने लगे, सोच कर कहने लगी, अपनी जेब न सही तो दूसरों को ही उल्टा लेंगे। होनहार काम में लगी मगर परमात्मा से विमुख नौजवान पर नज़र जा पहुँची। उसके मालिक से उसकी

बदचलनी और लापरवाही की बेबुनियाद तोहमतें खड़ी कर दी। मालिक के शक को दूर करने के लिए फिर उसी नौजवान के पास हंसती-हंसाती आँखें दो चार करने लगी, जबकि वह दोनों मालिक की नज़र से गुजरे। बस क्या था उस बेहया लड़की ने अपना जूता खोला असली अर्थ 800 का 400 यानि 1/2 आय करने का पूरा कर दिखाया। वह गरीब इज्जत बचाने के लिए मांगी हुई कीमत देकर चलता बना मगर भेद न पा सका कि वह स्वप्न था या असल में कोई जागती हुई कहानी हो। उसी प्रकार राजदरबारी घटनाओं में नौकरी का एकदम 1/2 दर्जे पर चले जाना या धन की हानि होना आम होगा मगर बुध खाना नं० 8 की बेहया लड़की बिन बताए सिर काटने के लिए कभी अपनी जवानी में बूढ़ी न होगी।

4. **बुध की जानदार चीज़ें सब दुखिया बर्बाद और स्वयं बुध का प्रभाव मंगल की जानदार चीज़ों पर मंदा और बुध की निशानी के समय मकान की सीढ़ियां गिरती या गिरा कर नई बनाई होगी।** पूजा स्थान जब बदला जाए बुध का ज़हरीला चक्कर शुरू होगा। जानों तथा कामों में तबाही का फंदा धन की हानि करने वाला। कोढ़ी ऐसी आग़ जो जलती नज़र न आए मगर हर तरफ राख ही राख करती जाए।
5. जब कभी भी वर्षफल के हिसाब बुध खाना नं० 8 में आए तो जन्म दिन शुरू होने से (पहले 34 दिन के समय और जन्म दिन शुरू होने के बाद का 34 दिन के समय में) 34, 34 दिनों के दोनों ही टुकड़ों में जब भी मौका लगे (एक दिन जन्म दिन आने से पहले एक दिन बाद में)

मिट्टी का कुजा शहद या खांड भर कर बाहर बीराने में दबाना सहायक होगा। अगर हर तरफ पहले ही आग़ लग चुकी हो और 34 दिन की हर दो ओर की मियाद के अंदर-अंदर यह खांड वाला उपाय तो करे ही करे साथ ही मूंगी साबुत का, तांबे का बर्तन (घड़े की शक्ल) भरा हुआ जन्म दिन से पहले या बाद में दरिया में बहाना उत्तम होगा। अगर यह दोनों उपाय जन्म से 34 से 42 दिन पहले और बाद में 34 से 42 दिन के अंदर-अंदर दोबारा हो तो उत्तम फल देंगे। जन्म कुंडली में बुध खाना नं० 8 के समय काले सूर्मे से चूतड़ पर काली खाल कायम करना, छत पर वर्षा का पानी या दूध रखना या लड़की के नाक में चांदी का छल्ला डालना शुभ होगा मगर आतशी शीशा या लड़की के लाल रंग के कपड़े टेवे वाले के लिए हर जगह आग़ लगाने का बहाना होंगे।

6. कभी भी भला प्रभाव न देगा। -जब बुध अकेला खाना नं० 8 में हो।
7. मंदा समय 34 साल की आयु होगी, मंदी मौत का बाजा बजता होगा और भट्टी का रेत जल रहा होगा। उस समय टेवे में जो भी नीच ग्रह हो उसके असर में साँप का ज़हर भरता और स्वयं उस ग्रह के असर को शुरू करने के लिए कमान का तीर बनेगा जो कि समय टेवे में मंदा हो। -जब खाना नं० 2 खाली हो वर्षफल का या कुंडली का हो।
8. वृहस्पति की आयु 16 से 21 में बुध का ज़हर पिता की आयु और उसकी धन-दौलत खतरे में होगी। -जब खाना नं० 2 में कोई न कोई ग्रह हो।
9. **बुध के बुरे प्रभाव के समय चन्द्र की चीज़ें उस ग्रह के रिश्तेदार या जानवर को दें जो वर्षफल के हिसाब खाना नं० 2 में आए और बुध भी उस समय खाना नं० 8 में हो।** उदाहरणत: ***जन्म कुंडली में चन्द्र खाना नं० 2 में आ गया और बुध उस समय खाना नं० 8 में बैठ गया, अब चन्द्र की चीज़ें केतु के जानवर या रिश्तेदार को देंगे, यानि खोए के 24 पेड़े (जिनमें खांड न हो) कुत्ते को देंगे या दरिया में डाल देंगे या किसी ऐसे रास्ते में एक तरफ करके रख दें जहां से कोई कुत्ता आदि उसे खा जाए। इसी तरह ही दूसरे ग्रहों का उपाय होगा जैसे बुध खाना नं० 8 में आए उस समय खाना नं० 2 में आ जाए शनि, मगर जन्म कुंडली में खाना नं० 2 में बैठा हो सूर्य अब सूर्य की चीज़ें (गेहूं, गंदम, गुड़ तांबा) शनि के जानवर को दे (यानि भैंस, मछली आदि को)। अगर जन्म कुंडली में खाना नं० 2 खाली हो तो वर्ष के अनुसार खाना नं० 2 में आए हुए ग्रह की बर्बादी के समय वही उपाय करें जो कि उस खाना नं० 2 में आए हुए ग्रह की मंदी हालत में उसके लिए खाना नं० 2 में दिया हुआ है।***
10. सिवाए वृ० सब ही ग्रहों के असर में मंदी हालत का चक्कर होगा। -जब खाना नं० 6 मंदा हो।
11. माता छोटी आयु में चल दे, वरना मां-बेटा दोनों का मंदा हाल होगा। संतान और मामा भी दुखिया होंगे। -जब नर ग्रह खाना नं० 6, बुध खाना नं० 12-8 में हो।
12. पट्ठों के रोग हो सकते हैं। -जब खाना नं० 12 खाली हो।

किस घर में बैठा नीच होगा	कौन ग्रह नीच होगा
1	शनि
2	–
3	केतू
4	मंगल
5	–
6	केतू शुक्र
7	सूर्य
8	चंद्र
9	राहु
10	वृ०
11	–
12	बुध, राहू

बुध खाना नं० 9
(कोढ़ी तथा राजा एक साथ, कम उम्र मनहूस)

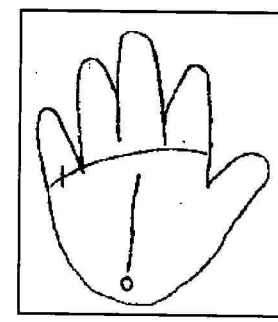

अजब भूल-भूलैया ज़ुबानी तमाशा।
दिखाते बहुरुपी, ले बिस्तर ही भागा।।

तीन पहले 6-7-9-11,
धर्म आयु धन कुल परिवारां,
ऋण पितृ गुरु एक अकेला,
अल्पायु का प्राणी होगा,
छुपे मंगल न रवि से भागे,
चन्द्र, केतु खाना नं० 11 बैठे[1],
कारण किसी हो आयु लम्बी का,
साया 34 बुध उल्टा होगा,
वर्ष चक्र में 11[2] बैठा,
ज़हर भरी ग्रह मंडल टेवा,

चन्द्र, केतु, गुरु बैठा हो।
बुध कभी न मंदा हो।
छठे, आठ 10-11 जो।
उत्तम चाहे चन्द्र बैठा हो।
न ही गुरु से डरता हो।
खाक ग्रह सब करता हो।
संतान, स्त्री सुख जलता हो।
असर मंगल बद देता हो।
बुध ताबीजी आता जो।
पौधा जड़ समेत कट्टता हो।

1. 7–15–25–37–49–66–76–96–10 8–120 साल की आयु।
2. अक्ल की नकल का बीज (अंडा) खाना नं० 9 में पैदा होता है जिसके अंदर की हालत खाना नं० 11 से मालूम होगी।

हस्त रेखा :- सिर रेखा या धन रेखा बुध या भाग्य रेखा की जड़ में दायरा हो। शुक्र या बुध खाना नं० 9 सदा बुरा ही प्रभाव देंगे, बुध का वृ०, वही प्रभाव जो त्रिकोण △ का था।

नेक हालत

अपने पेट के लिए चाहे रोटी न मिले मगर अपने कबीले का पालन ज़रूरी करता होगा। अक्ल की नकल का बीज (अंडा) खाना नं० 9 में पैदा होता है जिसके अंदर की हालत खाना नं० 11 से पता लगती है, यानि बुध का भेद खाना नं० 11 के ग्रह की हालत पर होगा। अगर खाना नं० 11 खाली हो तो वह बुध बेहया लड़की जो अपनी माता के संबंध में अपने जन्म देने वाले पिता के संबंध को भी बुरे संबंध का नाम दे दे तो उसी पिता से विषय करने की शान की मालिक हो।

1. बुध कभी मंदा न होगा बल्कि हर तरफ से खिला बाग होगा। खुश्क बादल भी मोती बरसा दे। धर्म उम्र धन उत्तम सदस्यों की बरकत होगी। *–जब खाना नं० 3–1–6–7–9–11 में चन्द्र, केतु, वृहस्पति हो।*
2. **दरिया के पानी से धोया, दरिया के पानी के छींटे देकर, पहला कपड़ा डालना दिन या दोपहर के समय मगर रात न हो। यदि चन्द्र खाना नं० 3–8–9–5 में हो तो बुध के अपने प्रभाव से आप बचाव होगा।**

मंदी हालत

1. इस घर में बुध बेबुनियाद और बहुत अधिक गहराई के खाली कुएं का महल होगा या ऐसे व्यक्ति के जन्म में भेद होगा जिसके जाहिर करने में उसकी अपनी ज़ुबान में भी थथलापन होगा।
2. मंगल या सूर्य दोनों के साथ से लसूड़े की गिटक की भांति भाग्य का हाल होगा (मंदे अर्थों में) और उम्र का मंगल बद या स्वयं बुध का समय 4-13-15-17-28-34 व साल, मास का दिन न कभी नेक और आयु के लिए ठीक होगा। चमगीदड़ के आये मेहमान जहां हम लटके वहां तुम लटको की तरह साथियों का हाल होगा जिसका उपाय नाक छेदन के बिना और कोई न होगा। अगर फिर भी चन्द्र की चलती चीज़ें या वृहस्पति पीले रंग में रंगी हुई चीज़ों से वह एक चलती नदी होगी। हरा रंग मंदा होगा जिसकी तूफानी हालत का कोई अंत नहीं होगा या वह जालिमों को फांसी देकर गिराने के लिए जादू का कुआं होगा जिसका अंत देखने के लिए सीढ़ी का न कभी प्रबन्ध होगा। यदि यह सब कुछ न हुआ तो वह न दो जहां होगा। अगर किसी तरह आयु वाला हो तो खानदान की परवरिश करने वाला नहीं तो 29 साल पिता दु:खी रहे। थथलाकर बोलने वाला हो। बुध जब आयु के 34 वें साल शुरू हो तो मंगल बद का असर होगा जिसका इलाज लोहे के ऊपर लाल की हुई गोली होगी। खाना नं० 9 में या खाना नं० 9 के ग्रहों का साथी ग्रह हो जाने वाला बुध यानि बुध जिस घर में बैठा हो उस घर का मालिक खाना नं० 9 में बैठ जाए। खाना नं० 9 के सब ही ग्रहों को (चाहे वह बुध के शत्रु हो या मित्र, बुध से कमज़ोर हो या ताकतवर) या खाना नं० 9 के उस ग्रह को जिसका कि बुध साथी ग्रह बन रहा हो। अपनी यानि बुध के खाली दायरे की तरह बेबुनियाद मुर्दा और निष्फल यानि जो कोई भी काम न दे या किसी भी काम न आ सके, कर देगा जैसे:-

जिस घर में बुध बैठा हो	उस समय खाना नं० 9 में बैठा हुआ कौन ग्रह बर्बाद होगा
6	बुध, केतु
1-8	मंगल
2-7	शुक्र
3-6	बुध
10 -11	शनि
9	वृहस्पति
12	वृहस्पति, राहु
4	चन्द्र
5	सूर्य

3. उदाहरण के तौर पर घर से 9 मील कुएं के पानी का घड़ा भर कर वापिस चले। बुध बर्तन के तले में छेद कर देगा जिससे वापिस घर पहुँचने तक कपड़े खराब और पानी से खाली बर्तन होगा। हर तरफ निराशा यानि बुध अब भाग्य का कोढ़ी और राजा एक साथ होगा। वह ऐसा हवाई कोढ़ होगा जो स्वयं ही उड़ कर या चिमटे (वृ०, सू०, मं०) से उस नर ग्रह का उपाय करे जो नर ग्रह कि, खाना नं० 9 के ग्रह को या खाना नं० 9 के ग्रह को या खाना नं० 9 में बुध के साथी ग्रह हो जाने वाले ग्रहों या स्वयं बुध को ही बर्बाद करे। ***फिर यही शरारत ध्यान में रखते हुए काम न बने तो स्त्री ग्रहों का उपाय, फिर भी काम न बने तो, नपुंसक ग्रहों की सहायता ले।*** मगर उपाय से बर्बाद हो जाने वाले ग्रहों का याल न भूल जाए।

मंदे असर का उपाय :-

4. ***हर हालत में तथा धन तथा जीवन अगर कोई भी हो तो टेवे वाले की अपनी जान पर आयु तक होगी। स्त्री पागल की तरह आग़ में सिर जलाए और संतान मंदी तथा व्यर्थ हो। लोहे की गोल चीज़ जिस पर मंगल का रंग ही बुध की ज़हर से बचाएगा। नाक छेदन सबसे उत्तम और दरिया के पानी से धोया हुआ पीला कपड़ा शुभ, (जर्द रंग केसर का निशान) घर की तह ज़मीन में चांदी दबाना भला और जिस्म पर चांदी शुभ, गऊ ग्रास भी शुभ होगा। खु ब मिट्टी के बर्तन में डालकर धर्म स्थान में देना, राजदरबार के मंदे असर से बचाएगी। खु ब ऐसी सब्जी जो वर्षा के दिनों के बाद अपने आप पृथ्वी पर उग आया करती है और पका कर खाई जा सकती है।***
5. धोखा देना/दिया वचन पूरा न करना तमाशा दिखाते-दिखाते बिस्तर ही ले भागना ऐसे व्यक्ति का आम असूल होगा।

-जब खाना नं० 11 में चन्द्र, केतु न हो।

6. अल्प आयु 8X8 = 64 साल की आयु का प्राणी होगा। चाहे आयु का मालिक चन्द्र कितना ही उच्च क्यों न हो वरना संतान में तथा स्त्री दोनों का फल मंदा होगा। -जब वृ० अकेला खाना नं० 8-6-10 -11 में हो।
7. आयु तो अवश्य ल बी होगी मगर शादी और संतान में खराबियां होगी।
-जब खाना नं० 3-6-7 में चन्द्र या वृ० दोनों हों।
8. शरीर फसादी, ब्लड पायजन (Blood Poison) होगा। -जब खाना नं० 1 खाली हो।

क्याफा

हाथों की अंगुलियों के नाखुन हरे रंगे के होंगे।

9. पौधे जड़ों से उखाड़ देने की तरह खराबियां देगा, खासकर जब ताबीज की शक्ल में आए, जब किसी फकीर साधु से कोई ताबीज लिया जाए तो बुध ऐसे ताबीज के आने के दिन से आयु 17/34 दिन के अंदर ही अपनी ज़हर का सबूत देगा। इसके अलावा 76-96-108-120 साल की उम्र में बुध खाना नं० 11 में आएगा तो भी मंदा फल देगा।
-जब टेवे के खाना नं० 9 का बुध वर्षफल के हिसाब 11 में आए।
10. बेवफा होगा, कनिष्ठा छोटी हो। -जब बुध अकेला खाना नं० 9 में हो।

बुध खाना नं० 10
(प्रसन्नता से निर्वाह करने वाला, जी हजूरिया, शाम को रात कहे)

भला यार दोस्त न मक्कार होता।
बचेगा कहां तक तू खामोश सोता।।

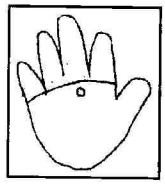

तीन-चार-पाँच पहले चन्द्र,
खाली मंदिर ज़र सफ़र समुद्र,
कान फटे पर राग जो मीठी,
शनि भला हो सब कुछ उम्दा[1],
शनि के इशारे बुध पे चलता[2],
साया वालिद भी शक्की होगा,
असर मकान तीन बाकी जो।
सिदक भरा खुद मोती हो।
साँप आँखों से सुनता हो।
वरना धोखा खुद मंदा हो।
मंद उम्र खुद पापी हो।
मरोसा नज़र न अपनी हो।

1. जब शराबी, कवाबी हो तो शनि मंदा होगा। पिता की इच्छा हो सुख दे या न दे। नज़र रहे या न रहे।
2. फैसला शनि की हालत पर होगा। मगर खुद बुध तो शनि के दरबार में पूरा जी हजूरिया होगा। अच्छे या बुरे हुक्म का एकदम ल बी से ल बी हद तक पूरा कर दिखाएगा। दो गुणा नेक या दो गुणा मंदा होगा।

हस्त रेखा :- बुध का दायरा शनि के बुर्ज पर हो।

नेक हालत

1. बुध अब सांप की सिरी, लोहे पर कली की पालिश की हैसियत का होगा, इसलिए उसकी चालाकी का जवाब खामोशी से न बन पड़ेगा।
2. ऐसा आदमी शरारती, मतलब परस्त, चालबाज़, जी हजूरिया, शाम को ही रात कहने वाला होगा। उसका राग इतना मीठा होगा कि कान कटने पर भी छोड़ा न जा सके।
3. तीन बाकी बचने वाले मकान, शेर दहाड़ने का प्रभाव होगा। जंगी चीज़ों का व्यापारी हो, मर्दों की बरकत, मगर स्त्रियों और बच्चों के लिए अशुभ हो। -जब चन्द्र खाना नं० 1-3-5-4 में हो।
4. समुद्र के सफ़र से मोती पैदा होंगे खुद शर्मसार तथा हुनरवान होगा।
-जब खाना नं० 2 खाली, हाथ की अंगुलियों के नाखुन गोल हों।
5. बुध, शनि का प्रभाव उत्तम यानि 6 सिरों वाले शेषनाग की तरह हर तरफ सिर पर साया और मदद हो, चाहे केतु बर्बाद हो जाए। -जब शनि की हालत नेक हो।
6. बुध अब दो गुणा नेक होगा, सूखे घड़े मोतियों से भर देगा। -जब खाना नं० 2 नेक हो।

मंदी हालत

1. जब शराबी, कवाबी तो शनि मंदा और सांप के ज़हरीले टेढ़े दांत की तरह शरीर में घुसते ही जान निकाल देने वाला होगा।
2. ज़ुबान का चस्का खराबी की पहली निशानी होगा। असर में शनि अब बुध के इशारे पर चलेगा और बुध स्वयं सांप के दांतों

के लिए ज़हर की थैली, लाख के महल, बारुद के पटाखे की तरह शनि की मक्कारी की बुनियाद होगा।

3. न सिर्फ 42 साल की उम्र तक बल्कि तीनों ही यानि राहु, केतु, शनि अपनी-अपनी आयु तक मंदे होंगे।
4. बुध अब जिस्म से जुदा कटी सांस की सिरी होगी जो शनि की हालत पर दो गुणा नेक या मंदे असर की होगी। वालिद के साये का कोई भरोसा न होगा, स्वयं अपनी नज़र का भी विश्वास न होगा।
   -जब शनि मंदा हो या कर लिया जाए।
5. बुध अब दो गुणा मंदा होगा जो आदमी को दोनों हाथों से मार-मार कर उसे दोनों आँखों से हर दो जहां में दुखिया कर देगा।
   -जब खाना नं० 8 मंदा हो।

बुध खाना नं० 11

(धनी जन्म से, स्वयं बुध का ग्रह उल्लू का बच्चा और कोढ़ी मगर 34 साल की आयु के बाद हीरा मददगार होगा)

सोना भाव बढ़ता, लगे जब कसौटी।
समय नाश अपने अक्ल पहले सोती॥

बुध घड़ा कुंभ संसार[1] उल्टा,
शनि, चन्द्र, वृ० संसार मारा,
साथ गुरु या चन्द्र बैठा,
सीप हीरा बन मोती देगा,
बुध चक्र में शनि हो चलता,
बुध दबाया हो या मंदा,
लगन 9 वें का 11 आए[3],
काम अक्ल न कोई दे,
बाद मुसीबत मदद हो पाता,
रोजे रोशन चाहे लेख न खुलता,
उम्र 34 तक मारता हो।
बुध आखिरी तारता हो।
दूसरा खाली तीसरा मंदा हो।
तख्त चक्र[2] जब लाता हो।
लेख गुरु पर होता हो।
शनि, गुरु न उम्दा हो।
ताबीज़ फकीरी बनता हो।
अपनी जड़ खुद काटता हो।
कमी अक्ल ज़र दौलत हो।
खुशी मगर स्वयं रात को हो।

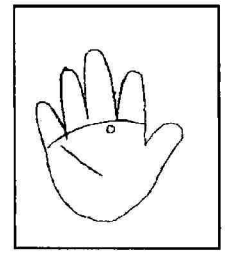

1. जन्म से 34 वर्ष तक ऐसा मंदा कि मनुष्य पानी में डूबे मुर्दे की तरह भाग्य का हाल होगा और चं०, श०, वृ० का फल मंदा करता रहेगा, मगर बाद में ऐसे मुर्दे के पेट से पानी निकालने वाले उल्टे घड़े की तरह सब ओर से डूबे हुए को जीवित प्रसन्न कर देगा— मंदी हालत में भी।
2. 11-23-36-48-57-72-84-94-105-119 साल की आयु।

हस्त रेखा :- बुध से रेखा खाना नं० 11 बचत में हो।

नेक हालत

1. शनि अब बुध के चक्र में होगा।
2. बुध का शुभ तथा बुरा होना वृ० की हालत पर निर्भर होगा।
3. 34 वर्ष की उम्र के बाद आराम मिलेगा और बुध तारने वाला हीरा होगा, धन की सब कमी दूर होगी।

क्याफा बुध का दायरा जब तर्जनी तथा मध्यमा के बीच खाना नं० 11 में हो।

4. चाहे दिन का समय कम ही खुशी का होगा। वृ० और श० (ज़माने की हवा और संसार की) हर दो को अपने दायरे के चक्र में ही घुमाता होगा, मगर 34 के बाद रात शाहाना हाल सदा आराम तथा प्रसन्नता की होगी।
5. स्वयं शर्मसार और हुनरवार होगा हाथ की अंगुलियों के नाखुन गोल होंगे। -जब खाना नं० 2 खाली हो।
6. जिस वर्ष खाना नं० 11 का बुध खाना नं० 1 में आएगा, सीप में हीरे, मोती पैदा होंगे, 11-23-36-48-57-72-84-94-105-119 वर्ष की उम्र। -जब खाना नं० 3 मंदा हो।

मंदी हालत

1. अब बुध का ग्रह उल्लू का पट्ठा होगा, गले में तांबे का पैसा सहायक होगा जो इसको बेवकूफी के कामों में धन हानि करवाने से बाज रखेगा।
2. जब वर्षफल में खाना नं० 9 का बुध खाना नं० 11 में आया हुआ हो और टेवे वाला किसी फकीर से ताबीज़ ले तो बुध पूरा जड़ों से उखाड़ देगा यानि अति मंदा होगा।

बुध खाना नं० 12
(नेक ल बी आयु अच्छा जीवन बिताने वाला मगर भाग्य के फेर से रात की नींद उड़ाने वाला जिसे दुखिया देखकर आसमान भी रो देवे)

गई रात न आधी, वह क्यों रो रहा है।
लिखा सब फरिश्ता, उल्ट हो रहा है।

बुध भला न पुरुष के 12, बुरा टेवे न स्त्री हो। *साथ शनि, गुरु[1] हो जब मिलता, कुंड भरा बुध अमृत हो वसा*

चार, छठे 9-12 मारे[2], तीन दूजा नहीं बचता हो।
गुरु, राहु खुद जड़ से कटते, सुखिया रानी न राजा हो।
शनि, रवि कोई 12 बैठे, असर ज़हर न उन पर हो।
साथ-साथी ग्रह शत्रु होते, ज़हर शनि में भरता हो।
उम्र 25 गर शादी उसकी, गुरु पिता स्वयं रोता हो।
बुध होगा तब नमक हरामी, मर्द माया सब डोलता हो।
गुरु, शनि मच्छ रेखा, टेवा, असर उत्तम बुध देता हो।
टेवा मालिक न ज़हर चाहे चढ़ता, चीजें ज़िंदा बुध दुखिया[3] हो।
ग्रह घर 6 वां हर दो जलते, बुध ज़हर न घटता हो।
मदद केतु से जिस दम पाते, औलाद दौलत सब फलता हो।

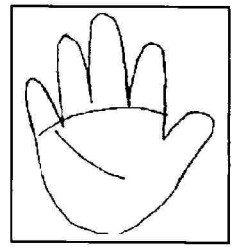

1. खाना नं० 12-2 में वृ० का साथ हो तो इज्जत ताकत मगर शनि के साथ से धन-दौलत परिवार मिलेगा।
2. बाकी 6 बचने वाले मकान का भाग्य तथा ग्रह खाना नं० 2-3-4-6-9-12 बर्बाद।
3. बहन, बुआ, लड़की, फूफी, मौसी अपने घर (टेवे वाले के) दुखिया मगर अपने ससुराल में प्रसन्न होगी। खाना नं० 12 के बुध का अपना स्वभाव देख लेना ही कारगर होगा। उदाहरणत: बुध का अपना स्वभाव जैसा बुध की भूमिका में दिया है।

हस्त रेखा :- बुध से रेखा खाना नं० 12 खर्च में हो।

नेक हालत

1. खाना नं० 12 में सिर्फ शनि तथा सूर्य उसके साथ बैठे उसकी ज़हर से बचते ही रहेंगे। बुध खाना नं० 12 साफ तौर पर दांत कहलाता है। मगर टेढ़ा दांत जिसके अंदर-बाहर जाने के लिए सुराख माना है सूर्य को बन्दर माना है और शनि से चीज़ें सांप गिनते हैं। बन्दर की सिफत है कि वह हर एक चीज़ को मुंह में डालने से पहले वह सूंघ लेगा। अगर विषैली हो तो पृथ्वी पर डाल देगा फिर भी यदि गल्ती हो जाए तो अपने जबड़ों के नीचे की थैलियों में हर एक खाने वाली चीज़ को डाल लेगा, एकदम निगलेगा नहीं। उसी तरह सांप के ज़हर की थैली उसके सिर में जुदा ही होती है और बुध का टेढ़ा दांत उस थैली से ज़हर निकाल कर किसी को मार देने का बहाना होगा। मगर वह थैली अपने आप ही ज़हर अपने से बाहर नहीं निकलने देती। इसी तरह पर बन्दर और सांप, सूर्य और शनि, बुध की ज़हर के साथ बैठे हुए बच जाते हैं बल्कि कई बार बुध विष के काम की चीज़ बना लेते हैं। मगर बुध खाना नं० 12 के समय खाना नं० 6 में बैठे सब ग्रह शनि, सूर्य समेत बर्बाद ही होंगे। अक्ल (बुध) के साथ अगर होशियारी, (शनि) का साथ खाना नं० 2-12 मिल जाए तो ज़हर से भरे हुए के लिए भी अमृत कुंड होगा जो मुर्दों को भी जीवित कर देगा।
2. अब बुध परिवार तथा धन-दौलत के स बंध में अमृत का भरा तालाब होगा।
   -जब वृ० या श० खाना नं० 2-12 या वृ० या श० खाना नं० 3 में हो।
3. इज्जत शक्ति सांसारिक प्रसिद्धि सब कुछ होगा मगर धन-दौलत की चोरी या हानि या फालतू ही खर्चा हानि आदि होंगे।
   -जब वृ० खाना नं० 2-12 में हो।
4. बुध भी अब उत्तम फल देगा जब तक शनि, वृहस्पति दोनों एक साथ मगर बुध से जुदा हो। टेवे वाले पर बुरा असर न होगा। मगर बुध की जानदार चीज़ें (बहन, बुआ, फूफी, लड़की, मौसी आदि) टेवे वाले के घर में दुखिया मगर ससुराल में सुखिया होगी।
   -जब श०, वृ० खाना नं० 7 की मच्छ रेखा हो।

मंदी हालत

1. ऐसा प्राणी स्वभाव में एक पल तो शाबाश बढ़े चलो जवानों हमारे बैठे किस का फिक्र, दिलासे देता साथियों को आन की

शान में याली महलों के दिलासों में भड़काता होगा लेकिन उस समय दूसरे सांस में चिड़-चिड़ करता टूटे पत्थर की तरह कमरे के दरवाज़ें में घूमता न सिर्फ साथियों और अपने आप को बेआराम करता होगा बल्कि उसकी ज़ुबान की तेजाब भरी लहर से पड़ोसी भी चिल्लाते होंगे। ज़ुबान का बिना समय अपने मतलब के लिए बदल लेना और झूठ के हथियार से संगीन तलवारों को काला कर देना उसके बाएं हाथ का खेल होगा।

उसका दिमाग़ी ढांचा उसकी लिखाई के अक्षरों के दायरों को मिट्टी में दबे हुए जुगनू की तरह कर देगा, जो उसके साथियों के लिए मंदे धोखे से बरी न होगा।

दिमाग़ में आई हुई बात (यदि अच्छी या बुरी) को पूरा करने के लिए अपनी शक्ति और शारीरिक सिर से पैरों तक खर्च कर देगा बगैर यह सोचे कि मिट्टी का घड़ा कच्चा (बुध) पानी में डालने से पहले पक्का या कच्चा यानि बहुत विचार या समझने की कोशिश के बाद का परिणाम उसे कोई लाभ न देगा या मुंह के दांत तक निकाल लेगा। मंदी हालत की पहली निशानी शराब पीनी शुरू होगी जिस पर झूठ का रंग चढ़ता और आखिर पर दगा फरेब का पैमाना बढ़ता होगा यानि ज़ुबान से सच्चे और अंदर से झूठे होने का लुच्चेपन का ढंग आम होगा।

कोढ़ आम तौर पर एक के बाद दूसरे खानदान में चला जाता है मगर बुध खाना नं० 12 एक ऐसा कोढ़ और खालिस ज़हर होगा जो अचानक पल के पल में सारे शरीर को फाड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर दे।

दम दमे में दम नहीं, अब खैर मांगे जान की। बस समाप्त हो चुकी, र तार सब ग्रहचाल की।।

2. बेवकूफ, नालायक मित्र जो बुरा करते समय किसी का भी अपने समेत खुद भला न सोचे, हर समय पर कोढ़ी।
3. चाहे कोई राजा हो चाहे निर्धन सब की ही रात की नींद अचानक उजाड़ने वाला। लूटे गए के किस्से सुनाने वाला। कारोबार पर मंदा होगा। मर्द के टेवे में बुध खाना नं० 12 शायद ही भला हो लेकिन स्त्री के टेवे में कभी बुरा नहीं गिनते। मगर जब मर्द टेवे में खाना नं० 12 का हो तो टेवे वाली स्त्री चाहे रानी क्यों न हो निर्धन दु:खी से वैसे ही तंग होगी जैसे कि उसका पति जो बुध खाना नं० 12 में दु:खी किया हो। यदि स्त्री का भी बुध खाना नं० 12 का हो तो राजा धनी होते हुए भी गृहस्थी हालत में मंदे होने से रात को कफन में सोते हुए बराबर वक्त पूरा हो। यदि जन्म कुंडली या वर्षफल में केतु उच्च तो सभी ठीक होगा। बुध की ज़हर घुल जाऐगा।
4. शुक्र के 2 भाग बुध और केतु माने गए। बुध खाना नं० 12 में खाना नं० 6 (केतु का) को भी मंदा करेगा। इस तरह बुध, केतु बर्बाद अत: शुक्र भी पागल होगा। अत: संतान न होगी और माता-पिता को भी याद करते रहेंगे।
5. हवाई काम व्यापारी सच्चा मंदे असर वाला होगा।
6. 25 वर्ष की उम्र में शादी औरत व पिता दोनों रोते होंगे, मर्द माया दोनों बर्बाद उम्र का हर तीसरा वर्ष बर्बाद हो।
7. दांत 30 से कम या 32 से अधिक मंदे असर की निशानी हो।
8. मंदे वक्त में बकरी भी दिल फाड़ देगी।
9. शरीर पर बुध की चीज़ें और सिर का ढांचा ज़ुबान, दांत नाड़ियों नाक का अगला हिस्सा खराबी का कारण होगा।
10. राहु का मंदा संबंध जेलखाना, पागलखाना, चोरी और आग़ की घटनाएँ गबन, बेईमानी से धोखा, फरेब, खोटे सिक्के आदि से धन हानि बेइज्जती और फ़िजूल जहमत बर्बाद ही हो।
11. **केतु, दुनियां के तीन कुत्ते (बहन के घर भाई, ससुराल घर जंवाई, ननिहाल घर दोहता) या सांसारिक आम कुत्ता दरवेश आदि की सहायता शुभ।** दूसरे सांसारिक बंधुओं की राय, सलाह नेक नतीजे देगा।, नाक छेदन उत्तम, ज़र्द चीज़ें सोने का साथ शुभ, फौलाद का छल्ला जिसको छोड़ या टांका न लगा हो खालिस फौलाद जिसे जंग न लगने पाए अपने शरीर पर कायम रखना शुभ होगा और जिस कदर ज़्यादा और चमकदार साफ होगा उसी तरह लै प में साफ चिमनी या बिज़ली की लहर के लिए बल्ब का काम देगा और भाग्य की सोई हुई लहर को फौरन जगा देगा और एक शुभ समय कर देगा। मगर याल रहे कि यह छल्ला किसी से मु त न लिया जाए वरना फायदा न होगा। माथे पर तिलक की जगह केसर, ज़र्द (वृहस्पति) का तिलक लगाना भी सहायक होगा, मगर सब स्याह, राख का तिलक पिता पर भारी (बुध खाना नं० 2 का प्रभाव देगा) बुध का खाली बर्तन कोरा घड़ा आदि चलते पानी में बहाना सहायक होगा।
12. माता, मामा दु:खी, माता छोटी आयु में चल दे नहीं तो दोनों दु:खी। -जब सूर्य या मंगल खाना नं० 6 में हो।
13. पिता की उम्र बर्बाद, बल्कि शक्की और उसके पिता की माया दौलत तबाह हो।

-जब वृहस्पति खाना नं० 6 में हो।

14. अपना खून भाई टेवे वाले के लिए मौत के यम और स्वयं बर्बाद होंगे।
-जब मंगल खाना नं० 6 में हो।
15. ससुराल (राहु 6) औलाद (केतु 6) पर जलती हुई रेत की वर्षा, अति दु:खी जीवन, मंदी हालत, विघ्न मौतें होंगी।
-जब राहु या केतु खाना नं० 6 में हो।
16. कम अक्ल जल्दबाज, मंदिर जाते रहना शुभ होगा। -जब खाना नं० 2 खाली हो।
17. अगर जेलखाना नहीं पागलखाना तो ज़रूर नसीब होगा, बेशक कोई कसूर या बीमारी न हो। ऐसी हालत में मंदिर के अंदर जाकर सिर टेकना जहमत का बहाना होगा। -जब राहु खाना नं० 8-12 में हो - हाथ की अंगुलियों के नाखुन बहुत छोटे हों।
18. माता भाग्य रद्दी, आत्महत्या तक की नौबत हो। -जब चन्द्र खाना नं० 6 में हो।
19. शनि की चीज़ें काम कारोबार रिश्तेदार सब मंदे असर देंगे।-जब शनि खाना नं० 6 में हो।
20. बिना बर्तन के पानी तथा स्पंज आदि कायम रखना, रिज़क रोजगार और आमदन के लिए शुभ होगा।
-जब चन्द्र खाना नं० 2 में हो।
21. राहु (ससुराल) के लिए मंदी, मौत दुर्घटना टक्कर आदि साधारण होगा।
-जब राहु खाना नं० 2 में हो।
22. राजदरबार की आमदन के अलावा राजदरबारी संबंध भी खराब तथा मंदा कर दे। -जब सूर्य खाना नं० 6 में हो।
23. यदि चन्द्र खाना नं० 5 और शनि खाना नं० 9 हो तो चन्द्र और शनि सांसारिक संबंध में चलती हुई मोटरगाड़ी गिनने में बुध खाना नं० 12 या बुध, राहु खाना नं० 12 के समय अगर कोई नई मोटरगाड़ी खरीदी जाए और उसका रंग हरा (बुध का रंग) हो तो प्यार से लदी हुई लड़की की सवारी के समय ऐसे प्राणी के स्वयं अपने संबंध (अपने ससुराल संबंध जब बुध के साथ राहु भी हो) मोटर का हादसा होगा। जिसमें प्राणियों की मौत की शर्त न होगी मगर मोटर को उसके अगले हिस्से को पिस कर ज़मीन पर सजदा करना पड़ेगा।

उपाय

प्राणी को अपनी जान की रक्षा के लिए बुध खाना नं० 12 में दिया हुआ उपाय पहले करना सहायता देगा वरना मेंढक की तरह छलांगे लगाकर चलना पड़ेगा, अंग के कटने पर। ज़ुबान का काबू रखना, वायदे को पूरा करना, गुस्से की आग़ से दूर रहना बुध के ज़हर से बचाएगा।

****

शनि

जमाने में बदकार अक्सर जो रहते।

भले लोगों को बुद्धू अहमक है कहते।।

शनि

जमाने में बदकार अक्सर जो रहते।
भले लोगों को बुद्धू अहमक है कहते।।

पाप नैया ना हर दम चलती,
शनि होता न मुसिफ दुनिया,
साथ-साथी या पाप दृष्टि,
लिखत केतु, बुध, राहु जैसी,
पहले घरों दुम केतु होते,
उल्ट मगर जब बैठा टेवे,
सांप शनि दुम केतु गिनते,
जुल्म रवि गो खुफिया होते,
पहाड़ ठंड गुरु कायम धरती[2],
ज़हर फूंक घर शत्रु अपनी,
औरत हामला पहले लड़के,
बच्चे शुक्र न खुद कभी मारे,
रवि दृष्टि शनि पर करता,
शनि, रवि से पहले बैठा,
नज़र शुक्र में जब शनि आता,
दृष्टि शुक्र पर जब कभी करता,

न ही माला ग्रह कुल की।
बेड़ी ग़रक थी सबकी।
पापी शनि खुद होता हो।
फैसला धर्म से करता हो।
इच्छाधारी[1] शनि होता है।
अजदहा खून बनता हो।
मुखड़ा राहु खुद होता हो।
कत्ल शनि दिन करता हो।
वैद्य धन्वतरि घर गुरु हो।
भला जाती[3] न स्वभाव जो।
शनि देखे खुद अंधा हो।
सांप बच्चे[4] दो खाता हो।
बुरा शुक्र का होता हो।
नर ग्रह[5] स्त्री उम्दा हो।
माया दीगर खा जाता हो।
मदद ग्रह सब करता हो।

1. इच्छाधारी से मतलब हर तरह से हर तरह की मदद करने वाला।
2. चतुर।
3. काली चीज़ों (शनि की) पर शनि हमेशा बुरा असर देगा, जब भी कभी मंदा हो खासकर जब शनि ऐस घर हो जहां वो बच्चे मारता हो, जैसे खाना नं० 5 और टेवे में मंगल बद भी हो।
4. शनि खुद सांप मय बनावटी शनि एक ही वक्त दोनों इकट्ठे जब मंगल, बुध मंदा (राहु स्वभाव), वृहस्पति, शुक्र नेक (केतु स्वभाव)।
5. सिवाए सूर्य ।

शनि का स्वभाव

पहले घर में	बीच में	बाद में	प्रभाव होगा
राहु	शनि	केतु	खराब
राहु	केतु	शनि	खराब
राहु, केतु	केतु	शनि	खराब
राहु	केतु	शुक्र, केतु	खराब
राहु, शनि	केतु	केतु	खराब
शनि	राहु	केतु	खराब

1. ये भला-बुरा असर शनि बैठा होने वाले घर (सिवाय खाना नं० 2 और खाना नं० 10) की चीज़ों पर होगा। बाकी सब हालतों में अच्छा असर होगा।

आम हालत 12 घर :-

तीन गुणा घर पहले मंदा 10,
एक गुणा घर छठे में मंदा,
घर चौथे में सांप पानी का,
दूसरे घर में गुरु शरण तो,
9-7 वें घर 12 बैठा,
खाली काग़ज हो घर 10 वें,
घर 11 में लिखे विधाता,
किस्मत का हो हरदम रक्षक,

दो गुणा सदा तीसरे है।
पर मंदा नहीं सदा ही है।
पाँचवें बच्चे खाता है।
आठवें हैड क्वाटर है।
कलम विधाता होता है।
छठे स्याही होता है।
जन्म बच्चे का होता है।
पाप स्याही होता है।

1. शराब खोरी पहली मंदी निशानी होगी, बेईमानी, फ़िजूल सोच-विचार तबाही का कारण होवे। काग़ रेखा का बीज जवानी इश्क होगा। नेकी फरामोश, झूठ का पुतला अपनी जड़ कटवा देगा। मंदी हालत में शनि की चीज़ों (काली रंग की चीज़ें)

से प्यार होगा।

सामान्य हालत :-

1. संन्यास (उदासी और विराग) दुनिया छोड़ दो बाबा यह ज़जाल कुछ नहीं (दूसरी तरफ पकड़ लो सबको कोई कुछ नहीं या ये सब हमारे बैठे हुए क्यों उल्टे चल रहे है शनि के दोनों पहलू होंगे) या मकान जायदाद चालाकी की आँख से धन कमाना यानि 36 वर्ष की उम्र।
2. तमाम संसार के मकानों इंसानों की आँखों की रोशनी और हरेक की नेकी और बदी के आरामों के लिखने वाले एजेन्टो का मालिक शनि देवता जाहिरापीर होगा। नेक हालत पर जब अपने जाती स्वभाव के असूल के अनुसार नेक प्रभाव का हो तो वृ० के घरों (2-5-9-12) में बैठा हुआ कभी बुरा असर न देगा। शनि का एजेन्ट केतु होगा जो उसकी किश्ती का मल्लाह है।
3. बुध (कागज़) के दायरे में राहु, केतु की तरफ से जिस कार्रवाई की लिखत-लिखाई हो शनि उस पर धर्म से ठीक-ठीक फैसला करेगा। नेक प्रभाव के समय शनि मनुष्य जीवन के 10-19-37 साल में उत्तम फल देगा।
4. अगर टेवे में 1-2-3 की गिनती के हिसाब से या दृष्टि के असूल पर पहले घरों में केतु हो और शनि बाद में तो शनि एक इच्छाधारी तारने वाले सांप की तरह मदद करेगा।
5. शनि अगर सांप माना जाये ता उसकी दुम केतु बैठा होने वाले घर में होगी और सिर उसका राहु बैठा होने वाले घर में गिना जाएगा। शनि का सिर राहु दुम केतु है। वृ० कायम हो तो शनि संसार में एक ठंडा हहा-भरा पहाड़ होगा खासकर जब चन्द्र भी ठीक हो, वृ० के घरों 2-5-9-12 में बैठा शनि का असर धन्वतरि वैद्य के असर का होगा।
6. गर्भवती स्त्री अकेले या घर में अकेले ही लड़के के सामने शनि का सांप खुद अंधा होगा और डंक नहीं मार सकता।
7. शुक्र पहले घरों में और शनि को देखता हो तो शनि के कीड़ों की तरह दूसरे साथी करीबी संबंधी मकान तथा शनि के सामान उसका धन खाते जाये।
8. छोटे बच्चों को अकेला सांप कभी ज़हर न देगा लेकिन अगर टेवे में 2 सांप वृ०, शु० बनावटी शनि (केतु स्वभाव अच्छा सांप) और मंगल, बुध एक साथ बनावटी शनि (राहु स्वभाव मंदा सांप) इकट्ठे हो तो बच्चों को भी डंक मार देंगे, खासकर जब शनि ऐसे घरों में बैठा हो जहां कि वह बच्चे खाता हो खाना नं० 5 या मंगल, बुध एक साथ राहु स्वभाव मंदा सांप होगा।
9. मंदी हालत के समय स्वभाव में अच्छा और बाहर दोनों ओर से काला हो चुका हुआ मौत का फंदा फैलाये दिन दहाड़े सबके सामने सारे बाज़ार कत्ल करने की तरह मंदा ज़माना खड़ा कर देगा। फकीर को भिक्षा देने की बजाय उल्टा उसकी झोली से माल निकाल ले लेगा। सबके धन की चोरी करता फिरता फिर भी निर्धन ही होगा। हरेक के आगे सवाली पर फिर उसी पर चोट मार देना ही असूल होगा। गंदा इश्क जनमुरीदी आम असूल या ढंग होगा। अंत में आग़ की मंदी घटनाएं और मौत तक मंदी मौत होगी। मंदी हालत में शनि का एजेन्ट राहु होगा जो विष का भंडारी है।
10. शनि जब कभी मंदा हो काली चीज़ों (शनि की) पर हमेशा बुरा असर करेगा। साथ-साथी या दृष्टि के द्वारा राहु, केतु किसी न किसी तरह भी शनि से आ मिलते हैं तो शनि पापी ग्रह कहलाएगा जिसकी नीयत उसके स्वयं स्वभाव के असूल से जाहिर होगी। मंदी हालत में शनि जन्म कुंडली में मंदे घरों का शनि जब दोबारा मंदे घरों में आ जाये तो इंसानी आयु के 9-18-27-36 साल ज़हरीली घटनाओं या भारी हानि से भरे होंगे। चन्द्र, राहु इकट्ठे या अकेले-अकेले जब खाना नं० 12 में हो तो शनि सदा मंदे प्रभाव का होगा चाहे टेवे में कैसा ही हो।
11. दो या ज़्यादा नर ग्रहों सूर्य, मंगल, वृहस्पति के साथ से शनि काबू हो जाता है और ज़हर नहीं उगल सकता, जिस कदर मुकाबले पर दुश्मन ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल का साथ बढ़ता जाये शनि और भी मंदा हो जाता है। शनि की चीज़ों का दान खैरात की भाँति जनता को देते जाता मुबारक होगा। जैसे बादाम तकसीम करना, लोहे का सामान अंगीठी, चिमटा, तवा आदि गरीबों या साधुओं को देना, मदद देगा। 100 मज़दूरों को एक ही समय पर भरपेट खाना खिलाना भी ऐसी मदद देगा। मंदी हालत में अमूमन शनि बैठा होने वाले घर के दोनों तरफ ही दाएँ-बाएँ राहु, केतु बैठा होने के वक्त उनका भी मंदा प्रभाव होगा।

शनि बैठा हो	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
राहु या केतु हो	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
का मंदा असर हो	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1

12. स्त्री ग्रहों के साथ या संबंध हो जाने पर शनि खाना नं० 1-7-4-10 में अपने एजेन्ट राहु, केतु का बुरा असर देगा क्योंकि राहु, केतु को शनि की बुनियाद गिना जाता है। यही असूल शनि के साथ स्त्री ग्रह होने पर हर घर में हो सकता है अगर मुकाबले पर स्त्री ग्रहों के साथ उसके दुश्मन ग्रह बैठे हो तो शनि ऐसी हालत में स्त्री ग्रहों को तो कुछ न कहेगा मगर शत्रु ग्रहों को जड़ से मार देगा। ऐसी हालत में शनि गर्भवती स्त्री के सामने अंधा सांप होगा जो कभी हमला न करेगा। जब स्वयं के स्वभाव यानि राहु, केतु शनि से पहले या बाद के घरों में होने के असूल पर शनि मंदा हो तो अपने शत्रु ग्रहों के घरों में बैठा हुआ उनको अपनी ज़हर से जला देगा।

खाना नं० 1	में बैठा हुआ सूर्य, मंगल को ज़हर देगा।
खाना नं० 3	में बैठा हुआ मंगल, को ज़हर देगा।
खाना नं० 4	में बैठा हुआ चन्द्र, को ज़हर देगा।
खाना नं० 5	में बैठा हुआ सूर्य, को ज़हर देगा।
खाना नं० 8	में बैठा हुआ मंगल, को ज़हर देगा।

जब टेवे में पहले घरों में राहु हो और खूनी अजगर शनि बाद में हो तो शनि खूनी अजगर मंदा होगा। पाप (राहु, केत) टोला का पापी राहु, केतु, शनि तीनों एक साथ ग्रहों का सरदार होने की वज़ह से यह ग्रह बदनाम ज़रूर है मगर अपने आप कभी पाप न करेगा।

13. अगर सूर्य गुप्त ज़ुल्म करे तो शनि दिन दहाड़े सबके सामने कत्ल करवा देगा।
14. वृ० के घरों में बैठा शनि कभी बुरा फल न देगा। मगर वृ० खुद शनि के घर खाना नं० 10 में नीच फल का होगा। मंगल अकेला शनि के घर खाना नं० 10 में बैठा हुआ राजा होगा। मगर मंगल के घर खाना नं० 3 में बैठा शनि नकद माया से दूर कंगाल करेगा। सूर्य के घर खाना नं० 5 में बैठा शनि बच्चा खाने वाला सांप होगा मगर शनि के घर खाना नं० 11 में सूर्य सबसे उत्तम धर्मी होगा। चन्द्र के घर खाना नं० 4 पानी में डूबा सांप अधरंग से मारे हुए को भी ठीक कर देगा। मगर शनि के हैड क्वार्टर खाना नं० 8 में जो मंगल की मौतों का घर है चन्द्र नीच होगा। शुक्र ने शनि से आंख उधार ली है अत: ये शुक्र के घर खाना नं० 7 में उच्च होगा। राहु बदी का एजेन्ट है मगर राहु के घर खाना नं० 12 में शनि हरेक का भला करने वाला होगा। केतु नेकी का फरिश्ता मगर केतु के घर खाना नं० 6 में शनि चाहे मंदे लड़के और खोटे पैसे की तरह कभी न कभी काम आ ही जाने वाला होगा, प्राय: भयानक और अशुभ ज़हरीला सांप होगा।
15. राहु अगर शनि का सिर यानि राहु पर एतबार या राहु सांप की मणि हो तो केतु उसकी दुम या केतु पर भरोसा या कान, पांव और केतु का विषय उसकी रुह होगा यानि अपनी माता, भैंस शनि के विषय के वक्त उसका नर शनि पहचान लेगा, शनि देखे राहु को तो हसद से तबाह हो। राहु उल्ट चल रहा होगा मंदा प्रभाव देगा। राहु देखे शनि को यानि राहु का नीला थोथा जब शनि के लोहे पर लगे तो हमेशा ही तांबा सूर्य बन जायेगा।
16. शनि की आँखे, शनि टेवे के हर ग्रह को नीचे लिखी किस्म की आँखों से देखेगा।

खाना नं० 1 -	इस खाने में शनि हो तो एक आंख से खाना नं० 7 में बैठे ग्रह या उसके संबंधित संबंधी को देखे।
खाना नं० 2 -	इस खाने में शनि हो तो 2 आंख से खाना नं० 8-12 के ग्रह या उसके संबंधित संबंधी को देखे।
खाना नं० 3 -	इस खाने में शनि हो तो 3 आंख से खाना नं० 5-9-11 के ग्रह या उसके संबंधित संबंधी को देखे।
खाना नं० 4 -	इस खाने में शनि हो तो 4 आंख से खाना नं० 2-8-10-11 के ग्रह या उसके संबंधित संबंधी को देखे

खाना नं० 5 – या केतु	इस खाने में शनि हो तो शनि अंधा सांप होगा जब खाना नं० 10 खाली हो। लेकिन खाना नं० 10 में वृ० हो तो नर औलाद पर औलाद होगी जीवित रहेगी।
खाना नं० 6 –	इस खाने में शनि हो तो शनि रात का अंधा सांप होगा जब खाना नं० 2 खाली हो।
खाना नं० 7 –	इस खाने में शनि हो तो हवा की आंखों में मिट्टी डालने की शक्ति का स्वामी होगा जब शनि कायम या जागता हो।
खाना नं० 8 –	इस खाने में शनि हो तो शनि मौत भरी दुष्टता की आंख होगा जब खाना नं० 3 में पापी या खाना नं० 3 खाली हो।
खाना नं० 9 –	इस खाने में शनि हो तो शनि जले हुए को हरा-भरा करने का स्वामी होगा जब खाना नं० 2 में शनि के दोस्त हो।
खाना नं० 10 –	इस खाने में शनि हो तो शनि चारों तरफ देखने वाली आंख से खाना नं० 2-3-4-5के ग्रह के संबंधी को देखता होगा।
खाना नं० 11 –	इस खाने में शनि हो तो शनि बेगुनाह और मासूम बच्चे की आंख का स्वामी होगा जब खाना नं० 3 में पाप या खाना नं० 1 में शनि के मित्र ग्रह हो।
खाना नं० 12 –	इस खाने में शनि हो तो शनि बीमार को स्वास्थ्य, दुखिया को सुखी, उजड़े को आबाद करने वाली आंख का मालिक होगा जब खाना नं० 2 में शनि के मित्र ग्रह या शुक्र, मंगल कायम हो।

शनि की अदालत :-

1. राहु अगर अपराधी का चालान पेश करने का शहादती (Prosecution-Witness) तो केतु उसको बचाने के लिए सहायक वकील (Defence Council) होगा। दोनों के बीच बात का धर्मीया फैसला करने के लिए शनि हाकिम समय की कचहरी का सबसे बड़ा जज़ होगा।
2. पापी ग्रहों (राहु, केतु, शनि) ने ही संसार पापी गुनाहगारों को सीधे रास्ते पर लाने और गृहस्थी संयम को कायम रखने के लिए अपने ही पंचायत ठहरा रखी है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए वृ० ने (जो सबका गुरु है)। शनि के खाना नं० 11 (कु भ राशि) में अपनी धर्म अदालत स्थापित की है जहां कि शनि अपनी माता के दूध को याद करके (कसम खाकर वृ० का हलफ (धर्म और धार्मिक) वायदा उठाने के बाद राहु या केतु की शहादत के मुताबिक फैसला करता है।

क्याफा

अंगुली की पोरियों पर गेहूं, जौ का निशान हो तो कुल निशानों से 12 घटाएं शेष बचे उसी सं या वाले घर में शनि का दिया फल होगा मसलन कुल निशान यदि 17 हो 17-12 =5 यानि अब शनि खाना नं० 5 में है और उसी तरह फल देगा, सूर्य का सितारा शनि के बुर्ज पर या सू० के बुर्ज पर शनि की ओर हो या शनि से रेखा सूर्य बुर्ज पर चली जाये।

शनि खाना नं० 1

(जब मंदा हो तो 3 गुणा मंदा वरना तीनों काल उत्तम बचपन, जवानी, बुढ़ापा)

मरे जन्म पर जो खजानेदवामी (पुराने)।
फरिश्ता अज़ल बोल देगी नीलामी[1] ॥

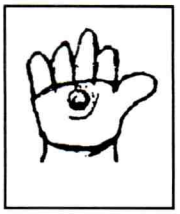

शनि, शुक्र घर पहले बैठे,
मालिक चाहे हो तख्त हज़ारी,
घर सातवां दस खाली[3] होते,
माल माया सब दुनिया बढ़ते,
काग़ रेखा फल काम जद्दी का,
सामान शनि उत्तम होगा,
पाप मंदे शनि होगा मंदा,
मर्द माया फल काग़ रेखा का,
शराब खोरी या इश्क जवानी,
पापी उम्र तक राज फकीरी,
असर शनि हो तेल मिट्टी का,
जद्दी दौलत ज़र एकदम उड़ता,
सात रवि 10-11बैठा,
शनि, में दो हरदम मंदा,
बुध टेवे घर 7वें आया,
माता-पिता घर लाखों माया,

काग़ रेखा[2] कहलाती है।
मिट्टी कर दिखलाती है।
मच्छ रेखा[4] बन जाती है।
उम्र सुखी कर जाती है।
भाग चन्द्र भी उड़ता हो।
मदद रवि जब पाता हो।
मंदा असर घर तीसरा हो।
उम्र मगर खुद लम्बी हो।
मकान शनि जब बनता हो।
वैद्य बीमारी मिलता दो।
आग़ चौथे पर बैठी जो।
जलती मिट्टी सब पापी हो।
शुक्र भला न होता हो।
खबीस बकारब रोता हो।
असर केतु 7 देता हो।
भला चन्द्र जब होता हो।

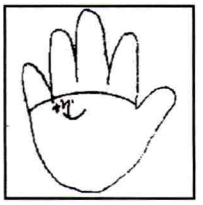

1. मां-बाप तो बेटे की खुशी के बाजे बजाने में लगे हों मगर अज़ल का फरिश्ता उन सब चीज़ों की, जो कुछ भी पैदा होने के दिन घर में मौजूद हों, नीलामी की लिस्ट बनाता होगा या जन्म दिन का सब धन सामान व शनि उजड़ कर ही खत्म या नीलाम हो।
2. जब बुध मंदा तालीम अधूरी निशानी होगी।
3. जब राहु या केतु हो खाना नं० 4 या 10 या जब बुध या (शुक्र हो खाना नं० 7 में/शनि हो खाना नं० 7 में) व (जब शनि खाना नं० 1 में/शुक्र खाना 1 में हो) तो दोनों घर खाली गिने जाएंगे।
4. साथ ही मंगल भी खाना नं० 6 से 12 में हो तो मच्छ रेखा होगी, सिर्फ धन-दौलत बढ़ेगा घर के सदस्य और उनकी जाती कमाई की बरकत की कोई शर्त न होगी। मच्छ रेखा के समय शनि खुराक रिज़क व भगवान् की तरह पालने की हि मत का स्वामी होगा। शुक्र (लक्ष्मी) साथ लाए खज़ाने का दाता होगा वरना खाना नं० 7 खाली होते हुए भी काग़ रेखा होगी। उपाय वास्ते माली हालत सूर्य की मदद या बंदर पालना, उपाय वास्ते सेहत मीटे वाले दूध से बढ़ की जड़ की मिट्टी का तिलक लगाना, उपाय वास्ते कारोबार काला सुरमा तह ज़मीन में दबाना।

हस्त रेखा

सूर्य पर्वत पर शनि या + का निशान हो ।

नेक हालत

1. शनि अब एक आंख का मालिक होगा। अगर दयालु हुआ तो धनी बना देगा। अगर उल्ट हुआ तो पेट के लिए रोटी तक खत्म करा देगा।
2. शनि/शुक्र खाना नं० 1 में बैठा होने के समय रिज़क और माया दौलत पर असर करता है। चाहे मच्छ रेखा का उत्तम प्रभाव हो, चाहे काग़ रेखा की हालत में कौवे के खुराक की बदनसीबी गले लगे।
3. नेक हालत में शनि से संबंधित सामान का फल उत्तम होगा।
4. अब बुध अपने असर की बजाय केतु खाना नं० 7 का असर देगा, अब बहन या लड़की की जगह लड़का पैदा होगा, माता-पिता के घर माया लाखों में होगी खासकर जब चन्द्र उत्तम हो। पापी ग्रहों राहु, केतु, शनि की उउ तक।

-जब बुध खाना नं० 7 में हो।

5. शनि अब मंगल की खाना 6 से 12 होने वाली शर्त पर माली मच्छ रेखा का असर देगा। लेकिन अगर मंगल नेक न हो या 6 से 12 की हदबन्दी से बाहर हो तो भी शनि ज़रूरी नहीं कि काग़ रेखा का ही असर दे। लेकिन मच्छ रेखा माली का प्रभाव भी तो सिर्फ उस वक्त देगा जब उसके एजेन्ट राहु, केतु दोनों आ मिले यानि या तो वो दोनों राहु, केतु खुद अपनी मुश्तरका मिलने की मियाद यानि 45 साल की उम्र की हदबन्दी में आ जाए या उन दोनों में से कोई शनि को दृष्टि द्वारा आ मिले या शनि पापी ग्रह की तरह हो बैठे अर्थात् शनि का ही पापी बन कर चलना पाप की हदबन्दी में चाहे बेईमानी या ईमानदारी के जिस तरह ाी हो सके धर्म की हालत में नेक प्रभाव देगा क्योंकि बेईमान या पापी का धर्म माया को इकट्ठा करना ही हुआ करता है। -जब राहु, केतु खाना नं० 4-10 में हो।

मंदी हालत

1. शरीर पर हद से ज़्यादा बाल हो तो निर्धन होने की निशानी होगी। माता-पिता जन्म वक्त खुशी के बाजे बजवायें मगर वो अज़ल फरिश्ता 18 साल की आयु तक उनका सब कुछ बिकवा देगा। शराब खोरी या इश्क जवानी बहाना होंगे या शनि का मकान या ऐसा मकान जिसका पश्चिम को दरवाज़ा हो जब बने शनि मंदा प्रभाव दे, बल्कि 36-42-45-48 उम्र तक राज फकीरी, वैद्य बीमारी इकट्ठे ही चलते होंगे। साधारणतया: मच्छ रेखा बनाये काग़ रेखा उड़ाये। क्या कुछ जवाब देगा। सब कुछ कब तक जवाब होगा। शनि की मियाद तक शनि की काग़ रेखा का पूरा मंदा फल होगा। या यूं कहे कि शनि अब 36 से 39 और कई बार राहु, केतु की आखिरी मियाद राहु 42, केतु 48 दोनों एक साथ 45 साल की उम्र तक मकान जायदाद धन राजदरबार सब तरफ मंदा ही फल देगा।
2. पाप टेवे में ही जब मंदी काग़ रेखा बन जाती है। मालिक चाहे हो त त हज़ारी, मिट्टी कर दिखलाती है।
3. विद्या तो विशेषकर अधूरी होगी।
4. ज़मीन में सुरमा दबाना, बढ़के वृक्ष की जड़ के दूध से तिलक लगाना विद्या, बीमारी में दु:ख में सहायक होंगे। धन की मंदी हालत में सूर्य की मदद सहायक होगी।
5. शनि अब 3 गुणा मंदा होगा, विद्या स्त्री धन और स्त्री की मंदी हालत बल्कि वह दुखिया ही होगी। चन्द्र भाग भी मंदा होगा। -जब राहु, केतु मंदे हो या खाना नं० 7 में कोई ग्रह हो।
6. जद्दी कारोबार से मर्द और माया पर काग़ रेखा का फल होगा। जन्म लेते ही नीलामी का ढ़ोल बजने लगे, बेशक 9 ही ग्रहों का प्रभाव ज़हरीला पैदा हो मगर टेवे वाले की अपनी उम्र ज़रूरी ल बी होगी। - जब बुध मंदा हो।
7. शनि अगर मिट्टी के तेल का असर दे तो ऐसी ग्रहचाल के समय खाना नं० 4 में बैठे हुए शत्रु ग्रह की चीज़ें कारोबार या रिश्तेदार इससे संबंधित बुरा प्रभाव देंगे। पिता की हालत मंदी होगी। जद्दी धन-दौलत उड़ती और शनि, राहु, केतु तीनों का ही फल मंदा होगा स्वयं चोर फरेबी (चूल्हे की तरह) हो सकता है। -जब खाना नं० 4 में शनि के शत्रु सूर्य, चन्द्र, मंगल या शुक्र के दुश्मन सूर्य, चन्द्र, राहु कोई भी ग्रह साथी सिवाय सूर्य, वृहस्पति।
8. राजदरबार का फल शक्की बल्कि मंदा ही होगा। -जब सूर्य खाना नं० 7 में हो।
9. शुक्र का फल भला न होगा बल्कि मंगल का प्रभाव भी मंदा और स्वयं अपने भाग्य की मंद भाग्यता और खबीस वाअकारब सब दुखिया होंगे। -जब खाना नं० 10-11 में सूर्य हो।
10. चोर, फरेबी, बेईमान, झगड़ालू, धोखेबाज़। संतान का दु:ख, आय खराब, आंखों में नुक्स आदि। -जब मंगल बद हो।

शनि खाना नं० 2
(गुरु शरण)

पांव नंगे मंदिर, जो तू भूल कहता।
जहर बाकी कोई, बला का न रहता।।

सास-ससुर घर आग़ हो जलती,
भली जगह जब माता चन्द्र बैठी,
नेक बुरा चाहे कोई बैठे,
हसब हैसियत जीवन गुज़रे,
गुरु मालिक 10 लहर जो मुल्की,
बुरी शोहरत और खबीस पसंदी,
वैर शनि खुद पाप से करता,
जुआ-जुआरी 12 रवि का,
सात रखी हो धन की थैली,
घर 12 से सुख गृहस्थी,
शादी लग्न जब होता हो।
पिता गुरु चल जाता हो।
8-9 वें 10-12 जो।
जीवित जब तक रहता हो।
अमीर हासिद रवि 1 का हो।
11 गुरु जब बैठा हो।
राहु टेवे आठ बैठा जो।
वहम दिमाग़ी भरता हो।
मर्द 6 वें जा बोलता हो।
चीज़ें शनि घर दूसरा 1 हो।

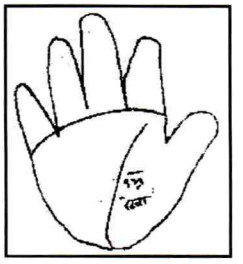

1. खाना नं० 2 का शनि सिर्फ शनि की ही चीज़ों पर असर देगा।

<u>हस्त रेखा :-</u> **उम्र रेखा वृ० के पर्वत से शुरू हो।**

<u>नेक हालत</u>

1. शनि का शनि की संबंधित चीज़ों पर प्रभाव का फैसला खाना नं० 8 के ग्रहों का शनि खाना नं० 2 से ताल्लुक की अच्छी-बुरी हालत पर होगा। दिमाग़ी खाना नं० 7 शुक्र से मुश्तरका ज़िंदगी बढ़ने की इच्छा तरक्की से मुराद है उम्र ल बी से नहीं। बात को मुंह की हवा से ही ताड़ लेगा। शरीर पर मूसाम से 3-3 बाल पैदा हो तो परमात्मा को मानने वाला पूजा पाठी भक्त मनुष्य होगा।
2. तिलक की जगह तेल लगाना अशुभ होगा। मगर दूध या दही के तिलक लगाने से शनि या वृहस्पति हर दो का उत्तम और मुबारक फल होगा। भूरी भैंस मुबारक होगी।

धन की थैली सातवें हो, मर्द की तादाद बोलते 6 वें है।
घर आठवें से उम्र मिले तो, बने महल घर दूसरे है।

3. अच्छी सेहत का स्वामी मगर धर्म स्थान में कम ही जाने वाला होगा। देखने को बुद्धू मगर गिनती में मन्त्री होगा जो खुद सुखी रहम दिल न्यायप्रिय होगा। निर्धन कभी न होगा। किसी को दु:ख न देगा बल्कि गुरु की शरण या ध्यान रखने वाला जद्दी ज़मीनों का मालिक ज़रूर होगा।
4. जब तक ज़िंदा रहे अपने खुद मु तारी और न बरदारी या खुद काम करने के दिन से स्वयं कारोबार करते रहने के समय तक उत्तम हालत, आई चलाई बराबर का मालिक होगा।
5. संन्यास उदासी वियोग एक ओर रहने की शक्ति का स्वामी होगा। -जब शनि खाना नं० 2 में कायम हो।

<u>क्याफा</u> **मध्यमा सीधी हो।**

6. हद दर्जे की उदासी का मालिक होगा। -जब खाना नं० 8-9-10-12 में कोई न कोई ग्रह ज़रूर हो।
7. सुख और उम्र ल बी, मगर पिता वृ० अमूमन बर्बाद ही लेंगे।-यदि चन्द्र उत्तम हो।
8. अक्ल की बारीकी और खुदाई पहुँच दर्जा कमाल होगी। -जब वृ० खाना नं० 4 में हो।

<u>क्याफा</u> **हाथ की तमाम अंगुलियों का झुकाव मध्यमा की ओर हो।**

9. शनि का जाती बुरा या भला असर सिर्फ शनि की चीज़ों पर होगा जो खाना नं० 8 से खाना नं० 2 के संबंध से जाहिर हो जाएगा।
10. मकान जैसा और जब बने बनने दे, शुभ फल देगा।
11. शनि खाना नं० 2 में, केतु खाना नं० 8 में हो तो बच्चों के विचारों के स्वभाव का स्वामी होगा।
-जब मध्यमा अंगुली का सिरा नोकदार हो।
12. शनि खाना नं० 2 में, केतु खाना नं० 9 में हो तो जल्दी समझने वाला होगा। -जब मध्यमा अंगुली ल बी हो।

13. शनि खाना नं० 2 में, मंगल खाना नं० 8 में हो तो धनवान होगा। –जब मध्यमा अंगुली का सिरा चौकोर हो।
14. शनि खाना नं० 2 में, बुध खाना नं० 8 में हो तो बुद्धिमान होगा। –जब मध्यमा अंगुली का सिरा गोल हो।
15. मुल्की लहर का मालिक, पादरी, धर्म-कर्म वाला सोच कर कम खर्चने वाला। –जब वृ० खाना नं० 10 में।

क्याफा **तर्जनी मध्यमा से बड़ी हो।**

16. तबीयत का गुलाम, इरादे का कच्चा, मुर्दा दिल साधु के विचार हर जगह टूटे हौंसले का स्वामी होगा। –जब वृ० खाना नं० 11 में हो।
17. मध्यम सी हालत में मंदी शोहरत को पसंद करने वाला होगा। –जब सूर्य खाना नं० 12 में हो।
18. चाहे बुध खाना नं० 12 का कभी भला नहीं होगा (सिवाय शनि और वृहस्पति की मदद के) लेकिन अगर बुध की मियाद के अंदर 34 वर्ष की उम्र तक टेवे वाले के कोई लड़की पैदा हो और वो लड़की अपने ससुराल को दे दे तो वो लड़की ससुराल के लिए अमृत कुंड बन जाएगी। जब तक वह लड़की अपने मां-बाप टेवे वाले प्राणी की कमाई से परवरिश पालना या गुजर शुरू न करे। वरना टेवे वाले और ससुराल दोनों के लिए ही मंदी बीन बाजा का राग शुरू होगा। –जब बुध खाना नं० 12 में हो।

मंदी हालत

1. शनि अगर जाती स्वभाव के असूल पर मंदा साबित हो तो शादी बल्कि सगाई के दिन से ही ससुराल के घर राख उड़ने लगे। टेवे वाला जिस कदर शनि की चीज़ें मकान, मशीन, मोटर गाड़ियां आदि कायम करता चला जाएगा उसी तरह ससुराल की ये चीज़ें बिकती चली जाएंगी या खराब होती जाएंगी।
2. नंगे पांव मंदिर जाकर भूल मान लेना बला के असर से बचाए।
3. सांप का बजरिया चन्द्र (दूध पिलाना आदि) के उपाय से ससुराल की हालत उत्तम होगी। काली या दोरंगी भैंस मनहूस फल देगी।
4. इस घर में दो आंख का मालिक शनि अगर मंदा हो तो राहु (ससुराल) की जड़ मार देगा जिससे टेवे वाले के लिए सिर दर्दी बुध की शरारतें खड़ी हो जाएंगी, मगर अब वृ० भला फल देगा। शादी के लग्न के वक्त ही से कुड़माई आदि ससुराल घर में वीरान करने वाली आग जलनी शुरू होगी और उनकी गरीबी दिन व दिन बढ़ती होगी। ससुराल की जड़ में आक मदार या ससुराल का घर चील कौओं के बैठने की जगह बर्बाद होगा। पापी ग्रह खुद आपस में एक-दूसरे का बुरा करने-कराने टेवे वाले के लिए खराबी दर खराबी खड़ी करते जाएंगे। राहु खाना नं० 8 के वक्त ससुराल घर में पुरुषों की कमी और राहु खाना नं० 12 के समय ससुराल घर में दौलत की कमी होगी। –जब राहु खाना नं० 8-12 में खुद शनि, राहु, केतु के खिलाफ चलता होगा।
5. बुरी शोहरत और खुद पसंदी का मालिक होगा। –जब वृ० खाना नं० 11 में हो।
6. मशहूर जुआरी या दिमाग़ी वहम का मालिक, आय खर्च बराबर। – जब सूर्य खाना नं० 12 में हो।
7. 28 से 39 साल की उम्र तक हमेशा बीमारी गले लगी रहेगी। –जब मंगल मंदा हो।

स्वभाव	ग्रह स्थिति	क्याफा
वहमी होगा	राहु खाना नं० 8	हाथ की अंगुलियों के सिरे चौड़े होंगे
जुदाई पसन्द होगा	राहु खाना नं० 9	हाथ की अंगुलियों बहुत ल बी हो।
मुर्दा विचार का होगा	मंगल खाना नं० 9	हाथ की अंगुलियां बहुत ही ल बी हो।
बेबुनियाद विचार का स्वामी	वृहस्पति खाना नं० 8	हाथ की अंगुलियां बहुत छोटी हो।
हद से ज्यादा उदासी, जुदाई पसन्द होगा	सूर्य, बुध वृ0 खाना नं० 8	तमाम अंगुलियां मध्यमा की तरफ झुकी हो।
बुरी शोहरत पसन्द मध्यम सी हालत के स्वभाव का प्राणी	सूर्य खाना नं० 8	अनामिका मध्यमा की तरफ झुक जाए।

शनि खाना 3
(अगर हुआ तो तो दो गुणा मंदा होगा)

मिले राजा दो शेर, बकरी कहेंगे।
मगर मर्द माया जुदा ही रहेंगे॥

मदद केतु से खुद शनि बढ़ता,
वैद्य धन्वतरि नज़र का होता,
दरवाज़ा[2] दक्षिण या पूर्व मंदा,
साथ[1] मकान जब पत्थर गड़ता,
केतु बैठा 10 कायम साथी,
बिगड़ा मंगल बद हो जब ज़हरी,
5 रवि से केतु मंदा,
नज़र दवाई मुफ्त जो देता,
चन्द्र टेवे घर 10 वें बैठा,
मौत कुआँ खुद अपना होगा,
वरना केतु खुद काटता हो।
काम शनि सब उम्दा हो।
या लकड़ी शगुन न उम्दा हो।
मौतें ज़हर शनि देता हो।
माया दौलत सब बढ़ता हो।
गैर मदद उसे करता हो।
उम्दा शनि न होता हो।
आँख कायम खुद रहता हो।
सांप शनि जड़ कटती हो।
उर्ध रेखा माया मंदी हो।

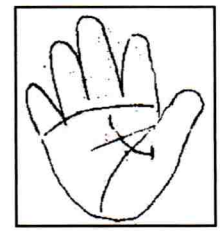

1. बड़े दरवाज़े के सामने दाखिले पर मगर मकान से बाहर।
2. बाल-बच्चों के सहित रिहायशी मकान का दरवाज़ा।

<u>हस्त रेखा :-</u>शनि से रेखा उम्र रेखा को काट कर मंगल नेक में या गृहस्थ रेखा शनि के बुर्ज पर हो।

<u>नेक हालत</u>

1. तीन आँख का मालिक फरिश्ता अज़ल पुरुष और धन दोनों इकट्ठे कम ही होंगे, मगर उम्र की रक्षा ज़रूर होती रहेगी, जब तक ज़ुबान के चस्के लिए शराबी, कवाबी न हो।
2. मकान बनाने वाले राज मज़दूर मिस्त्री को रुपयों की थैली की क्या ज़रूरत उसे तो ईंट, पत्थर हर वक्त मौजूद चाहिए। इसी तरह से शनि का हर वक्त मकानों का प्रभाव उत्तम होगा खासकर जब कुत्ता रखे, दुनिया के तीन कुत्तों की सेवा करें। मकान बनेंगे, धन बढ़ेगें, आँखों का बड़ा उत्तम हकीम होगा। शनि से संबंधित काम तथा रिश्तेदार उत्तम फल देंगे।
   -जब केतु की मदद या केतु खाना नं० 3-10 में हो।
3. गैर व्यक्ति भी मदद पर होंगे लोगों के काम बिगाड़ता मगर खुद आराम पाता हो।
   -जब मंगल बद या मंदा ज़हरी हो।
4. अगर कुत्ता न रखें तो कुत्ता (मंदा केतु) काटता ही होगा, शनि बर्बाद करेगा। जिस्म से चार-चार बाल पैदा हो तो गरीब, मंद बुद्धि, अय्याश होगा। अपने भाई बन्धु खराबी का कारण होंगे। माली हालत नकदी में मंदा ही होगा। अगर मंदा हो तो तीन आँख के मालिक फरिश्ता-ऐ-अज़ल की तरह दो गुणा मंदा होगा (सिर्फ धन की हालत में) मगर राशिफल का (उपाय योग्य) केतु का उपाय सहायक अगर केतु खाना नं० 10 या 3 हो तो किसी उपाय की ज़रूरत नहीं।
5. नज़र की दवाई दूसरों को मु त देते रहने से अपनी नज़र में बरकत होगी।

<u>मंदी हालत</u>

1. पूर्व खाना नं० १-५ या दक्षिण खाना नं० ३ के दरवाजा (सूर्य) का साथ हानिकारक होगा, दक्षिण के दरवाजे के साथ पत्थर गड़ा होने के वक्त या जब कभी भी होने लगे ४० दिन अंदर-अंदर एक के बाद दूसरी ३ मौतें हुआ करेगी।
2. मकान के आखिर पर अंधेरी कोठरी धन के लिए शुभ होगी।
3. केतु नर संतान और खुद शनि का प्रभाव मंदा होगा। -जब सूर्य खाना नं० 1-3-5 में हो।
4. शनि मंदा जड़ से काटता होगा। ऐसी हालत में अपने ही घर का कुआँ मृत्यु देगा और धन बर्बाद होता होगा। उर्ध रेखा का फल, बेशक चोर, डाकू मगर फिर भी मंदे हाल। -जब चन्द्र खाना नं० 10 में हो।
5. चोरी धन हानि और दूसरी ऐसी खराबी आम हों। -जब शत्रु साथी हो।

शनि खाना नं० 4
(पानी का सांप)

खुश्क ज़हर से मरने वाला मरेगा।
घुली वो जब पानी न कोई बचेगा।।

3 चन्द्र दो पितृ रेखा,
साथ-साथी जब चन्द्र बैठा,
10 वें चन्द्र से दुखिया माता,
सेहत जिस्म हो जब कभी मंदा,
मकान नया खुद अपने बनते,
ज़हर मगर जा मामू पकड़े,
रात पिया दूध ज़हरी होगा,
तेल बेचे जब सापं का दुनिया,

उर्ध रेखा गुरु तीसरा जो।
ज़हर शुक्र दूध मंदा हो।
उल्टी ज़हर खड़ी करता हो।
सांप सफा खुद देता हो।
सांप माता सिर चढ़ता हो।
पेशा हकीमी उत्तम हो।
ज़हर दवा खुद बनती हो।
संतान मरे निःसंतानता हो।

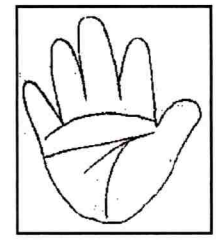

हस्त रेखा :- **उम्र रेखा और दिल रेखा मिल जाए।**

नेक हालत

1. ऐसे आदमी में दिमाग़ी खाना नं० 4 मुहब्बत के तमाम भाग उल्फत माता-पिता का प्यार, इश्क जवानी में औरत का प्यार, इश्क के बाद गलवा यानि दूर रहना वियोग मौजूद होंगे।
2. हकीम साहिब, चार आँख का मालिक शनि अब टेवे वाले पर कभी मंदा प्रभाव न देगा। अगर अधरंग आदि से नकारा होकर पृथ्वी पर गिर जाए तो सांप उसे खुद आकर डंक मार कर उसका अधरंग हटा कर स्वास्थ्य वाला बल्कि मुर्दे से भी ज़िंदा कर देगा। सिर्फ शनि की संबंधित चीज़ों से सेहत में शफा होगी। बल्कि बहुत गिरी हुई हालत और गरीबी बगैरा के वक्त शनि के काम या संबंधी शनि के सहायक होंगे। शनि की चीज़ें या हकीमी पेशा, अगर मंगल खाना नं० 5 वाले के खानदान में पिता, दादा, ताया, चाचा ज़रूर हकीम या डॉक्टर होंगे तो शनि खाना नं० 4 वाला भी खुद रिज़क के संबंध में हकीमी डॉक्टरी संबंधित से दूर नहीं रह सकता और ज़हरीले जानवरों के काटे का इलाज मुबारक और ज़हर खुद अपनी दवाई का काम देगी। लेकिन सांप का तेल बेचने से नि:संतान होने का सबूत ही मिलेगा चाहे औलाद के योग लाख उत्तम हो। इसी तरह अगर शराब पीना, सांपों के मरवाने या रात के वक्त नए मकानों की बुनियादें रखने से शनि नकारा कर लिया होगा और इस कारण अपनी ही छत से गिरा हुआ पत्थर अगर सिर नहीं तो आँखें ज़रूर खराब कर देगा।
3. माता-पिता का सुख सागर और अपना और सांसारिक काम में उत्तम ही होगा। -जब चन्द्र खाना नं० 2-3 में हो।

क्याफा

पितृ रेखा, उम्र रेखा वृ० के बुर्ज की जड़ की बजाय वृ० के बुर्ज खाना नं० 2 तर्जनी की जड़ के निकट से शुरू हो।

4. उर्ध रेखा का मालिक, तब सबको लूट खसोट कर जायदाद बना ले। -जब वृ० खाना नं० 3 में हो।
5. अपने नये बनाये मकान की बुनियाद र ाते ही माता को सांप लड़े, मामे को ज़हर चढ़े की तरह जानो के लिहाज से माता, माता खानदान की जड़ में ज़हर और माली हालत के संबंध में अपने ही खानदानी खून अपने समेत शनि की मियाद तक मंदा असर देंगे शनि अब पानी का सांप होगा।
6. टेवे वाले पर शनि मंदा प्रभाव न देगा परन्तु औरत की कबूतरबाजी से शनि का मंदा प्रभाव होगा और शुक्र का फल ज़हरीला होगा।
7. रात को पिया दूध ज़हर समान होगा।
8. छाती पर बाल न हो तो बेएतबारा होगा।
9. मंदे स्वास्थ्य के समय सांप खुद शराब, तेल शनि की चीज़ें यानि ज़हरीली नशे वाली चीज़ें सहायता देगी और चन्द्र की चीज़ों से कोई फायदा या सहायता न होगी।
10. सांप को दूध पिलाना मछली, भैंस, कौवा, मज़दूर आदि की पालना करना शनि की ज़हर को धोएगा जिससे माता तथा माता खानदान का बचाव होता रहेगा और कुएं में दूध गिराना चन्द्र माली हालत के प्रभाव को नेक करेगा।
11. **चन्द्र खाना नं० 10 में माता दुखिया चन्द्र की चीज़ें उल्टा ज़हर खड़ा करें, चन्द्र खुद बर्बाद होगा। उसका असर**

जानों के हिसाब से टेवे वाले की माता खानदान के खून पर और धन की हालत में अपने खानदान पर ज़हर की तरह मंदा होगा या दूध में ज़हर होगा। पानी से खतरा मौत का होगा, धन बर्बाद जायदाद जद्दी के कोयले करेगा। सफ़र का सैलानी खर्चा, पतिहीन स्त्रियां, पतिहीन या प्रेमिका तंग करेगी।

-जब चन्द्र खाना नं० 4-10 में हो या

क्याफा :- उम्र रेखा, दिल रेखा मिल जाए।

शनि खाना नं० 5
(बच्चे खाने वाला सांप)

जले माया धन, जान बचता रहेगा।
मरे बेटे, पोते तो फिर क्या करेगा॥

सांप शनि का लड़के खाता[1],
बाकी सभी फल उत्तम होगा,
केतु से भले संतान हो बढ़ता,
स्वभाव शनि हो जब कभी मंदा,
सात 12 घर शुक्र आया,
मंगल[2] टेवे चाहे 10 वें बैठा,
मकान नया जब अपना बनता,
महल लाखों संतान बनाया,
रवि टेवे जब तख्त पै बैठा,
अक्ल अंधा चाहे गांठ कज़ा पूरा,
या शत्रु हो वह मकानों का।
शनि, वृहस्पति दोनों का।
मकान राहु से बनता हो।
पाप आयु तक जलता हो।
रवि, चन्द्र 5-10-9 हो।
संतान बुरी नहीं होती है।
सामान लावल्दी होता है।
बुरा कोई न होता हो।
शनि पाया घर पहला[3] हो।
फिर भी माया ज़र कल्पता हो।

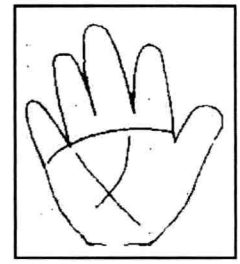

1. जद्दी मकान में सूर्य या चन्द्र या मंगल की चीज़ें कायम रखें लेकिन जब खाना नं० 10 में राहु, केतु हो तो जद्दी मकान में सूर्य, चन्द्र या मंगल की चीज़ें जला दें। वर्षफल में बादाम मंदिर में लेजा कर आधे वापिस घर में कायम रखें। श० बच्चे मारता है जब मंगल बद हो।
2. संतान की गिनती और आयु पर तो बेशक मंदा न होगा मगर उनकी बाकी सब बातों (मसलन वृहस्पति खाना नं० 10 में तो संतान स्वयं ही घर का सोना चोरी करके बाहर चोरों को लोहे के भाव पर बेच दे) पर हानि होगी।
3. वर्षफल में घूम कर।

हस्त रेखा:-शनि से रेखा स्वास्थ्य रेखा को काटे।

नेक हालत

1. दिमागी खाना नं० 15 वृ० से मुश्तरका खुद्दारी का स्वभाव का स्वामी होगा।
2. संतान की हालत केतु से और मकानों की हालत राहु से पता चल जाएगी। चाहे कुछ भी हो वह निस्संतान कभी न होगा।
3. भोला बादशाह खुदी (तकब्बर) और खुद्दारी का मालिक होगा। मगर छानबीन की आदत से जीवन सफल बना लेगा। स्वयं के बनाए या खरीदे मकान संतान की बलि लेंगे मगर संतान के बनाए खरीदे मकान कभी बुरा प्रभाव न देंगे।
4. संतान के लिए जद्दी मकान में मंगल या वृहस्पति से संबंधित चीज़ें कायम रखने से लाभ होगा।
5. छानबीन करने की शक्ति से जीवन को आगे बढ़ा लेगा। संतान बढ़ती होगी।-जब केतु भला हो।
6. मकान बनेंगे। -जब राहु भला हो।
7. अब शनि का संतान पर कोई बुरा असर न होगा और किसी उपाय की ज़रूरत न होगी चाहे अब गिनती और आयु संतान पर कोई बुरा असर न होगा। मगर ऐसी संतान माता-पिता के लिए कोई लाभकारी न होगी, बल्कि ऐसी संतान घर का ही सोना वृ० सामान, खुराक मंगल की चोरी कर निकाल कर बाहर चोरों को लोहे के भाव पर बेच देगा।
   -जब शुक्र खाना नं० 7-12 या सूर्य, चन्द्र खाना नं० 5-9-10, मंगल या वृहस्पति खाना नं० 10 में हो।
8. शनि अब धर्म देवता होगा। -जब खाना नं० 11 खाली हो।

क्याफा

सेहत रेखा कायम और खाना नं० 11 खाली हो।

9. भाग्य का शुभ प्रभाव 5-17-41-28-53-65-77-89-101-103 साल की आयु में होगा मगर संतान का फिर भी मंदा ही हाल होगा। -जब वृ० खाना नं० 9 में हो।
10. पहला लड़का कायम रहे या न रहे मगर अब संतान पर शनि खाना नं० 5 का बुरा प्रभाव न होगा बल्कि उसके बदले में टेवे वाले का खानदानी पुरोहित बर्बाद होगा। सांसारिक तीन कुत्तों की पालना सहायक होगा।

-जब केतु खाना नं० 4 में हो।

मंदी हालत

1. शनि जन्म कुंडली में खाना नं० 5 या 7 में हो तो सूर्य या चन्द्र या मंगल वर्षफल के हिसाब खाना नं० 7 में आने के समय स्वास्थ्य का हाल मंदा ही होगा।
2. सारे शरीर पर बाल हो तो बेशक चोर, फरेबी भी बने, फिर भी मंदा भाग्य और बुरे नसीब वाला होगा। चाहे कलम पर पूरा काबू हो मगर निर्धन ही होगा। मुकद्दमा जहमत बीमारी का आम झगड़ा होगा।
3. मंदे वक्त पर किसी का धन, किसी की औलाद किसी का जिस्म बर्बाद हो।
4. **जद्दी मकान में जैसे :-**

सूर्य (मोगा)	**स्काई लाइट, (Sky light) बन्दर, तांबा, भूरी भैंस।**
चन्द्र	**चावल, दूध, मोती चकोर।**
वृहस्पति	**सोना, केसर।**
मंगल	**शहद खांड सौंफ लाल, मूंगे हथियार की सी चीज़ें कायम करें।**

लेकिन जब खाना नं० 10 में राहु, केतु हो तो मंगल की चीज़ें जद्दी मकान में जला दें तो संतान की गिनती तथा धन में बरकत आएगी। **जब कभी वर्षफल के अनुसार शनि खाना नं० 5 में हो तो धर्म स्थान में बादाम ले जाए आधे वापस लाकर घर में कायम रखें। संतान पैदा होने पर मीठे की जगह नमकीन बांटे या खैरायत में दे।**

5. शनि की आयु 36-18-9 में खाना नं० 2 के ग्रह के संबंधी या उस ग्रह की चीज़ें जानदार को सांप काटे या नुक्सान दे। शनि अब राहु स्वभाव मंदा बनावटी सांप होगा। -जब मंगल, बुध टेवे में इकट्ठे या दृष्टि से आपस में मिलते हो।
6. अंधा बच्चा खाने वाला सांप, नर संतान का शत्रु, शादियां, चाहे 7 हो और संतान बहुत हो, मगर अपना बनाया मकान या बना बनाया मकान ारीदें तो 48 साल की आयु तक सिर्फ एक लड़का या मकान ही होगा। विशेषकर जब खाना 7-12 में शुक्र और खाना 5-9 में सूर्य या चन्द्र न हो। संतान को तो लोहे के जंग की तरह बर्बाद कर देगा।

-जब खाना नं० 10 खाली हो।

7. पाप राहु, केतु की आयु तक शनि का असर मंदा होगा, बल्कि उम्रभर गुलामी में गुजार दे।

-जब जाती स्वभाव के असूल पर शनि मंदा हो।

8. चाहे अक्ल का अंधा गांठ का पूरा भी हो फिर भी माया की कल्पना होगी।

-जब वर्षफल में सूर्य खाना नं०1 या शनि खाना नं०1 हो जाये।

उपाय

जद्दी मकान के खाना नं० 10 पश्चिमी ओर में शनि के शत्रु ग्रहों जैसे :-

सूर्य	**गुड़, तांबा, भूरी भैंस, बंदर।**
मंगल	**सौंफ, खांड, शहद लाल मूंगे, हथियार।**
चन्द्र	**चावल, चांदी, दूध, कुआं, कुदरती पानी, घोड़ा, चकोर पक्षी की चीज़ें कायम करें।**

या शनि की अपनी चीज़ बादाम धर्म स्थान में ले जाकर आधे लाकर घर में कायम रखें याल रहे कि यह बादाम खाया नहीं करते। शनि ने अब बुराई न करने की कसम खा ली गिनी जाएगी।

शनि खाना नं० 6
(लेख की स्याही एक गुणा मंदा)

बुरा लड़का चाहे, पैसा खोटा न अच्छे।
मगर काम फिर भी वह अक्सर ही आते।।

उल्टी दृष्टि दूजा देखे,
असर शनि स्वयं वैसे होंगे,
बुध, केतु न दो कोई मंदा,
शादी पहले जब 28 करता,
केतु टेवे घर 10 की गिनती,
बाप से ऊपर नाम खिलाड़ी,
मित्र शनि 10' चौथे बैठा,
मौत फरिश्ता सिर जब कठता,
हालत कोई चाहे कैसी टेवा,
बाद 42 ऐसा उम्दा,
असर बुरा न दस पर हो।
जैसा केतु कहीं बैठा हो।
न ही लावल्दी टेवा हो।
चन्द्र, शुक्र, केतु मंदा हो।
हाल मुसाफिर उम्दा हो।
आयु मर्द माया बढ़ता हो।
बुध पाया घर दूजा हो।
मदद शनि न करता हो।
हलफ़ शनि जब लेता हो।
फलक स्याही धोता हो।

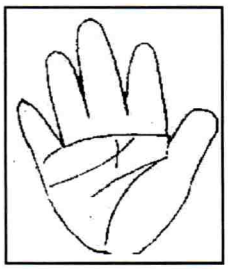

1. बुध, शुक्र राहू।

हस्त रेखा :- **शनि से रेखा आयत को जाए।**

नेक हालत

1. साधारतय: पर खाना नं० 2 देखा करता है खाना नं० 6 को। मगर शनि खाना नं० 6 के समय अब उल्ट हालत होगी और शनि अब खाना नं० 6 में बैठा हुआ खाना नं० 2 के ग्रह को देखेगा और वहां खाना नं० 2 में अगर शनि का मित्र भी चाहे शुक्र ही हो तो भी विषैला डंक मार देगा।
2. जिस्म से अगर एक मुसाम से दो-दो बाल पैदा हो तो बुद्धिमान् और हुनरवान होगा।
3. न्होराता वाला सांप जिसको दिन को तो नज़र आए मगर रात को अंधा हो या रात के किए हुए काम में शनि का कोई मंदा प्रभाव शामिल न हो सके।
4. अपने बिल से बाहर निकल कर फण सिर उठाते हुए ढंग पर किसी को जान से मार देने के लिए तैयार हुए सांप की तरह शनि अब उल्टी दृष्टि खाना नं० 2 में बैठे ग्रह को देखता होगा खासकर जब राहु खाना नं० 8 में हो। शनि स्वयं अपने खाना नं० 10 के ग्रह पर शनि का कोई बुरा असर न करेगा। जैसा केतु का असर उस समय टेवे में हो, वैसा ही शनि के हुक्म पर औरों का हाल होगा। जहां केतु होगा वहां ही सांप का फर्राटा या प्रभाव की लहर जाएगा। शनि वर्षफल में जब शुभ घरों में आ जाए तो सिर पर साया करने वाला शेषनाग होगा। बुध मंदा न होगा और न ही लावल्दी का टेवा होगा, लेकिन यदि शादी 28 साल की आयु से पहले हो तो बुध, चन्द्र, शुक्र तीनों ही मंदे। 28 साल की आयु के बाद अगर शादी हो तो 24 साल लड़के ही लड़के पैदा होंगे। माता-पिता माली दौलत विद्या सबकी बरकत होगी।
5. मंदा समय सिर्फ 42 साल की आयु तक होगा जिसके बाद शनि पक्का नेक असर देगा। चाहे टेवे में सूर्य खाना नं० 12 ही क्यों न हो शनि यदि तारे तो कुल ज़माने की स्याही धो देगा। नालायक बेटा और खोटा पैसा फिर भी कभी न कभी काम आ ही जाता है। -जब राहु जन्म कुंडली में या वर्षफल में खाना नं० 3-6 में उच्च हो जाए।
6. अब शुक्र आबाद और स्त्री सुखिया होगी। -जब सूर्य खाना नं० 12 में हो।
7. शनि नेक घरों में आ जाए या टेवे में वर्षफल के अनुसार नेक प्रभाव का हो तो गुरु, बुध का असर होगा और लड़की की जगह लड़के पैदा होंगे। सफ़र से परिणाम उच्च। बाप से भी उत्तम खिलाड़ी और हर प्रकार का खेल, करतब या चालचलन की रंग-बिरंगी हालत में सबसे ऊपर के दर्जे का मालिक। मर्द की आयु, माया की बरकत होगी।
-जब केतु खाना नं० 10 या केतु उत्तम हो।

मंदी हालत

1. शनि खाना नं० 6 अपने प्रभाव की मंदी हालत स्वयं शनि की चीज़ें जाहिर करेंगे यानि चमड़े के बूट, जूते या लोहे की चीज़ें जो बच्चों के प्रयोग की हो, आम तौर शनि के मंदे असर आने की पहली निशानी होगा। ऐसा व्यक्ति यदि शराब का आदी हो जाए या मकान बनाए खासकर जब शनि खाना नं० 6 (जन्म कुंडली में खाना नं० 6) दोबारा वर्षफल में खाना नं० 6

आए तो शनि ज़रूर अदालत, राजदरबार और महकमा पुलिस के संबंध में व मंदे और दु:ख देने वाले परिणाम पैदा करेगा। शनि खाना नं० 6 की मंदी हालत की पहली निशानी के तौर पर आम तौर पर टेवे वाले की जूती या बूट गुम होंगे या खाना नं० 6 जन्म कुंडली का शनि खाना नं० 6 व वर्षफल में आए हुए शनि के समय नए बूट खरीदने की अति आवश्यकता पड़ेगी जिसके खरीदे जाने के बाद राज दरबारी स बन्ध में खराबियां या मंदे प्रभाव होंगे । यही हाल नई मशीने या शनि से स बन्धित चीज़े खरीदने पर होगा। सबसे अच्छा तो यही होगा कि चमड़े की शनि की नई चीज़ें पांव केतु के लिए खरीदी ही न जाए ताकि चमड़े के जूते सिर पर न पड़े।

(चमड़ा स्वयं शनि की चीज़ है और केतु उसका सहायक ग्रह है जो पांव का स्वामी है लेकिन चमड़ा चूँकि मुर्दा चीज़ है और जिस्म की खाली उतरी हुई है इसलिए शनि भी चमड़े की चीज़ों के आने के समय मुर्दे की तरह मंदे असर देगा।)

2. **लेख की स्याही का मालिक अगर मंदा हो तो सिर्फ एक गुणा मंदा होगा और यदि यह विष से न मारे तो अपने जिस्म के लपेट (चक्र पर चक्र लेना) से घुट कर ही दुखिया कर देगा। शनि खाना नं० 6 का प्रभाव बेशक शक्की अच्छा या बुरा होगा मगर अब वृहस्पति का प्रभाव ज़रूर ही मंदा होगा, चाहे वृहस्पति उस समय (शनि खाना नं० 6 के समय) कहीं ओर कैसा भी बैठा हो। नारियल या बादाम पानी में बहाना शुभ फल देगा।**
3. 28 साल से पहले शादी हो तो शनि छाती पर सांप की तरह ज़हरीला प्रभाव देगा और बुध मंदा होगा जिससे 34-36 साल की आयु में माता तथा संतान बर्बाद होगी। मगर वह क ी मंदा न होगा। अब न सिर्फ शनि अपना प्रभाव देगा बल्कि शनि की अपनी चीज़ें और केतु की चीज़ों दोनों के मंदे परिणाम होंगे, शनि की मियाद 34-39 साल की आयु के बाद मकान बनाना शुभ बल्कि 48 साल तक मकान बनाना ठीक नहीं होगा।
4. सांप की सेवा से संतान बढ़ेगी।
5. केतु की बर्बादी को रोकने के लिए पूरा काला कुत्ता, सरसों तथा और राहु की चीज़ों का उपाय सहायक होगा।
6. मंगल के रिश्तेदार (टेवे वाले का बड़ा भाई उसके बाप का बड़ा भाई यानि ताया, माता का बड़ा भाई यानि मामा) का संबंध शनि का प्रभाव नज़र आदि मंदी होगी खासकर जब राहु खाना नं० 1 में हो तो मामा 21 वर्ष की आयु में अंधा होगा।
   -जब मंगल खाना नं० 2 में हो।
7. सिर कटने से मौत होगी, छुपे काम करने का आदी होगा। घर में रोटी पकाने के लिए मिट्टी के तवे या पूरी बद ब ती होगी।
   -जब बुध, शुक्र, राहु खाना नं० 4-10 या बुध खाना नं० 2 या सूर्य, चन्द्र, मंगल का साथ हो।

क्याफा

हथेली का खाना नं० 6 में सिर रेखा के ऊपर मगर दिल रेखा के नीचे शनि केबुर्ज के नीचे छोटी सी लकीर या क्रॉस, त्रिशूल का निशान हो।

8. मंद भाग्य होगा।
9. शनि विषैला मंदा सांप होगा जो गाय विद्या और धन हानि करेगा यानि शुक्र की जानदार चीज़ें गाय, बैल स्त्री आदि और चन्द्र की जानदार चीज़ें माता आदि पर भी हमला कर देगा। खासकर जब राहु खाना नं० 8 में हो या मंदा राहु हो रहा हो।
   -जब शुक्र या चन्द्र खाना नं० 2 में हो।

उपाय

शनि खाना नं० 6 की साधारण मंदी हालत से बचने या ज़हरीले असर को रोकने के लिए सरसों के तेल से भरा मिट्टी का बर्तन किसी तालाब या दरिया में पानी के अंदर ज़मीन की तह में दबा दें जहाँ वह बर्तन पानी के अंदर छुपा रहे। चूँकि जब खाना नं० 2 खाली हो तो खाना नं० 6 का शनि रात को अंधा होता है इसलिए अगर शनि के कारोबार या सामान के शुरू या पैदा करने के ज़रूरत पड़ जाए तो रात का समय ऐसे कारोबार सामान के शुरू या पैदा करने के लिए लाभकारी होगा। शर्त यह कि रात अंधेरी हो यानी उस समय चन्द्रमा न चमक रहा हो दूसरे शब्दों में पक्ष अंधेरा हो।

शनि खाना नं० 7
(कलम विधाता रिज़क)

उल्ट रंगी बोतल जो नाज़नीन[1] थी।
कफन खेंचने को वो तेरा खड़ी थी॥

ना बुजुर्गी शान माया,
हकीम सादिक दुनियां बनता,
बुनियाद शनि की शुक्र होता,
दौलत हुकूमत साथ-साथ लाता[2],
गुरु, शुक्र बद मंगल मिलता,
परोपकारी दौलत उम्दा,
बुध शत्रु 10-3 या सात का,
चन्द्र करे जब मंदा टेवा,
ना इल्म दरकार हो।
पल समुद्र पार हो।
ताकत गुना 7 होती हो।
शर्त जागीर ना कोई हो।
नसीब मारा वो होता हो।
वर्ना नयासिरी माया हो
आयु पिता ज़र मंदा हो।
शनि मंदा खुद होता हो।

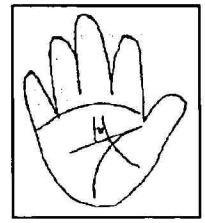

1. पराई नाज़नीन की मुहब्बत से अपनी औलाद मंदी बल्कि व्यर्थ ही हो।
2. जब शनि की तबीयत चालाकी का मालिक और औरतों से मुहब्बत रखने वाला1

हस्त रेखा:- **उम्र रेखा और सिर रेखा मिली हो, शनि से शाख सिर रेखा पर या शुक्र के बुर्ज में हो।**

नेक हालत

1. जिस्म पर एक मुसाम से अगर एक-एक बाल पैदा हो तो शनि नेक तथा उत्तम प्रभाव देगा।
2. किसके हुक्म से इधर देख रहे हो की धमकी देने वाला पक्का हठधर्मी, देखने की बजाए सुनने पर भरोसा रखने वाला और जुदाई पसंद होगा।
3. माल हराम तथा हरामकारी कफन मु. त न देगा। आई चलाई चाहे लाखों की हो या हज़ारों की मगर ज़ागीर की शर्त न होगी।
4. कलम विधाता रिज़क उच्च गृहस्थी हालत। जन्म समय चाहे राई के बराबर मामूली आदमी हो मगर शनि की मियाद पर वो ज़र्रे से ऊँचा पहाड़ हो जाएगा। काग् रेखा यानी शनि खाना नं० 1 के वक्त जिस तरह बहुत मंदी हालत हुआ करती है अब उसी तरह ही उल्ट हालत में हर ओर अच्छा होगा।
5. असल में शनि की नींव शुक्र ही होगा और प्रभाव की शक्ति 7 गुना होगी, दौलत हुकूमत का साथ होगा। अगर शादी 22 साल की आयु तक न हो तो टेवे वाले की नज़र बेबुनियाद अंधापन होगा। मकान बने-बनाये बहुत मिलेंगे।
6. परोपकारी हो तो धन आये वर्ना न्यासिरी माया होगी, जिस घर आये उसी को तबाह कर आगे चल पड़े वाली माया होगी।
7. चालाकी और होशियारी के लिए उड़ती हवा को फर्ज़ी तौर पर एक जानवर मानो तो उस जानवर की आँखों में मिट्टी डालने की हि मत का मालिक होगा।
8. राजदरबार में 5 लड़कियों की शादी करने के बराबर धन मिलेगा। उच्च शनि अपने समय में उच्च वृहस्पति का काम देगा या वृहस्पति या शुक्र का फल उ दा होगा और वो अमीरों में अमीर होगा।
9. हज़ारों सफ़र करें। उसके बुजुर्गों की शर्त नहीं बगैर पुल बांधे ही समुद्र को पार करने की हि मत और उम्र, अच्छे जीवन का स्वामी होगा।
10. घर में लेटा हुआ पत्थर या खड़ा स्तूप (पिलर) उत्तम शनि की निशानी होगा।
11. शनि, शुक्र, बुध, राहु सब का उत्तम फल, सब सहायक होंगे, लेकिन पेशा शनि में शामिल होने वाले सब माल व दौलत खा जाए। -जब दोस्त ग्रह बुध, शुक्र, राहु खाना नं० 3-5-7-11 में हो।
    क्याफा :- उम्र रेखा और सिर रेखा मिल जाए।
12. जायदाद जद्दी तो बेशक इतनी न हो मगर मासिक आयु हज़ारों की होगी। -जब मंगल नेक हो।
13. गाँव का मालिक रईस होगा। -जब बुध खाना नं० 11 में हो।
14. दो गुना मंगल नेक और दो नेक केतु का उ दा फल होगा। मुआवन सहायक उम्र रेखा से ल बी उम्र स्वास्थ्य उत्तम। संतान

का सुख और शत्रुता के समय हरेक से स्पष्ट तौर छुपी मदद मिले। -जब मंगल, शुक्र, शनि एक साथ हो।

15. सहायक धन रेखा हो, माया धन बेहद ज़्यादा कायम हो। -जब मंगल, वृहस्पति, या मंगल, शुक्र देखते हों शनि को।

क्याफा उम्र रेखा के साथ-साथ एक और सहायक उम्र रेखा।

16. सहायक रेखा उम्र तथा छुपी सहायता रेखा का उत्तम फल होगा।
-जब मंगल, चन्द्र या मंगल, शनि देखते हो वृहस्पति को।

मंदी हालत

1. जिसके हुक्म से इधर देख रहे हो की तबीयत का स्वामी दुनियादार होगा।
2. शनि जन्म कुंडली के हिसाब खाना नं० 5 या 7 में हो तो सूर्य या चन्द्र या मंगल वर्षफल के हिसाब खाना नं० 7 में आने पर सेहत के संबंध में बुरा प्रभाव होगा।
3. पराई स्त्री के प्यार के वक्त अपनी संतान मंदी बल्कि व्यर्थ होगी, सब कुछ बिक जाए, लेकिन जब तक पुराने जद्दी मकान की दहलीज़ कायम हो सब कुछ वापस का यम होगा।
4. शराब खोरी, काग़ रेखा और शनि के मंदे असर की पहली निशानी होगी, कैद गले लगी रहती होगी चाहे कितना ही बड़ा डाकू या मशहूर चोर हो। -जब शनि जाती स्वभाव से मंदा हो।
5. दु:खों का पुतला होगा। -जब मंगल, चन्द्र, शुक्र सब रद्दी हों।
6. हासिद कमीना मगर जाहिरदारी उत्तम दिखावा हो। -जब वृहस्पति मंदा हो।
7. बनावट शनि (वृहस्पति, शुक्र-केतु स्वभाव; मंगल, बुध-राहु स्वभाव) 27 साल हथियार का डर, 29 साल की आयु तक मंदी सेहत झगड़ालू नसीब मारा होगा। -जब मंगल, बुध एक साथ या वृहस्पति, शुक्र एक साथ हों।
8. शनि भी मंदा ही होगा धन के लिए, सिर की बीमारी होगी।-जब चन्द्र मंदा हो।
9. आयु, ज़र्द धन (सोना), पिता सब मंदे होंगे, जद्दी जायदाद और मकान मंदे हों।
-जब बुध या शनि के दुश्मन ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल खाना नं० 3-5-7-10 शुक्र का साथ हो।
10. बेगर्ज मगर गंदा आशिक होगा स्त्री ल बे अर्से तक बीमार रहे। -जब शुक्र का साथ हो।
11. हर तरह की बरकत घर में शहद का बर्तन रखना ज़रूरी वर्ना पोते के आने तक सब माया बर्बाद होगी।
-जब खाना नं० 1 खाली हो।
12. मृत्यु सिर कटने से होगी। -जब बुध खाना नं० 1 में हो।
13. आँख खराब होगी। -जब बुध आये खाना नं० 7 में वर्षफल में।
14. हिज़ड़ा, निक मा आदमी रताँध टेवे में रात के वक्त ग्रह काम नहीं करते।
-जब सूर्य खाना नं० 4 में हो।
15. शनि खाना नं० 1 का दिया हुआ मंदा फल देगा और 27 साल की आयु तक हथियार का डर होगा।
-जब मंगल बद हो।

उपाय:-

खाँड में भरकर वाँसुरी बाहर दबाना शुभ, शर्त यह कि शनि सोया ना हो अगर सोया हो तो शहद के बर्तन का उपाय मददगार होगा।

शनि खाना नं० 8
(हैडक्वार्टर)

खुशी जन्म की उसकी क्या वो करेगा।
जन्म से ही जिसके हो मातम पड़ेगा।।

ना शनि की चीज़ें मंदी,
चाल अच्छी होगी वैसी,
शत्रु ग्रह जब साथ या साथी,
ज़हर मरेगा नाग में इतनी,
असर शनि दे मंगल जैसा,
खाली पड़ा घर 12 टेवा,

ना बुरा खुद जाप वो।
जैसा बुध या पाप हो।
मंदा शनि खुद होता हो।
मौतें खड़ी ही रखता हो।
बैठा टेवे में जैसा वो।
उम्र कब्र तक दुखिया हो।

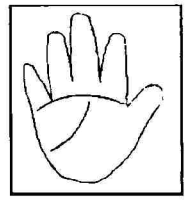

हस्त रेखा :- **मंगल बद से रेखा शनि में, शनि का हैडक्वार्टर खाना नं० 8 होता है।**

नेक हालत

1. दिमाग़ी खाना नं० 14 तकब्बर और खुद पसंदी का मालिक होगा।
2. साँप और चोर मुर्दा भी हो तो भी उनसे डर ही लगेगा। शनि अब अपने हैडक्वार्टर में बैठा होगा जिसका कुछ पता नहीं कि भला असर करे या बुरा फल दे मगर असर शक्की ही होगा। ऐसा व्यक्ति अपना भला हरेक के भले में मानने वाला होगा या बिल में घुसे साँप की तरह शनि अपने हैडक्वार्टर में अकेला बैठा मौत के वारंट जारी करने वाला स्वयं ही पूरा जज हाकिम होगा।
3. जैसी बुध, राहु, केतु की चाल वैसी शनि की चाल अब अपने एजेन्टों के एतबार पर काम करेगा, मगर स्वयं शनि का जाती असर तथा अपनी राय की ढलान वैसी ही होगी जैसे कि मंगल हो। (अकेला बैठा कभी मंदा न होगा। ये घर मारक स्थान के बजाय अब शनि का हैडक्वार्टर होगा)।
4. चन्द्र के उपाय, अपने पास चांदी का चौकोर टुकड़ा रखने, से शनि की असलीयत का पता चलेगा।
5. शनि की चीज़ें न मंदी होगी न शनि का असर मंदा होगा मगर ये भी शर्त नहीं कि भला होगा समय के अनुसार जैसा मुनासिब होगा बदल जाएगा। -जब शनि अकेला हो।

मंदी हालत

1. शराब से परहेज़ शनि का असर मंदा न होने देगा।
2. छाती पर ज्यादा बाल हो तो उम्र भर गुलामी में गुज़ार दे।
3. इस घर में अब शनि के जितने ग्रह साथ हो उतनी ही मौत हो जाने के बाद ऐसा व्यक्ति जन्म लेगा, मंदी हालत में चन्द्र का उपाय यानी खालिस चांदी का टुकड़ा अपने पास रखना या पत्थर पर बैठकर दूध से स्नान करना शुभ होगा। यानी मिट्टी पर बैठकर स्नान न करें। जब कभी हो स्नान करते समय अपने पाँव के तले कोई न कोई चीज़ ज़रूर रख लें। चाहे कंकर पत्थर ही क्यों न हो ताकि पाँव का तलवा सीधा ज़मीन की कच्ची तह से न लगे।
4. शनि खुद ही इतना मंदा होगा कि मौत ही मौत खड़ी रखेगा। नज़र का बुढ़ापे में धोखा होगा।
   -जब शत्रु ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल साथ या साथी हो।
5. कुल उम्र बल्कि आखिरी वक्त तक कम धन और दुखिया ही रहे। ऐसे टेवे वाले के जन्म लेते ही दूसरे साथी ग्रहों से संबंधियों को कब्र में जाना पड़ेगा। बुढ़ापे में नज़र का धोखा हो। -जब खाना नं० 12 खाली हो।

क्याफा :-हाथ की अंगुलियों के नाखून काले रंग के हो।

शनि के मंदे प्रभाव का रुख किस तरफ होगा :-राहु को सिर और केतु को दुम समझ कर एक साँप की शक्ल बनाएं, राहु बैठा होने वाले घर से आगे जहाँ कहीं भी यानी जिस खाने में रेखा निकल कर सीधी ही जा सकती हो उस घर पर शनि का प्रभाव पड़ेगा। अच्छा या बुरा जो समय के अनुसार (जन्म कुंडली या वर्ष कुंडली) साबित हो। दुम केतु पहले या कुंडली के पहले घरों में हो तो शनि का प्रभाव उत्तम तथा सहायक होगा।

शनि खाना नं० 9
(कलम विधाता मकाना मर्दा)

सोया रात निर्धन चले जब सवेरे।
उठाता नहीं कोई घर बार तेरे॥

ज़ागीर मालिक और भारी कबीला,
बुरा वो यहाँ ना कभी करता,
6 साल तो उम्दा होगा,
शर्त वृ० इतनी करता,
शनि मालिक है आँख शुक्र का,
चोट शनि हो जब कहीं पाता,
शनि बैठा जब उत्तम टेवे,
शुक्र मगर जब आया दूजे,
मंगल टेवे जब चौथे बैठा,
फूँक तमाशा सारी दुनिया,
साल छठे बुध, शुक्र उम्दा,
बेच कफन खुद धन पाता,
पापी ग्रह हो जब शनि बनता[2],
कीनाबरी शाह होगा माड़ा (मंदा),
पुश्त तीनों तक चलता हो।
बुध कोढ़ी से डरता हो।
बल्कि उम्र हो सारी ही।
हो परोपकारी भी।
तरफ चारों ही देखता[1] जो।
अंधा शुक्र खुद होता हो।
शुक्र असर 2 देता हो।
शनि 9 गुना होता हो।
शनि जलाये 9 वें को।
खुद फ्लेगी चूहा हो।
शत्रु बुरा न तीजे हो।
खाली पड़ा जब दूजे हो।
घूमता पत्थर होता हो।
मन की दलीलें सोचता हो।

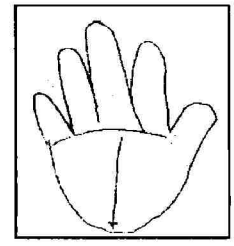

1. जिस घर में शनि हो शुक्र में वही असर और दृष्टि भी शुक्र की उस घर की तरफ होगी मगर दृष्टि की चाल स्वयं शुक्र की अपनी पिछली ओर (जहाँ से बैठा हुआ शुक्र आगे के घरों को देख सकता हो) की होगी लेकिन अगर शुक्र बैठा ही हो बाद के घरों में तो भी वह (शुक्र) देखेगा तो वो शनि ही की तरफ मगर दृष्टि की दर्जा टेढ़ी आँख की तरह देखने के ढंग का ही होगा।
2. बच्चे की माता के पेट के समय का बनाया हुआ या खरीदा हुआ मकान।

हस्त रेखाः- **भाग्य रेखा की जड़ पर क्रॉस, त्रिशूल हो या उर्ध रेखा हो।**

नेक हालत

1. पुरुषों और मकानों के लिए कलम विधाता (बहुत उत्तम और नेक अर्थो में) शनि की मियाद पर या दुनिया से कूच के आखिरी समय तक कम से कम तीन मकान रहने वाले कायम होंगे या तीन मकान कायम हो जाना उसके आखिरी वक्त की निशानी होगा।
2. पहाड़ी हवा या प्रबल पहाड़ों के पंक्ति की तरह उत्तम और हरा-भरा करने वाली आँख का मालिक, सफ़र का सामान तथा मकान की विद्या में कामयाब, हमदर्द और सुखी होगा।
3. भारी कबीला, ज़ागीरों का मालिक सदा सुखी ल बी उम्र, माता-पिता का सुख उत्तम होगा। वो किसी भी हालत में कर्ज़ छोड़कर नहीं मरेगा। तीन पुश्त दादा, पिता, पोता हरदम कायम का स्वामी और खुद शनि कभी मंदा असर न देगा। 60 साल तो ज़रूरी बल्कि सारी उम्र उत्तम प्रभाव होगा मगर शर्त ये कि मनुष्य परोपकारी भी हो। माता-पिता के बाद अगर तकलीफ हो तो वृहस्पति का उपाय सहायक होगा, बाकी संसार में शत्रु उसे काटने वाले साँप की तरह मारने को दौड़ेगें। घर में जन्म का गड़ा हुआ पत्थर शुभ फल देने की निशानी होगा।
4. जब तक उत्तम बैठा हुआ हो तो शुक्र कहीं भी टेवे में हो वो (शुक्र) शनि के संबंध में शुक्र खाना नं० 2 का दिया फल देगा, लेकिन अगर शुक्र हो ही खाना नं० 2 में तो शनि 9 गुना नेक होगा। मगर चन्द्र भाग हर दो हालत में मंदा होगा।
5. हर तीनों (शनि, बुध, शुक्र) का प्रभाव उत्तम होगा, लोगों के आराम के कामों से फायदा हो, स्त्री अमीर खानदान से होगी।
   -जब बुध खाना नं० 6 या शुक्र खाना नं० 7 में हो।
6. कोई मंदा असर न देंगे, लेकिन अगर पिछली अंधेरी कोठरी में रोशनी कर दी जाए, दीवार तोड़ दी जाए, रोशनदान खासकर दक्षिण की ओर तो तीन साल में सब कुछ बर्बाद होगा।
   -जब शत्रु ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल खाना नं० 3 में हो।
7. उर्ध रेखा का स्वामी, दुष्ट, भाग्य या जिसके धन से सड़े हुए मुर्दे की जगह बदबू आए या धन-दौलत के होते हुए भी मंदे जीवन का स्वामी हो। -जब खाना नं० 2 खाली हो।

8. संतान का हाल मंदा न होगा।
9. कुदरत की ओर से कोई बुरी घटना मृत्यु आदि दु:ख देने वाली न होगी।
-जब वृहस्पति खाना नं० 5, सूर्य, चन्द्र या मंगल खाना नं० 3 में हो।
10. मां-बाप दोनों की तरफ से उत्तम भाग्य, भला लोग होगा। स्त्री अमीर खानदान से और अच्छे भाग्य वाली होगी।
-जब चन्द्र खाना नं० 4 में हो।
11. दूसरों से हमदर्दी और माता-पिता की आपस में ठीक बनी हुई अब सूर्य और शनि का कोई झगड़ा न होगा।
-जब सूर्य खाना नं० 5 में हो।
12. गो माया ज़्यादा मगर माया पर पेशाब की धार मारने वाला होगा। -जब वृहस्पति खाना नं० 12 में हो।

मंदी हालत

1. माथे पर या पाँव की पीठ पर बाल हो तो मंद भाग हो।
2. किसी निर्धन को रात को भी अपने मकान में आराम नहीं करने देगा, उसे डर होगा कि कहीं वह उसका घर बार ही उठाकर न ले जाए।
3. बच्चे के माता के पेट के वक्त का बनाया या खरीदा मकान पिता को शनि की मियाद पर ज़िंदा न छोड़ेगा। राजदरबार में धीरे-धीरे कछुवे की चाल की तरह तरक्की होगी।
4. छत पर चौखट ईधन लकड़ी आदि मंदे असर की पहली निशानी होंगे। मंदे समय वृहस्पति का उपाय काम देगा।
5. अब संतान पर बुरा असर न होगा बल्कि पूरी मच्छ रेखा, 9 लड़के 3 लड़कियाँ जायज होंगी।
-जब केतु खाना नं० 5 में हो।
6. शनि खाना नं० 9 को जलाएगा, घर बार और सारी दुनिया को फूंक कर रहेगा। प्लेगी चूहे की तरह बीमारी लानत की गंदी हवा फैलाने वाला होगा। -जब मंगल खाना नं० 4 में हो।
7. ऐसा व्यक्ति अमीर तो होगा मगर दुष्ट मंद भाग्य जो दूसरों के कफन तक बेचकर दौलत इकट्ठी कर लेगा।
-जब खाना नं० 2 खाली हो।

क्याफा :- उर्ध रेखा हथेली के खाना नं० 5 से चलकर हाथ को दो भागों में बाँटने वाली हो।

8. शनि बिना नींव के घूमता पत्थर होगा, साहूकार से गरीब हो चुका निर्धन प्राणी अपने ही मन की दलील करता रहता और कीनाबरी से गर्क होता रहता होगा। वह अपनी संतान के जन्म के रास्ते में भारी मनहूस मंदा पत्थर फंसा रहा होगा। शनि खाना नं० 5 में संतान के मारने में एक ज़हरीला साँप माना है यानी जो संतान पैदा हो जाने के बाद भी उन पैदा हुए बच्चों को उनके पीछे भागकर उनको मारने के लिए ज़हरीले साँप की तरह उनको मारकर अपनी प्यास बुझाएगा मगर खाना नं० 9 का शनि संतान के संबंध में साँप की बजाय एक बड़ा भारी पत्थर का पहाड़ होगा जिसको पार करके बच्चों को अपनी माता के पेट से बाहर आना मुश्किल होगा। लेकिन जो बच्चा पैदा हो गया उसके पीछे शनि खाना नं० 9 का पहाड़ शनि के खाना नं० 5 के साँप की तरह नहीं भाग सकता। संक्षेप में शनि खाना नं० 9 के समय बच्चे देर के बाद पैदा होंगे और जो पैदा होंगे वह जीवित रहेंगे। खुद बदला लेने वाला वर्ना संतान को बदला लेने की नसीहत कर जाने वाला होगा आग़ की घटनाएँ वृहस्पति की चीज़ें सोना हवाई, पीला रंग और चन्द्र की चीज़ें चांदी, बजाजी और वृहस्पति के कामों से लाभ मगर शनि की चीज़ें और शनि से स बन्धित काम मंदा फल देंगे। -जब शनि पापी ग्रह की तरह राहु, केतु किसी तरह शनि को मिलते या देखते हों।

शनि खाना नं० 10
(लेख का कोरा खाली कागज़)

परछाई दिल की आँखों पे इज़्ज़त करेगा।
कदम पर कदम आगे बढ़ता चलेगा॥

मालिक नज़र ग्रह मंडल होता,
नेक असर खुद अपना देगा,
केतु बेशक हो टेवे मंदा,
नेक शनि तो सबसे उम्दा[1],
शत्रु ग्रह या मंदा साथी,
नज़र उड़ेगी ग्रह सब ही की,
39 साला 48 होते,
शनि असर दे जब खुद मंदे,
तख्त चन्द्र, गुरु चौथे बैठा,
4 मंदा या दुश्मन घेरा,
साल सातवां/तीसरा हर कोई उत्तम,
धूम चक्र बुध सातवें आता,
दौलत शाहाना पाता हो।
दूजा गुरु आ मिलता हो।
पापी बुरा न होता हो।
मंदे ज़हर खूनी होता हो।
अन्धा शनि खुद होता हो।
ना ही शनि भला रहता हो।
उम्र पिता का साथी हो।
भली मदद गुरु होती हो।
ऐश सवारी देता हो।
27 साला ज़र मंदा हो।
चारों तरफ[2] शनि देखता हो।
ससुराल अमीरी देता हो।

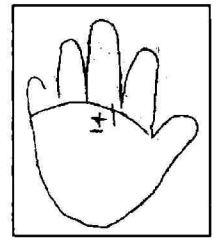

1. मगर आखिरी नतीजा मंदा जब खुद भला लोग धर्मात्मा हो लेकिन अगर शनि की तबीयत का तो हर तरह उ दा।
2. 3-9-15-21-27-33-39-45-51-57-63-69-75-81-89-93-99-105-111-117 साल की आयु में।

<u>हस्त रेखा :-</u> शनि के बुर्ज पर गणेश की शक्ल हो 卐 शनि के पर्वत पर मध्यमा की जड़ से रेखा हो।

<u>नेक हालत</u>

1. खाना नं० 10 का शनि अगर खाना नं० 1 के ग्रह का सहायक हो तो 2 गुना उत्तम वर्ना खाना नं० 10 का शनि खाना नं० 1 के ग्रह का 2 गुना शत्रु होगा।
2. पिता की आयु का टेवे वाले की कम से कम 48 साल की उम्र तक साथ होगा, शनि हर सातवें साल हर तरह से मान धन बरकत देगा और खुद शनि तथा वृहस्पति दोनों का ही उ दा प्रभाव होगा, 3-9-15-21-33-39-45-57-63-69-75-81-87-93-102-111-105-117 साल।
3. अकेले शनि की हालत में उम्र का हर तीसरा साल उत्तम और शनि न सिर्फ चारों तरफ देखने वाला आँख का स्वामी या सहायता करने वाला भाग्य का कागज़ (शुभ अर्थों में), तमाम ग्रहों की दृष्टि का स्वामी और उनके लिए पिता समान होगा।
4. वृक्ष जंगल पहाड़ तरह-तरह की जायदाद का स्वामी ध्वजा धारी की तरह शाही धन। आसमान तक एक ऊँचा मान पाकर आखिरी समय ऐसा गिरेगा कि उनका ढूँढना कठिन होगा। विशेषकर जब वो धर्मात्मा हो लेकिन अगर शनि का स्वभाव साँप की तरह चौकन्ना और दूसरों पर कठोर मालिक होगा तो शनि खुद शेषनाग सिंहासन की तरह सहायक होगा। उसी तरह ही भारी पहाड़ की तरह स्थिर होकर शनि बैठा ही रहकर काम करने वाला हो या या ऐसे काम हो जिनमें बैठा ही रहना पड़े तो फायदा लेकिन अगर दौड़ने व भागने में हरदम मारा-मारा फिरने वाला हो यानी आऊटडोर ड्यूटी वाला हो तो मुर्दा साँप की तरह हरेक के पाँव के नीचे आता होगा। केतु बुरा हो तो बेशक बुरा हो परन्तु राहु, शनि कभी मंदा प्रभाव न देंगे।
5. पिता की उम्र ल बी, टेवे वाले की कम से कम 39 या 48 साल की आयु तक पिता का साथ होगा और जातक की खुद अपनी आयु 90 साल के करीब होगी। **राजसभा चाहे शादी या धर्म-स्थान मंदिर आदि यानी हर जगह बतौर अपनी नज़र मान होगा और वो उ दा फकीर की झोली की तरह किस्मत जिसका भेद न खुले का स्वामी होगा जिसका फैसला खाना नं० 11 से होगा।**
6. जिस कदर दूसरों का मान करे उसी कदर ही अपना मान बढ़ता जाए।
7. शून्य बुध का गोल दायरा+वृहस्पति का सीधा डंडा। कुल 10 या दोनों मिले हुए बुध, वृहस्पति के खाली आकाश का ब्रह्माण्ड होगा जिसमें शनि त्रिशूल की निशानी 111, वृहस्पति की रेखा को श्री गणेशाय नमः च्च का सबसे ऊपर इज्जत निशान देगा यानी वो जादू की विद्या का स्वामी और आँखों से ही सुनता होगा।
8. जब तक शराब न पिए शनि की बरकत बढ़ती रहे उसका भेद किसी को प्रकट न होगा और अगर 48 साल की आयु तक मकान न बना पाए तो शनि टेवे वाले को मकान की कीमत तथा सामान के बराबर धन-दौलत देता जाये और जब मकान बन

जाये शनि अपनी मदद का बोरिया बिस्तर गोल कर जाये। उस दिन से आगे और अधिक लाभ न देगा ये अर्थ नहीं कि बुरा असर देने लग जायेगा। अर्थ केवल यह है कि उस दिन के बाद यानि जब मकान बन जाये शनि मकान बनाने के लिए फालतू धन जमा न होने देगा।

9. हर तरह से ऐश व सवारी का आराम हो। -जब चन्द्र खाना नं० 1, वृहस्पति खाना नं० 4 में हो।
10. ससुराल खानदान अमीर होंगे और धन देंगे। -जब बुध वर्षफल खाना नं० 7 में आये।
11. चाहे अब शनि एक सोये हुए सांप की तरह होगा मगर प्रभाव अच्छा ही होगा। -जब खाना नं० 2 खाली हो।

क्याफा

हाथ की अंगुलियों के नाखून दर याने हो।

12. शनि अब नेक ही फल देगा।

क्याफा

शनि के बराबर मध्यमा की जड़ में रेखा हो। जब शनि जागता हो।

मंदी हालत

1. दाढ़ी और मूंछ के बाल कम या बिल्कुल साफ हो तो कम हौसला, उसकी पैदा की हुई जायदाद न होगी। खाना नं० 10 में प्रथम तो शनि मंदा ही न होगा लेकिन अगर हो जाये तो खूनी अजदहा होगा।
2. शत्रु ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल या कोई और मंदा ग्रह अगर साथी, साथ हो तो सभी ग्रह अंधे बल्कि खुद शनि भी मंदा होगा।
3. हत्यारों से हत्या करने से 27 साला धन-दौलत का मंदा समय हो। जब शनि का असर मंदा हो तो वृ० की मदद सहायक होगी। -जब खाना नं० 4 मंदा या खाना नं० 4 में शनि के शत्रु सूर्य, चन्द्र, मंगल हो।

शनि खाना नं० 11
(लिखे विधाता, स्वयं विधाता)

दंतकथा दुनिया से धर्मी जो डरता।
पकड़ पापी बेड़ी है खुद पार करता॥

दरबार गुरु के हलफ़ से पहले,
राहु, केतु हो जैसे टेवे,
ग्रह उत्तम को यह बढ़ाकर,
सिर्फ बुध से है वह डरता,
साथ-साथी जब हो गुरु बैठा,
मंदे गुरु घर तीसरा मंदा,
लेख नसीबा तख्त पर[1] खुलता,
बुध दबाया हो या मंदा[2],
रवि, मंगल घर 10 वें बैठे,
राजधन सब उत्तम होते,
द्वार दक्षिण का साथी मिलते,
अय्याश जनाही घर खुद होते,

धर्म अदालत बैठता हो।
फैसला उन पर करता हो।
जल्दी-जल्दी खुद बढ़े।
कि न हो घर तीसरे।
धर्मी शनि खुद होता हो।
खाली तीजे शनि सोता हो।
आयु 84 रक्षा हो।
बेकार शनि खुद होता हो।
चन्द्र आया घर 6 वें हो।
पाप स्याही धोता हो।
असर धन मंदा हो।
जिस्म आयु शनि जलता[3] हो।

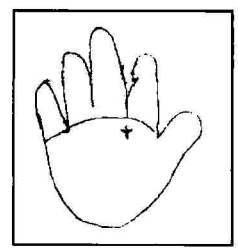

1. 11-23-36-48-57-72-84-94-105-119 साल की आयु।
2. लड़की, भैंस का मंदा हाल बुध की चीज़ों के अशुभ परिणाम।

उपाय

1. शनि का उपाय सहायक जब शनि खुद के स्वभाव पर मंदा हो वरना साधारण हालत में वृहस्पति का उपाय।
2. जब राहु, केतु मंदे या उनकी चीज़ों की मंदी निशानियां या ग्रहण निशानी हो तो मंगल का उपाय और उपाय के दिन से एक वर्ष लगातार लंगोटे पर पूरा काबू रखें।

हस्त रेखा

वृहस्पति, शनि के पवर्तो की मध्यम जगह खाना नं० 11 पर क्रॉस ┼ होगा।

नेक हालत

1. शनि की नेक तथा बद नीयत का फैसला राहु और केतु बदजात स्वयं की अपनी-अपनी हालत से होगा।
2. धनवान मगर आँखों की चतुरता और फरेब से धन कमाए। अमूमन 48 साल की आयु अच्छी या बुरी का फैसला होगी। नेक हुआ तो मिट्टी को हाथ डालने पर सोना कर देगा। अशुभ हुआ तो सोने की मिट्टी कर देगा। मगर हर दो हालत में आई चलाई चलती होगी।
3. शनि अब बच्चे के जन्म का हुक्म देने वाला स्वयं ही विधाता की तरह होगा यानि संतान के योग चाहे मंदे हो मगर अब ऐसा प्राणी कभी लावल्द न होगा। शनि स्वयं किस्मत का हरदम राखा और पाप राहु, केतु की स्याही धोने वाला होगा। ऐसा व्यक्ति पक्का मर्द होगा परन्तु उसकी स्वयं की पैदा की हुई शायद ही कोई जायदाद होगी या माता-पिता से अमूमन जायदाद पाएगा। वह धर्म स्वभाव और धर्मी आँखों का स्वामी होगा।
4. सबसे पहले अब शनि कुल ज़माना और सब ग्रहों के गुरु, वृहस्पति का हलफ़ लेगा और फिर बाद में धर्म अदालत करेगा, जैसे राहु, केतु होंगे वैसे ही अपने धर्म ईमान से फैसला करेगा। उत्तम ग्रह को जल्दी-जल्दी बढ़ाकर स्वयं बढ़ेगा।

   -जब तक बुध खाना नं० 3 में न हो।
5. अब शनि स्वयं धर्मी होगा खासकर जब टेवा धर्मी पाप राहु, केतु, चन्द्र के साथ या खाना नं० 4-10 में हो लेकिन यदि वृ० मंदा हो तो खाना नं० 3 बुनियाद होगा अगर खाना नं० 3 खाली हो तो शनि सोया हुआ होगा और न सिर्फ स्वयं शनि का अपना फैसला बहाल होगा बल्कि त त पर आने के दिन 11-23-36-48-57-72-84-94-105-119 साल की आयु से शनि नेक फल देगा और 84 साल तक सहायता देता रहेगा।-जब वृ० साथ-साथी हो।

क्याफा :- **शनि के बुर्ज का मध्यमा की जड़ से शनि तथा वृहस्पति के दर यानी**

खाना नं० 11 में अगर रेखा जाये तो शनि मंदा होगा लेकिन अगर मध्यमा की जड़ या शनि के बुर्ज से हथेली के खाना नं० 11 में रेखा जाए तो शनि का फल उत्तम और सहायक होगा।

6. राजदरबार माया दौलत सब उत्तम और खुद राहु, केतु भी पाप की स्याही धो देंगे।

   -जब सूर्य, मंगल खाना नं० 10 और चन्द्र खाना नं० 6 या सूर्य खाना नं० 1 और चन्द्र खाना नं० 2 में हो।
7. आम लोगों के फायदे और आराम की पूरी ताकत और नेक प्रभाव और खुद आराम पाये।

   -जब शुक्र खाना नं० 7 में हो।
8. पानी का भरा हुआ घड़ा (शनि खाना नं० 11 में दृष्टि खाली) यानि जब या जिसका शनि खाना नं० 11 में हो तो ऐसे व्यक्ति को शुभ काम करने के समय पानी का भरा हुआ घड़ा मिट्टी का कच्चा बर्तन बतौर कु भ रख लेना अति उत्तम होगा।

मंदी हालत

1. खाना नं० 11 से चलकर खाना नं० 1 में आने के दिन से यानि 11-23-36-48-57-72-84-94-105-119 साल की आयु में शनि मंदा होता हुआ भी नेक फल देगा।
2. अंडे ही खा जाने वाला सांप बच्चे कहां छोड़ेगा की तरह शनि की खुराक यानि शराब खोरी से शनि के नेक प्रभाव समाप्त होंगे और मंदे समय की साधारण लहर होगी। अपना बनाया नया मकान पिछली अवस्था 54-55 में कायम होगा। लेकिन अगर पहली अवस्था शनि की आयु 36-39 से पहले बना ले तो आखिरी अवस्था में उसी मकान में ल बे समय तक बीमार रहकर मौत हो। मंदे अस्पताल की तरह अपनी संतान और गृहस्थी जि मेदारियों की बेड़ी को समुद्र के मझधार के ठीक बीच ही छोड़ कर मर जाएगा कि उनकी आँहों को सुनने वाला शायद ही कोई संसारी गृहस्थी सहायक होगा या हो सकेगा।
3. दक्षिण के दरवाजे का साथ हो तो धन का मंदा हाल होगा और जब अय्याश जनाही हो और शराब खोरी अपना फर्ज ही बना ले तो अपना जिस्म आयु और स्वयं शनि का नेक प्रभाव सब मंदे और जलते ही होंगे, दंतकथा अफवाहें मंदे समय की पहली निशानी होगी। ठीक तो यही होगा कि जब कभी मौका आये शराब को मुंह में डालने की जगह ज़मीन पर गिरा दिया करे तो शनि का नेक प्रभाव बढ़ता है। उत्तम यही होगा कि शराब को जै राम जी की ही कर दे।
4. बुध की चीज़ें रिश्तेदार या कामकाज लड़की, बहन का मंदा हाल और हानिकारक होगा। फरेब और बेईमानी का पैसा अपने लिए ही कफन का बहाना होगा। अपने जन्म से पहले बने हुए मकानों और दरवाजों का रुख बदल देना यानि उखाड़ कर

पूर्व से पश्चिम या उत्तर से दक्षिण की ओर यानि पहले से उल्टी ओर (खासकर दक्षिण को) अच्छे बनाए खेल को मंदा कर देगा और जीवन मातम का संसार बन जाएगा।

5. नया सिरी माया चाहे विद्या अधूरी मगर धन-दौलत भला ही होगा, बेशक ज़माने का उतार-चढ़ाव बहुत देखेगा, मगर गुजारा मंदा न होगा।
6. तीनों ही निष्फल होंगे और मंदे असर के साबित होंगे। –जब बुध खाना नं० 3, वृहस्पति खाना नं० 9, शनि खाना नं० 11 में हो।
7. मंदी सेहत के समय स्त्री से कम से कम एक साल दूर रहे नहीं तो बीमारी 3 साल के लिए बढ़ जाएगी।
8. शनि बेकार और निष्फल होगा। –जब बुध दबा दबाया या मंदा हो।
9. राहु, केतु की चीज़ों के मंदे असर की निशानियों के समय मंगल का उपाय सहायक होगा। यदि वृ० निक मा हो या बाप बुजुर्ग गुरु या ल बी आयु का बूढ़ा कोई साथी न हो तो पुरोहित वृ० का उपाय सहायक होगा। मंदे समय में वृ० का उपाय और स्वयं के स्वभाव के असूल पर अगर शनि मंदा हो तो स्वयं शनि का उपाय सहायक होगा। कु भ यानि पानी का भरा हुआ घड़ा कायम रखना सब ही मंदी हालतों में और सदा ही नेक फल देगा।

सामान्य उपाय :-

शनि की पानी की तरह बहने वाली चीज़ें तेल या शराब स्पिरिट आदि सुबह सूरज निकलने के समय ज़मीन पर गिराने से राजदरबार गृहस्थी हालत और आमदन के संबंध में हर तरह की खराबियों से बचाव देगा।

शनि खाना नं० 12
(कलम विधाता, आराम)

मदद सांप ज़हरी, जो तेरी करेगा।
ज़माने में शत्रु न बाकी रहेगा।।

नाग बैठे न जले[1] जंगल में, मछली[2] नहाये जल[3] में।
साधु[4] खुशी हो अपनी समाधि[5], गृहस्थी[6] खुशी हो धन[7] में।
लेखा[8] क्या देखे दर्पण[9] में, जब शुक्र, मंगल नहीं[10] घर में।
(या शत्रु आए हो दर में।)
असर शनि का प्रबल ऐसा, सांप हाथों में खेलता हो[11]।
बुध[12] बारह न पापी मंदा, शेषनाग सोया करता हो।
व्यापार कबीला बेहद लम्बा, अरब, करोड़ी होता जो।
उत्तम शनि चाहे तख्त हो होता, पेशाब दौलत पे करता वो।
पिछली कोठरी घोर अंधेरा, रोशन जभी न होती हो।
पाप बैठा जब उच्च हो घर का, उत्तम रेखा मच्छ होती हो।
सूर्य छठे दीवार[13] जो फटती, स्त्री, स्त्री पर मरती हो।
पदम असर न झूठ शराबी, मच्छ मुआवन उड़ती हो।

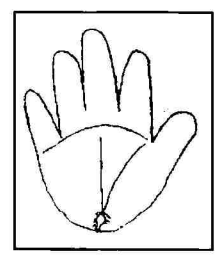

1. मंगल, बुध
2. मच्छ रेखा
3. चन्द्रमा खाना नं० 4 उत्तम नेक
4. खाना नं० 12 शुभ
5. उत्तम धन रेखा खाना नं० 7-9 नेक
6. बुध
7. कायम उत्तम
8. सूर्य, चन्द्र, मंगल
9. खाना नं० 2
10. शुक्र
11. उ दा हालत
12. वृहस्पति

13. अंधेरी कोठरी के दक्षिणी, पूर्वी कोने में बादाम शुभ। शनि मंदा होने से पहले बुध की मंदी निशानी दर्द आँख होगा।

हस्त रेखा

मच्छ रेखा जब आयु रेखा या उर्ध रेखा मछली के मुंह में हो तो शनि उत्तम फल देगा। लेकिन जब मच्छ रेखा के मुंह में सूर्य की तरक्की रेखा या बुध की सेहत रेखा गिर रही हो तो ज़ुबान का चस्का बर्बाद करेगा।

नेक हालत

1. शत्रुओं के संबंध में हाथ में त्रिशूल लिए वीर की तरह अच्छा व उत्तम जीवन गुजरेगा और सामान खुराक की कभी कमी न होगी। अगर सिर के बाल उड़ जाये तो धनवान और सुखी होगा।
2. अब राहु, केतु का टेवे में बुरा फल न होगा और बुध भी अपनी शरारतों से बाज आ चुका होगा।
3. अक्सर हर 6-12 साल की आयु में नया मकान बनेगा, मकान बनने को न रोके जैसा और जब बने बन ही लेने दे क्योंकि मकान बहुत बनेगें।
4. ज़हर और सभी सांप हमेशा इंसान को मारने का बहाना नहीं होते, शनि अब रात के समय सिरहाने बैठ कर रक्षा करने वाला अज़दहा होगा जो जले हुए को आबाद करने वाली आँख का मालिक होगा। शनि का नेक असर इतना प्रबल होगा कि यदि सांप भी हाथों में आ जाये तो लड़ने की बजाय खेलता होगा। शनि स्वयं शेषनाग का साया करने वाला होगा। व्यापार कबीला हर दो पैमाने पर उत्तम दर्जे पर होगे चाहे शनि अरब, करोड़ों रुपया दे परन्तु वह व्यक्ति छुपी हुई फरेब बाजी का आदी होगा। वह माया पर पेशाब की धार मारता होगा।
5. रात का पूरा आराम और सुख के लिए कलम विधाता की ताकत का मालिक होगा।
   -जब खाना नं० 2 में शनि के शत्रु = सूर्य, चन्द्र, मंगल न हो।
6. जब तक पिछली अंधेरी कोठरी कायम हो और पाप राहु, केतु उच्च बैठा हो उत्तम मच्छ रेखा का फल होगा, ऐसे समय मंगल भी खाना नं० 6 से 12 में होगा। -जब राहु खाना नं० 3-6, केतु खाना नं० 9-12 में हो।

क्याफा :- उर्ध रेखा मछली के मुंह में गिर रही हो।

7. अब शनि तारने वाला इच्छाधारी सहायक सांप होगा। **-जब राहु खाना नं० 12 में हो।**

मंदी हालत

1. अगर झूठ बोलने वाला, स्त्री बाज और शरारती हो तो पद्म और सहायक उम्र या मच्छ रेखा का भी नेक असर न हो। ज़ुबान का चस्का बर्बादी का बहाना होगा।
2. आँखों की बीमारी के बाद मंदी सेहत फिर बाद में शनि का मंदा प्रभाव शुरू होगा।
3. स्त्री पर स्त्री मरती जाये विशेषकर जब अपने मकान की पिछली दीवार फोड़कर मकान को रोशन कर लिया जाए।
   -जब सूर्य खाना नं० 6 में हो।
4. चन्द्र अब चुप होगा। -जब चन्द्र, राहु खाना नं० 12 में हो।
5. ज़ुबान का चस्का या बुध के काम चीज़ें रिश्तेदार बुध से संबंधित बर्बाद करे।
   -जब बुध मंदा हो।
6. तबीयत का गुस्सा राजदरबारी संबंध में सूर्य और शनि का आपसी झगड़ा साँप, बन्दर की लड़ाई का नज़ारा पैदा करेंगे।
   -जब सूर्य का संबंध हो।

क्याफा :-

मछली के मुँह में सूर्य की तरक्की रेखा या बुध की सेहत रेखा गिर रही है।

****

राहु

रहनुमाएं गरीबां मुसाफरां

राहु

रहनुमाएं गरीबां मुसाफरां
मुबारक यही तू जो आँसू बहाता।
हुई मौत - बीवी, चाहे शत्रु की माता।

फलक ढाँचा बहर दुनिया, दोनों नीला हो गया।
मदद पर जब राहु आया, दुनिया सर सब झुक गया।
मालिक[1] बदी का पाप एजेंसी, मौत[2] बहाने घढ़ता हो।
लिखा शनि का स्वप्न में पढ़ता, लिखा हुआ बद मंगल जो
साथ शनि स्वयं साँप का मणका[3], असर मगर खुद अपना हो।
बाद बैठा ले हुक्म शनि का, पहले बैठा खुद हाकिम हो।
शनि दृष्टि राहु पे करता, लोहा ताँबा रवि बनता हो।
राहु मगर हो उल्ट जो चलता, हस्द तबाही करता हो।
शनि बैठे को राहु देखे, राहु मंदा स्वयं होता हो।
मदद मगर न शनि को देवे, जंग लोहे को खाता हो।
मंगल राहु जब जुदा-जुदाई, मंत्री हाथी राहु बनता हो।
घर बैठक पर असर न कोई, मस्त खूनी चाहे कैसा हो।
मंगल बैठे जब साथ दृष्टि, असर केतु का देता हो।
असर मगर इस घर का गिनती, मिले असर जब घर में दो।
मंगल दृष्टि राहु पे करता, चुप राहु स्वयं होता हो।
उल्ट गर हो जब वह बैठा, बाजू मंगल के पकड़ता हो।
शनि रवि दो एक साथ टेवे, असर भला न दो का हो।
झगड़ा दोनों का लम्बा बढ़ते नीच राहु बद मंगल हो।

1. मंदे राहु के समय दक्षिण के द्वार का मकान का साथ न सिर्फ धन की हानि करेगा बल्कि उसका ताकतवर हाथी भी चींटी से मर जाएगा। जब तक खाना नं० 4 या स्वयं चन्द्र उत्तम हो, राहु कभी मंदा न होगा। चाँदी का उपाय सहायता करेगा।
2. मंगल खाना नं० 12 या 3 या सूर्य, बुध खाना नं० 3 या राहु स्वयं खाना नं० 4 के समय राहु कभी मंदा प्रभाव न देगा।
3. साँप की मणि जो उसके सिर में हो और जिसे साँप जान से भी ज्यादा मूल्यवान समझता हो।

दुनिया के फजीर का सोच-विचार जागते हुए ही इंसानी दिमाग़ में वाबी लहर और कयासी यालात की नकलों हरकत का 42 साल आयु का समय राहु का समय होगा। सब कुछ होते हुए भी कुछ न होना राहु शरीफ की वास्तविकता है। दिमाग़ी लहर का स्वामी, सब शत्रुओं से बचाव और उनका नाश करने वाला माना गया है।

आम हालत 12 घर :-

हाथी तख्त पर ग्रहण रवि का, 10 वें शक्की खुद होता वह।
लेख पगूड़ा गुरु मंदिर का, रोता गुरु घर 11 हो।
आयु धन का राखा तीजें, गोली पक्का बन्दूकची हो।
पाप कसम वह करता चौथे, संतान बची न पाँच की हो।
धुआँ शुक्र बुध 7 वें उड़ता, कटती फाँसी घर 6 से हो।
मौत नकारा घर 8 बजता, ज़हरी चन्द्र जब (शनि) साँप से हो।
जले धर्म 9 राहु मिट्टी, शफा पागल को देता हो।
लाख उम्मीदें 12 फर्जी, हाथी खर्च न रुकता हो।

हस्त रेखा

राहु, केतु की कोई रेखा बंधी हुई नहीं है। सिर्फ निशान बचे हों। जहाँ निशान मिले वह घर कुण्डली का होगा और अगर निशान भी न हो तो दोनों ग्रह अपने घर के होंगे। यानी राहु खाना नं० 12 में होगा केतु नं० 6 में होगा। मच्छ रेखा के समय राहु केतु उच्च घरों में यानी राहु 6-3, केतु 9-12 में। ये उच्च घर हैं। काग़ रेखा के समय यह दोनों नीच घरों के होंगे। यानी राहु खाना नं० 9-12 केतु 3-6 नीच घर।

नेक हालत

1. उत्तम प्र ाव के समय चोट लगने से नीला रंग हो चुके शरीर को फूंक से ही ठीक करने वाला मानिंद हाथी मगर सफेद रंग का हो।

2. आसमान के गु बद और संसार के समुद्र दोनों ही नीले रंग का मालिक राहु जिसकी सहायता पर आ जाए कुल संसार का सिर उसके सामने झुक जाए। मंगल के साथ या दृष्टि में होने से केतु का प्रभाव देगा। जब टेवे में मंगल शनि संबधित (जब मंगल स्वयं अपनी हैसियत में नेक मंगल हो) तो वह राहु सदा उत्तम और उच्च का होगा खासकर जब खाना नं० 4 खुद या चन्द्र उत्तम हो या मंगल खाना नं० 12 में हो (या सूर्य बुध खाना नं० 3) या राहु अकेला खाना नं० 4 हो तो राहु कभी मंदा प्रभाव न देगा बल्कि टेवे वाले की सहायता ही करता जाएगा और मंगल नेक के दौरान (खाना नं० 1 में आने के समय) पर चुप रहेगा।
3. मंगल बद जो लिखाये और शनि जिसे स्वयं लिखे उस लिखाई की याली सफ़र की शक्ति का मालिक राहु स्वप्न में ही (यानी मंगल और शनि के मंदे प्रभाव का उसे पहले ही पता चल जायेगा) पढ़ लेगा। कुण्डली में शनि के बाद के घरों में बैठा हुआ शनि से हुक्म लेकर काम करेगा। लेकिन शनि से जब पहले घरों में बैठा हो स्वयं हाकिम होगा और शनि को हुक्म देगा। यह चन्द्र को मध्यम करता है मगर चन्द्र के साथ ही ठंडा और अकेला बंधा हुआ चुपचाप रहने वाला हाथी होगा चाहे सूर्य को यह ग्रहण लगता हो मगर गर्मी से और भी अधिक हानि करने वाला हिलता हाथी होगा। वृहस्पति के शेर और साधु को तो कोढ़ और दमा ही कर देगा मगर बुध के पक्षी और शनि के कव्वे को न सिर्फ आसमान में उड़ने की ही हि मत देगा बल्कि (बुध, शनि-बुध, राहु) दोनों ही ग्रहों का उच्च प्रभाव देगा। अगर यह एक शुक्र का जानी शत्रु और केतु को रास्ता दिखाने वाला सरदार है तो दूसरी ओर शनि के साँप की मणि और मंगल के महावत के साथ शेरों का शिकारी हाथी भी माना गया है ।

मंदी हालत

1. राहु मंदे के समय इसका मंदा असर राहु की कुल अवधि (42 साला आयु) के पूरा होने पर दूर होगा। धन सांसारिक आराम बरकत 42 के बाद एकदम मिल जाएंगे।
2. कड़कती बिज़ली, भूचाल आग का लावा, पाप की एजेंसी में बदी का स्वामी, हर मंदे काम में मौत का बहाना घड़ने वाली शक्ति, ठगी, चोरी और अय्याशी का सरगना, आनन-फानन में चोर मार करके नीले रंग कर देने वाली छुपी लहर का नामी फरिश्ता क ी छुपा नहीं रहता ।
3. जिस टेवे में सूर्य, शुक्र मुश्तरका हों राहु अमूमन मंदा प्रभाव देगा और जब सूर्य, शनि मुश्तरका हों और मंदे हों तो राहु नीच फल बल्कि मंगल भी बद ही होगा।
4. कुण्डली में यदि केतु पहले घरों में और राहु बाद के घरों में हो तो राहु का प्रभाव मंदा और केतु शून्य बराबर होगा।
5. यदि राहु अपने शत्रु ग्रहों (सूर्य, मंगल, शुक्र) का साथ ले कर केतु को देखे तो संतान नर और केतु की चीज़ें काम तथा रिश्तेदार बर्बाद होंगे।
6. सूर्य की दृष्टि या साथ से राहु का प्रभाव न सिर्फ बैठा होने वाले घर पर मंदा होगा बल्कि साथ लगता घर भी बर्बाद होगा।
7. मंदे राहु के समय दक्षिण के द्वार का साथ न सिर्फ हानि करेगा, बल्कि उसका शक्तिशाली हाथी भी मामूली चींटी से मर जायेगा।
8. मंदे राहु के समय यानी जब बुखार, सांसारिक शत्रु या अचानक, उलझन पर उलझन आवे तो :

क) चाँदी का उपाय मदद दे जब मन अशांत हो यानी मन की शांति बर्बाद हो रही हो।
ख) दाल मसूर लाल रंग की दली हुई, भंगी को प्रातः दें या वैसे ही भंगी को पैसा आदि खैरात करते रहें।
ग) मरीज़ के वज़न के बराबर जौं (अनाज कनक जौं) चलते पानी में बहा दें।
घ) जौं रात्रि सिरहाने रखकर प्रातः जानवरों या किसी गरीब को बाँट दें।
च) राजदरबार या व्यापार के आए दिन झगड़े और शनि के समय अपने शरीर के बराबर वज़न के कच्चे कोयले दरिया में बहा देना सहायता देगा।

राहु खाना नं० 1

(सीढ़ी पर चढ़ने वाला हाथी, धन का प्रतीक मगर सूर्य बैठा होने के घर ग्रहण)

हुआ लेख अंधेर, बादल जो घेरा।
कोई पूछें आँसू, पसीना न तेरा।

हाथी बैठा तख्त पर तो, तख्त थरथराने लगा।
सूर्य बैठा जिस ही घर में[1], ग्रहण वहाँ आने लगा।
सूँड राहु की बुध हो बनता[2], केतु जिस्म बन चलता हो।
टोला तीनों का जिस दम मिलता, मौत फरिश्ता गूंजता हो।
चलती गाड़ी में रोड़ा अटका, माला भली जो टूटी हो।
होते सभी कुछ न कुछ होना, राम कहानी होती हो।
धन-दौलत और लड़के पोते, कायम सभी चाहे होता हो।
राहु चमक जब अपनी देवे, काम कोई न आता हो।
बुध, शुक्र हो जब तक उम्दा, ग्रहण असर न मंदा हो।
मंगल बैठा जब आ घर 12, राहु शून्य स्वयं होता हो।

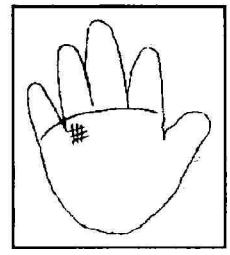

1. सिवाय सूर्य, बुध खाना नं० 3 बैठा होने का समय।
2. खाना नं० 1 से 6 पर सूँड का प्र ाव यानी बुध का प्रभाव जैसा भी टेवे के अनुसार जन्म कुण्डली या वर्षफल के हिसाब हो रहा हो। खाना नं० 7 से 12 पर बाकी शरीर का प्रभाव यानी केतु का प्रभाव जैसा भी टेवे के अनुसार जन्म कुण्डली या वर्षफल के हिसाब से।

हस्त रेखाः- **सूर्य के पर्वत पर राहु (जाल) का निशान हो।**

नेक हालत

सीढ़ी पर चढ़ने वाला हाथी दौलत मंदी (धनी) की निशानी अपने शरीर पर और कबीलदारी के कामों चाहे खर्च ज़्यादा होगा, मगर शुभ होगा। कुण्ड़ली में सूर्य बैठा होने वाले घर में अंधेरा ही होगा और टेवे में सूर्य ग्रहण/चन्द्र ग्रहण के समय सूर्य/चन्द्र पर राहु के ज़हर का कोई भी मंदा प्रभाव न होगा। अगर अंधेरा होगा तो सिर्फ एक तरफ, तमाम संसार में अंधेरा न होगा। यानी यदि एक तरफ भाग्य हार देगा तो सूर्य की चमक दूसरी ओर हो जाएगी और ग्रहण हटते ही सूर्य की पहली शक्ति सूर्य की पहली वाली शक्ति रिज़क सब कुछ फिर से बना देगी।

1. खाना नं० 1 से 6 पर हाथी की सूंड (बुध जैसा भी जन्म कुण्डली या वर्षफल में हो) और खाना नं० 7-12 पर हाथी के जिस्म (केतु जैसा भी जन्म कुण्डली या वर्षफल में हो) का प्रभाव होता है।
2. बिल्ली की ज़ेर सूर्य रंग के कपड़े में रखी हुई उत्तम फल देगी या सूर्य से संबंधित चीज़ों का दान शुभ और अशुभ दोनों हालत में सहायक होगा।
3. एक अच्छा मालदार आदमी होगा मगर स्त्री की सेहत निक्कमी तथा शक्की हो। -जब शुक्र खाना नं० 7 में हो।
4. राहु का प्रभाव नदारद न भला न बुरा यानी राहु अब कुण्डली में चुप होगा मगर गुम न होगा।-जब मंगल खाना नं०12 में हो।

राहु खाना नं० 1 के समय सूर्य बैठा हो जिस घर में	तो प्रभाव होगा
1.	राजदरबार में अपने दिमागी विचारों में बेबुनियाद वहम और मंदी शरारतें खड़ी होंगी ।
2.	धर्म विरुद्ध, पूजा-पाठ से घृणा, ससुराल और धर्म स्थान दोनों मान की जगह उनका अपमान करने वाला।
3.	भाई बंधुओं पर दुःख मुसीबत खड़ी हो।
4.	माता खानदान और खुद मुसीबत जाती आमदन में रोड़ा अवश्य अटकाता होगा।
5.	अब राहु, सूर्य की सहायता करेगा औलाद अवश्य होगी बेशक हाथी की लीद से घर की रोसयाही करे।
6.	लड़के-लड़कियों के संबंधियों की ओर से तोहमतें मिलें या बुरा- भला कहा जाए।
7.	अदालती काम और गृहस्थ कामों में हानि।
8.	बिना कारण खर्चे या आदमी की रोटी कुत्ता खा गया की बातें।
9.	न स्वयं ही धर्म से लापरवाही होगी अपितु पूर्वजों के धर्म मंदिरों को नावलों की लाईब्रेरी बना देगा।
10.	सांसारिक जीवन में बेएतबारी आम बर्ताव होगा।
11.	मुसिफ और न्यायपसन्दों को भी तक्कबर की बदबू से भर देगा।
12.	रात को सोते समय और आराम समय कोई न कोई लानत खड़ी रही होगी जिसका परिणाम कुछ हो या न हो।

मंदी हालत

अब राहु खाना नं० 1 की बिज़ली चमक रही हो, खाना नं० 1 से 6 पर हाथी की सूंड का साया यानी बुध का प्रभाव जैसा भी हो पड़ रहा होगा और खाना नं० 7-12 पर हाथी के बाकी शरीर का साथ यानी केतु का प्रभाव जैसा हो, पड़ रहा होगा।

1. जन्म समय स त वर्षा आँधी, नाना-नानी जीवित, टेवे वाले के जद्दी घर के निकलते ही सामने घर का हाल मंदा या वहाँ वीरान होगा, संतान न होगी, 40 साला आयु तक राहु की चीज़ें संबंधी कार्य सब मंदे या मंदा प्रभाव देंगे।
   -स्वयं (खाना नं० 1) से संबंधित के लिए।
2. राहु का कड़वा धुआँ —मस्त हाथी की शरारती सूंड चोरी करनी तो कोतवाल का क्या डर के—एतकाय का हामी, चोर या बदनीयत कोतवाल की तरह जो स्वयं चोरी आदि करता हो या करवा रहा हो, जिस्म फैलाए हुकूमत की कुर्सी को तोड़ रहा हो।
3. राहु की उम्र (11-21-42) पर पिता के लिए मंद भाग (सांसारिक व्यर्थ मेहनत) वारी व धन हानि का बहाना होगा।
4. तबदीली चाहे कितनी बार हो मगर तरक्की महदूद होगी।
5. सूर्य बैठे होने वाले घर के भाग्य को ग्रहण लगा होगा (स्वयं सूर्य को नही और सिवाय सूर्य, बुध खाना नं० 3 के समय) और राजा की जगह राज्य सिंहासन पर खर्राटे मारने वाला हाथी बैठे होने की तरह भाग्य का हाल होगा। चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना उसकी आम बात होगी। राम का नाम जपते-जपते अचानक माला टूट जाने की कहानी होगी। चाहे धन परिवार सब कुछ हो फिर भी कुछ न होना इसकी तासीर होगी (खाना नं० 1 की) और खासकर जब राहु की बिज़ली चमक रही हो (देखिए पक्का घर नं० 5) जो 42 साला आयु तक मंदे साथ का सबूत देगी। मंदे समय कोई आँसू तक न पोछेंगा।
6. शादी समय शनि या राहु की चीज़ों का कोई वहम न होगा मगर शादी के बाद ससुराल के यहाँ से शनि की चीज़ या राहु (बिजली आदि का समान) जिस समय टेवे वाले के पास आये राजदरबार या सूर्य बैठा होने वाले घर पर ग्रहण का समय हो जाये।
7. धर्म ईमान की खराबियां होंगी। -जब सूर्य खाना नं० 9 में हो ।
8. राहु का मंदा समय आम समय दो साल और एक साल के वर्षफल के हिसाब से 2 मास और सारी आयु के या आयु के पहले 42 साला हिस्से में 18 साल महादशा का समय हो सकता है, सूर्य ग्रहण (सूर्य+राहु, चन्द्र+केतु) के समय जो खराबियां होंगी वह अपनी स्वयं की ही पैदा ही हुई होंगी और जब कभी सूर्य बैठा होने वाला घर पहले ही मंदा हो तो माली खोलिया (आवारा फिरते-फिरते अपने आप बोलते रहने की बीमारी) का दु:ख होगा।

उपाय:-चन्द्र का उपाय सहायता देगा।

राहु खाना नं० 2
(राजा गुरु के मातहत, लेख पंगूड़ा, बरसाती बादल)

उम्र गुज़री मंदिर, मु. त माल खाते।
मिले दिल कहाँ, फिर जो खैरात बाँटे।।

लेख पंगूड़ा 2-8 घूमें,
भूचाल माया चंद्र रोके,
उम्र लम्बी गुजरान हो उम्दा,
बचत शून्य या हो गुना 11,
लेख धुआँ जब शनि हो मंदा,
शनि, केतु, बुध फौरन उम्दा,
धर्म मंदिर का पापी दुनिया,
जुल्म ज़माना बेशक कितना,
गुरु हालत पर माया चलती,
वर्षा मगर ज़र उस दिन होगी,

मिट्टी, सोना दो मिलता हो।
राजा[1] सखी वह होता हो
जंगल वासी चाहे राजा हो।
लेख झलक दो रंगा हो।
मदद[2] चंद्र, गुरु करता हो।
मंगल, शुक्र घर भरता हो।
कब्र बैठा खुद तरसता हो।
कैद राजा ना होता हो।
धुआँ निशानी होता है।
शनि तख्त गुरु उम्दा हो।

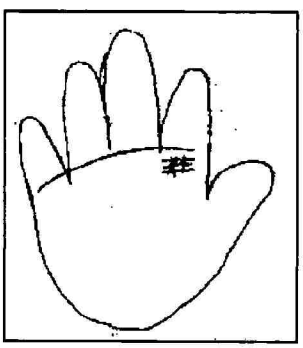

1. चाहे जगत् का ही राजा हो।
2. चंद्र (चाँदी की ठोस गोली), वृ० (सोना केसर पीली चीज़ें)।

हस्त रेखाः- **वृहस्पति के पर्वत नं० 2 पर राहु (जाल) का निशान।**

नेक हालत

1. मध्यम दर्जा की जगह अब राहु की चाल आखरी दर्जा (नेक या बुरी) होगी।
2. गृहस्थ दर्जा बेहद ल बा मगर माली दौलत की अच्छी या बुरी हालत का फैसला वृ० की हालत पर होगा। जिसकी निशानी राहु स्वयं ही अपनी चीज़ें काम या संबंधी राहु से दृष्टिगोचर होगा, मगर धन की वर्षा उस दिन होगी जब शनि खाना नं० 1 में आ जाये और वृहस्पति भी उत्तम हो।
3. यदि शनि के जाती स्वभाव के असूल पर या शनि खाना नं: 1 के हिसाब से उत्तम तो राहु का धुआँ उत्तम बरसाती बादल या आगे आने वाले अच्छे समय की निशानी होगी और शनि खाना नं: 1 या गुरु के उत्तम होते ही धन की वर्षा होगी। शनि मंदा तो ज़हर की गैस या मंदा कड़वा धुआँ जिससे दम और भी घुटने लगा।
4. यह घर राहु के लिए उसकी वास्तविक बैठक या गुरु का घर है जिसमें राजा समान है मगर चलेगा गुरु की आज्ञा अनुसार। पापी मंदिर में भी नहीं छुपते, जिस घर की कभी चोरी न हुई हो या वह घर जिससे चोर कोसों दूर भागे वह भी राहु की चोरी और दिन दहाड़े सीनाज़ोरी से बरी न होगा। **राहु मंदिर के नं: 2 में बैठा हुआ है और उसे चुराने को कुछ भी न मिले तो वह पुजारियों की आँखों के सामने और उनके पूजा करते-करते ही मंदिर की मूर्तियां बांध कर ले भागे। अर्थ यह कि राहु चोरी का स्वामी है और चोरी के वाकयात (माल या नकद) पर आम होंगे और वह भी जातक के सामने भी दिन दहाड़े। राहु का धर्म इतना ही होगा कि रात को कोई नुक्सान न होगा। दिन के समय अपनी संभाली जेब से भी माल चला जा सकता है। टेवे वाला के अपने अपना-आप चोर होने की शर्त नहीं मगर उसके पीछे चोर होंगे। चाँदी की ठोस गोली राहु की चोरी की शरारतों या ससुराल के मंदे हाल से बचाव करेगा।**
5. ऐसा व्यक्ति राजा या अधिकारी होगा चाहे जंगल का ही हो या जंगल का राजा हो और अगर धर्म मंदिर का साधु भी हो जाये तो भी हाथियों को खाना देने की शक्ति रखता हो।
6. वह सखी राजा के स्वभाव व हालत का स्वामी होगा।
7. भाग्य का लेख पंगूड़ा हो मिट्टी का सोना, सोने की मिट्टी होगी, उम्र उत्तम खुश जीवन हो।
8. नेक हालत में शुक्र का (25 साला समय) आयु धन के आराम का होगा।
9. कंगाल हो या घर छोड़ कर भागे राजा छोड़े, चाहे राजदरबार छूटे कुछ भी हो मगर वह किसी हालत में राजा की कैद में न होगा। मगर खैरायत के जमा हुए माल से चोरी का दाग न धो सकेगा। यानी जिस जगह और लोग अपनी मुसीबतों को टालने के लिए धन की खैरीयत दे रहे होंगे, वहाँ उससे चोरी हो ही जाएगी या कर लेगा।
10. वृहस्पति, शुक्र, चंद्र, मंगल जमा शनि केतु एक के बाद दूसरा चाहे मंदा भी होता जाए तो भी ऐसे टेवे वालों को राहु की सबसे ऊपर सहायता होती जाएगी ।

मंदी हालत

1. राहु की अवधि (42-21-10..5) यदि जद्दी मकान के उत्तर, पश्चिम कोना (छत) पर बैठकर पूर्व की तरफ मुंह करके अमूमन मकान कुंडली खाना नं० 2 की जगह में धुआँ रोटी पकाने के लिए नया मकान कायम होवे तो राहु न सिर्फ टेवे वाले का बल्कि उसके ससुराल और उसके अपने घर (खानदान) का धुआँ निकाल देगा जो टेवे वाले की 36 से 42 साल की आयु तक ज़ोर से मंदी हालत पर प्रभाव देता जाएगा। भाग्य का हाल ऊपर से नीचे घूमते पंगूड़े की तरह (सोने से मिट्टी - मिट्टी से सोना) दोनों ढंग की हालत होगी। मंदे वाकयात और गबन, चोरी आदि से धन हानि बहुत होगा आम होगी कैदखाना, जेलखाना, बेएतबारी, हर तरह और हर और का काला समय (बुरा समय) ज़ोर पर होगा।
2. ऐसी हालत में चन्द्र (चाँदी की ठोस गोली) या वृहस्पति की चीज़ें (सोना, केसर, पीली चीज़ें) अपने शरीर पर या पास रखना सहायक होगा या अपने उत्तर पश्चिमी कोने, खज़ाने की जगह, ाना नं० 2 मकान कुण्डली के हिसाब से, वाले मकान में चन्द्र की चीज़ें रखें।
3. ऐसा व्यक्ति चाहे सारी आयु मु. त का माल खाते गुज़ार दे मगर स्वयं भिक्षा नहीं देना चाहेगा।
4. माया धन पर मंदे ूचाल को चन्द्र रोकेगा या माता से नेक संबंध होने पर सब कुछ उत्तम होगा।
5. भाग्य की हालत मंदे ज़हर से भरे हुए धुएं जैसी होगी। -जब शनि मंदा हो।

6. धर्म मंदिर खाना नं० 2 में बैठे हुए पापी (राहु, केतु, शनि) की तरह अपनी कब्र को भी तरसेगा यानी ऐसा व्यक्ति धर्म मंदिर में बैठकर भी पाप करने से पीछे नहीं रहेगा और अपनी आखिरी अवस्था खराब कर लेगा। 25 साला आयु तक केतु जो राहु खाना नं० 2 के समय खाना नं० 8 का हुआ करता है का फल उत्तम रहेगा। मगर 26 वें साल राहु और केतु दोनों ही का फल मंदा शुरु हो जाएगा।

राहु खाना नं० 3
(आयु तथा धन का स्वामी, रईस, गोली बन्दूक लिए पहरेदार)

अक्लमंद कभी तेरा शत्रु बनेगा।
बुरा यार अहमक से कमतर करेगा।।

साल खबर दो पहले देता,
जाल नर्क त्रिलोकी करता,
आयु रद्दी और शर्त तरक्की,
मन्द 12 कोई दूजा साथी,
बुध, रवि घर तीजे साथी,
साथ मंगल से शाही सवारी,
साथ बैरी ना राहु मंदा,
स्त्री धन दौलत हर दम सुखिया,

स्वप्न सच्चा उसे आता है।
संतान रहित कभी न होता हो।
मालिक ज़ागीरों का होता हो।
34 केतु बुध ' मंदा हो।
बहन दु:खी पतिहीन बैठी हो।
राजा महावत हाथी हो।
न ही ग्रहण रवि होता हो।
संतान अमीरी भोगता हो।

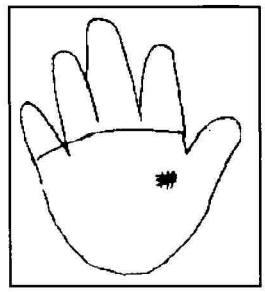

1. खाना नं० 12 में।

हस्त रेखा:- **मंगल के बुर्ज नं० 3 पर राहु (जाल) का निशान।**

नेक हालत

1. ऊँचे आसमान की चोटी तक सहायता करने वाला अमीर जायदादों वाला होगा, राहु अकेला ही होने की हालत में स्वयं आयु और धन का राखा। हाथ में बंदूक गोली लिये पक्का निशान बाज और चौकन्ना पहरेदार है। ऐसा आदमी कभी किसी से न डरेगा चाहे शेर के शिकारी हाथी की तरह जंगल और वीराना ही क्यों न हो। बेधड़क होकर सहायता करने वाला होगा यदि वह शत्रु भी हो जाये तो भी बेवकूफ मित्र से कम ही बुरा करने वाला बल्कि आखिरकार शु ा ही होगा।
2. किसी बात के होने से 2 वर्ष पहले ही उसे उस का ज्ञान हो जाएगा और जो स्वप्न आयेगा वह सच्चा होगा, त्रिलोकी के नर्क का जाल काटेगा। नि:संतान कभी न होगा। ल बी आयु और तरक्की। ज़ागीरों की मालकियत की शर्त ज़रूरी है, स्वयं सुखिया, शत्रु का सर कटने के लिए कलम में तलवार से अधिक शक्ति होगी। सूर्य का प्रभाव अब 2 गुना नेक होगा, आखिर समय जायदाद ज़रूर बाकी बची रहेगी और कर्ज़ा कभी भी न छोड़ कर जाएगा। दुश्मन पर हावी होगा।
3. शाही सवारी का हाथी या राजा की गिनती का आदमी होगा।-जब मंगल खाना नं० 3 में हो।
4. राहु अब शत्रु ग्रहों से मंदा न होगा और न ही मरेगा, शत्रु ग्रहों के प्रभाव में भी कोई खराबी न होगी बल्कि सब और से सुखिया होगा। -जब शत्रु सूर्य, मंगल, शुक्र साथ या साथी हो।

मंदी हालत

1. भाई संबंधी धन को बर्बाद करेंगे, धन उधार बतौर कर्ज़ा लेकर मुकर जाएंगे या धोखा फरेब से तबाह करेंगे।
2. मंदे समय चंद्र का उपाय मदद दें।
3. 34 साला आयु तक बुध, केतु दोनों ही मंदे होंगे। -जब कोई भी ग्रह खाना नं० 12 या साथ या साथी खाना नं० 3 में (सिवाय मंगल खाना नं० 3 के)।
4. सूर्य, बुध की आयु में बहन विधवा दु:खी हो मगर उस (टेवे वाला) को हर तरह का मान हो। -जब सूर्य, बुध खाना नं० 3 साथी हो।

उपाय

हाथी दांत पास रखना बर्बादी कर देगा।

राहु खाना नं० 4
(धर्मी मगर धन के आम ग़म)

भला कहते स्नान गंगा जो करता।
वही तेरा स्वयं अपने घर का ही बनता।।

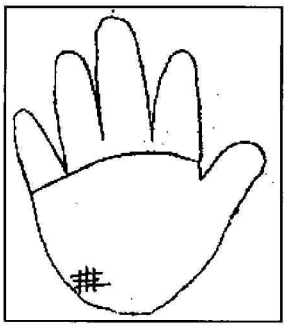

राहु खड़ा[1] न जब तक करते, धर्मी टेवा वह होता हो।
चन्द्र उत्तम या तख्त पे बैठा, हाथी माया में नहाता हो।
माया चन्द्र के घर से लेता, बुध घरों में भरता हो।
ससुराल धन ज़र शादी बढ़ता, केतु समय गुरु फलता हो।
लेख भला जो मामा घर का, मिटता उम्र सब चन्द्र हो।
साथ मिलेगा रवि, मंगल का[2], बैठा कोई जब[3] मंदिर हो।
वें ग्रह नर चन्द्र साथी, मदद शनि चाहे हल्की हो।
साल गुज़रते आयु चन्द्र की, वर्षा धन-दौलत होती हो।

1. स्वयं अपनी कोशिश से और सिर्फ शौकिया ही राहु की चीज़ें कायम करना उदाहरण टट्टी खाना, नमरती, भट्टी बनाते बदलते रहना, कोयले की बोरियों के अ बार जमा कर लेना सिर्फ छतें बदलना।
2. सूर्य या मंगल से एक या दोनों।
3. मंदिर – खाना नं० 2 ।

हस्त रेखाः- **चन्द्र के बुर्ज नं० 4 पर राहु (जाल) का निशान।**

नेक हालत

1. धनी होने की निशानी होगी।
2. धर्मी टेवा, चन्द्र के बेज़ान चीज़ों का फल मध्यम बल्कि मंदा ही होगा। चन्द्र की सिफतें विद्या तथा बुद्धि का साथ, खर्चा चाहे मनमर्ज़ी पर करे मगर ल बा और शुभ खर्चा होगा।
3. केतु और शनि बुरे कामों में अब राहु के साथ हाँ में हाँ नहीं मिलाएंगे और उनका अपना फल होगा राहु, स्वयं माता के चरणों में सिर झुकाए माता-पिता के संबंध में पाप न करने की कसम उठाये हुए नेक और धर्मात्मा होगा। जब तक अकेला ही हो या चन्द्र के साथ खाना नं० 4 में हो। वर्ना अपनी शरारती नस्ल का सबूत देगा। ऐसे व्यक्ति का अपना घर ही का स्नान, गंगा स्नान यात्रा करने से अच्छा होगा।
4. माया पर हाथी का साया या माया में नहाता (बहुत धनी) और जैसा चन्द्र होगा वैसा ही राहु के हाथी की सूंड में पानी भरा हुआ (या धन की हालत) होगा। धन चन्द्र बैठा होने वाले घर से लेगा यानी चन्द्र बैठा होने वाले घर की संबंधित चीज़ें काम या संबंधी से वह धन पैदा करने को सहायक होगा और जहाँ बुध बैठा होगा उस घर में भर देगा। यानी बुध जिस घर में हो उससे संबंधित रिश्तेदार या काम या चीज़ें उससे लाभ उठाएंगे और स्वयं उसे सहायता देंगे।
   –जब चन्द्र उच्च या खाना नं० 1 में हो।
5. जैसे राजदरबार से धन कमा कर पुरखों के घर भर दे।
   –जब चन्द्र खाना नं० 1, बुध खाना नं० 10 में हो।
6. विवाह के दिन से ससुराल का धन बढ़ता होगा और टेवे वाला उनमें से अपना हिस्सा लेता होगा।
   –जब शुक्र उत्तम हो।
7. टेवे वाले पर राहु का साया होगा, सूर्य और मंगल सहायक होगा।
   –जब सूर्य, मंगल या दोनों खाना नं० 2 में हो।
8. आयु का 12, 24, 48 साल में या संतान के जन्म दिन से माता-पिता के लिए शुभ और उत्तम फल होगा।
   –जब केतु उत्तम हो।

मंदी हालत

1. आयु के 24, 48 साल चन्द्र की बेज़ान चीज़ों का फल मंदा होगा। मगर वह धर्मी और बुद्धि का स्वामी होगा। 45 साला आयु से राहु, केतु दोनों ही का उत्तम फल होगा। मामा घर का उत्तम लेखा, चन्द्र की आयु 6, 12, 24 तक बर्बाद हो चुका

होगा। स्वयं धर्मी होगा मगर मंदी हालत में धन के फिक्र ग़म आम होंगे, खासकर जब स्वयं जानबूझ कर राहु खड़ा किया जाये। राहु खाना नं० 4 वाला अगर मकान को छेड़े तो सिर्फ छत ही बदल कर न हट जाये बल्कि नीचे से ऊपर तक कुल इस छत से स बन्धित, चार दीवारी और छत दोनों को ही बदले वर्ना राहु खड़ा गिना जाएगा और धन की कोई न कोई हानि हो जायेगी या हानि का बहाना हो जाएगा। मकान या छत की मुर मत इस बात से बरी होगी यदि सिर्फ छत खराब हो गई हो तो नई छत में पुरानी छत का कुछ सामान मिला कर दोबारा छत डाल देवे जिससे कि नई डाली गई छत नई न गिनी जाएगी बल्कि मुर मत की गई मानी जाएगी।

2. धन-दौलत का प्रभाव हल्का रहेगा। -जब चन्द्र उत्तम न हो।
3. सब ग्रहों पर धुआँ पड़ता होगा, मगर मंदा समय स्वप्न की तरह गुज़रता होगा और चन्द्र की आयु गुज़रते ही धन की वर्षा होगी सब नर्क धुल जाएंगे। -जब चन्द्र, मंगल नर ग्रह (सूर्य, मंगल, वृहस्पति) खाना नं० 10 या चन्द्र खाना नं० 4 में हो।

राहु खाना नं० 5
(शरारती, संतान गर्क मगर सूर्य को तारे)

खुशी दिन त्यौहार काफिर जो बनता।
निशानी लावल्दी की पैदा वह करता।।

पहली स्त्री संतान न देखें,
लावल्द ज़रूरी जोड़ी गिनते,
साल 21 घर पहला लड़का,
नं० दूसरा जिस दम आता,
साथ चन्द्र, रवि तख्त पे बैठे,
बैठी माता न साथी होवे,
रवि, चन्द्र या मंगल चौथे,
गिनती औलाद न लेख ही मंदे,
शनि मंदा जब बैठा हो।
दिया बत्ती गुल करता हो।
आयु 42 दूजा हो।
ससुर बाबा चल बसता हो।
मदद राहु खुद करता हो।
ज़िन्दी होवे मच्छ रेखा हो।
चन्द्र घर 6 वें 12 हो।
योग नस्ल चाहे मंदा हो।

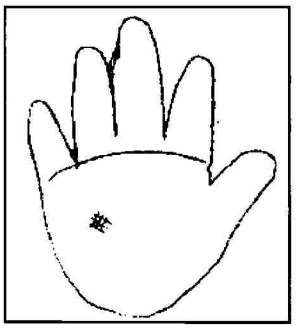

हस्त रेखा :- सूर्य की तरक्की रेखा पर राहु (जाल) का निशान।

नेक हालत

1. वृ० (धर्म मर्यादा, मान, बुद्धि, आमदन) और माया धन का उत्तम फल, खुद तेज़, उत्तम स्वास्थ्य और स्वयं सूर्य को शक्ति देने वाला, जिससे दरबार से संबंधित बरकत देवे। यदि माता ज़िन्दा तो उसके आखिरी दम तक संतान और धन दोनों की बरकत होगी। मगर वृहस्पति, शनि मुश्तरका नं० 7 के बराबर बड़ी भारी मच्छ रेखा न होगी। यानी नर संतान ज़रूर और जल्दी होगी मगर यह ज़रूरी नहीं कि 9 लड़के 2 बहने और धन का भी साथ देगी या हालत बादशाही होगी। बहरहाल परिवार तथा माया की ओर से सुखिया ही होगा।
2. आबिद (पूजा करने वाला) सूफी और ब्रह्मसनाश (पहचानने वाला) होगा, दौलत पर हाथी का साया चंद्र के साथ से चाहे औलाद (नर या मादा) के विघ्न ज़रूरी होंगे। मगर संतान की बाकी सब बातें गिनकर संतान के लिए कोई मंदा न होगी। बल्कि राहु अब चंन्द्र और सूर्य की स्वयं सहायता करेगा। माता अमूमन लंबे समय तक टेवे वाला का साथ न देगी (छोटी उम्र में गुज़र जावे या वैसे ही जुदा हो जावे) मगर माता जीवित या साथ होने पर मच्छ (माली) होगी।
   -जब चन्द्र खाना नं० 5, सूर्य खाना नं० 1, 5, 11 में हो।
3. औलाद के योग चाहे लाख मंदे हो लेकिन अब गिनती औलाद और हर तरफ से आयु और नसीबी की बरकत होगी। उसके भाई स्वयं समेत योगी राजा के समान और वह पाँच बेटों का बाप होगा। मगर उससे अधिक औलाद जिस कदर बढ़ेगी भाई औलाद से घटते ही होंगे। -जब सूर्य, चन्द्र, मंगल खाना नं० 4-6 या शनि, मंगल खाना नं० 5 में हों।

मंदी हालत

1. अचानक बिजली गिरने पर जान और बेज़ान का क्या फर्क होगा, की तरह ऐसे प्राणी की सेहत बीमारी पर फ़िज़ूल खर्चा आम होगा।

2. औलाद के त्यौहार या खुशी के दिन न मनाने वाले काफिर को औलाद देखनी ही कब नसीब होगी बल्कि उसकी औलाद (नर संतान) का दिया बुझा हुआ होगा। खाना नं: 5 में शनि-औलाद को मारने वाला साँप और खाना नं: 9 का शनि औलाद की जन्म के रास्ते में एक बड़ा भारी पहाड़ बन गया। शनि की इन दो हालतों के मुकाबले पर राहु खाना नं: 5 नर संतान के संबंध में एक ऐसी कड़कती हुई बिज़ली या ज़मीन के अंदर भूचाल पैदा करने वाला चलता हुआ लावा होगा जो कि संतान को माता के पेट में आते ही या गर्भ ठहरते ही अपने ज़हरीले असर से समाप्त कर दिखाएगा यही राहु खाना नं: 9 के संतान के संबंध में साँप की ज़हरीली सिरी (सिर का हिस्सा जब साँप का बाकी शरीर कट चुका हो) भागती हुई साबित होगी जो कि पैदा शुदा बच्चों को उनके भागने की ताकत पा जाने के दिन तक मारने से गुरेज न करेगी या राहु खाना नं: 5 में बच्चे माता के पेट में मर गए तो राहु खाना नं: 9 के समय खेलना-कूदना सीखते ही उस संसार से कूच करते गए हों (दूसरे शब्दों में नर संतान देरी से पैदा हो या बिल्कुल ही न पैदा हो या माता के पेट में ही गर्क होती हो)। अगर पैदा हो ही जाये तो 12 साल तक संतान की सेहत मंदी ही होगी। फिर भी बाबे, पोते का झगड़ा होगा। जिसकी पैदाइश पर टेवे वाले का बाप या ससुराल चलता बनेगा, यही हालत राहु की उम्रों में संतान पैदा होने या संतान की आयु होने पर हो सकती है। ऐसे टेवे में खास संभोग के समय स्त्री की इच्छा की ज़्यादती नर संतान की ज़्यादती का कारण होगा। अगर राहु खाना नं: 5 का बुरा असर उसकी औलाद पर न हो तो हो सकता है कि राहु खाना नं: 5 का बुरा असर टेवे वाले के पोते पर हो जाये।
3. हर हालत में न सिर्फ राहु की कड़कती बिज़ली और शरारती हाथी का फल मंदा होगा बल्कि शनि के ज़हर का बुरा असर दिन प्रतिदिन बढ़ता ही होगा, अमूमन नि:संतान होगा वर्ना पहली मर्द/स्त्री नर संतान ना देखे। बल्कि मर्द तथा स्त्री की जोड़ी पहले चाहे दूसरी (जब पहली स्त्री या मर्द तबदील ही हो जाये) नर संतान के देखने या अपने लड़कों के सुख को तरसती ही होगी।
4. आयु के 12 साल तक संतान ही सेहत और बाप (टेवे वाले) बाबे (टेवे वाले का बाप) की किस्मत बल्कि उम्र तक मंदी ही लेंगे। वृहस्पति साथ या साथी या राहु का बाबत दृष्टि आदि वृहस्पति से आपसी झगड़ा।
5. एक ही स्त्री से 2 बार शादी की रस्म या रिवाज़ दो दफा कर लेने से राहु की ज़हर दूर होगी।
6. जद्दी मकान में दाखिले के समय सब से पहली दहलीज़ के नीचे (तमाम की तमाम में) चाँदी का पत्रा देवे या शुक्र की चीज़े (गाय, पशु आदि) कायम करें या चाँदी का ठोस हाथी (छोटा सा खिलौना सा) शनि की मंदी कार्यावाही से परहेज़ करे तो राहु का मंदा असर औलाद पर न होगा।

राहु खाना नं० 6
(फाँसी काटने वाला सहायक हाथी)

गिरे तुझसे जब खून भाई का कतरा।
नस्ल बंद तेरी का बढ़ता हो खतरा।।

असर वही जो शनि 12 के,
पहाड़ ऊँचे जा शत्रु मारे,
बुध, मंगल कोई 12 मंदा,
बीमारी ज़हमत का पता न चलता,
शगुन शुभ कुत्ता काला,
गोली सिक्का या काला शीशा,
फाँसी लगा खुद छुटता हो।
ताक त दिमाग़ी ऊँचा हो।
आग़ जली ' खुद होता हो।
माया छुटी घर लुटता हो।
छींक उल्ट न उम्दा हो।
असर उत्तम देता हो।

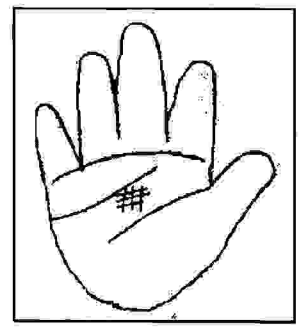

1. ससुराल का भाग्य कौसें कज़ाह होगा।

हस्त रेखा

हथेली की बड़ी आयत [ ] खाना नं० 6 में राहु का निशान।

नेक हालत

1. जाती वस्तुएं और पोशिश (कपड़ा) पर उ दा और नेक खर्चा होगा।
2. खाना नं० 6 में अकेला बैठा हुआ बिजली की ताकत का स्वामी और सैहजोर हाथी की तरह गले में फाँसी की रस्सी लगी

हुई को भी काट देने वाला, हवा की तरह सहायक होगा, नामी चोर सज़ा से क्या डरेगा। नामवर चोरों को सज़ा देने वाला सदा ऐसे प्राणी का स्वयं सहायक-रक्षक होगा।

3. राहु अब मंदी शरारत से सदा दूर रहेगा, दिमाग़ी ताकत उत्तम देगा।
4. शनि खाना नं० 2 का दिया हुआ उत्तम असर साथ होगा, ऊँची ताकत वाले पहाड़ की ऊँचाई पर बैठे हुए शत्रु को तुरंत मार देगा।
5. सदा तरक्की की शर्तें हैं बार-बार तबदीली की शर्त न होगी।
6. दिमाग़ी ाना नं० 14 (शनि से) ताकतवर और खुदपंसदी का मालिक होगा।
7. पूरा काला कुत्ता सदा उच्च शगुन होगा।
8. सिक्के की गोली या काला शीशा सहायक होगा।

मंदी हालत

1. अपनी ही फौज को मारने वाला गंदा हाथी हर तरफ मंदा कीचड़ ही फैलाएगा।
2. नामी चोर सज़ा से क्या डरे।
3. तेरे हाथों से भाई के खून का गिरा हुआ कतरा तेरी नस्ल ही मार देगा।
4. आगे से उल्ट छींक मंदे प्रभाव की पहली निशानी होगी।
5. बीमारी का घर मगर अब उसका कारण मालूम न हो सके, धन-दौलत लुटता और घटता जावे।
   -जब बुध या केतु मंदा हो।
6. जब बड़े भाई या बहन से लड़े, चुल्हे की आग़ बुझे (टेवे वाले का खाना व रोटी बर्बाद हो जाये)।
   -जब मंगल खाना नं० 12 में हो।
7. धर्म ईमान नेकी तथा मान के लिए राहु स्वयं मंदा। सुसराल की किस्मत मानिन्दें कौसें कज़ाह परन्तु अक्सर मंदी हालत ही होगी। धर्म स्थान में बैठे हुए होने के इलावा सूर्य की गर्मी से अब ना सिर्फ खाना नं० 6 का (जहाँ कि राहु उच्च माना है) प्रभाव मंदा होगा बल्कि खाना नं० 2 और खाना नं० 7 भी मंदा ही प्रभाव देंगे।
   -जब बुध खाना नं० 12, सूर्य खाना नं० 2 में हो।

राहु खाना नं० 7
(चण्डाल, लक्ष्मी का धुआँ निकालने वाला)

फर्क बीवी बैठी या हो नज़र माता।
बढ़ेगी दिमाग़ी, याली खुशी का।।

बुध[1] शुक्र का तराजू उल्टे,
धन का वह राखा होवे,
शनि देव उस रक्षा करेंगे,
मच्छ रेखा फल उत्तम देवे,
राज संबंध पदवी ऊँची,
वृक्ष तले हो जिस जा बैठा,
केतु कुत्ता हो सबसे मंदा,
काग (पेशा) राहु ही जो जब करता,
तख्त शुक्र से मिट्टी उड़ती,
उल्ट जगी सब हालत होती,

स्त्री[2] मंद परिवारां[3]।
खावे दोस्त यारां।
शत्रु मरे दरवारां।
बुध, शुक्र 2-11।
धन स्त्री न सुखी हो।
उखड़ा वही जड़ जलता हो।
अय्याश जनाही होता हो।
खतरा उम्र तक बढ़ता हो।
जलती सेहत ज़र माया हो।
अमीर होता सबसे उत्तम हो।

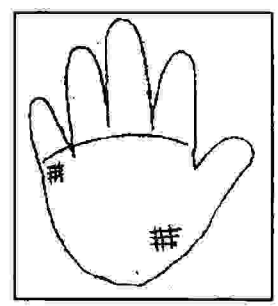

1. खुद तुला राशि के दोनों पलड़े (बनावटी सूर्य) गृहस्थी हालत।
2. स्त्री के टेवे में तलाक मंदी हालत आदि होगी। मर्द के टेवे में स्त्री की आयु बर्बाद या कई बार शादी या शादी या स्त्री के माँ-बाप का कुनबा बर्बाद, जब शादी 21 साला आयु में हो।
3. बुध, शनि, केतु कोई खाना नं० 11 या संसारी यार मित्र।

हस्त रेखा :- **शुक्र या बुध के पर्वत पर राहु का निशान।**

नेक हालत

1. स्वयं धनी मगर स्त्री तथा धन का गृहस्थी सुख (शुक्र का प्रभाव) मंदा होगा। ससुराल तथा स्त्री चाहे मंदे हो मगर सूर्य कभी मंदा न होगा और राजदरबार में ऊँची पदवी पर होगा उसे किसी के आगे गरीबी के कारण हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा।
2. बुध शनि हर तरह से सहायता देंगे और राजदरबार के सभी शक्तिशाली शत्रुओं को मार देंगे।
3. मच्छ रेखा (माली) धनी का पूरा उत्तम फल होगा। -जब बुध, शुक्र खाना नं० 2-11 में हो।

मंदी हालत

बुध, शुक्र का तराजू उल्टे, स्त्री मंद परिवारां।
दौलत का वह राखा होवे, खावे दोस्त यारां ।।

1. धनी मगर चण्डाल राहु जो हर तरफ मंदा धुआँ कर दे।
2. औरत के टेवे में 21 साला उम्र से पहले या 21 वें साल शादी व्यर्थ होगी यानी या तो वह खुद गुज़र जायेगी या तलाक हो जायेगा या उसका पति चल बसे या दोनों में से कोई एक या दोनों ही घर बार से भागे हुए और हर तरह से अपनी बदचलनी या मंदे जीवन से बदनाम होंगे। यही प्रभाव (मंदा) पुरुष के टेवे में राहु खाना नं: 7 के वक्त होगा। संक्षेप में 21 साला उम्र से पहले या 21 वें साल शादी होने पर (चाहे मर्द के टेवे में राहु खाना नं: 7 हो चाहे औरत के) घी के पराठे पर कुत्ते के पेशाब की तरह मंदा गृहस्थ। ऐसा अय्याश जनाही (जनानीबाज) कि उसे गंदे इश्क में अपनी (पति, बेटा-स्त्री का टेवा, औरत, बेटी-मर्द का टेवा) में कोई फर्क न होगा और जलती हर तरफ से मंदी हालत की नींव का कारण केवल अपने ही फर्जी विचारात होंगे। व्यापार सट्टा का फल मंदा ही होगा। टेवे वाले को सुख मिलने के बजाय, खुद स्त्री धन भी मंदे बल्कि दोनों का ही धुआँ निकले स्वयं धन का रखवाला होगा। मित्र उसे खाते जाएंगे। झगड़े, घर में भी बेबुनियाद, औरतों की लानत और मौत बीमारी पर व्यर्थ ल बे खर्चे, पुरुष की तलाक तक नौबत और गृहस्थ की हर तरफ से मंदी हालत होगी। औरत के टेवे में स्त्री की कई बार शादी या स्त्री के माता-पिता बर्बाद होंगे अगर टेवे वाले की (चाहे मर्द चाहे स्त्री) 21 साल से पहले या 21 वें साल में शादी हो जाये तो राहु मंदी हालत से शुक्र व बुध दोनों ग्रह (बनावटी सूरज) गृहस्थी हालत की तराजू उल्टी या शुक्र बुध के सब काम चीज़ें रिश्तेदार और लक्ष्मी का तो धुआँ निकाल देगा और कभी माफ न करेगा। मुसीबत का मारा ऐसा व्यक्ति जिस वृक्ष के नीचे बैठे वही बैठे वही बर्बाद हो। केतु का प्रभाव सबसे मंदा होगा।
3. अगर पेशा, काम (बिज़ली, जेलखाना, पुलिस) का हो तो आयु तक शक्की हो।
4. शादी के वक्त लड़की की तरफ से (जब राहु चाहे मर्द या चाहे औरत के खाना नं: 7 का हो) खालिस चाँदी की डली ऐन उस वक्त जब लड़की का संकल्प हो उसी दान करने वाले के हाथ से लड़की के दान किए जाने के बाद ही, लड़की के दान किया जाने की तरह दान करवा कर लड़की को अपने पास र ने के लिए दी जाये तो हर तरह से गृहस्थ में मदद होगी वर्ना मर्द और औरत हर दो की जुदाई और तलाक और मंदा बर्बाद जीवन होगा। यह चांदी की डली खुद व खुद समय के उतार-चढ़ाव से न कभी गुम होगी न क ी चोरी होगी। ध्यान सिर्फ यह रहे कि खुद उसे बेचकर न खाए। **बदनामी की मंदी मिट्टी उड़ती, औरत की मंदी सेहत और धन बर्बाद के समय घर में यही चाँदी की ईंट रात का चौकीदार होगी, शनि का उपाय नारीयल चलते पानी में बहाना सहायक होगा। कुत्ते से संबंध बर्बादी का कारण होगी।**
5. **राहु खाना नं: 7 जब वर्षफल के हिसाब आये (चाहे जन्म कुण्डली के हिसाब हो), तो घर में खालिस चाँदी की ईंटें और इसके इलावा एक बर्तन मे दरिया का पानी डालकर उसमें खालिस चाँदी का टुकड़ा डालकर टांका लगवा कर मुंह बर्तन का बंद करे घर में रखे। जब तक वो बर्तन घर में रहे राहु के मंदे प्रभाव से बचाव होता रहेगा। पानी देखते जाये, कि बर्तन का पानी खुश्क न होने** पाये जब खुश्क होता नजर आये तो उससे पहिले ही उसमें और पानी मिला कर मुंह बंद करवा दिया करें ।
6. अगर शादी 21 साला उम्र से पहिले हो चुकी हो तो राहु नं: 7 वाला (चाहे स्त्री,चाहे पुरुष)चांदी के बरतन गिलास या चांदी को कोई गोल (कटोरी आदि) **बर्तन में गंगाजल या किसी भी दरिया का पानी डालकर उसमें खालिस चाँदी का टुकड़ा डालकर (वज़न की शर्त नहीं चाहे कितना छोटा-बड़ा हो) धर्म स्थान में देवें (रख आवे) और ऐसा ही एक और बर्तन गंगा जल या किसी नदी का पानी (चलता रहने वाला या कुदरती पानी—बारिश, ओले या बर्फ**

का पानी) भर कर उसमें खालिस चाँदी का टुकड़ा डालकर औरत अपने पास रखे तो हर प्रकार से सहायता होगी।

7. बुध, शनि, केतु **में से कोई खाना नं:** 11 में हो इसी ग्रह से संबंधित चीज़ें काम या रिश्तेदार टेवे वाले को खाये या बर्बाद करें।

–जब बुध, शनि, केतु खाना नं० 11 में हो।

8. दूसरी नर औलाद 42 साल के बाद नसीब होगी। –जब **मंगल**, शनि **मुश्तरका** या **मंगल**, शनि **अकेले-अकेले** खाना नं० 5 में हों।

राहु खाना नं० 8
(नकारा कूच, मौत का मालिक, कड़वे धुएं का संदेश)

हुक्म मौत मालिक न फरियाद जोई।
सिर्फ दादापनी न दिलदार कोई ।

चाल चंद्र और हुक्म शनि का, असर राहु दो मिलता हो।
नेक मंगल जब 12 बैठा, राहु मंदा नहीं होता हो।
बाकी घरों बद मंगल ज़हरी, मौत नगाड़ा बजता हो।
वरवी [1] कच्ची छत [2] अपनी उड़ती, लेख नसीबा मंदा हो।
28 साला जब [3] मंगल आवे, शनि [4] फेरा खुद पाता हो।
सोया नसीबा पकड़ जगावे, उजड़ा खज़ाना भरता हो।

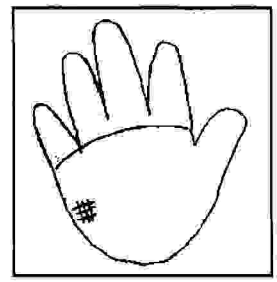

1. मंगल बद, सूर्य का शत्रु होगा।
2. राहु अब शनि के खिलाफ मंदा होगा।
3. मंगल नेक हो या खाना नं० 8 में आ जावे।
4. शनि नेक हो या खाना नं० 8 में आ जावे।

हस्त रेखा :- **मंगल बद के पर्वत पर राहु का निशान।**

नेक हालत

1. राजा तथा फकीर को एक न एक दिन बराबर कर देगा या उस का भाग्य कौसे कज़ाह की तरह रंग-बिरंगा होगा जिसका प्रभाव चलते पंगूड़े की तरह नीचे ऊपर शक्की ही होगा।
2. अब राहु का भेद चौकोर चाँदी का टुकड़ा 40/43 दिन अपने पास रखने से खुलेगा। चाल चंद्र की और हुक्म शनि का और राहु खाना नं० 2 का दिया हुआ असर साथ होगा।
3. राहुअब मंदा न होगा । –जब नेक मंगल खाना नं० 12 में हो।
4. आयु के 28 साल मंगल नेक हो या खाना नं० 1-8 आ जावे तो सोया नसीबा जगा दे और उजड़ा खज़ाना भर दें।

–जब मंगल नेक या खाना नं० 1-8 या शनि नेक या खाना नं० 8 में आ जाये।

मंदी हालत

1. बेईमानी से कमाया हुआ पैसा उसको अपनी कमाई हुई को आठ गुना कम कर देगा। कड़वा धुआँ, नेक कुटु ब से होता हुआ भी काफिरों की करतूतों से बदनाम होगा अपने व्यक्तिगत विचारों के मंदे नतीजे होंगे। रंग-बिरंगे भाग्य का फैसला शनि पर होगा। जब सिर्फ छत बदली जाये तो चंद्र फौरन राहु के खिलाफ चलेगा और राहु शनि के खिलाफ चलेगा चाहे टेवे में कितना ही उच्च बैठा हो। राहु का फल खराब ही होगा अदालती झगड़े और उनमें ल बे खर्च। जिस तरह मौत के आगे कोई चारा नहीं उसी तरह मंदे वक्त में कोई मददगार न हो। कोई फरियाद न सुने हर हालत में अपने आप ही हौंसला देने वाला और दिलदार होगा। राहु अपने असर में लेटा हुआ खूनी हाथी मौत का हुक्मनामा साथ लिए हुए कड़वा धुआँ और खुद ही मौत के लिए गिर तारी का नगाड़ा बजा रहा होगा, अचानक दुर्घटना ज़हमत बीमारी और धन हानि करेगा।

खासकर जब राहु का सिर और केतु की दुम गिन कर शनि बतौर साँप सीधा हो बैठे और चंद्र को ज़हर देवे। ऐसी हालत में घूमती ग्रहचाल से सोना और मनुष्य शरीर मिट्टी में मिले हुए की तरह हाल होगा।

2. घर का सबसे बड़ा आदमी अगर पुरा राहु (काला, काना, निःसंतान) हाथी कद और हाथी के रंग का हो तो राहु का सारे घर पर बुरा प्रभाव न होगा।
3. **दक्षिण का दरवाज़ा छत व फर्श दाखिले से अंदर जाते वक्त नीचा दर नीचा होता जाए।** सिर्फ छत बदली जाये। मकान के **साथ व भडभूंजे की भट्टी (जिसमें ताँबे का पैसा ड़ालना शुभ होगा) सब मंदे प्रभाव देंगे।**
4. जन्म कुण्डली के खाना नं० 8 का राहु जब वर्षफल के हिसाब नं० 8 में आये तो उसका हाथी कब्रों में गिरकर मर जाये यानी बहुत नुक्सान हो। उपाय (राहु खाना नं० 8 में आने वाले साल) जन्म दिन के बाद जब 8 वां मास शुरू हो तो बादाम हर रोज़ मंदिर में ले जाकर आधे वापस लेते आये और अपने आने वाले जन्म दिन तक उपय जारी रखें हाथी के गुज़रने के लिए पुल तैयार हो जाएगा।

5. उपाय :खोटे सिक्के (खराब शुदा जिनकी बाज़ार में कुछ कीमत न हो और ज़मीन से टकराने पर कोई आवाज़ न हो) या सिक्का दरिया में डालते जाना शुभ होगा तकरीबन 8 सिक्के या हर रोज़ एक सिक्का 43 दिन तक डालना है या 4 नारीयल, 4 किलो सिक्का के टुकड़े करके दरिया में डाल देने चाहिए।

6. मौत का नगाड़ा बजता होगा खासकर जब 21 साला उम्र में राहु के शत्रु ग्रह से स बन्धित काम किए जाएं, शुक्र, 21 साला शादी, सूर्य-बिज़ली के महकमे की नौकरी, मंगल-जंगली मुलाजमत में बेईमानी, फरेब, धोखा आदि के बुरे समय।
-जब टेवे में मंगल बद हो मंगल या बुध दोनों मंदे (किसी भी घर में सिवाय मंगल खाना नं० 12 के)।
7. शनि और राहु की उम्र (9 साला, 11 साला) पर चाचा की माली व औलाद की जड़ कटती होगी। खासकर जब चाचा शनि से संबंधित सामान खरीदे। शनि खाना नं० 6 के समय राहु खाना नं० 8 को किसी के मौत के हुक्मनामा की तकमील और जिसने जहाँ मरना है वहाँ ले जाकर मार देने का पूरा हक होगा और कमी रहने पर शनि खुद जज बन कर मौत का हुक्म देने के लिए साथ खड़ा होगा। -जब शनि खाना नं० 2 या 3 में हो।

राहु खाना नं: 9
(पागलों का सबसे बड़ा हकीम, डॉक्टर मगर बेईमान)

धर्म तेरा ढोलक या बच्चों को जाती।
बचेगी कहाँ तक जो हाथी से बजती।।

धर्म जला जब राहु भट्टी,
सरसाम हटाता फूंक से अपनी,
ग्रह चौथे का तख्त पे आते',
तख्त मगर जब खाली होवे,
झगड़े अदालती खून से करता,
संतान हालत स्वयं ऐसी करता,
शनि टेवे जब 5 वें बैठा,
योग सन्तान का ऐसा मंदा,
उपाय केतु या पालन कुत्ता,
बार कई हो कुत्ता मरता,

चुप गुरु 5-11 हो।
ठीक पागल को करता हो।
राहु मंदा खुदा होता हो।
सेहत बुजुर्गों मन्दा हो।
पक्की निःसंतान होती है।
पैदा होती और मरती हो।
हुक्म शनि से पाता हो।
न ही मरे न पैदा हो।
भाव सेवा चाहे कितना हो।
आयु औलाद की बख्शता हो।

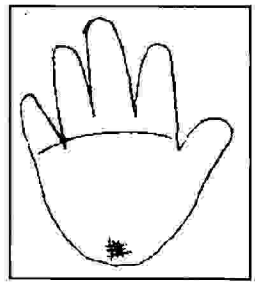

1. 4-16-28-40-52-64-76-88-100 -114 साला आयु।

<u>हस्त रेखा:-</u> **किस्मत रेखा की जड़ (वृ० का बुर्ज खाना नं० 9) पर राहु का निशान।**

<u>नेक हालत</u>

1. पागलों के इलाज के लिए सबसे उत्तम जो सरसाम के बीमार को तो फूंक मार कर ही ठीक कर दे मगर लालच के मारे बेईमान जिसका धर्म ईमान भट्टी में जलता होगा, वृ० अब चुप होगा मगर गुम न होगा।
-जब वृ० खाना नं० 5-11 में हो।

मंदी हालत

1. **फकीर साधु के फ़िजूल खर्चे जो लुटेरे बन कर खा जाये।**
2. नर औलाद माता के पेट में या पैदा होते ही मरती जाये। बाप, दादा ससुराल तबाह भाई तंग करेंगे। लेकिन जब अपने खून के संबंधियों से अदालती झगड़े करे तो पूरी पक्की निःसंतान मिलेगी।
3. राहु अब 9 गुना मंदी ताकत का मालिक होगा जो चन्द्र को भी मध्यम कर देगा। खाना नं० 5, संतान खाना नं० 11 आमदन कमाई, पर भी राहु का मंदा ही असर होगा जन्म कुण्डली के खाना नं० 4 के ग्रह 6-16-28-40-52-64-76-80-100-114 साल की आयु में जब कभी भी खाना नं० 1 में आये राहु का मंदा प्रभाव उन ग्रहों की चीज़ें, काम या रिश्तेदार खाना नं० 9 में संबंधित पर होगा ऐसा प्राणी धर्म के असूल और कारोबार को भट्टी में डालकर उड़ता हुआ धुआँ बना देगा। क्योंकि धर्म की ढोलक को राहु का हाथी जब अपनी सूंड से बजा रहा हो तो कितने दिन बजेगी। इसके उल्ट किसी भी तरह की कैद व बंधन वह पंसद न करेगा। बालिगों से संबंधित झगड़े संतान पर बीमारी बलाये बद मंदी छत, भट्टी, टट्टीखाना घर की दहलीज़ के नीचे से गंदा पानी गुज़रना, काला कुत्ता गुम होना, बिल्ली का रोना, काले रिश्तेदार की मौत, नाखून झड़ना, राहु के मंदे असर की निशानी होगी। केतु (कुत्ता या दुनियावी तीन कुत्ते) ससुर के घर जमाई, बहन के घर भाई, नाने के घर दोहता का पूरी नेक नीयत से पालना सहायक होगा चाहे कुत्ता कई बार (11 दफा तक) मरे मगर संतान की आयु ब शता होगा। खानदान में इकट्ठे रहना खुदमु तयार न होना, ससुराल से संबंध न तोड़ना मंगलबद की सलाह से बचना, वृ० कायम रखना (चोटी, सोना) उत्तम या शुभ फल देगा।
5. सेहत और मान मंदी होगी, दिमाग़ी और बड़ों की और से परेशानी मिलेगी। -जब खाना नं० 1 खाली हो।
6. नर संतान न पैदा हो न मरे, औलाद का योग हर तरह से मंदा होगा। शनि खाना नं० 5 का दिया मंदा प्रभाव प्रबल होगा। -जब शनि खाना नं० 5 में हो।

राहु खाना नं० 10

(साँप की मणि (सहायक) साँप की सिरी (भयनाक)

करे दोस्ती जब तू हाथी या राजा।
बड़ा रखना दरवाज़ा अच्छा ही होगा।।

दुगुना राहु हो नेक शनि से,
टेवे मं० बाद आ जब बैठे,
गर टेवा कोई अन्धा होवे,
गैर डरे घर अपना मारे,
चंद्र अकेला चौथे बैठे,
दिमाग़ फटे या हो सिर फटता,
खाली मन्दिर से राहु सोता,
मित्र ग्रह' पर कीचड़ देता,
मंदे नज़र आयु घटता हो।
लीद हाथी घर मरता हो।
हाथी अन्धा खुद होता हो।
मंदा नंगा सिर काला हो।
खाली धुआँ आ होता हो।
बिजली राहु ज़र कड़कता हो।
तेज़ स्वभाव मंदा हो।
उपाय मंगल का उत्तम हो।

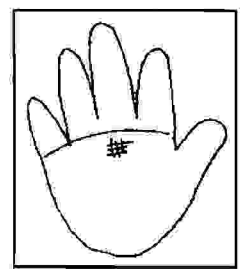

1. बुध, शनि, केतु।

हस्त रेखाः- **शनि के बुर्ज मध्यमा की जड़ में राहु का निशान।**

नेक हालत

1. पिता के लिए शुभ और स्वयं भी अच्छी स्वभाव वाला हर जगह मान पाने वाला। मगर फिर भी मित्र हाथी से कीचड़ का भय लगा रहेगा यानी राहु का अच्छा या बुरा प्रभाव शक्की ही होता है जो शनि के इशारे पर चलेगा यानी जैसा शनि वैसा राहु।
2. धनी होने की निशानी सहायक तो साँप की मणि का काम देवे जो शनि की ज़हर को भी चूस जावे।
3. राहु धन के लिए दो गुना शुभ होगा, शेरों का नामी शिकारी हाथी होगा, जिसके प्रभाव की गति भी दुगुनी तेज़ और शुभ होगी व्यापारी कमाल हो आयु ल बी। -जब शनि उत्तम हो।

मंदी हालत

1. चाहे बाप के लिए अच्छा मगर माता के लिए (चंद्र के असर में) मंदा ही होगा और खुद अपनी सेहत भी शक्की होगी। जैसा

भी हो राहु अब शक्की प्रभाव का होगा, जिसका फैसला शनि की हालत पर होगा। खर्चा चाहे ल बा मगर अच्छा जब शनि नेक हो वर्ना सोने को लोहे और उसकी भी अफीम बना कर ॥ जाने के स्वभाव का स्वामी होगा। जो जद्दी जायदाद के कोयले कर दें।

2. साँप की सिरी (सिर्फ कटा हुआ सिर) जो मारने के लिए साँप से भी अधिक भयानक और कठिन हो तो तंग दिली और कंजूसी उसकी दूसरों से जुदाई शत्रुता पैदा करने का बहाना बनेगी।
3. राहु का मंदा असर सिर्फ धन-दौलत पर होगा।
4. दृष्टि और आयु का खतरा होगा।
5. हाथी की मंदी लीद से घर भर जाए (मंदी हालत) निर्धनी और कष्ट पर कष्ट आए (मंगल बद हो)।
6. राहु का अन्धा हाथी होगा जो औरों से डर कर अपनी ही फौज मारेगा।
   -जब अंधा टेवा हो यानी खाना नं० 10 में कोई ऐसे ग्रह जो आपस में शत्रु हों सूर्य, शुक्र, मंगल साथी हो।
7. राहु का मंदा असर टेवे वाले पर न होगा। -जब मंगल नेक हो।
8. याली दिमाग़ धुआं परेशानी का कारण दिमाग़ फटे या सिर कटे या नज़र गुम हो जाये और धन-दौलत बिजली की तरह मंदा प्रभाव होगा। तब मंगल का उपाय सहायता करेगा। -जब चन्द्र खाना नं० 4 में हो।
9. काला नंगा सिर रखना धन हानि की निशानी होगा। -जब मंगल का साथ न हो।

राहु खाना नं० 11
(पिता को गोली मारे या मुंह न देखे, प्लेग या ग्रहचाली गोली से मार देवे)

बढ़े नाम बदनाम जब सीनाज़ोरी।
कसम खा के बेचेंगे सब माल चोरी।।

जन्म दुनिया बेटा होते,
राहु टेवे चमक देवे[1],
वृहस्पति भागा पापी भागे,
शनि बैठा ५ तीजे,
एक तीजे पापी बैठ,
धन न मांगे माँ से अपनी,
उम्र पिता सुख सागर उसका,
औलाद केतु हर वेश हो मंदा,
धर्म मंदिर और दान हमेशा,
बंद पड़ा धन-दौलत सड़ता,
बाप वहाँ रहता नहीं।
वृहस्पति[2] वहाँ होता नहीं।
भागता संसार शनि है।
योगी अस्तंकार है।
राहु बढ़ता आपसे।
न ही लेगा बाप से।
न ही धन-दौलत मिलता हो।
वक्त गुरु[3] तक उम्दा हो।
चलती हवा या पानी हो।
ज़जिया मरीज़ प्राणी हो।

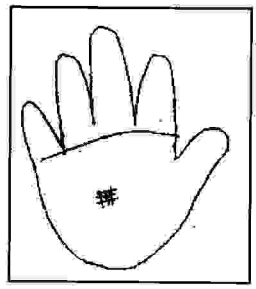

1. खाना नं० 3 के ग्रह का प्रभाव होगा (हाल खाना नं० 5 बिजली पड़नी) देखें।
2. पुरुष के टेवे में यदि वृ० से अर्थ बाप, दादा तो स्त्री के टेवे में उसका ससुर होगा जिसका अर्थ भी कहा है कि स्त्री का टेवे वाले का बाप ही हुआ करता है।
3. वृ० की आयु (16 साला) या बाप के जीवन तक।

हस्त रेखा:-

हथेली के खाना नं० 11 में राहु का निशान।

नेक हालत

1. चाहे पिता नहीं रहा करता मगर पिता की आयु तक राहु का प्रभाव धन के लिए अच्छा ही रहेगा। पिता (वृहस्पति) के बाद वृहस्पति (सोना, पीली चीज़ें) कायम करना या रखना सहायक बल्कि आवश्यक होगी।
2. **योगी अस्तंकार हो राहु अब पिता पर भारी न होगा।** -जब शनि खाना नं० 3-5 में हो।
3. स्वयं अपनी शक्ति और भाग्य बढ़ता ही जाएगा। धन अपने माता-पिता से भी न मांगेगा, न धोखा देगा। स्वयं की शक्ति से अमीर न बनेगा।

मंदी हालत

1. जिस तरह मंगल बद वाला इस घराने में जन्म लेगा जहाँ कि उसके जन्म से पहले मालिक की तरफ से हर तरह की नज़रे इनायत और बरकत होगी जिसे वो मंगल बद वाला बर्बाद कर सके उसी तरह राहु खाना नं० 11 वाला भी ऐसे समय जन्म लेगा जबकि उसके माता-पिता खूब ऐश्वर्य की ज़िंदगी बसर कर रहे हों। उसके जन्म पर बंद पड़ा धन-दौलत बर्बाद, फ़िज़ूल खर्ची, आग़ साँप की घटनाएँ नाहक जुर्माने और मरीज़ों की बीमारियों पर खर्च पहले, अपने से बड़ा पहला अधिकारी से बिना कारण ही झगड़ा और नाराज़गी से नुक्सान हो।
2. अब ाना नं० 2 का ग्रह अगर कोई या खाना नं० 2 (दुनियावी मान ससुराल) भी राहु के मंदे धुएं की स्याही से भरपूर होगा। जन्म वक्त का हाथी (धनाढ्यता) घटते-घटते 36 साल की उम्र तक शून्य हो जाएगी। जन्म समय और बड़ें पुराने बने हुए काम और प्रसिद्ध हाथी अब अपने आप पुरानी खाईयों में गिर कर मरने जाएंगे अर्थात् सब बने-बनाए काम बिना कारण बिगड़ जाते होंगे।
3. गुरु वृहस्पति (पिता) बैठने की जगह की जड़ नष्ट और बर्बाद करनी होगी। जन्म लेते बल्कि जन्म लेने से पहले ही पिता का मुंह न देखे या माता के पेट में ही आने के समय से पिता का ग्रहचाली गाली या हादसे से मार देगा। अमूमन 11 मास, 11 साल या हद 21 साल उम्र में या पूरी होते ही वृहस्पति (पिता) की चीज़े काम, रिश्तेदार, संबंधी खत्म या नष्ट हो जाएंगे अगर किसी कारण बच जाये तो सोने से खाक बन चुका होगा। जैसा कि किसी बेईमान की कसम से धोखा नाहक दु:खों से फ़िज़ूल खर्चा आग़ लगे या चोरी होवे कर्ज़ा अदा करने वाली आसामी मर जाए, आदि हर तरफ से मंदा ही माली हाल होगा, भाग्य का कच्चा कड़वा धुआं पूरे-पूरे विरोध से तंग कर रहा होगा।
4. पिता ससुर या नाना की दौलत आयु और सुख सागर और तौशा (बचा हुआ मान धन) शून्य होगा। अपनी कमाई के फालतू धन का फैसला खाना नं० 3 के ग्रह की हालत पर होगा। राहु की बिज़ली (विस्तार के लिए पक्का घर नं० 5) के वक्त वृहस्पति बर्बाद होगा जिस तरह बेईमान और हलफ से बात करने वाले का कोई यकीन नहीं होता उसी तरह अब राहु का कोई यकीन नहीं कि कब वो वृहस्पति (पिता) पर मंदा प्रभाव कर जाये। केतु (औलाद) दरवेश यानी शनि (चीज़ें काम संबंधी शनि से संबंधित और जिस्मानी अंग और नज़र आदि) का फल भी मंदा हो सकता है बल्कि खुद गुरु वृद्ध पिता की आयु तक मंदा ही होगा। लेकिन अगर वृहस्पति (बाबा या पिता, गुरु) किसी दूसरे ग्रहों की सहायता से अच्छी हालत और ल बी उम्र का स्वामी हो तो ये सब मंदी हालत (उम्र का बहुत छोटी होना, सोने का राख हो जाना) स्वयं टेवे वाले पर हो सकती हो। बाप की बजाय उसका ससुर और नाना भी हो सकता है जो राहु के भूचाल से चल बसे या जल उठे या उस टेवे वाले लड़की/लड़का के काम न आये। राहु खाना नं० 11 के वक्त बाप, बेटा या बाबा, पोता ल बी उम्र तक इस दुनिया मे इकट्ठे नहीं चल सकते। जुदाई अवश्य होगी और कई बार जल्द भी हो सकती है।
5. धर्म मन्दिर और दान हमेशा सहायक होंगे। वृहस्पति कायम रखना (जिस्म पर सोना कायम रखना) सहायक बल्कि ज़रूरी होगा, वर्ना सोने को कोढ़ होगा, जिस्म पर राहु की चीज़ें, महकमा पुलिस की मु. त वर्दी (ड्यूटी की वर्दी चाहे किसी भी विभाग की हो कोई वहम की बात न होगी) या हथियार नीले कपड़े, बिज़ली का सामान, नीलम की अंगूठी आदि का कारोबार या संबंधी (राहु से संबंधित), उनका संबंध कायम करने से वृहस्पति (माया, माल, धन, स मान) सब का और भी नुक्सान होगा।

6. ***भंगी को बतौर खैरात पैसा धेला कभी-कभी देना सहायक होगा। अगर वृ० भी खाना नं० 11, 3 में हो सोने की बजाय लोहा (शनि) को शरीर पर कायम रखना सहायक होगा। चाँदी के गिलास में पीने की चीज़ों का प्रयोग और चाँदी के केस या नाली (टूंटी) में से सिगरेट आदि का इस्तेमाल राहु की ज़हर घटाएगा।***

7. भाई की गर्दन बर्बाद, ताया लावल्द या लंगड़ा हो। -जब मंगल खाना नं० 3 में हो।
8. केतु का असर मंदा ही होगा यानी नर संतान कान, टाँगों, रीढ़ की हड्डी, पेशाब, पेशाब की नाली घुटना, पांव दर्द, चोट, सफ़र में हानि, केतु के रिश्तेदार (मामा, मामू खानदान) के काम केतु से संबंधित दोनों से हानि हो सकती है।
-जब केतु खाना नं० 5 में हो।

राहु खाना नं० 12
(शेखचिल्ली, सुथरा शाही मनदरचा यालम व दरीचा याल)

रहा भू ा दिन भर कमाई जो ढोता।
खजाने भरे क्या न जब रात सोता।।

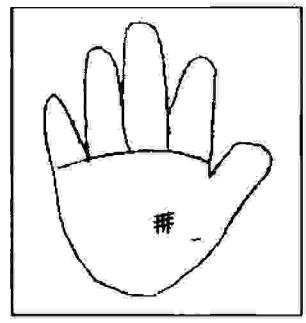

रात का आराम उत्तम,
ब्रह्मशनासी दुनिया होगा,
लकड़ी[1] मीठी पवन[2] मीठी,
खर्चों घर का मंदा होता हाथी,
मंद शनि खुद योग हो मंदा,
शत्रु ग्रह जब साथ हो बैठा,
चोर अय्याश गबन ना उम्दा,
बारिश धुआँ न माया करता,
मंगल टेवे हो जिस दम साथी,
11 शुक्र से कन्या बढ़ती,

या गुज़र ससुराल की।
नेक चलता जब शनि।
धुआँ तो कड़वा ही है।
लगता कामों शुभ ही है।
अंग मंदा जो योगी हो।
हसद तबाही होती है।
छींक उल्ट मंद होती है।
आसमान हवा चाहे भरती हो।
राजशाही सुख होता हो।
बुध, गुरु धन देता हो।

1. शनि
2. वृहस्पति

हस्त रेखा

हथेली के खाना नं० 12 में राहु का निशान (जाल)।

नेक हालत

1. जैसा दुध टेवे में हो वैसा ही राहु का प्रभाव होगा।
2. राहु का नेक प्रभाव मकानों ओर दीवारों से संबंधित है।
3. शेखचिल्ली या सोचे कुछ, कुदरत को कुछ और ही मंजूर हो। खर्चे अंदर-अंदर हाथी जैसा बड़ा होता जाए मगर कबीले के नेक कामों में लगेगा अपनी खुशी और इच्छा के किया होगा जो कर्ज़ा न होगा बल्कि बहनों और बेटों (बुध के संबंधी रिश्तेदार) की पालना में लगता होगा।
4. रात का आराम उत्तम और ससुराल अमीर होंगे अच्छे खाते-पीते होंगे। शत्रुओं से सदा बचाव रहेगा।
5. राजशाही व सुखीया हर प्रकार से उत्तम। -जब मंगल साथी हो।
6. बादशाही सुथरा (मस्त मौला) और संसारी ब्रह्मशनास (ज्ञानी) होगा, योगा यास दिन व दिन उत्तम प्र ाव देंगे। -जब शनि उत्तम हो।
7. लड़कियों की पैदाइश और कायम रहना धन की आमदन जमा दोनों अधिक होंगे बुध, वृहस्पति नींव होंगे यानी जैसा बुध वैसी लड़कियों की गिनती और हालत होगी जैसा वृहस्पति वैसी धन की आमदन जमा आदि। बुध, वृहस्पति के काम की चीज़े रिश्तेदार धन देंगे कभी तंगहाल न होगा। -जब शुक्र खाना नं० 10-11 में हो।

मंदी हालत

1. नेक काम शुरू करने के वक्त आगे से उल्ट छींक, मंदे परिणाम की पहली निशानी होगी। फौजदारी चोरी बर्बादी गबन के संबंध से परेशानी और मंदे परिणाम होंगे।
2. कबीले के फ़िजूल खर्चों के लिए नाहक भारी बोझ की घटनाएँ।
3. फर्ज़ी नींव रहित और पूरी न होने वाली उ मीदों खुश्क दरिया के स्वामी टेवे वाले की जान, उसके मकान की छत, राहु के भूचाल से हरसमय कांपती और हिलती रहेंगी।
4. आसमान पर उड़ता हुआ धुआँ स्वयं मेहनती, दिन भर कमाई करता और हर तरह का बोझ ढोता रहेगा बल्कि रात को भी न सोएगा। मगर मंदे राहु की कृपा से परिणाम वही काला कड़वा धुआँ होगा जो दम भी घुट देवे और नाहक खुदकुशी तक के भी हालात बना देवे।

5. बेआरामी व फ़िजूल खर्ची के फ़र्ज़ी बादल आम होंगे।
6. जब शनि मंदा हो तो आसमान चाहे सारा ही धुएँ से भर जाये मगर धन की बारिश कहाँ होगी ऐसा मंदा कि जिस कदर जिद्दबाजी से और जिस अंग से संन्यास की कोशिश करें वही अंग मंदा हो जाये, दिमाग़ से कोशिश करें तो पागल मगर बाकी शरीर खूब मोटा ताज़ा। आँखों से जिद् व जिद् होकर संन्यास ढूँढे तो आँखें खत्म बाकी शरीर रह जाये। आखिरी नतीजा ही होगा जो कि शनि की हालत का हो चाहे शनि, वृहस्पति का प्रभाव नेक मगर खुद राहु का अपना असर मंदा और कड़वा धुआँ ही होगा।
7. नाहक तोहमत ले लेने वाला या बदनाम हो।
8. तबाही करने वाले हसद से भरपूर शरारतों से खराब होगा (शत्रु ग्रह सूर्य, शुक्र साथ-साथी)।

उपाय

रात को आराम करने की जगह पर मंगल की चीज़ें
(खाँड की बोरी या सौंफ की चोरी)
कायम करने से राहु उत्तम फल देगा।
रोटी पकाने की जगह में ही बैठकर
रोटी खाना राहु के मंदे प्रभाव बचाता रहेगा।

****

केतु

केतु

(सफ़र की आँधी में, संसार में लड़के पोते, आगे आने वाले घर में कुटु भ,
दरवेश आकवत, संदेश, नस्ल)

नज़र पाँव तेरे जो उखड़े पड़ेंगे।
सभी जेर रहते—हीं सिर पर चढ़ेंगे।।

गुरु, मंगल व बुध तीनों ग्रह का,
हो छठे टेढ्री दुम जिसकी,
पापी बुरा ही होता है,
वृहस्पति, मंगल, बुध नं० 2,
सफेद काला दो रंग-बिरंगा,
शनि, मंगल कोई साथ ही बैठा,
केतु तख्त से रवि हो ऊँचा,
कुत्तिया बच्चा जब एक ही होता,
केतु कुत्ता त्रिलोकी हो।
8 वें कान मुहों दूजे खुलता।
मिले केतु, बुध कुत्ता दुनिया।
केतु भला ही होता है।
लाल, पीला बुध होता हो।
असर सभी का मंदा हो।
छठे मंगल, केतु मरता हो।
नस्ल कायम कर जाता हो।

1. कुत्ते की नस्ल या केतु की असलियत मुंह खाना नं० 2 के ग्रह उदाहरणत: मंगल खाना नं० 2 तो शेर जैसा मुह 1 कान खाना नं० 8 के ग्रह : बुध खाना नं० 8 तो बकरी जैसे— कान, दुम खाना नं० 6 के ग्रह : मसलन शनि खाना नं० 6 तो साँप की दुम। जब तक 2-6-8 उत्तम केतु (8 संतान की आयु 2 माली हालत, 6 मै बरों की गिनती) कभी मंदा न होगा। वृहस्पति का उपाय सहायक हो।

आम हालत 12 घर :-

केतु तख्त पर पिसर (संतान) हो मिलता,
सफ़र हुकूमत घर दो उम्दा,
रंग-बिरंगा हाल हो तीजे,
गुरु हालत 5 लड़के उसके,
शेर बहादुर घर 7 बैठे,
पिता 9 वें घर अपना तारे,
उम्र नज़र ना माली साथी,
ऐश करे घर 12 इतनी,
फर्ज़ी फिक्र भी होता हो।
उत्तम 6 वें ही अकेला हो।
ससुर भाई खुद अपने जो।
बेटा जल्द न चौथे हो।
औलाद कब्र 8 भरता हो।
10 वें शनि पर चलता हो।
केतु पाया घर 11 जो।
माया फैली घर भरता हो।

केतु का दूसरे ग्रहों से संबंध :-

वृहस्पति	उ दा आसान, नेक आकबत।
सूर्य	तूफान, स्वयं बर्बाद (केतु) मामा मंदे।
चन्द्र	कुत्ते का पसीना - दोनों मंदे।
शुक्र	कामदेव की नाली - शुक्र की जान, गाय का बछड़ा।
मंगल	शेर के बराबर का कुत्ता।
बुध	कुत्ते की जान सिर में। एक अच्छा तो दूसरा बुरा।
शनि	साँप, कान नदारद - केतु पर शनि का फैसला होगा।
राहु	केतु का प्रभाव, राहु के साथ बल्कि राहु के हाथ या राहु की मर्ज़ी पर चलेगा। सफर दम बो माया खबेशरा। तू दानी हिसाब कमोबेश रा।

केतू नेक हालत

1. सांसारिक काम के हल करने के लिए, इधर-उधर सलाह करने के लिए दौड़ धूप का यह 48 साला आयु का समय केतु का समय होगा।
2. पीला (वृहस्पति), लाल (मंगल), अंडे का रंग (बुध), तीनों ग्रहों का एक नाम केतु (3 कुत्ते) होगा जो तीनों ही ज़माने का मालिक होगा, छलवा पापी ज़रूर है, जान से मारने की बजाय कब तक सहायता देगा (चारपाई त ता)।
3. केतु (कुत्ते) के भाग :-
   अ— कान नं० 8 का ग्रह जैसे बुध खाना नं० 8 तो बकरी जैसे— कान, संतान (केतु) की आयु का फैसला मगर कम अक्ल की शर्त नहीं।

ब— मुंह नं० 2 के ग्रह जैसे मंगल खाना नं० 2 शेर जैसा मुंह, असलियत नस्ल, सांसारिक सहन का हाल माली हालत।
स— दुम नं० 6 का ग्रह जैसे शनि खाना नं० 6 साँप जैसी दुम, सदस्यों की गिनती स्वभाव अंदरुनी चाल नब्ज या वह नाड़ी जो इसका भेद बता दे या जिसके द्वारा इसका इलाज हो सके खाना नं० 10 के ग्रह के स बन्धित जानवर विषैली पूंछ वाले होते हैं।

4. केतु नेकी का फरिश्ता, सफ़र का मालिक और आखिर तक सहायता देने वाला ग्रह है।
5. केतु, बुध दोनों मिल कर कुत्ते का सिर (कुत्ते की जान सिर में) होगा यानी जब तक बुध उ दा या खाना नं० 2-6-8 उ दा या खाना नं० 12 में उसके तीनों हिस्से वृहस्पति, मंगल, बुध न हों, केतु खाना नं० 2 माली हालत, खाना नं० 8 औलाद की आयु खाना नं० 6 सदस्यों की गिनती, भला ही होगा चाहे कैसा और कहीं भी बैठा हो।
6. केतु से अर्थ सफेद व काला दो रंगा कुत्ता होगा मगर लाल रंग सूर्य के साथ होने से बुध होगा जिसमें चाल व प्रभाव तो बुध की होगी मगर मियाद केतु की होगी। अब नर कुत्ते की नस्ल की जगह मादा नस्ल लेंगे, कुत्तिया और बुध की चीज़ें कलम आदि पर पहले प्रभाव देंगे।
7. कुत्तिया का नर बच्चा जो एक ही पैदा हुआ हो, खानदानी नस्ल कायम करेगा।
8. मंदे केतु के समय अपनी कमज़ोरी किसी से कहना या दूसरों के आगे रोना और भी कष्टदायी कर देगा। वृहस्पति 1 उपाय सहायता करेगा।
9. मंदी सेहत के समय चंद्र का उपाय, परंतु जब लड़का मंदा हो तो धर्म स्थान में क बल देना शुभ होगा।
10. केतु के इलाज के लिए उसके नब्ज या इलाज का भेद खाना नं० 10 के ग्रह होंगे। पाँव या पेशाब के कष्ट के समय रेशम का अति सफेद धागा बांधना या चाँदी का छल्ला डालना (जो चंद्र की चीज़ें हैं) अति सहायक होंगी। केतु को चारपाई भी माना है मगर ग्रहचाल में चूँकि केतु का शुक्र का फन माना है इसलिए चारपाई असल में वह चारपाई मानी है जो दहेज के समय मामा की तरफ से या लड़की के माता-पिता की तरफ से लड़की को दहेज में दी जाती है। ऐसी चारपाई का औलाद के जन्म समय (जन्म के स बन्ध में) प्रयोग में लाना सब से उत्तम है। चाहे केतु टेवे में कितना भी मंदा नीच बर्बाद क्यों न हो। जब तक चारपाई घर में प्रयोग में लाई जा रही हो केतु का फल कभी मंदा न होगा।

केतू मंदी हालत

1. गोया पापी ग्रह (जब शनि, राहु दृष्टि आदि से) केतु को किसी न किसी तरह आकर मिलें दूसरों पर प्रभाव के लिए बुरा ही होता है। मगर यह जान से नहीं मारता चाहे जिस जगह जन्म लिया वहाँ कुछ भी न रहे, न रहने देवे। दुनिया का धोखेबाज़, छलावा होगा।
2. जब तक बुध (केतु की असली दुम) अच्छा, केतु बर्बाद होगा।
3. धर्म स्थान में पाँव (केतु) पवित्र समझते हैं या धर्म स्थान में अंदर का केतु (नया पैदा हुआ या बना हुआ बच्चा) सदा जीवित रहेगा।
4. केतु का मकान बच्चों तथा स्त्री की हालत मंदी ही रखेगा। वृहस्पति या सूर्य जब शत्रु ग्रहों से स्वयं ही मर रहे हों तो केतु बर्बाद होगा।
5. केतु मंदे के समय खासकर जब टेवे में चंद्र और शुक्र किसी तरह से इकट्ठे हो रहे हो तो बच्चे का जिस्म सूखने लग जाया करता है। ऐसे समय में बच्चे के जिस्म पर दरिया नदी-नाले या वैसे ही कोई मिट्टी या गाचनी मल कर खुश्क होने दें। घण्टे आध घण्टे के बाद बच्चे को मौसम अनुसार ठंडे या गर्म पानी में से जो भी ठीक हो नहला देवें। 40-43 दिन लगातार करने से शरीर का सूखना ठीक हो जाएगा।

केतु खाना नं० 1

(हर समय बच्चे बनाने वाला, सारे शहर के बच्चों की फिक्र में गलता होगा)

रिज़क तेरा जब तुझको, है आज मिलता।
लंगोटा फिक्र कल का, क्यों तूँ ढीला करता।।

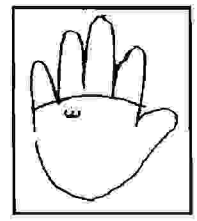

सोच रहे थे सफ़र की अपने,
अपने वक्त मंदा चाहे कितना होवे,
जान कसम वह हरदम खाता,
7-6 हो बेशक मंदा,
खाली पड़ा जब 6-7 टेवा,
बुध, शुक्र न राहु उम्दा,
दरवेश सेवा हो मदद खुदाई,
मंगल गद्दी जब 12 पाई,
बाद शादी जब केतु मंदा,
वर्ना कुत्ता हड़काया ऐसा,

बच्चा नया आ पहुँचता हो।
पिता, गुरु को तारता हो।
हड़काया कुत्ता' चाहे लेख का हो।
उच्च असर रवि देता हो।
तूफान जन्म घर आता हो।
उत्तम वृहस्पति, रवि होता हो।
चरण पिता के धोता हो।
केतु बुरा नहीं होता हो।
मदद शनि से पाता हो।
पिता रवि भी काटता हो।

1.मंगल खाना नं० 12 में हो तो केतु का खाना नं० 1 पर कभी बुरा असर ना होगा।

हस्त रेखाः- **सूर्य के बुर्ज नं० 1 पर केतु का निशान हो।**

नेक हालत

1. चाहे सफ़र के लिए हुक्म और उसका फिक्र हर समय साथ लगा हुआ और तबदीली के लिए हर समय तैयारी होती हो और बाकी सब हालत तैयार हो गए मगर खैर आखिर पर सफ़र न होगा।
2. राजा का चलन कौन रोके के नाम पर हर समय नए बच्चे बनाने वाला। सारे शहर के बच्चों की फिक्र में मरता हो। दौलत और कामदेव की बेयाई दोनों एक साथ बढ़ते होंगे। उसका आज का रिज़क कोई रोक नहीं सकता इसलिए उसे कल का फिक्र न होगा जिसके डर से बार-बार दम खुश्क होता रहे।
3. अब सूर्य का असर अच्छा होगा चाहे खाना नं० 6-7 में नीच या मंदा हो रहा हो। केतु जब कभी वर्षफल अनुसार नं० 1 आये। लड़का, दोहता, भान्जा पैदा होने की निशानी होगी। केतु कैसा भी मंदा हो, वृहस्पति का प्रभाव उत्तम ही होगा। दरवेश सेवा दर्जा खुदाई और पिता, गुरु के चरण धोता और पिता की मंदी समय में हर प्रकार की सहायता देगा।
4. केतु का खाना नं० 1 पर कभी मंदा प्र ाव न होगा। -जब मंगल खाना नं० 12 में हो।
5. अब सूर्य नीच न होगा। मगर लड़कों को बुध (कच्ची शाम) और केतु (तड़के सवेरे) के समय सूर्य की चीज़ें गुड़िया बाज़ार में आवारा खाने-पीने और खर्चने के लिए ताँबे के पैसे आदि देना विष समान होगा।
   -जब सूर्य खाना नं० 6-7 में हो ।

मंदी हालत

1. यदि मंगल खाना नं० 12 में हो तो केतु खाना नं० 1 का प्रभाव मंदा न होगा। यह ग्रह इस घर फ़र्ज़ी फिक्र पैदा किया करता है। खाना नं० 1 में बैठा हुआ खाना नं० 7 या खाना नं० 6 पर बुरा प्रभाव करे तो बेशक मगर सूर्य पर कभी बुरा असर न देगा। शादी के बाद जब केतु मंदा हो तो शनि ज़रूर सहायता करेगा या शनि का उपाय शुभ फल देगा वर्ना केतु ऐसा मंदा होगा कि गुरु, पिता को भी काट खायेगा। पैदाइश तो चाहे जद्दी घर से बाहर (परदेश, सराय, मुसाफिरखाने या नानके घर हो) मगर जन्म के घर पर वह जगह जहाँ पर कि जन्म असल में हुआ (जद्दी मकान पर नहीं) मंदा तूफान उठ खड़ेगा। पड़ोसी घर पर भी मिट्टी उड़ती होगी।
2. मंदे समय की निशानी बुध से संबंधित वस्तुओं से शुरू होगी, फिर शुक्र (खुराक घर की चीज़ें) बाद में मंगल (खून मंदा या ज़हरी होकर) और आ ि र वृहस्पति की हवा में मिट्टी भर देगा जो इधर-उधर फ़र्ज़ी चक्र में दौड़ने का बहाना होगी।
3. बुध और शुक्र दोनों का मंदा हाल होगा। -जब खाना नं० 2-7 खाली हो।
4. मंदी सेहत, खासकर जब दोहता/पोता पैदा हो। -जब सूर्य खाना नं० 7 में हो।

केतु खाना नं० 2

(आसूदा (समृद्ध), हुक्मरान, मुसाफिर)

हुई पैदा औलाद हर घर जो तेरी।
बुढ़ापे में तुझे कौन देगा दिलेरी।।

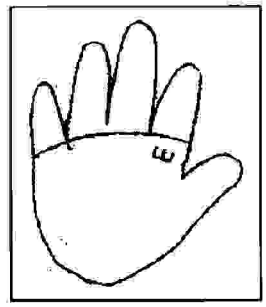

खाली 8 मंदिर अकेला,
सफ़र उसमें बहुत लिखा,
तिलक कुदरती मदद पे उसकी,
बैठा ग्रह जब ' हो 8 मे कोई,
कोई भाग शुक्र हो हरदम उम्दा,
चंद्र असर न उत्तम देगा,
राज खिताब लेखा चाहे ऊँचा,
आई-चलाई लाखों करता,
नेक और बेहूदा हो।
हुक्मरान आसूदा हो।
आठ दृष्टि खाली हो।
अल्पायु खुद ज़हमती हो।
बैठा शुक्र ख्वाह मंदा हो।
उच्च हुआ या बरसता हो।
माया जमा नहीं होती हो।
नतीज़ा दलाल दलाली हो।

1. राहु के इलावा खासकर केतु के शत्रु चंद्र या मंगल।

हस्त रेखा :- वृहस्पति के बुर्ज नं० 2 पर केतु का निशान हो।

नेक हालत

1. हर नया सफ़र सेहत की तबदीली पर हो नई दिशा की ओर होगा, यानी यदि पहले दक्षिण को चले तो वापस पश्चिम में ठहरे। फिर पूर्व में आए, चाहे भाग्य घूमता हुआ है मगर हाकिम मुसाफिर सफ़र खुश्की का बहुत होगा और तरक्की देगा।
2. शुक्र भाग सदा उत्तम चाहे शुक्र स्वयं कैसा भी बैठा हो। चं

-जब खाना नं० 8 खाली और केतु हर तरह से अकेला हो, पेशानी पर केतु का चिन्ह हो।

3. चाहे चन्द्र उच्च और वरतते पानी का स्वामी क्यों न हो चाहे राजदरवार में खिताव मिले लाखों की आई चालई पर भी कलम चले। मगर धन जमा न होगा सिर्फ दलाल की दलाली की तरह अपना हिस्सा होगा। केतु अब शुक्र वृहस्पति की नकल या नकली सोने और रंग बिरंगी रोटी की तरह किस्मत का दर्जा या जैसा वृहस्पति हो वैसी ही हालत माया धन दौलत की। और जैसा शुक्र हो वैसा ही हाल गृहस्थी गुजरान का होगा। क्योंकि ग्रह चाल कुत्ते (केतू) का मुंह इस घर माना है । जो सदा अपने बैठा होने वाले घर के मालिक नं० 2 का मालिक शुक्र पक्का घर वृहस्पत का है, की रोटी पर सब्र करेगा।
4. सफर और हकूमत चाहे अधिक हो मगर हर दो का हर तरह से उत्तम-फल और हर ओर तरक्कियां हुकमरान आसूदा। माथे पर तिलक कुदरती सहायता देगा या माथे पर तिलक की जगह केतु का निशान, त्रिकोप ⊔ शुभ होगा।

- नं० 8 खाली और केतू हर तरह से अकेला हो। पेखानी पर केतू का चिन्ह हो ।

5. 24 साला आयु केतु की मियाद के बाद खुद कमाई करने वाला और रौनकी जीवन होता जायेगा।

-जब सूर्य खाना नं० 12 में हो ।

मंदी हालत

1. हर घर में औलाद बनाए जाने से बुढ़ापे में कोई सहायक बच्चा न होगा।
2. खाना नं० 8 वाले ग्रह से संबंधित, प्रभाव के समय आम मियाद का समय, वृहस्पति 16, सूर्य 22 आदि, लेंगे पर ज़हमत बल्कि अल्प आयु लेंगे। -जब राहु के अतिरिक्त खाना नं० 8 में कोई भी ग्रह खासकर केतु के शत्रु (चन्द्र या मंगल) हों।

केतु खाना नं० 3

(टुन-टुन करते रहने वाला कुत्ता, मगर नेक दरवेश)

बुझे प्यास न खून भाई का करते।
गले बाजू बाँधेंगे तलवार कटते।।

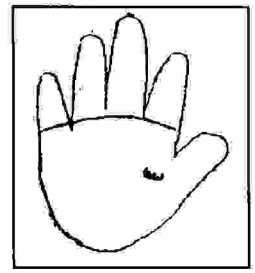

नेकी मालिक की याद हो रखता,
दुखिया भाईयों से अक्सर होता,
असर शुक्र, बुध न कुछ उम्दा,
ससुराल घराना हरदम दुखिया,
मंगल टेवे जब 12 बैठा,
उम्र 24 में उत्तम होगा,
केतु मंदे हो मदद गुरु की,
रीढ़ की हड्डी जो दर्द करती,
दरवेश भला ही करता हो।
परदेश[1] जुदा ही फिरता हो।
मंदा खेती फल होता हो।
जंगल-मंगल बद होता हो।
मच्छ मुआवन तारता हो।
या जब लड़का पहला हो।
तिलक केसर का भला होता हो।
सोना जिस्म[2] पे उम्दा हो।

1. टूटे बाजू गले से चिमटे भाई फिर भी ग्रह सहायक हो, यह ग्रह अब धन को स्वयं ही बर्बाद करे। मंदा ग्रहण करेगा।
2. जब कान या रीढ़ की हड्डी, पांव, घुटने, कमर आदि केतु से संबंधित किसी ी जगह दर्द हो।

हस्त रेखा :- मंगल नेक के बुर्ज नं० 3 पर केतु का निशान।

नेक हालत

1. चाहे अपने ससुराल और भाई सब का रंग-बिरंगा हाल (नेक व बद दोनों प्रकार का) मगर संतान अवश्य नेक होगी।
2. दूसरे साथी और मालिक की नेकी को याद रखने वाला भला लोग। हर समय बिना बुलाए आ जाने वाला मेहरबान।
3. 24 साला आयु से पहले लड़के के जन्म से मच्छ रेखा (माली) तथा ल बी सहायक आयु रेखा हर दो का नेक फल, खासकर उस समय जब कोई न कोई सफेद बाल बूढ़ा पूर्वज साथ सहायता पर हो। -जब मंगल खाना नं० 12 में हो।

मंदी हालत

1. अपना दिमाग़ लगाए बिना ही दूसरों की हाँ में हाँ मिलाकर दु:खी होगा।
2. बिना कारण टुन-टुन करते रहने वाले कुत्ते का स्वभाव मगर अंदर से नेक दरवेश। अक्सर भाईयों से तंग या दुखिया, परदेश के जीवन में मारा फिरे। यह ग्रह अब आयु और धन को स्वयं ही हीले बहाने बर्बाद करता जाएगा और हर समय मंदा ग्रहण देगा। बुध, शुक्र और खेती का फल कोई ऐसा उत्तम न होगा। अपने भाई बंधु ससुराल दुखिया, जंगल में भी सुख न हो।
3. दीवानी मुकद्दमों में ल बी-ल बी चालें करके धन बर्बाद करेगा। स्त्री और सालियों से बिना कारण जुदाई का बहाना बन जाएगा।
4. ससुराल के कुत्ते के साथ से छोटा भाई दुखिया हो।
5. साथ का मकान गिरा हुआ या कुत्ते के टट्टी करने की जगह की तरह बर्बाद हो। ऐसे टेवे वाले के मकान में 3 लड़के एक पोता या 3 पोते और 1 लड़का आमतौर पर अमूमन रहते होंगे या 3 खिड़कियाँ और तीन दरवाज़े होंगे।
6. दक्षिण के दरवाज़े के साथ हर साल संतान के विघ्न अवश्य होंगे।
7. भाई के खून से प्यास बुझाना अपना ही बाजू काटना होगा।
8. संतान नालायक निक मी हो।
9. दक्षिण के द्वार वाले मकान में लगातार रहने से तीसरे साल से संतान (लड़के और लड़कियाँ हर दो) का मंदा हाल, बल्कि उनकी मौतें शुरू हो जाएगी और चंद्र या मंगल जो भी खाना नं० 8 में हो की मियाद तक मंदा प्रभाव चलेगा।
   -जब चंद्र, मंगल या दोनों खाना नं० 8 में हो, दक्षिण के दरवाज़े का साथ।
10. जातक मुफ़ुलिस गरीब होगा। -जब चंद्र या मंगल खाना नं० 3-4 में हो।

क्याफा :-

हाथ के अंगूठे का नाखून वाला भाग मोटा और छोटा।

उपाय :-

फेफड़े या मंदी सेहत के समय में वृहस्पति की चीज़ें चलते पानी में बहाना या केसर का तिलक उच्च होगा। माली हालत को ठीक करने के लिए शरीर पर सोना (कान, रीढ़ की हड्डी, पांव, घुटने, कमर आदि केतु से संबंधित चीज़ों में दर्द) उत्तम होगा।

केतु खाना नं० 4

(बच्चों को डराने वाला कुत्ता, ज्वारभाटा, समुद्र में तूफान)

सब्र अपने का फल चाहे मीठा मिलेगा।
मगर बोझ देरी का सहना पड़ेगा।।

समुद्र तूफान आयु माता,
चीज़ चंद्र सब रद्दी करता,
गुरु टेवे न जब तक उत्तम,
पैदा कोई जब लड़का होता,
गुरु उपाय ग़र करे,
कुल उसकी चलती रहे,

आयु धन स्वयं उत्तम हो।
लड़का पैदा न होता हो।
कन्या बहुत उस होती हो।
आयु सदी पूरी होती हो।
दोनों दुःख हो दूर।
माया मिले ज़रूर।

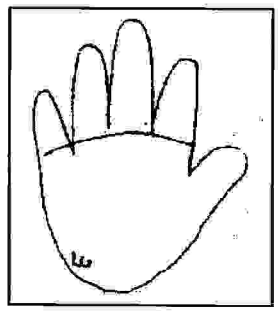

हस्त रेखा:- चंद्र के पर्वत खाना नं० 4 पर केतु का निशान।

नेक हालत

1. बाप के लिए उत्तम फल बल्कि वृहस्पति पिता, गुरु की शक्ति उत्तम उच्च तथा नेक करता होगा।
2. अपनी संतान के लिए सब्र करना पड़ेगा। देर से भी संतान कुल पुरोहित की आशीष से जब वृहस्पति उच्च हो जन्म कुडली में या हो जावे (वर्षफल में) ऐसी संतान ल बी आयु की होगी। चाहे माता की आयु तथा धन के लिए वह एक तूफान होगा और चंद्र में सब चीज़ों का फल मंदा होगा। स्वयं धनवान मेहनती परिणाम मालिक पर छोड़ने वाला हो।
3. गुरु उपाय से धन संतान बढ़े। मंदिर में सोना या कुल पुरोहित को पीले रंग की चीज़ देकर आशीष लेना उत्तम होगा।
4. **कन्या अधिक बुद्धिमान, उत्तम सलाह का स्वामी धन की कोई कमी न होगी।**

-जब चंद्र या मंगल खाना नं० 3-4 में हों।

मंदी हालत

1. बच्चों को डराने वाला कुत्ता-स्वयं का स्वास्थ्य मंदा, पेशाब में शक्कर का आना (मधुमेह) आदि। माता और स्वयं की संतान पर मंदा प्रभाव। समुद्र में तूफान की भाँति ज्वारभाटा (संतान बहुत देरी) 34-68 साल से पैदा हो और वह भी कुल पुरोहित, जो पहले ही हट चुके हों, की आशीष से जीवित रहेगी या कायम हो।
2. केतु, चंद्र दोनों मंदे, न माता सुखी न संतान बढ़े। कुएँ में गिरे कुत्ते की तरह नर संतान का हाल होगा। जो बाहर न निकल सके।

-जब चंद्र या मंगल खाना नं० 3-4 में हों।

क्याफा:-

अंगूठे का नाखून वाला हिस्सा छोटा और मोटा हो।

3. पशुओं जैसे विचार, कम धन।

केतु खाना नं० 5
(अपनी रोटी के टुकड़े के लिए गुरु का निगरान)

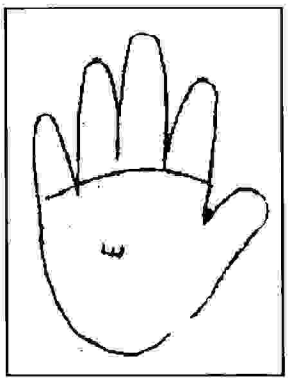

हुए नेक थे जब जवानी के चढ़ते।
मिले पोते इतने न थे जितने लड़के।।

हाल वृहस्पति जो टेवे होता,
केतु वैसा ही होता।
बाद 24 खुद केतु उम्दा,
शर्त गुरु न करता हो।
चंद्र, मंगल 3 चौथे बैठा',
पाँच शनि चाहे 9 वें हो।
लड़का खत्म 3 अक्सर होगा,
बाद 36 तीन मिलता हो।
गुरु मंदा 45 मंदे,
दमा औलाद को लगता हो।
गिनती गिनी हो बेशक कितने,
पूरा कोई ही होता हो।
ऋण पितृ जब टेवे बैठा,
केतु गृहस्थी मंदा हो।
लड़का ज़िंदा दो अक्सर बचता,
मुखिया मुकम्मल होता जो।

1. चंद्र, मंगल से संबंधित चीज़ों का दान उत्तम होगा। जब शनि खाना नं० 5 या खाना नं० 9 में हो, वर्ना केतु मंदा न होगा खासकर जब चंद्र या मंगल खाना नं० 3-4 में होवे।

हस्त रेखा :- **सूर्य की तरक्की रेखा पर केतु का निशान।**

नेक हालत

1. उठती जवानी के समय नेक न होवे तो अपने लड़कों से पोतों की सं या अधिक। केतु का फल अपने लिए उत्तम। लड़कों की हालत आयु वृहस्पति पर होगी। 24 साल की आयु तक रोटी के लिए गुरु का निगरान। बाद में स्वयं उत्तम, वृहस्पति की शर्त न होगी।
2. नर संतान पाँच से कम होगी, माली हालत में केतु का मंदा असर न होगा।
   -जब वृहस्पति, सूर्य या चंद्र खाना नं० 4, 6, 12 में होवे।
3. अब शनि संतान के संबंध में कोई मंदा प्रभाव न देगा, न ही दो स्त्रियों का झगड़ा, संतान की सं या एक ही स्त्री से 9 लड़के 3 लड़कियाँ (पूरी मच्छ रेखा कायम) हो। -जब शनि खाना नं० 9, शुक्र खाना नं० 4 में हो।

मंदी हालत

1. टेवे वाला स्वयं तो बहुत सुंदर था मगर पता नहीं यह सुंदरता जवानी में कहाँ गई और वह संतान के लिए मंदा और लड़कों को साँस (दमा) की बीमारियाँ थी या 45 साला उम्र तक केतु का मंदा हाल। बेशक लड़के कितने भी हुए हों मगर जीवित शायद कोई ही हो। घर में कुत्तों के रोने की आवाज़ आए। -जब वृहस्पति मंदा हो।
2. केतु का गृहस्थी प्रभाव मंदा ही होगा। चाहे दो लड़के ही जीवित हों मगर वह पूरी तरह सुखिया सुख देने वाले होंगे। -जब ऋण पितृ बुध, शुक्र, राहु, शनि पापी ग्रह खाना नं० 2, 5, 9, 12 में हों।
3. केतु का प्रभाव मंदा, गरीब पशु बीमार, मंदे हालत, चंद्र, मंगल की चीज़ों का दान उत्तम। जैसा धर्म ईमान वैसा ही संतान की हालत। -जब चंद्र या मंगल खाना नं० 3, 4 में हों।
4. तीन लड़के नष्ट होने पर 3 साला आयु तक फिर तीन कायम अवश्य खासकर जब चंद्र, मंगल भी खाना नं० 5-9 में हों।
   -जब शनि खाना नं० 5-9 में हो।

केतु खाना नं० 6
(शेर कद खूंखार कुत्ता, दो रंगी दुनिया)

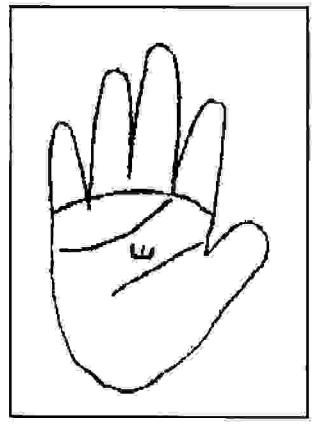

हज़म घी अगर कुत्ता दुनिया में करता।
छुपे फिरता हर घर में बुजदिल न ड़रता।।

रंग दो रंगा केतु होता,
मामू माता न बेशक उम्दा[2],
केतु की चीज़ों पर केतु मंदा,
ग्रह टेवे[3] कोई साथी बैठा,
गुरु भले औलाद हो बढ़ता,
टेवे कोई न जब दो उत्तम,
गुरु, मंगल न हो जब साथी,
बढ़ता केतु खुद नेकी अपनी,

असर[1] होता भी दो रंगा है।
शनि भला ही होता है।
पर मंदा न दूसरों पर।
खुद मंदा बुरा दूसरों पर।
शुक्र मुसीबत कटता हो।
तूफान[4] केतु मंदा हो।
न ही मिला बुध 12 हो।
तकब्बर खुदी न जब तक हो।

1. अपनी संतान तथा सलाहकार सदा नेक सलाह देंगे।
2. जब चंद्र खाना 2 में हो, ऐसी हालत में बुढ़ापा हल्का।
3. सिवाय बुध के जो नेक प्रभाव देगा।
4. सोने की अंगूठी बाएँ हाथ में शुभ।

हस्त रेखा:- हथेली की आयत ☐ में केतु की निशानी हो।

क्याफा:- **पाँव में रेखा।**

1. इस ग्रह की सही हालत मनुष्य में पाँव से मिले। पाँव में सब कुछ हाथ की तरह गिना है। पाँव सदा ज़मीन पर लगता है। ज़मीन को शुक्र माना है। शुक्र का बुर्ज अंगूठे पर होता है। इसलिए पाँव की सिर्फ एक रेखा वह यह कि पाँव में रेखा यदि ऐड़ी से निकाल कर अंगूठे तक चली जाए तो सवारी का सुख होगा।
2. अंगुलियों को छोड़कर (पाँव की) अगर चक्र शंख सिदफ का निशान दाएँ पाँव पर हो तो बुर्ज या ग्रह के कायम होने का नेक प्रभाव हाथ की तरह होगा, मगर बाएँ पाँव पर चक्र शंख सिदफ बुर्ज के नीच होने का प्रभाव देंगे।
3. अगर बायाँ पाँव दाएँ से बड़ा हो तो कम हौसला डरपोक। पाँव का अंगूठा छोटा हो तो केतु नीच या मंदा होगा। ऐसा व्यक्ति एक जगह न रहेगा।

पाँव की अंगुलियाँ	फल
4. अंगूठा, तर्जनी आपस में मिले हों	मंद भाग्य
5. अंगूठा छोटा हो तो	एक जगह न रहे
6. अंगूठा छोटा तर्जनी बड़ी हो तो	पहले लड़के या लड़की का सुख न हो
7. अंगूठा और तर्जनी बराबर	प्रसन्नता से रहने वाला, समृद्ध
8. अंगूठा बड़ा तर्जनी छोटी हो तो	दूसरे का गुलाम रहे
9. तर्जनी मध्यमा से बड़ी हो तो	स्त्री गरीब घर की तथा जातक को उससे दुःख मिले
10. तर्जनी, मध्यमा से छोटी हो तो	औरत का पुरा सुख
11. तर्जनी, मध्यमा से बहुत छोटी हो तो	स्त्री सुख हल्का
12. अनामिका, मध्यमा से छोटी हो तो	स्त्री सुख हल्का
13. कनिष्ठका, अनामिका से बड़ी हो तो	नेक भाग्य
14. कनिष्ठका, अनामिका से बहुत बड़ी हो तो	मंदा भाग्य
15. कनिष्ठका, अनामिका से बहुत ही बड़ी हो तो	जलील हो
16. कनिष्ठका, अनामिका से छोटी हो तो	शुभ
17. कनिष्ठका, अनामिका के बराबर हो तो	संतान का सुख परन्तु अपनी आयु कम
18. पाँचों अंगुलियाँ बराबर या दजाज़ ल बी हो तो	हुक्मरान हो
19. पाँचों एक-दूसरे से बड़ी होती जाएं क्रम से तो	साहिबे संतान

पांव की अंगुलियों के नाखून	प्रभाव
20. सुर्ख ताँबे रंग के हो तो	राजा या हुक्मरान हो
21. नीले रंग के हो तो	आला मरतबा
22. पीले रंग के हो तो	दीवान साहिब
23. स्याह रंग के हो तो	चोर, डाकू फिर भी मंदा

नेक हालत

1. जैसा वृहस्पति टेवे मे होगा वैसा ही केतु का हाल होगा।
2. केतु से लड़का कुत्ता, गधा, सूअर भी माना है। ऐसे पुरुष की संतान यदि इन पशुओं की तरह नालायक हो जाए तो जिस तरह एक मामूली कुत्ता, शेर की खाल पहन कर अपने मालिक की सहायता कर सकता है, उसी तरह वह संतान अपने पिता की सहायता अवश्य करेगी। जिस तरह केतु खाना नं० 1 ने सूर्य की सहायता दी चाहे सूर्य टेवे में कैसा और कहीं भी बैठा हो, उसी तरह खाना नं० 6 का केतु, वृहस्पति को कभी मंदा न होने देगा चाहे वृहस्पति, केतु खाना नं० 6 के समय, कहीं भी और कैसा भी हो।
3. शनि प्रभाव भी ाला ही होगा। अपनी संतान तथा दूसरे सलाहकार ठीक सलाह ही देंगे। इस घर में ग्रहचाली कुत्ते (केतु) की टेढ़ी दुम की जगह मानी गई है। शत्रु दबे रहे हों। धन पर धन आएगा।

हस्त रेखा :- **हाथ का अंगूठा सीधा रहे।**

4. अकेला ही बैठा हुआ हर तरह से उत्तम फल देगा और मामूली कुत्ता भी शेर की खाल पहनकर अपने गुरु (वृहस्पति) पिता को मदद करेगा गरज़े के ऐसा पुरुष स्वयं के लिए अच्छा मगर दूसरों के लिए बुरा असर देगा।
5. शेर कद, लड़ाका कुत्ता, दो रंगी सांसारिक भाग्य (घर का और नीच भी) स्वयं सुखिया होवे।
6. दिमाग़ी खाना नं० 7 — जीवन बढ़ने की इच्छा का साथ होगा।
   दिमाग़ी खाना नं० 8 — हमला रोकने की शक्ति का साथ होगा।
   दिमाग़ी खाना नं० 9 — बदला लेने की शक्ति का साथ होगा।
   दिमाग़ी खाना नं० 10 — स्वाद का साथ होगा।
   दिमाग़ी खाना नं० 11 — जखीरा, जगह करने की आदत का साथ होगा।
   दिमाग़ी खाना नं० 12 — राजदरबारी का साथ होगा।
7. बुध, केतु दोनों का नेक फल होगा। -जब बुध खाना नं० 6 में हो।
8. संतान से बढ़ता होगा मामूली चूहा भी जाल काटकर सहायता दे। -जब वृहस्पति उत्तम हो।
9. शुक्र आपत्ति दूर करता होगा। -जब शुक्र कायम या उत्तम हो।
10. केतु अपनी नेकी मे बढ़ता और उत्तम फल देता होगा। जब तक ऐसा आदमी तकब्बर और खुदी से खुद ही न मरे। -जब वृहस्पति, मंगल खाना नं० 6 में न हो और न ही खाना नं० 12 में वृहस्पति, मंगल या बुध हो।
11. आयु ल बी 70 वर्ष। मामू घर सुखी और देश परदेश के जीवन में आराम हो। -जब तक वृहस्पति नेक हो या खाना नं० 2 की दृष्टि भली हो।

क्याफा **पीठ पर उर्ध रेखा गर्दन की तरफ से नीचे रीढ़ की हड्डी पर पीठ को दो भागों में बांटने वाली रेखा।**

मंदी हालत

1. केतु आम तौर पर बुध का शत्रु, शुक्र का मित्र होता है लेकिन इस घर में केतु की चाल उल्टी होगी। अब केतु, बुध का मित्र, शुक्र का शत्रु होगा।
2. कुत्ता क्या जाने हलवे का स्वाद या कुत्ते को घी हज़म नहीं होता के आधार पर ऐसा व्यक्ति बेकदर, हर जगह पाँव की ठोकर से लड़खड़ाते पत्थर, नाचीज़ टुकड़े की तरह होगा, मामा तथा मामा खानदान पर भी मंदा हो सकता है।

3. बाएँ हाथ पर सोने की अंगूठी सहायता करे, जब केतु खाना नं० 6 की चीज़ों काम या संबंधियों का फल बर्बाद और मंदा हो।
-जब खाना नं० 2 की दृष्टि से केतु बर्बाद हो रहा हो।
4. मंदी हालत मे दिमाग़ी खाना नं० 13 होशियारी, 14 खुदपसंदगी तथ 15 खुद्दारी का साथ होगा।
5. सफ़र बेमतलब और शत्रु बिन बुलाए होंगे। -जब वृहस्पति मंदा हो।
6. मामा और माता का हाल अच्छा न होगा, बुढ़ापा हल्का होगा, मगर केतु अब केतु की दूसरी चीज़ों या संतान पर मंदा न होगा। -जब चंद्र खाना नं० 2 में हो।
7. केतु स्वयं और दूसरे साथ बैठे ग्रह (सिवाय बुध के) जो नेक होंगे दोनों का हाल मंदा होगा।
-जब कोई भी ग्रह सिवाय बुध खाना नं० 6 में हो।
8. केतु हर तरफ से मंदा तूफान पैदा करता होगा, अपना ही कुत्ता काट खाए, पाँव पर खराबियाँ, शुक्र की मंदी निशानी होगी और विचारों पर बुरा प्रभाव वृहस्पति के मंदे प्रभाव की निशानी होगी।
-जब वृहस्पति या शुक्र दोनों में से कोई मंदा हो।
9. दोनों का मंदा फल हो। -जब शुक्र खाना नं० 6 में हो।

केतु खाना नं० 7

(गड़रिये का पालतू कुत्ता, बच्चों का साथी—शेर का मुकाबला करने वाला कुत्ता)

सब कुछ के होते जो रोता रहेगा।
तो यह नस्ल तेरी को जाहिर करेगा।।

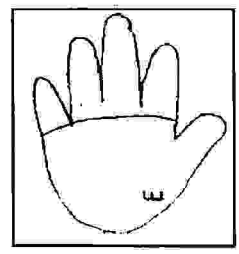

तरह कुत्ते की शत्रु मारे,
बढ़ता कबीला साफ हो रास्ते,
ग्रह शत्रु हो जब कोई मंदा,
केतु चक्र[5] जब तख्त का करता,
ज़ुबान मंदा बुध झुठा वायदा[6],
शुक्र गृहस्थी आग़ में जलता,

चक्की[1] हवाई[2] चलती हो।
मिट्टी[3] पत्थर न कोई हो।
बर्बाद[4] खुदी वह होता हो।
लेख मंदा सब उत्तम हो।
ज़हमत बीमारी पाता हो।
पत्थर तूफानी चलता हो।

1. बुध, शुक्र। 2. वृहस्पति सहायक। 3. शनि मंदा न होगा। 4. शत्रु ग्रह स्वयं ही या टेवे वाला तकब्बर खुदी से बर्बाद हो।
5. लड़का बालिग हो जावे या लड़के की (उम्र के साल. 48) ÷ 40 के उत्तर के बराबर धन आएगा, 7, 19, 31, 43, 55, 67, 74, 95, 103, 115 साला आयु लड़के की (उम्र = 48) ÷ 40 = वर्ष की आमदन के बराबर फालतू धन।
6. महमूद फिरदौसी का वायदा दोबारा याद होगा। मगर अब फिरदौसी जगह महमूद रोता और कब्र में मायूस जाता होगा। शर्त टेवे वाला, ज़ुबान करे मगर वायदा न हटे, का कायल हो।

<u>गृहस्थ रेखा</u> शुक्र के बुर्ज नं० 7 पर केतु का निशान।

नेक हालत

1. आमतौर पर जिस तरह स्त्री के बहन-भाई, उसी तरह टेवे वाले के बच्चे होंगे। 24 साल की आयु में 40 साल गुज़ारे की धन-दौलत आ जाएगी। लड़के की आयु के साल/48x8 = धन की बरकत
जैसे लड़के की उम्र हो 24 साल तो 24/48x8 = 4 गुना यानी जन्म दिन पर जमा हुई के मुकाबले पर लड़के के 24 साला आयु में 4 गुना धन जमा हो जाएगा। ज्यों-ज्यों दूसरा लड़का बढ़ेगा धन जमा होता जाएगा, बढ़ता जाएगा।
2. केतु अब गली का शेर बहादुर बच्चों का साथी, उनमें प्यार और शेर से टकराने वाला गडरिये का पालतू कुत्ता होगा, जो शत्रुओं को कुत्ते की तरह मार भगाएगा।
3. रिज़क देने वाली हवाई चक्की मदद पर चलती होगी। शुक्र, शनि कभी मंदा न होगा और शत्रु ग्रह चंद्र, मंगल से कोई मंदा होवे स्वयं ही बर्बाद होगा। ज़ुबान करे मगर वायदा न हटे पर कभी जीवन में निराशा न होगी। सभी कुछ के होते हुए जो रोता रहेगा, यह उसकी अपनी और जद्दी नस्ल के खून के असर को जाहिर करेगा।
-जब बुध, शुक्र और वृहस्पति की सहायता हो।

मंदी हालत

1. सामने वाले घर का हाल केतु की चीज़ों पर मंदा होगा।
2. टेवे वाला अपनी खुदी और तक्कबर से बर्बाद होगा नहीं तो नहीं होगा।
3. अगर केतु मंदा हो तो भी तो जिस दिन खाना नं० 1 पर आये 7-19-31-43-55-67-74-95-103-115- या जब लड़का बालिग हो जाये उ दा होगा।
4. मंदो ज़ुबान झूठा वायदा ज़हमत बीमारी देगा। शुक्र गृहस्थी आग में जलता और पत्थर गिराने वाला तूफान चलता होगा।
5. महमूद फिरदौसी को अशर्फियों का वायदा दोबारा याद होगा। मगर महमूद टेवे वाला रोता मायूस कब्र को जाता और उसका कफन बदबू से भरा होगा। -जब बुध मंदा हो।
6. बुध की 34 साल की आयु के बाद तारेगा और जो शत्रुता करे स्वयं ही बर्बाद हो। 34 साल की आयु तक शत्रु अवश्य गले लगे रहेंगे मगर इसके बाद उन्हें कुत्ते की तरह मार देगा। -जब बुध खाना नं० 7, सब्ज कलम अहले कलम हो।

केतु खाना नं० 8

(बच्चों की मुहब्बत के ग़म में छत पर रोने वाला कुत्ता, मौत के यम को पहले देख लेने वाला कुत्ता)

मरें बच्चे इतने कब्र भर रही है।
गिला मर चुकों का तू क्या कर रही है।।

मारक घर जब केतु बैठा,
मर्द, औरत न सुखिया जोड़ा[1],
पहले 6 वें तक बुध जो बैठा,
बैठा मगर 7 से 12 तक,
गुरु मंदिर[4] जब खाली टेवे,
आया गुरु ही जब दूजे,
ग्रह साथी या साथ हो कोई,
भाग्य की दोरंगी होगी,
गुरु बुरा हो तो केतु मंदा,
बुध, शुक्र न होगा उत्तम,
मंगल, गुरु 6-12 बैठे संतान,
धन संतान न उत्तम गिनते,
वर्षा हो संतान की,
चन्द्र भी जब हो बुरा,

पित्तान (बुध) पत्थर (शनि) आ होता हो।
लड़का[2] कब्र जा सोता हो।
संतान कायम 34 तक हो।
बाद[3] 34 जा बचती हो।
उपाय गुरु का उत्तम हो।
केतु गिना तब कायम हो।
केतु मंदा हो जाता हो।
केतु देता फल 2 का हो।
भला मंगल न रहता हो।
संतान देरी से पाता हो।
मंगलीक मंगल बद चौथे हो।
मंगल, केतु[5] दो मंदे हो।
जब चन्द्र दूजे हो।
चन्द्र पालन हो।

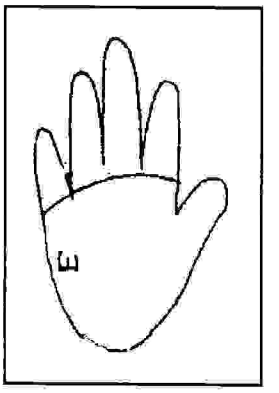

1. मंगल खाना नं० 12 तो केतु का नं० 8 पर मंदा प्रभाव न रहेगा।
2. मगर स्वयं की आयु ल बी होगी।
3. अपनी शादी के बाद अपनी बहन की शादी के बाद या लड़की की शादी के बाद (जो भी पहले हो) संतान कायम होगी, 48 साल की आयु में।
4. राहु खाना नं० 2 के समय खाना नं० 2 खाली ही गिनेंगे।

बुध खाना नं०	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
किस साल संतान हो	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40

5. जब तक बुध, शुक्र उत्तम हो केतु मंदा नहीं हो सकता, ग्रहचाल चाहे कोई भी हो।

हस्त रेखा **मंगल बद के पर्वत 8 पर केतु का निशान हो।**

नेक हालत

1. केतु के अच्छे-बुरे होने का फैसला सदा खाना नं० 12 से होगा जब तक बुध, केतु मंदा न होगा।
2. संतान जल्दी कायम हो या देर से, मगर अपनी आयु सदा ल बी 70 साल से कम कभी नहीं अधिक चाहे हो।
3. यह घर ग्रहचाली कुत्ते केतु के कानों की जगह है मौत के यमों के आने की आहट जल्द सुन लेता होगा यानी उसे मौत आने का पहले पता लग जाता होगा।

4. 34 साल की आयु में नर संतान कायम होगी। 34 साल से पहले या बाद दोनों तरफ की एक साथ शायद ही जीवित हो। जन्म कुंडली में यदि बुध खाना नं० 1 से 6 में बैठा हो तो नर संतान 34 साल तक की पैदा हुई आखिर तक कायम रहेगी। यदि बुध खाना नं० 7 से खाना नं० 12 में हो तो 34 वर्ष की उम्र के बाद की संतान आखिर तक कायम रहेगी। कई बार 45-48 साल की आयु तक सिफ़र या एक और बाद में दूसरा लड़का कायम होगा।

   अ— खाना नं० 6 केतु का अपना घर भी है और वहाँ केतु नीच भी है, इसलिए बुध खाना नं० 6 में हो तो 34 साल से पहले और बाद दोनों ओर की संतान कायम रहने की हालत जायज हो सकती है।

   ब— स्वयं अपनी बहन या अपनी लड़की की शादी के बाद (जो भी पहले हो) नर संतान कायम होगी।

5. अब केतु कायम गिना जायेगा, किसी उपाय की ज़रूरत न होगी, संतान की वर्षा होगी लेकिन यदि चन्द्र मंदा हो तो चन्द्र पूजन सहायक होगा। -जब मंगल नेक हो और वृहस्पति खाना नं० 2-1 या चन्द्र खाना नं० 2 में हो।
6. केतु का प्रभाव कभी मंदा न होगा। -जब वृहस्पति और मंगल खाना नं० 6-12 में न हो।

मंदी हालत

1. जब केतु खाना नं० 8 में हो तो बुध और शुक्र अमूमन मंदे घरों में होंगे या उसका चालचलन उसकी स्त्री के स्वास्थ्य पर प्रभावित हो जायेगा। यानी स्त्री के स्वास्थ्य रक्षा के लिए केतु की पूजना और चालचलन की संभाल ज़रूरी है।
2. बच्चों के ग़म उदासी से भरा छत पर लेटकर रोने वाला कुत्ता। नर संतान कब्र में भरती जाये। मंदे समय की पहली निशानी कुत्ते का छत पर बैठकर रोना होगा। संतान कायम होने का समय 34 साल की आयु की हदबंदी होगी। 48 साल की उम्र तक संतान का सुख हल्का हो, केतु की बीमारी पेशाब की नाली के कतरा-कतरा निकलना महीनों तक।
3. 25 साल की आयु तक केतु का प्रभाव उच्च मगर 26 वें साल से राहु और केतु साथ में बुध, शनि मंदे होंगे, स्त्री-पुरुष दोनों गृहस्थ जीवन में कोई खास सुखी न होंगे।

4. ***केतु की चीज़ें (दोरंगा काला-सफेद क बल पूरा क बल उसका टुकड़ा नहीं) धर्म स्थान में देना उत्तम सहायता देगा। जब कोई और ग्रह साथीं हो तो क बल (दोरंगा) के टुकड़े में दूसरे साथी ग्रह की चीज़ें बांध कर बाहर वीराने में दबाने सहायक होंगे।***

5. संतान की मंदी हालत (वृहस्पति का उपाय जो केतु खाना नं० 4 में दिया गया है, सोना, केसर का प्रयोग) सहायता करेगा। कान छेदन सहायक होगा। 96 घण्टे सुराख कायम रखना ज़रूरी है, केतु की बीमारी जुलाब, दर्द, फोड़े, कोढ़ ज़ म आदि सेहत की खराबी का बहाना होगा। खाना नं० 2 खाली, राहु खाना नं० 2 के समय खाली गिनेंगे।
6. केतु स्वयं मंदा गिना जायेगा। भाग्य की दोरंगी होगी और केतु अपना फल खाना नं० 2 का दिया हुआ देगा। -जब कोई भी ग्रह साथी खाना नं० 8 में हो।
7. न सिर्फ केतु मंदा बल्कि मंगल भी भला न होगा। बुध, शुक्र भी मायूस करने वाले और नर संतान देर से कायम होगी। -जब वृहस्पति मंदा हो।
8. संतान, धन दोनों मंदे बल्कि मंगल, केतु दोनों का ही फल मंदा होगा। -जब गुरु, मंगल कोई खाना नं० 6-12 या मंगल बद खाना नं० 4 हो।
9. केतु की सब चीज़ें मंदी और चारपाई तक मंदी। दुःख, छत मकान से गिर जाए, गृहस्थ घर बार रहने का मकान और उसका तो खाना ही बर्बाद होगा। -जब शनि या मंगल कोई खाना नं० 7 में हो।
10. ऐसे टेवे वाले के जन्म से अमूमन 12 साल पहले भाई की मौत होगी। -जब मंगल खाना नं० 12, शनि खाना नं० 1 में हो।

केतु खाना नं० 9

(इंसान की ज़ुबान समझने वाला कुत्ता, बाप का हुक्म मानने वाला बेटा)

माता-पिता एहसान हम पर जो करते।
आयु गुज़रे सारी एवज उनका भरते।।

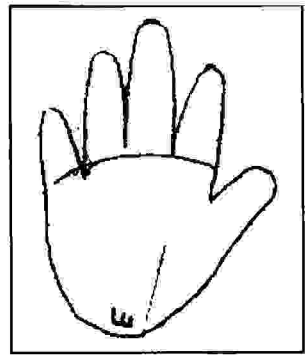

केतु कायम स्वयं पिता को,
तारे नर संतान तीन ही गिनते,
चन्द्र भले घर माता तारे,
शत्रु ग्रह घर तीसरे बैठे,
साल बीतते ग्रह 7 वें के,
सखन बेटा लावल्दी देते,
ईंट सोने की जब घर रखता,
सोना बढ़ेगा हरदम उतना,
औलाद केतु में लड़का अपना,
हाल होना हो साल जो अगला,
शुक्र, शनि फल हर दो उत्तम,
भाग भला न बेशक माता,
गुजरान लिखी परदेश हो उत्तम,
मालिक सिफत दो शेरी कुत्ता,

तारता नहीं वह मामा को।
सुखिया हो और उम्दा हो।
वृहस्पति भले पिता तारता हो।
नर संतान मारता हो।
उत्तम असर केतु देता हो।
हुक्म विधाता होता हो।
केतु[1] जिस्म कुल उत्तम हो।
जितना[2] मार ज़र बढ़ता हो।
नेक सलाही होता हो।
पहले बता ही देता हो।
गुरु भला ग्रह मंदिर जो।
साथ 9 में चाहे चन्द्र हो।
केतु पालन से बढ़ता हो।
अमीर बना खुद साख्ता हो।

1. केतु के भाग : 5 कान, रीढ़ की हड्डी, पाँव, टाँगें, पेशाबगाह आदि।
2. जिस प्रकार सोना पहले घर में कायम होगा उतना ही और फालतू आयेगा, फिर उन दोनों के जोड़ से भी बढ़ जायेगा।

हस्त रेखा :- वृहस्पति के पर्वत 9 पर केतु का निशान।

नेक हालत

1. तरक्की की शर्त है तबदीली की नहीं, दस्ती मेहनत से धन कमाएगा।
2. कुत्ते की बफादारी, सुअर की बहादुरी हर दो सिफत का मालिक होगा। यह सिफतें उसकी औलाद में ज़रूर होंगी। केतु की हालत का फैसला वृहस्पति पर होगा।
3. दस्ती कामों में (हुनरमंदी) से अमीर होगा। केतु पालन संसार के तीन कुत्ते (संसारी कुत्ता, दरवेश, दोहता, भांजा) आदि की पालना से बढ़ता होगा।
4. शुक्र, शनि और वृहस्पति का उत्तम फल और खाना नं० 2 का हर एक ग्रह मय चन्द्र समेत उत्तम फल देगा।
5. खाना नं० 7 के ग्रह की आयु (सूर्य 22 साल वृहस्पति 16 साल आदि) के साल गुज़रने पर केतु का प्रभाव उत्तम हालत पर होगा। नामर्दों को मर्द बनाना और लावल्दों को औलाद देने के संबंध में ऐसे व्यक्ति की आशीष विधाता का हुक्म होगी। मगर घर में सोने की ईंट, जिस्म या कानों में सोना जब तक कायम रखें तो संतान धन और केतु से संबंधित चीज़ों (कान, रीढ़ की हड्डी, दर्द जोड़ टाँगें, घुटने, पेशाबगाह) पर केतु का प्रभाव उत्तम होगा।
6. घर में रखे सोने के बराबर सोना बढ़ता जाएगा। फिर उसके बराबर और फिर और बढ़ता जाएगा सोना बढ़े 1+1 = 2 फिर 2+2 = 4 आदि। अपनी संतान अगले साल का हाल पहले बताने वाली होगी, ठीक सलाहकार होगी, परदेश में अधिक रहेगा, आदमी की बोली समझने वाला कुत्ता, बाप का हुक्म मानने वाला लड़का, माता-पिता का एहसान सारी आयु न भूलेगा।
7. पिता को जन्म से ही तारता हो। 12/24/48 साल की आयु तक उच्च हालत कर देगा।
8. नर संतान तीन होंगी जो उत्तम हालत की होगी।
9. माता खानदान को तारेगा। -जब चन्द्र भले घर का या उत्तम हो।
10. पिता खानदान को तारेगा (मंत्री समान हो)। -जब वृहस्पति या राहु उत्तम या खाना नं० 2 उत्तम हो।

मंदी हालत

1. मंदी हालत में मामा की जड़ काट कर रख देगा, उनका तो खाना ही बर्बाद कर देगा, बेशक केतु कायम ही हो और चन्द्र भाग

भी मंदा हो। चाहे चन्द्र कायम या खाना नं० 9 में साथ ही क्यों न हो।

2. नर संतान मरती जाए। -जब शत्रु ग्रह (चन्द्र, मंगल) खाना नं० 3 में हो।
3. चोर, डाकू फिर भी मंदा ही हाल होगा। -जब शुक्र मंदा हो।

केतु खाना नं० 10

(चुपचाप अपने रास्ते पर चलने वाला मौकाबाज़ (मंदा हाल) मौका शनास, नेक हालत)

उजाड़े बिरादर मुआफी हो देता।
भरे पेट दौलत न कंगाल होता।।

शक्की केतु दरबार शनि के,
मंगल राजा चाहे साथी बैठे,
शनि टेवे घर अच्छे होते,
बुरे घरों जब शनि जा बैठा,
ताक्त शनि ग्रह धोखा होता,
उम्र पापी 48 करता,
शनि अकेला 6 घर बैठा,
लड़का पैदा 3 होकर मरता,
उपाय यही उत्तम होगा,
माया दौलत न केतु मंदा,

जान केतु, खुद मंदा हो।
भला दोनों न होता हो।
मिट्टी सोना दे जाती हो।
सोना मिट्टी खा ' लेती हो।
इंसाफ शनि पर होता हो।
चलन सम्भलते उम्दा हो।
नामी खिलाड़ी होता हो।
शनि पाया घर चौथा हो।
गिना केतु घर 8 का जो।
नीच सिर्फ औलाद का हो।

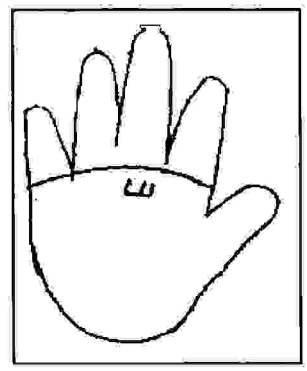

1. दौलतमंद मगर बुरे कामों वाला, पराई स्त्री (चाहे खूबसूरत मिट्टी) कफन का सबूत देगी।

हस्त रेखा :- शनि के पर्वत नं० 10 मध्यमा की जड़ पर केतु का निशान।

नेक हालत

1. जिस कदर भाई उजाड़े वह मुआफी देता जाये तो वह और भी बढ़ता जायेगा, कभी कंगाल न होगा।
2. शक्की हालत फैसला शनि पर मगर मालो दौलत पर कभी मंदा न होगा अगर हो तो सिर्फ संतान पर बुरा प्रभाव है।
3. चुपचाप अपने रास्ते पर चलने वाला कुत्ता।
4. धनी, अगर बुरे चरित्र बदफेल हो तो खूबसूरत स्त्री मंदे कफ़न का सबूत देगी।
5. मिट्टी से सोना मिले। 24 साल की आयु में लड़के ही लड़के, वृहस्पति का फल उत्तम हो।
   -जब शनि उत्तम या उत्तम घरों में हो।
6. नामी खिलाड़ी होगा (खेल चाहे कोई भी हो) जिसमें चालचलन की नेकबद खेलें भी शामिल हों।
   -जब शनि खाना नं० 6 में हो।

मंदी हालत

1. मंदी हालत में केतु से संबंधित जानदार चीज़ों पर 24-28 साल की आयु तक मंदा प्रभाव देगी। -जब शनि मंदा हो।
2. औलाद की बर्बादी के समय बल्कि पाप की आयु (राहु, केतु) राहु 42 साल दोनों 45 साल केतु से 48 साल पहले चाँदी का बर्तन (कुजाह) शहद से भरकर रख लें और बाहर वीराने में दबा दें। 48 साल के बाद कुत्ता रखना ज़रूरी है जो सहायक होगा। 45/48 साल की आयु तक में चालचलन की स भाल संतान के जीवन की नींव होगी, एक ज़रूरी चीज़ होगी। केतु खाना नं० 8 में दिया उपाय सहायक होगा। अकेला केतु मंदा हो तो मंगल से सहायता होगी लेकिन जब मंगल भी खाना नं० 10 में हो।
3. **दोनों का फल मंदा अपार जमा ही होगा, गृहस्थी काम में हर जगह तीन कोने सोने को मिट्टी खा ले (हर ओर तबाही) अब चन्द्र का उपाय या मकानों की तह में दूध, शहद दबाएं।**
   -जब शनि मंदा या मंदे घरों में हो।
4. तीन नर संतान नष्ट होगी मगर धन के लिए मंदा नहीं। -जब शनि खाना नं० 4 में हो।

केतु खाना नं०11
(गीदड़ स्वभाव कुत्ता)

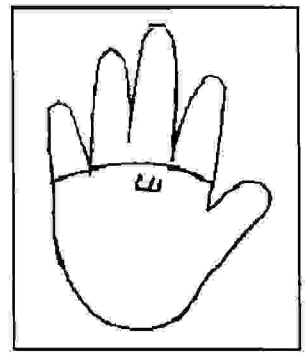

फिक्र छोड़ गुज़री का जो चली गई है।
नज़र रख तू आगे की जो आ रही है।।

ताकत केतु हो 11 गुना,
साथी शनि, बुध तीजे बैठा,
भला शनि या 3 घर आया,
टेवे स्त्री चाहे कैसा बैठा,
केतु, गुरु 5-11 होते,
जिस्म उम्र उस मुर्दा गिनता,
वक्त केतु तक माता मरती[2],
शनि मंदे न होगी उतनी,
उम्दा दौलत ज़र देता हो।
असर केतु ' का मंदा हो।
केतु बुरा न होता हो।
शर्त शनि न करता हो।
जन्म लेता जो लड़का हो।
लाश अमूमन पैदा हो।
दौलत मगर खुद बढ़ती हो।
औलाद मकान जड़ कटती हो।

1. चाहे स्वयं बड़ा दरिद्र और केतु स्वयं संतान का तथा शनि का फल मंदा ही होगा लेकिन यदि खाना नं० 5 का राहु किसी दूसरी शर्त से सहायक हो तो संतान 11 गुना शुभ नेक होगी।
2. 5-11-23-36-48 साल की आयु में चन्द्र का फल मंदा या सिफ़र (ज़ीरो) ही होगा और पीछे की आवाज़ मंदे असर की निशानी हुआ करेगी।

हस्त रेखा :- हथेली के खाना नं० 11 आमदन पर केतु का निशान हो।

नेक हालत

1. जो गुज़र गई वह अच्छी होगी सदा आगे का याल रखता होगा। जद्दी जायदाद तो इतनी न होगी जितनी स्वयं पैदा करे। केतु राजदरबार के लिए राजयोग जब तक खाना नं० 3 में बुध न हो। हरदम एक अकेला दो, ग्यारह की तरह बहता होगा।
2. गुरु का आसन गीदड़ स्वभाव कुत्ता स्वयं केतु की शक्ति कामदेवी।
3. धन-दौलत 11 गुना उत्तम होगा। -जब शनि खाना नं० 3 में हो।
4. 11 गुना नेक माली हालत 11-23-36-48 साल की आयु में खाना नं० 1 में आने पर उ दा प्रभाव हो। -जब नर ग्रह/स्त्री ग्रह मंदे हों।
5. राजदरबार के लिए राजयोग होगा। -जब खाना नं० 3 में बुध हो।

मंदी हालत

1. अपने लड़के के जन्म पर (स्त्री के टेवे में लड़का और दोहता) अमूमन माता न होगी। केतु की आयु तक चन्द्र का फल अपनी माता की नज़र बल्कि आयु और माता और संतान का आपसी गुजरान चन्द्र की जानदार और बहने वाली चीज़ें सब ही मंदे असर लेंगे मगर संतान स्वयं नेक होगी।
2. स्वयं दरिद्री/मगर संतान नेक। जब राहु खाना नं० 5 का किसी प्रकार दूसरी शर्तों के कारण सहायक ही हो। मगर स्त्री के टेवे में यह सब उल्ट या बहरहाल में केतु का प्रभाव नेक और शुभ होगा।
3. शुभ काम के समय पीछे से दी गई आवाज़ मंदे असर की निशानी हुआ करेगी।
4. चन्द्र का फल खासकर 11-23-36-48 साल की आयु में मंदा या सिफ़र (ज़ीरो) ही होगा। -जब बुध खाना नं० 3 में हो।
5. मकान संतान दोनों की उन्नति न होगी मगर स्त्री के टेवे में शनि बुरा होने पर केतु कभी मंदा न होगा। -जब शनि मंदा हो।
6. नर संतान मुर्दा पैदा होगी।

उपाय

शनि की चीज़ें सफेद मूली खासकर रात को स्त्री के सिरहाने रखकर सवेरे धर्म स्थान में देना सहायक होगा, स्त्री बचेगी। दूसरे साल फिर दोबारा नर पैदा होगा। पहली संतान शायद ही जीवित पैदा हो।

केतु खाना नं० 12
(ऐशों आराम जद्दी विरासत)

घरे ज़र कबीला चाहे बच्चों से तेरा।
एवज़ धर गुरु का तू जिस जन्म देगा॥

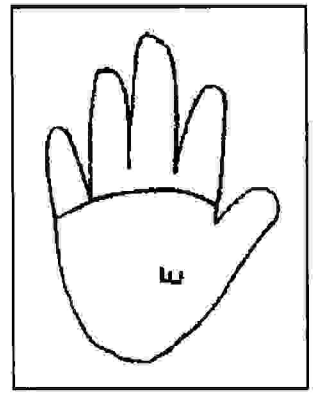

आप बढ़ता साथी बढ़ते, *बढ़ता कुल परिवार हो।*
मर्द माया होंगे फलते, *फलता सब गुलज़ार हो।*
उच्च केतु जड़ खाली बैठा, *सुख गृहस्थी बढ़ता हो।*
शनि, शुक्र और गुरु तीनों का, *असर मुबारक देता हो।*
मदद भाई न मंगल गिनते, *लड़का जाती खुद तारता हो।*
शर्त तरक्की केतु लेते, *मकान सफ़र फल उम्दा हो।*
शत्रु-मित्र चाहे साथी बैठा, *संतान केतु न मंदा हो।*
टेवे राहु का दुश्मन[1] साथी, *ज़हर केतु को देता[2] हो।*
औलाद नरीना होगी शक्की, *मंदा केतु खुद होता[3] हो।*
केतु 12 न असर जो देवे, *निशानी दूजे जा देता हो।*
औलाद असर धन-दौलत अपने, *ससुराल घरों आ भरता हो।*
असर दो तरफी पाप जो मंदा, *बाहर टेवे से होता हो।*
औलाद उपायों राहु होगा, *दूध अंगूठा चूसता[4] हो।*
मंगल, राहु में हस्द हो भरता, *लड़कों तरफों चार।*
शत्रु बैठा खुद रक्षा करता, *फूले-फले गुलज़ार[4]।*

1. राहु के शत्रु : शुक्र, सूर्य, मंगल।
   केतु के शत्रु : चन्द्र, मंगल।
   अर्थात् जब राहु खाना नं० 6 के साथ उनके दुश्मन सूर्य, चन्द्र, शुक्र, मंगल हो तो केतु का प्रभाव मंदा हो।
2. जब तक चालचलन अच्छा रखें, मगर अय्याश तबीयत उत्तम फल होगा।
3. जब नर औलाद तो कायम मगर चन्द्र माया दौलत शांति का फल मंदा हो रहा हो।
4. औरत के टेवे में खुद केतु का प्यार या संबंध पैदा करना मददगार होगा।
5. जब खाना नं० 6 में राहु के दुश्मन तो केतु बर्बाद लेकिन जब खाना नं० 2 में शत्रु तो केतु का असर सिर्फ 1/3 यानी 2 लड़के होगा।

हस्त रेखा

हथेली के खाना नं० 12 खर्च पर केतु का निशान हो।

नेक हालत

1. तरक्की की शर्त है तबदीली की शर्त नहीं।
2. केतु जब खाना नं० 12 का फल जाहिर न करे, खाना नं० 2 ससुराल में या खाना नं० 2 का फल देगा। निशानी खाना नं० 2 की संबंधित चीज़ों से होगी और वृहस्पति के ग्रह की तबीयत होगी। ऐसे आदमी के यहाँ संतान के जन्म दिन या उसकी 24 साल की आयु से इज्जत तथा धन खूब जमा होंगे। ऐशों आराम तथा धन होगा।
3. शनि, शुक्र, वृहस्पति तीनों का उत्तम फल मगर मंगल बड़ा ताया, भाई, मामू आदि की सहायता न होगी। सिर्फ लड़का ही तारेगा। तरक्की की शर्त होगी, मकान के सफ़र का फल उत्तम हो।
4. भरने लगे तो एक प्याले में ही कबीला भर दे। नर संतान 6 से 12 जो सेहत में तथा धन में उत्तम हो (चाहे खाना नं० 12 में कोई शत्रु ग्रह ही साथी हो) शर्त यह है कि केतु की सेवा या केतु कायम रखे।
5. मंगल और राहु हस्द करेंगे या उनकी संबंधित चीज़ें या रिश्तेदार मदद न करेंगे मगर केतु अपने लड़के केतु से संबंधित चीज़ें या रिश्तेदार बरकत लाएंगे और हर तरफ बरकत होगी।
6. दौलतमंद परिवार का स्वामी जद्दी विरासत कुदरती हक होगा। केतु का फल उच्च होगा। गृहस्थी सुख में सब तरफ बरकत खुद अपना आप, आस औलाद, रिश्तेदार सब ही गुलज़ार में शानो शौकत जब तक ऐश पसंदी कायम रखे।

-जब खाना नं० 6 खाली यानी राहु खाना नं० 6 अकेला हो।

मंदी हालत

1. टेवे वाले पर कभी मंदा प्रभाव न पड़ेगा।
2. नर संतान शक्की, केतु बर्बाद हो।
3. जब तक केतु का संबंध नेक और उत्तम हो औलाद बर्बाद या नदारद जब खाना नं० 6 में राहु के साथ हो।

अ—	मंगल हो तो औलाद 28 साल की उम्र तक न हो।
ब—	चन्द्र हो तो औलाद 32 साल की उम्र तक न हो।
स—	सूर्य हो तो औलाद 42 साल की उम्र तक न हो।
द—	शुक्र हो तो 25 साल की उम्र तक न हो।

मगर अय्याश तबीयत हो तो औलाद की बरकत होगी और केतु मंदा न होगा ऐसा आदमी मंगल बद के आदमी से मिलता-जुलता होगा।

अब केतु की जड़ कटती होगी। केतु बेशक खाना नं० 12 का उच्च फल का हो मगर जब राहु खाना नं० 6 के साथ बुध भी हो तो केतु पर बुरा असर न होगा हालांकि बुध और केतु आपस में शत्रु हैं। खाना नं० 6 में राहु के साथ राहु के शत्रु (मंगल, सूर्य, शुक्र) के साथ राहु के मित्र या उसके बराबर के ग्रह हों तो केतु खाना नं० 12 पर बुरा असर न होगा। बेशक वह ग्रह (राहु के दोस्त या राहु के बराबर के) केतु के शत्रु ही क्यों न हो।

4. केतु खाना नं० 12 में होता हुआ भी व्यर्थ होगा। अगर किसी दूसरे ग्रहों की सहायता से केतु का नेक असर भी हो तो नर औलाद सिर्फ 2 लड़के कायम हों। -जब खाना नं० 6 में राहु के साथ उसके शत्रु (शुक्र, मंगल, सूर्य) हो या खाना नं० 2 में दुश्मन (चन्द्र या मंगल, शुक्र) चन्द्र खाना नं० 2 में हो।

नोट किसी संतान रहित से मकान के लिए ज़मीन या नि:संतान का बना-बनाया मकान खरीदे तो ऐसे टेवे वाला भी नि:संतानता से दूर न होगा।

5. दोनों ग्रहों में से सिर्फ एक का उत्तम फल हो, हाल चन्द्र खाना नं० 2 में देखें। -जब चन्द्र खाना नं० 2 में हो।
6. ***अगर कुत्ते मरवाए या केतु नष्ट करे तो केतु खाना नं० 12 होता हुआ भी मंदा फल देगा।*** औलाद की मंदी हालत पर राहु का उपाय सहायता करेगा और जब और औलाद कायम हो और माली कष्ट हो तो दूध में अंगूठा डालकर चूसना मुबारक होगा।
7. स्त्री के टेवे में स्वयं केतु का प्यार या संबंध पैदा करना सहायक होगा। औलाद के विघ्न को दरवेश कुत्ता बर्दाश्त करेगा यानी कुत्ते पर कुत्ता मरेगा और 11 की गिनती तक कुत्ते मरेंगे, संतान जीवित रहेगी,40 -43 दिन के अन्दर-अन्दर दूसरा कुत्ता कायम करते जाएं।

****